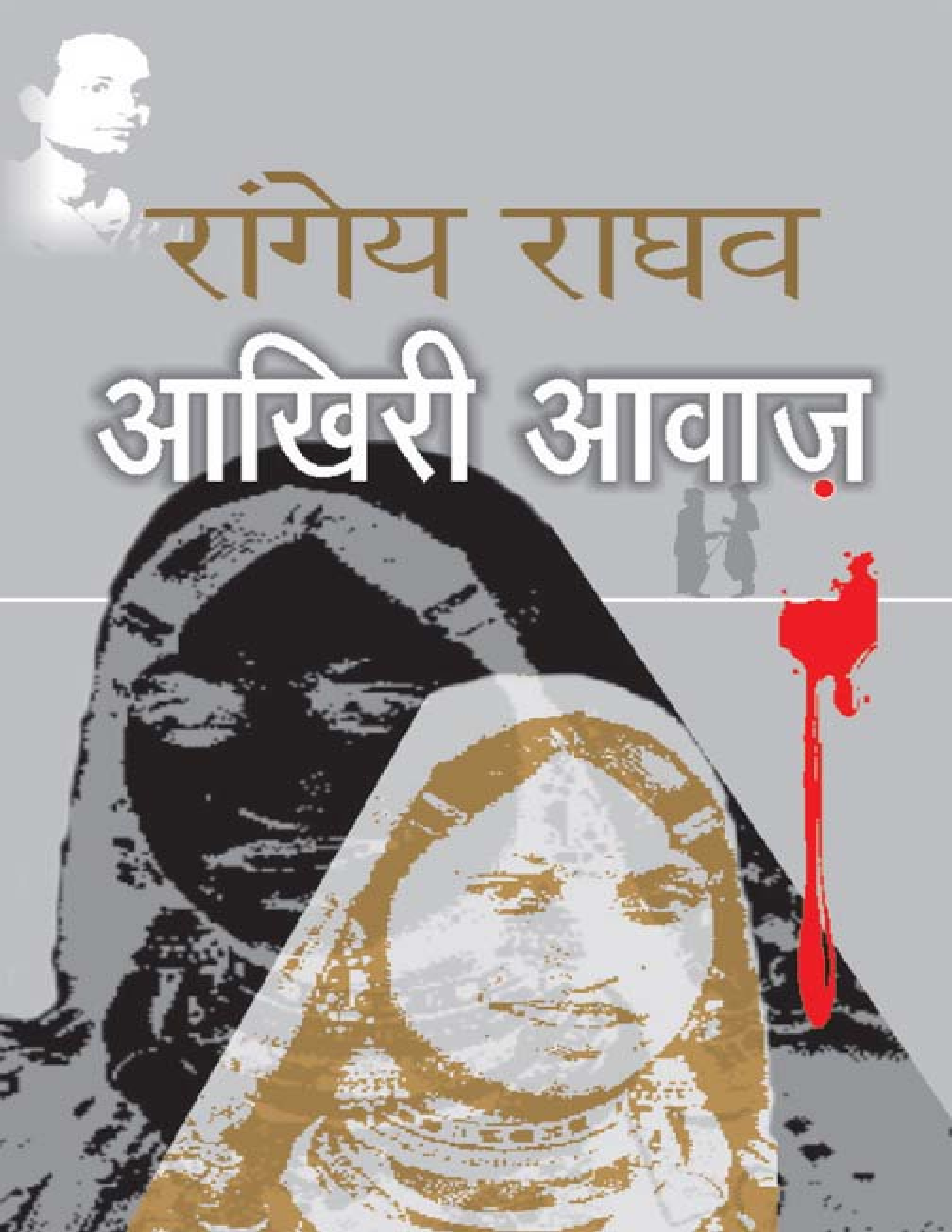

रांगेय राघव
आखिरी आवाज़

आखिरी आवाज़

आखिरी आवाज़

रांगेय राघव

राजपाल

मूल्य : .... रुपये (Rs. 000.00)

संस्करण : 2009

ISBN : 978-81-----------
AAKHIRI AAWAZ (Novel) by Rangey Raghav

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006
Website : www.rajpalpublishing.com
E-mail : mail@rajpalpublishing.com

आग जल रही थी, लपटें उठ रही थीं। कभी लाल, कभी पीली, जड़ में नीली हो जातीं और जब साँस छोड़तीं तो स्याह धुआँ निकलता, जिसमें चमक नहीं होती। फिर ज़रा कम होतीं तो कोई उसमें पास पड़े फूँस को डाल देता, एकाध लकड़ी डाल दी जाती। फिर लपटें हहर उठतीं। क्षण-भर के लिए आसपास बैठने वाले इधर-उधर हो जाते और उसकी गर्मी से नई चेतना जागने लगती।

आग जल रही थी। चारों ओर लोग बैठे थे। दूर से देखने से वे सब एक-से दिखाई देते थे। ऊँची मैली धोतियाँ। धोती की ऊँचाई और समाज में दर्जा, दोनों एक-साथ उतरते-चढ़ते थे। मजूर था तो धोती जाँघ तक पहुँच जाती थी और गाँव का इज़्ज़तदार आदमी था तो धोती नीचे तक आती थी, टखनों तक। आग के चारों तरफ बैठकर वे लोग ऐसे तापते थे जैसे दुर्भिक्ष में लोग एक ही कुएँ के चारों तरफ इकट्ठे हुआ करते थे। ज़िन्दगी अपने सहारे ढूँढ़ती है, आग में हो या पानी में। जब जिसकी ज़रूरत होती है वह अच्छा लगने लगता है और इसी सिलसिले में इंसान एक-दूसरे के करीब आते हैं।

आग जल रही थी। घर की दीवारों पर रोशनी काँपती थी। कभी-कभी लगता था कि रोशनी स्थिर है, दीवारें काँप रही हैं। लेकिन किसको फुरसत थी कि यह सब कुछ देखे! वे लोग अपनी बातों में लगे हुए थे। बातों का अन्त भी तो नहीं हुआ करता। एक मुँह से दूसरी निकला करती है। हुक्का पीने वाला हुक्का पीना बन्द कर सकता है, क्योंकि वह ऊब जाता है, उसको मजबूरन बगल वाले के लिए उसे सरकाना पड़ता है। दूसरा वाला आदमी एक बिरादरी का होने के कारण उस थूक की परवाह नहीं करता जो उस नैह पर लग गया है। वह उसी को मुँह पर रखकर गुड़गुड़ाता है। पर इस धुएँ का रंग भी अलग है। धुएँ का स्वाद भी अलग है, इस धुएँ की पकड़ भी अलग है, घुलन भी अलग है। सब धुएँ एक-से नहीं हुआ करते। सब इंसान भी एक-से नहीं होते। सब बातें भी एक-सी नहीं होतीं। लेकिन धुआँ धुएँ में ही जाकर मिलता है। इंसान इंसान से ही टकराता है और बातें बातों में ही उलझती हैं; ऐसी ही वह रात थी।

आग जल रही थी। जब आग जलती है तो यह पता नहीं चलता कि लकड़ी जल रही है या आग। दोनों एक-दूसरे को खाते हैं। दोनों एक-दूसरे को क्षय में ले जाती शक्तियाँ हैं। जैसे साँस पड़ने पर मनुष्य को पता नहीं चलता कि साँस मनुष्य को खा रही है या मनुष्य साँस को। हँसा आता है, चला जाता है। लोग कहते हैं यह हँसा 'ह' 'सा' पर निर्भर रहता है

और पखेरू-सा पंख फरफराए, फट-फटाए उड़ता जाता है। इन दोनों की सीमा कहाँ जाकर खो जाती है, इसे कौन जानता है! पर राख होने के पहले तक काठ आग से जूझता है, आग उस काठ से, और मरने के पहले इंसान साँस से जूझता है और साँस इंसान से। ऐसी ही यह कहानी चली आई है, चली आ रही है, और चली जाएगी।

आग जल रही थी, जल रही है, जलती चली जाएगी।

(आग एक तपन को अपने भीतर छुपाए होती है, तभी वह अपने आसपास उजाला कर पाती है। अन्धकार में न उजाला होता है, न कोई जलन होती है। बहुत दूर तक मार है इस जलन की। जीवन में यह महत्त्वाकाँक्षा से लेकर, आत्म-प्रवंचना तक के किसी भी रूप में छाई रह सकती है, क्योंकि यह अपने भीतर की अभाव-भरी अतृप्ति में से जन्म लिया करती है। गाँव और नगर, जीवन के साधनों के अभावों के भेद से बनते हैं और उन पर अलग-अलग तरह के मस्तिष्कों का निर्माण होता है। हर एक युग अपने लिए एक दाह लेकर जन्म लेता है, और जो जन्म लेता है, वह अवश्य ही मरता है। तो क्या मृत्यु ही जन्म के रूप में प्रकट हुआ करती है?)

धुआँ काला है और सफेद भी हो सकता है। वह तो एक तरह की वायु सा होता है, जिसमें इतनी शक्ति होती है कि वह पकड़ में नहीं आ सकता, फिर भी मुट्ठी उसे घेर नहीं सकती और तब तक आकार का अभाव अपने-आपको आकाश—जैसे शून्य में विलीन कर देता है...

"अफसर या मुलाज़िम जो करना चाहे, वही कर सकता है।"

"कैसे?"

"पैसा पास में होना चाहिए।"

यहाँ से कहानी शुरू होती है।

[कहानी कौन-सी है जो बीच में शुरू हुई और बीच में ही खत्म होती है?]

[हर कहानी का शुरू हम नहीं जानते। हर कहानी का अन्त हम नहीं जानते। कहानी अपने-आपमें से पैदा नहीं हुआ करती। कहानी की नींव मजबूरियों की टकराहट है और वह मजबूरियों में ही खत्म हो जाती है।]

"आपको नहीं मालूम कि आज से तीन-चार साल पहले डूंमरपुर गाँव में एक सच्चा केस हुआ और एक गरीब आदमी की मजबूरियों का फायदा उठाया गया। उस गरीब की इस राज में किसी ने नहीं सुनी?"

"गरीब की इस राज में किसी ने नहीं सुनी? गरीब किसे कहते हैं?"

[गरीब दुनिया में किसको कहा जा सकता है! गरीब कन्या होती है, जिसका दान दिया जाता है, जो बोल नहीं सकती। गरीब गाय होती है, जिसको दान दे दिया जाता है और जिसके हाथ में रस्सी पकड़ा दी जाती है वह उसी के साथ चली जाती है। गरीब भेड़ होती है, जिसकी ऊन तराश ली जाती है। परमात्मा ने उसको ऊन दी है जाड़े में अपनी

रक्षा करने के लिए और जाड़े के दिनों में ही उसकी ऊन काटकर उसको नंगा कर दिया जाता है, लेकिन वह कुछ नहीं कर सकती। इसलिए इनको गरीब कहते हैं। इनके अलावा कौन गरीब होता है, यह मैं जानना चाहता हूँ।]

"डूंमरपुर में करीब पाँच सौ बीघा रकबा पहले बंजर था। उसको जागीरदार ने पट्टे पर काश्तकारों को उठा दिया काश्तकारों ने वहाँ खड़े झूकटे, डूंढ़-डांढ़ निकाल-निकालकर बड़े अच्छे खेत बना लिए और वे लोग काश्त करने लगे। पैदावार की क्या पूछो! हमने ऐसी पैदावार किसी गाँव में नहीं देखी।"

"भाई, यह रकबा पहले से बंजर पड़ा हुआ था। पेड़ों की पत्तियाँ, मनुष्य का गोबर या बकरी वगैरह जो इसमें चरती थीं, उनका खाद उसी में जमा होता रहा था। अब यह रकबा बहुत मुद्ददों में टूटा है इसलिए इसमें चार-पाँच साल ज़्यादा पैदा होगा। तुम ठीक कहते हो, ज़रूर इस साल ज़्यादा पैदावार हो गई है।"

"फिर क्या हुआ?"

"उस रकबे में एक गरीब किसान का खेत था। उसकी जाति की बाबत तो मुझे पता नहीं कि वह कौन जाति था (शायद धाकर ही था), लेकिन वह अपने खेत पर रखवाली करने जाया करता था। कार्तिक की फसल खड़ी हुई थी। उस जंगल में यह भी पता नहीं पड़ता था कि खेत के किसी तरफ कोई आवारा मवेशी तो नहीं लग रहा था, क्योंकि ज्वार की फसल बड़ी ज़ोर से खड़ी थी।"

"उस किसान का नाम क्या था?"

[उसके लिए बेचैन मत बनो। जब उसके नाम की ज़रूरत होगी तो नाम भी आ जाएगा। अभी धरती से उसके सम्बन्ध की बात चल रही है और धरती किसान से उसका नाम नहीं पूछती; अतः अभी से उसकी चर्चा व्यर्थ है।]

"उस किसान के घर में लोग पाँच-छः आदमी बतलाते हैं। एक तो वह खुद था, एक उसकी पत्नी थी और उसके चार बच्चे थे।"

"बस, चार बच्चे थे?"

"हाँ, एक बच्चा पढ़ने जाया करता था। एक बच्चा छोटा था। एक लड़की करीब नौ साल की थी। लेकिन एक लड़की, जो उसकी सबसे बड़ी औलाद थी, जिसकी उम्र करीब चौदह-पन्द्रह साल की बतलाते हैं, वह अपने बाप के साथ रखवाली पर जाया करती थी। उसका नाम..."

"क्यों, रुक क्यों गए?"

[लड़की का नाम बताने से क्या फायदा!]

"गाँव की लड़की थी, कशमकश ज़िन्दगी में उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी थी। अक्ल उसमें कम थी, क्योंकि दिमाग के उस्तरे को उसे तेज़ करने की ज़रूरत नहीं पड़ी थी। उसकी दुनिया छोटी थी, उसकी कल्पना छोटी थी। गाँव की लड़की थी। थोड़ा पहनने का

शौक था, थोड़ा खाने का शौक था। बाप की लाड़ली थी, तो माँ उस पर नाराज़ भी रहती थी। जब बाप उससे ऊब जाता, तो माँ लड़ा करती थी। आप नहीं जानते, गाँव की लड़की कॉलेज की लड़की से भी ज़्यादा आज़ाद होती है। कॉलेज की लड़की अपनी साड़ी को आगे से नीचे गिराए रखने की चेष्टा करती है और गाँव की लड़की अपना आँचल ढककर नहीं चलती, वह काम जैसे बहुओं के लिए छोड़ दिया जाता है। गाँव की लड़की चेहरा नहीं ढकती, बहू ढकती है। बस, फर्क यह है कि शहर में यह नहीं पहचाना जाता कि कौन छोरी है और कौन बहू। गाँव में यह पता चल जाता है। यही गाँव की लड़की जब ससुराल चली जाती है, तो हाथी की सूंड़ की तरह घूँघट उस पर लटका करता है। उसकी चाल बदल जाती है।

[यहाँ मैं गाँव के बनिए-बामनों की बात नहीं कर रहा, जिनके पास कुछ पैसा हो गया है और जिनकी बहुएँ नायलोन का घूँघट लगाने लगी हैं, जिसमें आधुनिकता और प्राचीनता का हास्यास्पद सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।]

"किसान बेचारा सुबह हल लेकर घर से निकलता था और दो-तीन घंटे खेत पर रखवाली करके जब उसकी लड़की आ जाती थी, तब हल लेकर खेत पर जोतने चला जाता था। लड़की सारे दिन की रखवाली करती थी और शाम को अपने खेत से वापस आ जाती थी।"

शाम हो गई थी। आसमान में बालू—जैसी बदली फैल चली थी, जैसे भड़भूजे की भट्ठी में से निकल आई थी और फिर उसके पीछे काली रात का अँधेरा घिरता आता था। देखते-देखते चमक दूर हुई चली जा रही थी और अँधेरा घिरता चला आ रहा था। वह न दिन की बात है, न रात की। जहाँ दिन और रात मिलते हैं उसे शाम कहते हैं और यह शाम की बात है। वह लड़की अपने खेत पर रखवाली कर रही थी। खेत लहलहा रहे थे। उसके पड़ोस में एक और खेत था और वह खेत उसके पड़ोसी का था। उस पर पड़ोसी की लड़की रखवाली को जाया करती थी। उसका नाम था, निहालकौर। घर से वे दोनों साथ-साथ जाया करती थीं। उनमें आपस में बड़ा प्रेम था और शाम को वापस आ जाया करती थीं। उसी मोहल्ले में दो और भी आदमी थे जिनके खेत उसी जंगल में थे। वे अपने-अपने खेतों पर जा रहे थे। चलते-चलते उन्होंने बातचीत की, "यहाँ कैसी अच्छी हवा चल रही है!"

दूसरा हँसा। उसकी हँसी में व्यंग्य था। उस व्यंग्य में गोबर की-सी सड़ांध थी और उस सड़ांध में व्यभिचार की भावना के कीड़े थे। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा, उनमें खून झलक रहा था। खून वह नहीं जिसका रंग लाल होता है। खून वह जिसे हत्या कहते हैं। हत्या वह नहीं जिसमें किसी का कत्ल किया जाता है। हत्या वह जिसमें किसी के दमन का आनन्द लूटा जाता है। दमन वह नहीं जिसमें किसी को पराजित करने की भावना हो,

बल्कि वह जिसमें पाप की नकारात्मकता को चुनौती दी जाती है और यह तृप्ति पाई जाती है कि हम वह कर रहे हैं जो सब लोग हमें नहीं करने देना चाहते। हमें जिसमें आनन्द मिलता है और जिसे हम किसी-न-किसी साधन से पूरा कर ही लेते हैं, वही हमारे सुख का साधन है।

फिर एक ने कहा, "खेत पर अकेली होगी।"

"उसकी माँ को तो घर ही पर छोड़ आए हैं।"

फिर दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और वे लोग निहालकौर के खेत की ओर चल पड़े।

निहालकौर ने देखा तो मुस्कराई। उसकी आँखें कुछ मिच गईं और गालों पर जवानी ऐसे काँप उठी जैसे बया अपने झूलते घोंसले में घुस जाती है। महाकवि बिहारी ने ग्रामीण स्त्री का मज़ाक उड़ाते हुए कहा था कि वह हूँठा देकर इठलाती है। लेकिन निहालकौर ऐसी नहीं थी। बीसवीं सदी का गधा गाँव में भी अपनी लादी लेकर पहुँच चुका है। अब गाँव की लड़कियाँ भी पेटीकोट पहनती हैं और चेहरे पर पाउडर और क्रीम भी लगाती हैं। यह सच है कि उनके कपड़े ज़्यादा साफ नहीं होते, क्योंकि सफाई वक्त और भावुकता की चीज़ है।

[लेकिन जवानी धोबी की भट्ठी पर चढ़ने की शौकीन नहीं होती, वह तो आग और पानी से खेलने की शौकीन हुआ करती है।]

निहालकौर के माथे पर चमकीली बिंदिया लगी थी। जब उसका माथा सूरज की ओर उठता, डूबते सूरज की ओर बल्कि उस सूरज की ओर जो शायद डूब चुका था और उसकी चमक बाकी रह गई थी, तो माथे पर एक छोटा-सा चन्दा झिलमिलाता। दोनों आदमियों ने उसे देखा। चारों ओर नीरवता थी। खेत थे, ज्वार के पतले, मगर ऊँचे पत्ते थे। उनमें आपस में मज़ाक होने लगा और उस मज़ाक का अन्त अच्छा नहीं हुआ, कहने लायक नहीं हुआ। निहालकौर खरबूज़े की तरह चाकुओं से टकराई और अब वह जिसे एकान्त समझ रही थी, वहाँ एकान्त नहीं था।

शायद उस गरीब किसान की लड़की अपने मचान पर खड़ी हुई इस पाप को देख रही थी। दोनों दोस्त नीचे रह गए और निहालकौर मचान पर चढ़ी तो उसने अपनी सहेली को वहाँ खड़े देखा। उसके मन में बिजली-सी कौंध गई और उसने सोचा, 'कहीं ऐसा न हो कि इस सबको इस लड़की ने देख लिया हो! अगर यह गाँव में जाकर कह देगी तो मेरी बदनामी होगी,' और यह विचार उसके मन में कांतर की तरह अपने अनेक पाँव बढ़ाने लगा, गड़ाने लगा और उसकी आँखों के सामने अँधेरा-सा छा गया। मन को यह बात कोंचने लगी। चुपचाप नीचे उतर आई और इन दोनों से कहा, "कहाँ जा रहे हो?"

उन्होंने कहा, "हम अपने-अपने खेतों पर जा रहे हैं।"

निहालकौर ने कहा, "तुमने जो किया सो किया, पर अच्छा नहीं किया।"

उनमें से एक ने कहा, "अरी रहने दे, इतने दिन बाद तो आज फिर मौका मिला।" निहालकौर निर्लज्ज थी। दो पुरुषों के सामने जिसने पाप किया था, उसकी वासना साधारण नहीं थी। उसने कहा, "सब-कुछ ठीक है, लेकिन बगल के खेत पर मेरी सहेली खड़ी है। अगर उसने देख लिया होगा तो मैं कहीं की न रहूँगी। तुम्हारा क्या बिगड़ेगा!" दोनों चिन्ताग्रस्त हो गए। निहालकौर की आँखों में साँप-से फुफकारने लगे और उसने कहा, "तुम दोनों अपने खेत पर मत जाओ। पहले मेरा एक काम कर दो।"

दोनों पुरुष उस समय उसके दास थे। कुत्तों की तरह उसके सामने पूँछ दबाए खड़े थे। उस समय उस स्त्री की शक्ति इतनी थी कि दोनों से कुछ भी करा सकती थी। उसने कहा, "इस खेत में होकर निकल जाओ और फिर किसी तरह इसको अपने चंगुल में फँसाओ, क्योंकि आज का सारा किस्सा इसको मालूम हो गया है। यह गाँव में जाकर मेरी और तुम्हारी दोनों की बदनामी करेगी। इसलिए इसके पास जाओ और मेरी तरह इसे भी अपनी बना लो। तब हम लोगों का खतरा दूर हो जाएगा और आगे के लिए भी रास्ता खुल जाएगा। तब हम दो हो जाएँगी, पड़ोसिनें। साथ-साथ आने-जाने में हमको भी आज़ादी रहेगी और दो के आने-जाने को देखकर कोई रोक-टोक भी नहीं करेगा और न किसी को शक होगा।"

लेकिन निहालकौर का विचार गलत था। उसकी सहेली ने उसे देखा नहीं था, क्योंकि मचान के ऊपर खड़े होने के बाद होने वाली बात दिखाई नहीं देती थी। जिस समय निहालकौर ने मचान पर चढ़कर उसे देखा तो उस समय उसकी सहेली को यह नहीं मालूम था कि नीचे दो व्यक्ति खड़े हुए थे, क्योंकि ज्वार की घनी उपज में सब-कुछ छिप गया था। जब वे दोनों आदमी उस खेत में घुसे, तब लड़की सोचने लगी, 'आज ये मेरे खेत की तरफ कैसे आ रहे हैं!' और तभी उसने अपने मन को बहलाने के लिए सोचा, 'शायद ये दोनों आज अपने खेत पर इसी खेत से जाएँगे।' वैसे उसको यह आभास था कि निहालकौर बदचलन थी, पर कभी उसने इस बात को प्रकट नहीं होने दिया था। वह एक साथ दो प्रेमियों के साथ अपना खेल खेलती थी, जो साधारणतया स्त्री नहीं करती। पर बरसात की नदी जब उमंग बहती है, तब वह एक किनारे से नहीं खेलती, दोनों किनारों से खेलती है और दोनों की जड़ें खोदती हुई उनकी गीली मिट्टी को निगलती हुई, गंदली होती हुई, मस्ती में झूमती, हुमस-भरी आगे बढ़ती चली जाती है। दोनों आदमी मचान के पास पहुँच गए और दोनों ने कहा, "क्यों री, अँधेरा होने आया, तू अभी घर नहीं गई?"

दूसरे ने कहा, "अरे, किसी की बाट जोह रही होगी। आजकल के ज़माने में कौन-सा पेड़ ऐसा है जिसे हवा न लगी हो!"

पहले ने कहा, "अरी, ऊपर कब तक खड़ी रहेगी। नीचे आ जा।"

दूसरा व्यक्ति हँसा और लड़की ने अपने दिल में सोचा, 'कहीं ऐसा न हो कि ये लोग मेरी इज़्ज़त पर हमला कर दें।' इसलिए वह नीचे नहीं उतरी और मचान पर ही बैठकर

उनसे बातें करने लगी। उसने कहा, “अरे, तुम बड़े घर के लड़के हो। तुम्हें ऐसी बात नहीं करनी चाहिए। तुम्हारे बाप पंच और सरपंच हैं। अच्छे-अच्छे अफसरों में बैठते हैं। उनकी बड़ी इज़्ज़त है। अगर कोई सुनेगा तो क्या कहेगा! और फिर गाँव की छोरी बहिन होती है। वह राखी बाँधती है। उसकी इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त है। तुम्हें तो मालूम है कि पड़ोस के गाँव में से गूजर जब दो लड़कियों को उठा ले गए थे, तो गाँव की पंचायत ने यह तय किया था कि दो को ले जाने के बदले में बारह लड़कियाँ वापस लाई जाएँ, ताकि इज़्ज़त का बिखरा भरोटा फिर से इकट्ठा हो जाए, और बारह लड़कियाँ न दी जाएँ तो सामने धरे पनहा में पाव-भर तेल कुरे दिया जाए। ऐसी जिस गाँव की बात हो, तो डूंमरपुर को कुछ होना नहीं है।”

उनमें से एक ने हँसकर कहा, “वह दिन गए! अब के ज़माने में लोग कहते हैं कि हूँ तो इस गाँव की छोरी, पर बहुओं से अच्छी रहूँ। तू नीचे उतर आ।”

लड़की ने फिर कहा, “अगर कोई सुनेगा तो क्या कहेगा! तुम बड़े घर के आदमी हो, आगे चलकर तुमको बड़ा आदमी बनना है। तुम मर्दमानस, तुम्हारा क्या बिगड़ेगा! मेरी ज़िन्दगी खराब हो जाएगी। भगवान ने तुम्हारे लिए सब-कुछ दे रखा है।”

(लेकिन ताल का पानी गड्ढे में सड़ता है। कीड़ा गन्दी जगह में चैन पाता है। पेड़ की जड़ अँधेरे में उतरती है और बैठने का ठौर न देखकर भी मदमाता पाँखी हवा में फरफराता है। इसी तरह पाप कभी सीधी राह नहीं चलता।)

और एक ने कहा, “देर मत कर।”

उस वक्त अँधेरा और बढ़ गया था। दूर-दूर तक सन्नाटा छा रहा था। आकाश से हल्की बूँदें झरने लगी थीं। उन्होंने मचान पर चढ़कर लड़की को नीचे खींच लिया। वह चिल्लाई, लेकिन उन्होंने उसकी एक न सुनी और उसके मुँह में रूमाल भर दिया, रूमाल यानी हल्का गमछा, जिससे वह शोर भी नहीं मचा सकी और उसके बाद उन्होंने उसको मजबूर कर दिया। निहालकौर खेत की मेंड़ से इस घटना को छिपकर देखती रही।

उसके मन की प्रतिहिंसा जैसे लुप्त हो गई थी। जिस तरह छोटा लड़का बीड़ी पीता है और अपने भाई द्वारा पकड़ा जाता है, तो वह कोशिश यही करता है कि वह भी बीड़ी पी ले, ताकि माँ-बाप तक शिकायत न पहुँचे, इसी तरह निहालकौर ने समझा कि रस मुँह से लग जाने के बाद उसकी सहेली भी उसके साथ तैरने लगेगी। बन्धन के कंटक कट जाएँगे। उसके बाद एक और पक्ष खुल जाएगा। अभी तक वह जो आनन्द लेती थी, वह उसके बारे में बात नहीं कर पाती थी। पाप अपने-आपमें इतना दिलचस्प नहीं होता, जितना बतरस में जाकर बन जाता है। लेकिन उसको यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि उसकी सहेली ने उठकर कहा, “ओह! भगवान तुमसे समझेगा! तुम्हारा सत्यानाश कर देगा। तुमने मुझे बिगाड़ दिया। तुमने मुझे कहीं का नहीं रखा। तुम समझते हो कि मैं चुप रह जाऊँगी!” यह कहते हुए जैसे उसकी आँखों में शोले धधक उठे और उसने फिर फुंकार भरते हुए कहा, “तुमने

मुझे अकेला जानकर ऐसा किया, लेकिन याद रखना कि ऊपर वाला सब-कुछ देख रहा था। तुम समझते हो कि यहाँ सन्नाटा था और कोई नहीं था? लेकिन मैं तुम्हें देख लूँगी। मुझे मरने से डर नहीं है, क्योंकि मर तो मैं चुकी। अब मेरे लिए कुछ भी बाकी नहीं रहा। तुमने मेरा धर्म बिगाड़ दिया।"

निहालकौर ने सुना और उसे आश्चर्य हुआ। यह न जाने किस कोने से धर्म का भूत बोलने लगा था!

दोनों युवकों ने एक-दूसरे की ओर देखा। आँखों में आपस में बातें की। एक ने कहा, "एक लफ़्ज भी बोली तो टुकड़े कर दी जाएगी।" लेकिन वह बोली, "सो अब मैं धमकी नहीं मानूँगी।"

आकाश में घटा और ऊपर उठने लगी थी। वह थोड़ी-सी बालू जैसे अब सघन होती चली जा रही थी। हवा तेज़ होने लगी। बूँदें तेज़ी से गिरने लगीं। अड़ोस-पड़ोस के पक्षी चहचहाने लगे और उसके बाद निहालकौर ने कानों पर हाथ रख लिए। उसको सुनाई दिया, एक ने कहा, "नहीं मानेगी?" मचान के पास एक बाँक पड़ा था। आवेश में उन्होंने उसको कमर पर पकड़कर दबाना चाहा, किन्तु वह नहीं मानी। लड़की ने प्रयत्न किया कि किसी तरह वह बाँक उसके हाथ में आ जाए। अनजाने ही एक ने उस बाँक को पकड़ लिया और छीना-झपटी में वह लड़की की गर्दन पर पड़ा और लड़की सदा के लिए परमधाम चली गई।

उस समय उन दोनों की आँखों में खून उतर आया था। वे जैसे पागल हो गए थे, बर्बर। एक ने कहा, "मर गई सुसरी।"

दूसरे ने काँपते हुए स्वर से कहा, "अब?"

दूसरे ने उसके हाथ और पाँव के खड़ुए उतार लिए। सरपंच का लड़का बोला, "अरे यार, क्या चिन्ता है! किसको पता कि हमने ऐसा किया है! एक तो हमारा खेत इससे दूर है। दूसरे हम लोग खेतों पर कम आते-जाते हैं। और मेरा बाप सरपंच है और तेरा बाप पंच। हम लोगों पर कोई भ्रम भी तो नहीं करेगा। इसको यहीं गाड़ दो और चुपचाप घर चले चलो। लेकिन एक बात ज़रूर है, इस रास्ते मत चलो, वरना लोग यह जान जाएँगे कि ये लोग आज खेत पर गए थे। इसलिए दूसरे रास्ते से चलना चाहिए।" और उन्होंने उसकी लाश को गाड़ दिया और दूसरे रास्ते से निकल चले। निहालकौर को जैसे काठ मार गया था। ऐसा लग रहा था जैसे कानों के पास हथौड़े बज रहे थे। एक ओर पाप का भय और दूसरी ओर यह कल्पना कि जिन व्यक्तियों के साथ उसने विलास और व्यभिचार किया था, वे इतने नृशंस और जघन्य थे कि एक स्त्री की हत्या कर सकते थे, और यह विचार कितना भयानक था! ऐसे ही लोगों के साथ उसने माँसल आनन्द लूटा था। वह पिशाचों के साथ, भयंकर हत्यारों के साथ थी। सहेली का मुख उसके सामने आने लगा। यह सहेली अब

उसकी कल्पना में एक विशाल पर्वत के समान हो गई। उसके मुख पर मजबूरी से उदय होती मुस्कराहट सूरज और चन्द्रमा के समान दिखाई देने लगी।

(क्या निहालकौर ने यह भी सोचा होगा कि वह उस पर्वत पर फैले हुए जल-प्रसार के समान थी! क्या उस लघुता में सारा पर्वत ही उसमें प्रतिबिम्बित हो गया होगा! कैसे झेल पाई होगी उस सारे भार को!)

निहालकौर को याद आया, उसकी सहेली मासूम थी। सीधी थी, भोली थी। कैसे हँस-हँस कर बातें करती उसके साथ पनघट पर जाया करती थी! घंटों दोनों खेला करती थीं। बचपन से दोनों खेली थीं, बचपन से दोनों बतरातीं थीं, दोनों एक-दूसरे के घर जाती थीं, गलबाँही डाल बैठती थीं! और अब वह सब-कुछ नहीं रहा। क्या यह बात किसी को पता नहीं चलेगी? क्या उसका अब कारज भी नहीं होगा? और तब निहाल की कल्पना में उसके पिता और माता की आँखें आईं। कैसे ढूँढ़ते फिरेंगे वे लोग! निहालकौर सब कुछ जान-बूझकर भी कैसे पचा सकेगी, कैसे चुप रहेगी! उसे घृणा हुई इन दोनों पर। निहालकौर ने यह कल्पना न की थी। उसने तो यही सोचा था कि पाप में एक आनन्द है। विवाहित पति के मिलन से पहले थोड़ा आनन्द लेने में क्या दोष है! यह कौन जानता है! यह तो व्यर्थ का सामाजिक व्यवधान है। और छिपाकर किए जाने वाले पाप में एक-दूसरा रस होता है। एक रहस्य की भावना होती है। एक चतुरता की तृप्ति होती है कि देखो कोई नहीं जान पाता है और हम क्या से क्या कर बैठते हैं! किन्तु जब वह अपने दोस्तों को देखती हुई सड़क पर निकलती थी, तब किसी को कल्पना भी न होती थी कि इनके आपसी सम्बन्ध किस तरह के हैं। न वे कभी प्रकट करते थे और न वह कभी प्रकट करती थी। उसने तो केवल यही चाहा था कि वह अकेली रहती है, यों लोग शायद शक-शुबहा करें! क्यों न सहेली भी इसमें शामिल कर ली जाए! फिर दोनों संग आया-जाया करेंगी, किसी को पता भी नहीं चलेगा। फिर बातें हुआ करेंगी। फिर दोनों साज-सिंगार किया करेंगी। शामिल के व्यभिचार में एक ऐसी जुगुप्सा होती है, जिसमें निर्लज्जता का सबसे बड़ा भाग होता है। निहाल की कल्पना ने उस निर्लज्जता के आनन्द का स्वप्न देखा था, उसे यह सब क्या मालूम था कि थोड़ी देर बाद उसकी सहेली माटी में दब जाएगी!

आकाश में बादल गर्जन करने लगे थे। बूंदें गिरतीं और अब बहने लगी थीं। जब लड़की का बाप अपने खेत पर आया तो उसे मचान पर किसी की आवाज़ नहीं सुनाई दी। उसने सोचा, शायद जल्दी चली गई होगी। लेकिन जब वह मचान के पास पहुँचा, तो उसकी आँखें फटी रह गईं। धरती पर खून की बूँदें पड़ी हुई थीं जिन्हें पानी तेज़ी से धोता जा रहा था। साफ लग रहा था कि धरती अभी खोदी गई है और उसने काँपते हाथों से धरती खोदकर लाश को निकाला और उसने देखा कि उसकी प्यारी बेटी की गर्दन कटी पड़ी हुई थी और पैर काटकर कोई खडुए उतारकर ले गया था। खून बह-बह कर तन पर

गाढ़ा हो गया था। जब उस गरीब किसान ने यह देखा तो वह चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा। वह मचान पर खड़ा होकर पुकारने लगा, "दुहाई है महाराज की, मुझे बचाओ!"

संध्या वेला में उसका वह स्वर दूर-दूर तक गूँजने लगा। लोग अपने-अपने खेतों से रखवाली करके, अपने-अपने घरों को वापस जा रहे थे। उस नीरव संध्या-वेला में मेघों के गर्जन को पार करता हुआ वह स्वर, खड़ी हुई फसल के अंग-अंग झकझोरता हुआ, दूर-दूर तक फैल गया। उस किसान की आवाज़ सुनकर अड़ोसी-पड़ोसी उसके पास इकट्ठे हो गए और निहालकौर उस शोरगुल को सुनकर बजाए घर लौटने के, उसी खेत पर चली आई और उसने देखा कि उसकी सहेली की गर्दन कटी पड़ी थी और खून जम चुका था। निहालकौर इसको देखकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। इधर-उधर के खेत वाले आपस में कानाफूसी करने लगे।

"कतल, कतल, कतल हो गया!"

"हम लोगों का यहाँ रहना ठीक नहीं।"

"पुलिस हम लोगों को भी तंग करेगी, वैसे ही घसीटेगी।"

लेकिन रामकरन चुपचाप खड़ा रहा। उसने कहा, "कतल! पुलिस आ घसीटेगी, लेकिन उसको अकेला छोड़कर हम जा कहाँ सकते हैं! यह हमारे गाँव का रहने वाला है, इसको हम छोड़कर कैसे जा सकते हैं! क्या आप लोग लाश को जलाने नहीं जाओगे? क्या आप लोग बेटी की लज्जा लुटती देखकर एक-दूसरे की मदद नहीं करोगे? क्या हम लोग यहाँ इसे अकेला छोड़कर जा सकते हैं? पानी आ रहा है। अँधेरी आ रही है। क्या हम इस लड़की के बाप को इसकी बेटी की लाश के पास छोड़कर चले जा सकते हैं? क्या हम इतने मुर्दा हो गए हैं और निर्लज्ज हैं? धिक्कार है तुम्हें? क्या तुम्हारा खून पानी हो गया है?" गाड़ी लाओ और इस लाश को गाड़ी में रखकर गाँव के नज़दीक ले चलो, वरना लाश पर रोने वाला भी रो-रोकर मर जाएगा।"

रामकरन की बात लोगों की समझ में आ गई, क्योंकि उनको याद आया कि उनमें से कइयों की लड़कियाँ थीं, क्योंकि उनको याद आया कि सब लड़कियों के पास जवानी थी या आने वाली थी, क्योंकि उनको याद आया कि पुराने नैतिक बन्धन टूट चुके थे और बेटी की जवानी एक खतरनाक चीज़ साबित हो सकती थी, क्योंकि उनको याद आया कि जब किसी के घर का कोई मर जाता है तो उसका काम दूसरे लोगों को करना चाहिए, ताकि वह आराम से अपने घर की लाश पर रो सके, क्योंकि उनको याद आया कि इस जीने की खुशी और मरने की रुलाई के लिए लोगों ने बिरादरी बनाई थी, क्योंकि उनको याद आया कि इस पारस्परिक निर्भरता का ही नाम प्रेम था, समाज था और उसी का नाम गाँव था, क्योंकि उनको याद आया कि यह कहावत मशहूर थी कि गाँव से राम हारता है, गाँव से ऊपर कोई नहीं होता।

[और अचानक जैसे अँधेरे में दीपक जल उठता है, और अचानक जैसे सूने पहाड़ से गूँज टकराकर लौट आती है और अचानक जैसे छोटा-सा ताल सारे आकाश को अपने अन्दर झिलमिला देता है, और अचानक जैसे छोटे से हृदय में समस्त ब्रह्मांड समाहित हो जाता है, इसी तरह उनके निर्बल मानस में गाँव खड़ा हो गया।]

[उस गाँव से उनमें शक्ति आई। पीढ़ियाँ जिस गाँव में मिट चुकी थीं। जिसमें उनका लालन-पालन हुआ था, जिसमें उनका भविष्य था, जिस माटी को छू-छूकर उनके सगे अपने बने थे, उस गाँव ने उनकी रगों में खून दौड़ा दिया।]

रामकरन की बात सबकी समझ में आ गई और उन्होंने उसी लड़की की धोती में उसको लपेट दिया। जब वह ज़िन्दा थी, तो यह धोती उसकी लाज ढकती थी। जब वह मर गई तो वही धोती उसके लिए कफन बन गई और वह गाँव के सहारे उसे मरघट में ले आए। तब रामकरन ने कहा, "भाई, इसको दाग तो अभी नहीं लगेगा, क्योंकि इसका पोस्टमार्टम होगा, जो पुलिस कराएगी और अगर हम लोगों ने इसको दाग लगा दिया, तो कतल का केस उल्टा हम लोगों पर चल जाएगा। इसलिए ऐसा करो कि एक आदमी सरपंच के पास भेज दो, जो उनको यहाँ बुला लाए। अगारी की कार्रवाई उनसे पूछकर करेंगे।"

[जैसे लोग भाग्य से सताए जाकर अनजाने ही भाग्य के चरणों पर पहुँच जाते हैं, उसी तरह यह जो समाज और जीवन का चक्रव्यूह है इसमें मनुष्य उन्हीं लीकों पर चलता है, उन्हीं से सताया जाता है और उन्हीं में तड़पता रहता है।]

पानी रुक चुका था। धरती और आकाश दोनों पसीने से भीग चुके थे। एक आदमी सरपंच को बुलाने पहुँचा। गाँव में एक दहशत फैल गई। उस लड़की की माँ और पड़ोसिनें रोती हुईं इस श्मशान-भूमि में आ गईं और बड़े ज़ोर से रोने लगीं। यहाँ तक कि निहालकौर, जो अभी तक भीड़ में खड़ी थी, काँपने लगी, क्योंकि उसकी माँ कतल की जाने वाली लड़की की माँ के साथ भयानकता से रो रही थी और यह सच है कि अगर स्त्रियाँ न रोएँ तो मृत्यु इतनी भयानक न लगे, जितनी कि स्त्रियाँ उसे बना देती हैं।

[स्त्री माटी को प्यार करती है, वह आकाश की नहीं सोचती। वह व्यावहारिक होती है। सौन्दर्य उसके लिए मातृत्व का मार्ग है, वासना उसके लिए गृहस्थी का पथ है। पुरुष की तरह वह भूमिहीन नहीं होती। उसके अपने आधार होते हैं। वह रिश्तेदारियों में जीवित रहती है। वह धूनी लगाकर नहीं बैठ सकती। उसे चारदीवारी चाहिए।]

रुदन उठने लगा। लोगों के हृदय को झकझोरता हुआ—"अरे मेरी बेटी! तुझे कौन कतल कर गया...अरे वह कौन हत्यारा था, जिसका दिल नहीं पसीजा...अरे, क्या मैंने दूध पिलाकर तुझे इतने दिनों के लिए इसीलिए पाला था कि अजनबी तेरी बोटी-बोटी काटकर फेंक जाए...तू मेरी लाड़ली थी, मैंने तुझमें अपना सपना सहेज कर रखा था...मैं तेरे हाथ पीले कर देती...अरे, तू अपने बाप की आँखों का तारा थी! तेरा कौन बैरी हो गया! तू तो सबसे हँस बोलती थी...अब यह गाँव नरक हो गया, जहाँ बेटियाँ के कतल होने लगे...अरे

वह! धिक्कार है...अरे वह! तुम्हारी आँखें फूट जाएँ, जो देख रही हैं कि तुम्हारे गाँव की बेटी टुकड़े होकर पड़ी है...अरे, तुम मुझे अपने गाँव में बहू बनाकर लाए थे...अरे, आज मेरी औलाद, मेरी आस-औलाद तुम्हारे सामने कटी पड़ी है और तुम्हारे बज्जर हिया नहीं डोलते..." जो लोग वहाँ इकट्ठे थे, उनके रोंगटे खड़े हो गए। अब वे लोग आपस में बातें करने लगे, "कतल हो गया!"

"आजकल तो हुल्लड़ का ज़माना भी नहीं है, जब हिन्दु-मुसलमान एक-दूसरे को काटते थे।"

"गाम में ऐसा करम तो आज तक भी कभी नहीं हुआ।"

"गाम में कोई ऐसा गुंडा भी नहीं है।"

"आजकल कोई बदअमनी भी नहीं है।"

उसी समय वार्ड पंच और सरपंच दोनों आ गए। दोनों ने इस कौतुक को देखा और देखकर चकित रह गए। पंच ने बढ़कर कहा, "यह वाका कब हुआ है?"

गरीब किसान बोला, "महाराज पंच साहब! मैं तो हल लेकर साँझ को अपने खेत पर आया था। उस बखत मैंने देखा, खून की बूँदें पड़ी थीं और मेरी लड़की वहाँ नहीं थी। धरती कुरेदते ही मेरी बिटिया की लाश निकली..." उसी समय उसकी स्त्री भयानक स्वर से चीत्कार करके रोने लगी, जैसे उसे फिर से याद आ गया था कि उसकी बेटी को कत्ल कर दिया गया था। किसान का दिल घुट रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह करे तो क्या करे। उसने फिर कहा, "जाने किसने हत्या की, कब की!"

लेकिन निहालकौर नहीं बोली। सरपंच स्तब्ध दृष्टि से देखता रहा और उसने कहा, "तुम लोग एक रिपोर्ट हमारी पंचायत में कर दो, ताकि हम उसे पुलिस में भेज दें क्योंकि यह दस्तन्दाज़ी पुलिस केस है, इसमें हम कुछ भी नहीं कर सकते।"

लोग बोले, "सरपंच साब, यह तो ठीक है, लेकिन बात तो दूसरी है। लाश इस तरह से कब तक पड़ी रहेगी! आप यह हुकम तो दे दें कि इसको दाग लग जाए, वरना हम सब लोगों को रात-भर यहाँ पड़ा रहना पड़ेगा।"

दूसरे आदमी ने कहा, "इसकी मिट्‌टी तो खराब न की जाय।"

सरपंच ने कहा, "भाई, इस चीज को पुलिस ही तय करेगी। यह कतल का केस है। अगर यह किसी कुएँ वगैरा में गिर पड़ती, तो हम लोग पंचायतनामा तस्दीक करके दाग लगा देते। अब तुम लोग देर न करो। रात ज्यादा जा चुकी है। चौकीदार और चपरासी को पुलिस स्टेशन भेजना है, जल्दी-से-जल्दी रिपोर्ट लिख के दीजिए।"

उस गरीब किसान ने एक लड़के से कागज लिखवाया, दो गवाही कराईं और सरपंच साहब को कागज दे दिया। सरपंच ने फौरन आगे की कार्रवाई की और कहा, "एक

कैफियत पुलिस के सब-इंस्पेक्टर के नाम लिखकर, मेरे दस्तखत कराकर, इसी वक्त गाँव के चौकीदार और सिपाही को दे दो। वे लोग रात में ही पहुँचा देंगे।" सेक्रेटरी को बुलवाया गया और सेक्रेटरी साहब ने फौरन कैफियत लिखकर चपरासी पंचायत व चौकीदार को देकर उन्हें थाने की तरफ रवाना कर दिया और सब मोहल्ले वाले उस गरीब किसान के पास बैठे रहे, जिसके घर में आज चूल्हा नहीं जला था और जिसके बच्चे आज भूखे थे। अड़ोसी-पड़ोसियों ने अपने घरों से ठंडी रोटियाँ लाकर बच्चों को दीं। उसके बच्चे छोटे-छोटे थे। वे चाव से रोटी खाने लगे और सारे मोहल्ले में उस रात चूल्हा नहीं जला। (गाँव में ऐसा कायदा होता है कि जब तक मुर्दे को दाग नहीं लग जाता, तब तक कोई शख्स खाना नहीं खाता। शहर के लोग इस बात को नहीं मानते, क्योंकि वे लोग जगह-जगह के होते हैं उनमें गाँव के लोगों का सा बिरादराना ताल्लुक नहीं होता। गाँव के लोग जाति के रहते हुए भी, उमर के हिसाब से एक-दूसरे को इज़्ज़त देते हैं।)

धीरे-धीरे रात निकल गई। उस दिन मुर्गा भी बोला था तो देर से। सुबह के पाँच बजे सरपंच साहब के मकान पर पुलिस आकर खड़ी हो गई और सब-इंस्पेक्टर साहब ने आवाज़ दी, "अरे भाई, कहाँ हैं सरपंच साहब?"

सरपंच साहब के छोटे लड़के ने जवाब दिया, "सो रहे हैं, अभी उठे नहीं हैं।"

पास खड़े पटवारी ने कहा, "आप उनको इत्तला दे दें कि दरोगाजी आ गए हैं और आपको याद कर रहे हैं। वे थाने पुलिस से आए हैं।"

सरपंच साहब बिस्तर से उठे और अपने चपरासी से बोले, "तुम दरोगाजी के लिए फौरन चाय बनाकर ले आओ।"

आज्ञा पाकर चपरासी ने पहले भैंस का दूध काढ़ा और फिर चूल्हा जलाकर देगची में पानी गरम करने लगा।

उधर सरपंच साहब फौरन नित्य नैमित्तिक कार्यों से निबटकर, हाथ मुँह धोकर, कपड़े बदलकर, दरोगा के पास चले आए। दरोगा ने उठकर हाथ मिलाया और आपस में बातें शुरू हुईं। इतनी देर में चपरासी चाय बनाकर ले आया। उसने लोटे से चाय शीशे के गिलासों में उंडेली। दरोगाजी और सरपंच साहब ने चाय पी। इसके बाद चपरासी ने दरोगाजी के साथ आए मुंशी और चपरासी को चाय पिलाई। तदुपरांत दरोगाजी को साथ लेकर सरपंच साहब मरघट में पहुँचे और रास्ते में उनको वह सारा किस्सा बताया गया। दरोगाजी ने मुंशीजी को आदेश दिया, "तुम सारी रिपोर्ट दर्ज करो और दो कांस्टेबलों को कैफियत लिखकर अस्पताल के लिए भेज दिया जाए, लड़की का बाप व उसके साथ दो आदमी गाड़ी में लाश को रखकर अस्पताल ले जाएँ, क्योंकि इस लाश का पोस्टमार्टम होना ज़रूरी है। बिना उसके इस लाश को दाग नहीं लग सकता।"

मुंशीजी ने दरोगाजी का आदेश पाकर कैफियत लिख दी और उसके बाद लाश को दो कांस्टेबलों के साथ अस्पताल को रवाना कर दिया गया। उस समय लड़की की माँ का

हृदय धर्म की दुहाई दे-देकर भीतर-ही-भीतर रोने लगा। (लोगों का यह विचार होता है कि अपने घर के अमुक व्यक्ति के साथ अमुक व्यवहार होना चाहिए। यदि उस तरह का व्यवहार उस व्यक्ति को नही मिल पाता, तो इसके लिए हृदय में एक वेदना उठती है।) यह खबर निहालकौर को भी मिली। उसने सुना और नीचे का होंठ अपने दांतों के बीच में हल्के से दबा लिया।

दरोगाजी सरपंच साहब को साथ लेकर घटनास्थल पर पहुँचे। इस समय उनके साथ अड़ोस-पड़ोस के कुछ काश्तकार भी थे। दरोगाजी कस्बा जहाँगीरपुर से आए हैं— यह सुनकर लोगों में एक कौतूहल भी जाग उठा था।

इधर उस लड़की का बाप गाड़ी में लाश रखकर सिपाहियों के साथ अस्पताल में पहुँचा। अस्पताल में मरीज़ों की भीड़ हो रही थी। डॉक्टर साहब को देखने तक की फुरसत नहीं थी। सिपाहियों ने डॉक्टर साहब को कैफियत दी। डॉक्टर साहब पढ़कर बोले, “आप लोग ज़रा बैठ जाओ, मैं मरीज़ों को दवा दे दूँ।” एक घण्टे बाद डॉक्टर साहब को कुछ फुरसत मिली। जो मरीज़ बच गए, उनको उन्होंने कम्पाउण्डर के हवाले कर दिया और उससे कह दिया कि तुम फौरन उनको दवा देकर चले आओ, लाश का पोस्टमार्टम करना है और फौरन लाशवाली गाड़ी में बैठकर डॉक्टर साहब पोस्टमार्टम भवन की ओर चल दिए। वह जगह करीब सौ गज दूर थी। गाड़ी से गरीब किसान ने अपनी लड़की की लाश को उठाया और अपने साथियों के साथ उसे उठाकर उसने भीतर पहुँचा दिया। डॉक्टर साहब ने कम्पाउण्डर और भंगी को भीतर बुलाकर किवाड़ लगा लिए। वहीं किसान और उसके साथी बाहर बैठे रहे। दो घण्टे के बाद उन्होंने वह लाश घरवालों के हवाले कर दी। वे लोग उसे गाड़ी में रखकर अपने गाँव को ले आए। उसे गाँव के बाहर-ही-बाहर निकालकर श्मशान-भूमि पर ले गए। वहाँ पर उसके दाग की तैयारियाँ कीं। लाश को लोगों ने देखा तो उसके जगह-जगह से धब्बे पड़ रहे थे। डॉक्टर ने उसको चीर-चार दिया था और अब वह देखने में बड़ी भयानक लग रही थी। जब अपनी लड़की का यह स्वरूप उस किसान ने देखा, तो उसकी समझ में नहीं आया कि वह रोये या हंसे।

इस लड़की को उसने बहुत दुलार से पाला था। यह लड़की उसकी गोद में खेला करती थी। यह लड़की उससे तोतली बातें किया करती थी। इस लड़की की शादी के उसने बड़े-बड़े सपने देखे थे। लेकिन फिर उसने मन में कहा—अरे, कौन ठिकाना माटी का? माटी मिटकर राख बनेगी। इसके भीतर जो हृदय था, वह तो न रहा। मेरी बिटिया तो पहले ही चली गई थी। (पर ममता अदेखी की नहीं होती, माटी की होती है। आँखों में आँसू निकाल लाने की ताकत याद के चुभीले पंजों में होती है। मगर याद के पंजे अपने-आप में कुछ नहीं होते। वे किसी माटी से पैदा होने वाले आलोक के समान होते हैं। उनकी ताकत बहुत बड़ी होती है। वह बहुत दूर तक फैल सकती है, सिमट सकती है, अपने-आप में, अपने भीतर; लेकिन हर टीस, हर कसक एक अरमान के साथ चलती है। हर अरमान माटी

का मेहमान होता है। अब वह माटी कट गई जिस माटी को देखकर आँखें ठंडी होती थीं,अब वे उस माटी को देखने में भी डरने लगीं।) लेकिन गरीब किसान था। वह इतना समझता भी नहीं था। वह तो एक चीज देख रहा था कि अगर भाग उसके साथ होता तो इसका धरम न बिगड़ता। वह इतना तो समझता था कि उसकी लड़की के साथ ज़िना किया गया था। इतना वह समझता था कि हत्यारों ने उसकी लड़की को काटकर ज़मीन में गाड़ दिया था। इतना वह समझता था कि इसी की जांच के लिए उस लाश को काट दिया गया था। उस लाश को जिसकी गरदन अलग कटी पड़ी थी। उस लाश को जिसके जीवित रूप को कभी उसने अपने मन से प्यार किया था। यह एक अपमान की भावना थी, इसमें एक बहुत बड़ी कचोट थी। वह चारों ओर देखता था, तो वही गाँव था, वही रहने वाले लोग थे; लेकिन आज उनकी आँखों में कोई और भाव था। आज ऐसा लगता था कि वे पुराने से पत्थर, और वे मिट्टी की दीवारें उससे कुछ और कह रही थीं। जैसे आज गाय-भैसों के खुरों से उठी हुई धूल भी उदास थी। जैसे आज गोबर के बिटौरे भी सिर झुकाकर बैठ गए थे। जैसे आज खेतों पर से एक नीरवता अपना सिर उठा रही थी और उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह जहाँ अपने को बहुत सुरक्षित समझता था, वह वहाँ वास्तव में बहुत सुरक्षित नहीं था। (लेकिन भाग्य का तूफान भी कितना अजीब है! उसमें यह ताकत है कि हज़ार घरों के बीच में एक मकान पर बर्फ पड़ सकती है और हममें से हज़ार आदमियों के बीच में एक आदमी को साँप काट सकता है, ज़मीन से निकलकर!)

(जहाँ व्यक्ति और व्यक्ति का भेद होता है, वहाँ भाग्य की संज्ञा देकर उस विभेद को समझाने का प्रयत्न किया जाता रहा है। उसके सामने को मनुष्य को सिर झुकाना ही पड़ता है।)

थोड़ी देर बाद दाग लग गया। लपटें हहरानें लगीं। फिर उन लपटों को यह बिलकुल नहीं मालूम था कि यह लाश पोस्टमार्टम की है या मलेरिया से मरी है या इसे कुछ और हो गया है। उनको तो यह ज्ञात था कि वह खाए जाने वाली चीज़ है और उसे खा लिया जाए, यही अच्छा है। जब चिता जल चुकी तब वह किसान, उसके पड़ोसी और नाई, नहा-धोकर घर पहुँचे।

घर पर रोते-रोते लड़की की माँ की हालत खराब हो चली थी। अड़ोस-पड़ोस की औरतें उसको समझा रही थीं। घर वीरान-सा लग रहा था। वह तो वीरान-सा लगना ही था। जिस घोंसले की सबसे बड़ी चिड़िया गायब हो गई हो, उसका उजड़ता हुआ दिखाई देना कोई ताज्जुब की बात नहीं थी। घर के मवेशी जिस खूंटे पर बँधे थे, उसी पर भूखे बँधे हुए थे, क्योंकि मरने वाली ही उनको पानी पिलाती थी, उनके लिए सानी करती थी। घर में काफी कूड़ा-करकट जमा हो गया था, क्योंकि आने-जाने वाले बाहर के रिश्तेदार फिरने के लिए आ रहे थे। बाकी लोग उनके सामने मातम मना रहे थे और जो मर चुकी थी, वही उस घर में सफाई करती थी, लीपा-पोती करती थी, वही वहाँ मुस्कराती रहती थी।

(ज़िन्दगी भी कितनी अजीब है! कोई आदमी या औरत दिन-रात में कुछ काम करते रहते हैं। जब वे नहीं रहते तो वे काम रुक जाते हैं, तो लोगों को उन कामों के रुक जाने की वजह से दु:ख होता है, और वे उन लोगों के लिए रोते हैं। और वे रोते हैं इसलिए कि फिर वे उन्हें लौटाकर नहीं ला सकते।) और लड़की की माँ को ऐसा लग रहा था कि जैसे ज़िन्दगी फिर बदल गयी थी। एक दिन वह अपने मायके से आई थी, तब सब-कुछ लुटकर उसका घर फिर से आबाद हुआ था और अब उसकी बहुत दिनों की फसल उजड़ गई थी।

घर में से रुदन उठ रहा था। अड़ोस-पड़ोस की औरतें बराबर आकर रोने को रोकती थीं और उस किसान का खेत भी अब सूना पड़ा था। आकाश के आवारा पक्षी उस वक्त उसे चुग रहे थे। इधर-उधर के आए बैल जानते थे कि अब देखनेवाला कोई नहीं है। वे मज़े में पौधों को रौंद रहे थे और फसल उजाड़ रहे थे। देखनेवाले इधर-उधर से देखते थे और कहते थे कि हाय, बेचारे के साथ कैसी हुई! देखो, खेत उजड़ा चला जा रहा है।

दूसरा देखनेवाला कहता था, “हाय, बेचारे का कोई देखनेवाला नहीं रहा।” और यह कहते हुए जैसे उसके सामने का दृश्य गायब हो जाता था। उसे जैसे खुद को दिखाई नहीं देता था।

(और उसे दिखाई भी क्यों देता! उसके पास अपना खेत था। उसे उसकी देख-भाल करनी थी। अगर वह अपने पड़ोसी की खेती की देखभाल करने लगता, तो उसके खेत की देखभाल कौन करता! मजबूरी में इंसान बँधा रहता है। इस बंधन का एक सत्य बन गया है—आत्मरक्षा; और आत्मरक्षा एक स्वार्थ है, लेकिन समाज के नियमों में अब वह कानून बन चुका है।)

दरोगाजी ने घटनास्थल पर पहुँचकर मौके का नक्शा तैयार कराया। इर्द-गिर्द के खेतवालों के नाम पूछे और उन्हें नोट किया गया। अब अड़ोस-पड़ोस के काश्तकारों के नाम लिखे गए। तो लोगों में सन्नाटा छा गया। उनकी आँखों में कौतूहल, भय और घबराहट छा गई और उनके भीतर गुस्सा जगा। जिस आदमी की बेटी मर गई थी, उसके प्रति उनके दिलों में हमदर्दी अब भी थी; लेकिन हमदर्दी से ऊपर एक विचार आया, कहीं हम न फंस जाएँ; क्योंकि वे जानते थे पुलिस क्या होती है।

(पुलिस : एक ऐसा जानवर होता है जिसको लोग दरिन्दा कहते हैं, जो सूंघता है तो आदमी की जान-सी निकल जाती है और वह गुर्राता है, चीरता-फाड़ता है, लेकिन उसके पंजों में से मनुष्य छूट नहीं पाता; उसको कहते हैं पुलिस। पुलिस एक कांतर है, उसके पास कानून के हज़ारों काँटे हैं। उसके पास अधिकार है। पुलिस : लोग जुर्म करते हैं, गुंडागर्दी करते हैं। उन जुर्मों को रोकने के लिए एक संगठन बनाया गया है, उसको पुलिस कहते हैं। पर यह संगठन हृदयहीन होता है। पुलिस को देखकर लोग विश्वास नहीं करते। उनको डर लगता है कि जाने हम कहाँ फंस जाएँगे, इसलिए कि बाकी लोग कानून को न जानकर

गलतियाँ करते हैं और पुलिस के लोग कानून से बचकर गुंडागर्दी करते हैं, क्योंकि वे कानून को जानते हैं।)

लोगों को कचहरियाँ दिखाई देने लगीं। वहाँ के हृदयहीन मुंशी-मुल्ला दिखाई देने लगे। वहाँ के गर्वीले अफसर दिखाई देने लगे। (इन तमाम लोगों में, जो वहाँ अफसरी करते हैं, वहाँ जो अमलागीरी करते हैं, हर मनुष्य अच्छा होता है, उसके एक हृदय होता है; लेकिन जब उस चलनी में तार की तरह आ जाता है, तब वह कुछ रोक नहीं पाता। सब-कुछ उसमें से छनने लगता है। फिर उसका अपनापन खो जाता है। इसीलिए कम पढ़े-लिखे लोग, जिन्हें सांस्कृतिक शिक्षा पूरी से नहीं दी जाती, उन लोगों को कानून का रखवाला बनाया जाता है। उनका नैतिक स्तर कभी इतना बौद्धिक बन ही नहीं पाता कि वे अपने हाथ में आए हुए अधिकार के मद को झेल सकें। उनके अफसर उनसे अधिक अधिकार पाकर, अपने अमले को अपना गुलाम समझते हैं और उसका नतीजा यह होता है कि वह गुलाम अपने हाथ में आए हुए को छोड़ना नहीं जानता। यह एक चक्र है जहाँ लोग इज़्ज़त और डिसिप्लिन के नाम पर जहालत के आदी हो जाते हैं।) यों लोगों ने जब देखा कि उनके नाम दर्ज कर लिए गए थे, तो उनको लगा कि मरने वाली लड़की की वजह से उनके नाम फँसे थे और अपने-आप मन में यह भाव उठने लगा कि किसी तरह अपनी खाल को बचाओ, कहीं ऐसा न हो कि हम लोग किसी चक्कर में फँस जाएँ!

मौके की जाँच करने के बाद दरोगाजी थाने को वापस रवाना हुए। फोटो लेने वाला भी कस्बे को लौट गया। पोस्टमार्टम के लिए गए हुए दोनों कांस्टेबल वापस लौट आए। उन्होंने डॉक्टरी रिपोर्ट को दरोगाजी के सामने पेश किया। दरोगाजी ने दफा 302 का मुकदमा कायम किया और रिपोर्ट दाखिल कर दी गई। रिपोर्ट को देखने से मालूम हुआ कि लड़की से ज़िना बिल जब्र किया गया और बाद में उसे किसी तेज़ औज़ार से काटा गया और पैरों में ज़ेवर होने की वजह से उसके पैरों को भी काट दिया गया।

दरोगाजी ने इस केस की रिपोर्ट अपने अफसरान सर्किल इंस्पेक्टर साहब व डी. एस. पी. व एस. पी. साहब को भेजी। अफसरान रिपोर्ट को पाते ही फौरन तहकीकात के लिए चल दिए और थाने पर आ गए। दरोगाजी से पूछा गया कि तुमने अभी तक इस दिशा में क्या किया है?

दरोगाजी ने कहा, “श्रीमान, महादेय...”

[आज़ादी के बाद हिन्दी का प्रचार थानों में अधिक हो गया है।]

“मैं इस केस की जाँच कर रहा हूँ। अभी इस केस को हुए दो-तीन रोज़ हुए हैं। मैं जल्दी से जाँच करके एक हफ्ते में असलियत निकालकर श्रीमानजी की सेवा में रख दूँगा।” अब एस. पी. साहब व सर्किल इंस्पेक्टर साहब को साथ लेकर दरोगाजी घटनास्थल पर पहुँचे। पंच और सरपंच बुलाए गए और इस केस की अस्सरे नौ जाँच की गई, लेकिन असलियत का पता नहीं चला।

गाँव में सनसनी फैल गई थी। काश्तकार अर्थात् जमींदार लोग अपने बंगलों में बैठे बातें करते थे और कहते थे—

“भाइयों, बड़ा खतरनाक केस है।”

“अजी, मुझे लगे है, इस केस में सालिम गाँव फँसेगा।”

“असलियत की जाँच तो होनी चाहिए।”

“हो चुकी असलियत की जाँच। पुलिस खाएगी-पिएगी।”

“ऐसा काम गाँव का तो कोई आदमी नहीं कर सकता। यह बात ठीक लगती है?”

“कैसे?”

“ज़रूर कोई बाहर का आदमी है।”

“पर अदावत तो किसी की न थी।”

“अजी, जवानी बड़ी अदावतें पैदा कर देती है।”

“तैयार खेत देखकर कौन नहीं चाहता कि उसे हड़प लूँ!”

“सोचा होगा किसी ने कि खेत काबू में नहीं आता, तो फसल ही पलट दूँ, मान जाएगा।”

सुनने वाले गम्भीरता से सिर हिलाते, फिर हुक्का गुड़गुड़ाते। वह एक मुँह से दूसरे मुँह में जाता। कसैला धुआँ उठता। माटी की दीवारों से टकराता। ऊँचे मंचों पर बैठे लोग गम्भीर बनकर सिर हिलाते, जैसे वे बड़े बुद्धिमान थे। कुछ अकड़ते नज़र आते, पर दिल ही दिल में डरते। फिर बच्चों को डाँट लगती कि हल्ला मत करो। फिर बिजार भी भगाया जाता तो धीरे से।

फिर बात होती, “लेकिन अफसोस इस बात का है कि चारों तरफ खेतों पर आदमी मौजूद हैं, बाहर के आदमी की तो इस तरह हिम्मत नहीं पड़ सकती।”

“ऐसा पास के खेतवाले भी नहीं कर सकते।”

“ऐसा तो कोई आदमी नहीं था।”

“अरे, राम जाने; जो होने को होती है वह होकर रहती है।”

डी. एस. पी. साहब अपनी जीप लेकर वापस थाने को रवाना हो गए। वे बड़े कस्बे में रहते थे जहाँ एस. डी. एम. और मुंसिफ की कचहरियाँ थीं। जहाँगीरपुर से वहाँ बसें जाती थीं। वहाँ जहाँगीरपुर के लोग बड़े कामों से जाते थे। उस बड़े कस्बे का नाम था—रमोना।

दूसरे दिन थानेदार साहब ने चार कांस्टेबलों को भेजा और गाँव के मुखिया (नम्बरदार) व पंच व सरपंच साहब व उस झगड़े के आसपास के खेतवालों को बुलाया। चारों कांस्टेबल सबको लेकर उस थाने पर पहुँचे और दरोगाजी ने अपनी इन्क्वायरी शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद दरोगाजी ने कुछ आदमियों को नीचे बैठा दिया और कुछ आदमियों

को ऊपर थाने पर बैठा लिया और सिपाहियों को हुक्म दिया कि इनके हाथ बाँधकर ऊपर लटका दो और बेंत मारना शुरू कर दो। सिपाहियों ने फौरन हुक्म बजाया।

जहाँगीरपुर में तहसील थी। डाकखाना था। वह डूंमरपुर के लिए सभ्यता का केन्द्र था। यहाँ थाना कस्बे की बगल में था। थाने के सामने आम रास्ता बहता था। एक डामर रोड थी। उस पर कुछ बस व ट्रकें वगैरह भी चलती थीं। सिपाहियों ने जब मार लगाना शुरू किया तो थाने में कोहराम मचने लगा। जो लोग नीचे बैठे हुए थे, काँपने लगे और लघु शंका और दीर्घ शंका के बहाने इधर-उधर चलने लगे। दरोगाजी ने सोचा, ऐसा न हो कि इनमें से कोई आदमी इधर-उधर चला जाए और हाथ से निकल जाए, या बात को इधर-उधर फैला दे। उन्होंने पुकारकर कांस्टेबल को आवाज़ दी, “नीचेवालों को फौरन ऊपर ले आओ और उनको हवालात में बन्द कर दो।” सिपाहियों ने हुक्म पाते ही दोनों हवालातों में उन लोगों को बन्द कर दिया और बाकी आदमी, जिनके हाथ बाँधकर ऊपर लटका रखा था, उनको मारना शुरू कर दिया। इस तरह से सब लोगों पर डंडे उछटने शुरू हो गए। कोई कुछ चिल्ला रहा था तो कोई कुछ। दरोगाजी ने किसी की बात नहीं सुनी। वे तो इस समय एक डॉक्टर के समान थे। उन्हें तो पके फोड़े की चीरा-फाड़ी करनी थी और मरीज़ की इस चीख-पुकार का उन पर कोई असर नहीं पड़ रहा था। वैसे वे बड़े विनम्र थे। समय-असमय पर हर मरीज़ से श्रीमानजी कहकर बात करते थे। तब उनकी मूँछें नीचे गिर जाती थीं। और फिर जैसे अपनी उस बाहरी विनम्रता का प्रायश्चित्त करते हुए वे अपनी मूँछों पर ताव देकर उन्हें उठा देते और तब उनके आतंक से लोग काँपने लगते। पिटाई बराबर होती रही।

रात के बारह बजे तक पिटाई होती रही, तब सरपंच साहब बोले, “दरोगाजी, अब हमसे नहीं देखा जाता। अब हमें इजाज़त दीजिए।”

दरोगाजी ने बेफिक्री से कहा, “सरपंच साहब! आप घबराइए नहीं, मैं अभी आपको असलियत निकालकर देता हूँ।” सरपंच साहब फिर चुपचाप कुर्सी पर बैठ गए और सिपाहियों का यह हाल था कि अगर कोई शख्स ज़रा भी आँख मींचकर सोने की हिम्मत करता तो फौरन आँखों पर पानी के छींटे मारकर वे उन पर डंडे बरसाने शुरू कर देते।

आखिर पिटाई की भी हद हुई। एक आदमी ने कहा, “हुजूर दरोगाजी! हमारी भी तो सुनो। इस तरह बुरी तरह हमें क्यों पीट रहे हो? हमारी विनती सुनो!”

दरोगाजी ने कहा, “मैं तुम्हारी कुछ नहीं सुनूँगा। आज मुझे चार रोज़ हो गए, लेकिन तुमने कोई भी बात निकालकर नहीं दी। अब मैं तुम्हें और ज़्यादा तंग करूँगा, ताकि मुझे इस कत्ल का पता लग सके।” उस काश्तकार का नाम राधे था। उसने कहा, “महाराज, हमें कम से कम एक दिन की इजाज़त और दीजिए, ताकि हम गाँव में और जाँच कर लें।”

दरोगाजी ने कहा, “मैं तुमको एक घंटे की भी इजाज़त नहीं दे सकता।”

राधे ने सरपंच और वार्ड पंच साहब की ओर दयनीय दृष्टि से देखा। सरपंच ने दरोगाजी से कहा, “आप इनको हमारी ज़मानत पर छोड़ दें, हम इनको एक दिन बाद

आपके सामने लाकर हाज़िर कर देंगे।"

थाने के सामने लोगों की भीड़ जमा हो रही थी। तमाशा देखने वाले तमाशा देख रहे थे। कस्बे में सनसनी फैल गई थी। जब वे तीन-चार मील पैदल चलकर जहाँगीरपुर से डूंमरपुर को चले तो वे थककर चूर-चूर हो रहे थे। सरपंच और वार्ड पंच उन्हें लेकर गाँव में पहुँचे। सब लोगों के हाथ-पैर फूल रहे थे। चलना-फिरना मुश्किल था। मुँह भी सूजा हुआ था, मुँह से पानी भी नहीं पिया जाता था। रात को सब लोगों ने पंचायत जोड़ी। बातें होने लगीं, "भाइयों, सबकी खाल खराब क्यों कराते हो? अगर कोई हम लोगों में से वह हो तो बतला दे।"

"गाँव से बड़ा राम नहीं।"

"सब ही के बाल-बच्चे हैं।"

"सबको क्यों मोहताज करवाते हो?"

इस पंचायत में उस लड़की का बाप भी मौजूद था। वह बेचारा बहुत दुखी था। पहला दुःख तो उसको अपनी लड़की के मरने का था, दूसरा दुःख उसे यह था कि उसके आसपास के खेतवाले पिट रहे थे। उन लोगों ने उसकी मदद की थी। उन लोगों में उसका दिन-रात का उठना-बैठना था और उसकी लड़की ही के कारण वे लोग पिट रहे थे। उनका कारोबार बन्द था, उनके घरों में चूल्हा नहीं जला था। उनकी स्त्रियाँ रोती थीं। उनके बच्चे बिलबिलाते थे और उसके कानों में यह आवाज़ आती थी कि तेरे कारण हमारे घर के लोग बन्द हैं। उसको लगता कि अपराधी वह स्वयं था। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह इस समय क्या करे। यह उसके लिए एक दूसरा हाहाकार था। उसको खबर मिल रही थी कि अमुक-अमुक लोग पिट रहे थे। इस-इस तरह दरोगाजी ने उनके डंडे लगवाए। ये खबरें सुनकर उनकी माँएँ, बहनें और पत्नियाँ उसकी ओर ऐसे देखतीं जैसे वह स्वयं पिटवा रहा था, वह तो उस परिस्थिति में भी नहीं था कि उनको तसल्ली दे पाता। उसकी स्त्री क्रोध से भर गई थी, अपनी पुत्री की हत्या पर। बेटी का लाड़-दुलार उसे याद आता था। लेकिन घुट रही थी वह भीतर-ही-भीतर। इधर-उधर की औरतें रोते हुए कहती थीं, "अरे, सत्यानाश हो जाए उसका, जिसके कारण बेकसूर पिट रहे हैं।" और किसान और उसकी पत्नी कोई भी उत्तर नहीं दे पाते। कल तक सारा पड़ोस उनके साथ हमदर्दी रखता था, अब जैसे सारा पड़ोस सहम गया था। यह एक विचित्र द्वन्द्व था 'आत्मयातना के इन पलों में वह आगे आ गया और उसने कहा, "पंचो, मैं हिरदेराम वल्द धनीराम हूँ। हाथ जोड़कर मेरी अरज है कि इसमें न तो मेरा कोई दोष है, न यह सब मैंने कराया है। न मैंने कोई दावा किया है और न कुछ शिकायत की है। यह तो पुलिस अपने-आप लोगों को तंग कर रही है और मैं भी तंग हो रहा हूँ।"

पंचायत के लोगों ने उसे देखा। धनीराम का बेटा हिरदेराम। यह वही आदमी है जिसकी बेटी का हाल में ज़िना बिल जब्र के बाद कत्ल कर दिया गया था। सब जानते थे

कि वह बहुत गरीब था, सब जानते थे कि उसके साथ ऐसा हुआ था, जैसा होना नहीं चाहिए था। सब यह भी जानते थे कि वह सवेरे उठता था, तब चिड़ियों के चहचहाने के साथ, मक्खियों के जगने के पहले, वह अपने काम पर लग जाता था। अब वे लोग सोचने लगे। भले-बुरे की पहचान के मापदंड दूसरे थे। वे लोग परस्पर मन ही मन तर्क करने लगे। हिरदेराम अच्छा आदमी है, भला आदमी है। उसने कभी कलाकन्द खाकर झूठी गवाही नहीं दी।

एक बार मनोहर गूजर ने उससे कहा था कि गाँव की लड़की के ब्याह के बारे में झूठ बोल दे कि उसके गाँव का फलाना लड़का बड़ा सुन्दर था, मनोहर उसे रुपया-धेली उधार भी दिया करता था। लेकिन वह अपने बौहरे से विचलित नहीं हुआ था। और जब उससे पूछा गया था तो उसने कह दिया था कि दूल्हे की एक आँख से कुछ मट्ठा दिखाई देता है। जिससे बात प्रकट हो गई थी कि वह काना था। हिरदेराम वैसे दबंग आदमी भी था। एक बार एक नए डिप्टी साहब खेतों का मुआइना करने आए थे, तो उन्होंने ज्वार की फसल को देखकर कहा था, “वाह! अबके बाजरा कितना अच्छा खड़ा हुआ है!” तो सारे अमले के सामने उसने सिर हिलाकर कह दिया था, “अरे, तू इतना बड़ा आदमी होकर यह भी नहीं जानता कि बाजरा और ज्वार किसे कहते हैं। तुझे अफसर किसने बना दिया?”

तहसीलदार, कानूनगो, नायब साहब और बाकी लोग मन-ही-मन प्रसन्न हो उठे थे कि वाह, इसने कैसी चोट की है? लेकिन ऊपर से दिखाने को कहा था, “क्यों बे गँवार, कैसे बोलता है! अदब से बात करना नहीं आता!”

तो हिरदेराम हाथ जोड़कर बोला था, “हुज़ूर, अफसर के रहते मैं अदब से क्यों बोलूँगा! मैं अफसर से ही क्यों न बोलूँगा?”

डिप्टी, साहब को भी हँसी आ गई थी। उन्होंने कहा था, “गँवार है, इसे बकने दो।”

लेकिन ज्वार और बाजरे की यह दिल्लगी घूम-फिरकर कलक्टर तक पहुँच गई थी और डिप्टी साहब का तबादला कर दिया गया था। ऐसा था ये हिरदेराम कि जब गाँव में जोतों का झगड़ा पड़ा तो न किसी के लेने में था न किसी के देने में। अपना काम करता और दिन निकालता। यह भी निश्चित नहीं किया जा सकता था कि वह दिनों को धक्का दे रहा था या दिन उसे धक्का दे रहे थे। पर वह जिए जा रहा था। (वह मानो उस पेड़ की तरह था, जो उग आता है आँधी-पानी की मार और बौछार में। फिर कुछ दिन दिखाई देता रहता है उसी जगह; उसमें फिर परिवर्तन आता है तो यही कि अब उसमें एक नई डाल निकल आई है, अब उसमें हरियाली घट गई है या बढ़ गई है। लेकिन पेड़ अपनी जगह वहीं मौज़ूद है। कुछ दिनों बाद ऐसा होगा कि उस पेड़ की जड़ में दीमक लगेगी। वह दीमक बढ़ेगी, वह उसे अन्दर ही अन्दर खोखला करती रहेगी। तब फिर वह पेड़ गिर जाएगा। तब लोग उस पेड़ को ले जाएँगे और जला देंगे। उसको जला देने के बाद अर्थात् मनुष्य-रूपी पेड़ को जला देने के बाद उसके फूलों को सोरोंजी पहुँचा दिया जाएगा। उसके बाद उसके प्रेत के

लिए बारह बामन कर दिए जाएँगे और इस प्रकार हिन्दुओं के अनन्त जीवनचक्र में एक सत्ता अपने अनाम रूप में फिर से विचरण करती रहेगी, अनन्त यातना, अनन्त भटकनों में।) गाँव के पंडित, हिरदेराम से प्रसन्न थे। वह हर तीज-त्यौहार पर उनकी सेवा करता था, वह इतना अधिक भोला था कि लोग उसको मूर्ख कहते थे, क्योंकि अधिक भलमनसाहत मूर्खता में गिनी जाती है। वह कहाँ जाकर मूर्खता में परिणत हो जाती है, यह भी आज तक कोई निश्चित नहीं कर सका है। (लोग उन भलमनसाहत को बुद्धिमत्ता कहते हैं जहाँ व्यक्ति अपनी हानि नहीं करता और किए का यश भोगता रहता है। लेकिन जहाँ वह सड़क से उतरकर, जहाँ वह गड्ढे में उतरकर, किसी को सड़क पर चढ़ाता है वहीं उसको मूर्ख की संज्ञा दी जाती है।)

पंचों ने उसे देखा और लोग कहने लगे, "अरे भाई हिरदेराम, इसमें तेरा क्या दोस है! यह हमारे पहले जन्म के संस्कार हैं जिनका हम फल पा रहे हैं। लेकिन यह तो जाँच होनी चाहिए कि हत्यारा कौन था।" पंचायत के आदमियों में से एक व्यक्ति ने कहा, "भाई लोगो! एक काम तो करो, पड़ोस में मेंड से मेड़ लगा हुआ सियाराम नाई का खेत है। वह बाहर रहता है। उसके खेत पर उसकी छोरी निहालकौर या उसकी माँ रखवाली करने जाती हैं। तुम उनसे तो बुलाकर पूछो। दूसरे रास्ते के सहारे बनैसिंह का खेत पड़ता है। बनैसिंह के खेत के पास से एक दूसरी पगडंडी इन खेतों को निकलती है। उसको मालूम होगा कि उस रास्ते से होकर कोई नया आदमी आया-गया है या नहीं।"

इस तरह से अलग-अलग लोगों ने अलग-अलग प्रस्ताव रखे।

रामधन ने कहा, "देखो भाई, रात के बारह बज चुके हैं, इस वक्त औरतों को बुलाना ठीक नहीं। सिर्फ बनैसिंह को बुलवा लें। उससे यह पता चल जाएगा कि उस रास्ते से कोई आदमी आया था या गया था या क्या हुआ।"

तुरन्त चौकीदार को आवाज़ दी गई। वह फौरन बनैसिंह को बुलाने चला गया।

चौकीदार रात को परेशान होता हुआ, अँधेरी रात में बिना रोशनी के बनैसिंह को बुलाने गाँव के दूसरे थोक में पहुँचा। उसने मकान पर जाकर आवाज़ दी और बनैसिंह को अपने साथ लिवाकर पंचायत में ले आया। बनैसिंह पंचायत में आकर बैठ गया और उसने हुक्का पीना शुरू किया।

बनैसिंह को बुलाने का प्रस्ताव रखने वाला व्यक्ति मटरू था। उसने कहा, "भाई बनैसिंह, आपको कतल का हाल तो मालूम है कि हम लोगों को किस तरह से पुलिस वालों ने तंग किया। अब यह तो बताओ कि उस दिन उस खेत से कोई नया आदमी गुज़रा था या उस दिन कौन-कौन आदमी उस खेत की रखवाली कर रहे थे?"

बनैसिंह ने गम्भीरता से सोचा और बहुत बुद्धिमत्ता से बोला, "भाई मटरू! मैं तो मचान पर बैठा हुआ था। मैंने तो किसी आदमी को नहीं देखा, क्योंकि मैं तो सुबह पाँच बजे को खेत पर जाता हूँ और स्याम को झालर-बजे खेत से आता हूँ। हाँ, एक बात ज़रूर

थी कि उस दिन श्री सरपंच साहब का लड़का व वार्ड पंच साहब का लड़का ज़रूर इधर होकर गए थे, क्योंकि उस दिन इन दोनों की छुट्टी थी और वे लोग पहली स्याम को मोटर से आए थे और करीब एक बजे दोपहर बाद वे लोग खेत पर ज़रूर गए थे। पहले उन्होंने मुझसे राम-राम की थी और थोड़ी देर के लिए मेरे पास बैठे थे। मैंने उनसे राजी-खुसी की पूछी थी और यह भी पूछा था भैया तुम कौन-से दर्जा में पढ़ते हो, तो उन्होंने कहा था कि हम तो दसवें दर्जा में पढ़ते हैं। मैं बड़ा खुश हुआ था कि हमारे गाँव के दो लड़के देखते-देखते किस तरह तरक्की कर गए थे और वे ज़रूर अफसर बनेंगे और फिर हम लोगों के काम आवेंगे। और तो मैंने किसी आदमी को आते-जाते नहीं देखा।"

मटरू ने कहा, "भाई बनैसिंह! उनके हाथ में क्या था!"

बनैसिंह ने खोपड़ी खुजाते हुए कहा, "खाली हाथ थे दोनों।"

आवाज़ें उठने लगीं, "अरे, सरपंच और वार्ड पंच साहब के लड़के ऐसे नहीं हैं। वे तो बड़े सज्जन और पढ़े-लिखे हैं, वे ऐसा नहीं कर सकते।"

"पीछे से कुछ दिलजलों की आवाज़ें आई, "अरे भाई, आजकल के लड़कों का पता नहीं। बाहर शहरों में जाकर बिगड़ जाते हैं।"

"काम तो कुछ होता नहीं, माँ-बाप का रुपया चट करते हैं।"

"अजी, देख ली पढ़ाई-लिखाई।"

"सनेमा और देखते हैं वहाँ, सनेमा।"

"कहाँ ऐसा तो नहीं है कि यह बदमासी उन्हीं लोगों की हो?"

फिर आवाज़ें उठीं, "अरे, क्या बक रहे हो?"

"अरे, ज़रा सोचकर बातें करो।"

"तुम तो घर के दीपक पर ही शक करने लगे कि इसी ने आग लगाई होगी।"

"उसके आसपास तो सब ठीक-ठीक है, उजाला हो रहा है।"

"अरे, बाहर की टटूंगी को ढूँढ़ो, टटूंगी को।"

और आपस में बातचीत चलती रही। पंचायत के लोगों को विश्वास नहीं हुआ।

एक आदमी ने कहा, "अरे भाइयो! ऐसा मत कहो। वे सरपंच और वार्ड पंच के लड़के हैं। अगर कहीं उन लोगों ने सुन लिया तो वे उल्टे हम पर ही केस लगा देंगे। आजकल पता नहीं है, कांग्रेस का जमाना है? वे लोग कांग्रेस के मेम्बर भी हैं, नेता भी हैं। सब लोग उनसे दबते हैं। आजकल उनका राज है। पैसे वाले हैं।

फिर एक आदमी ने कहा, "भाई इस तरह से उनसे कब तक दबे रहोगे? हमने ही तो उनको वोट देकर पंच और सरपंच बनाया, वरना पहले कौन पूछता था! झोली पसारी थी हमारे सामने आकर। हमारे घर तक में आ-आकर रोटी खा गए थे। भाभी-बहना कहते नहीं थकते थे। अब बात दूसरी है।"

और एक भारी स्वर उठा, “पहले आप लोग जाँच तो करो कि उनके लड़के वापस स्कूल पहुँच गए हैं या नहीं?”

रात ज़्यादा हो चुकी थी। सितारे ढल चले थे। बहुत लम्बी यात्रा थी उनकी। नीलिमा थी आकाश में, हवा भी ठंडी हो चली थी। दूर कहीं कुत्ते भूंक रहे थे। लोगों के शान्त होने पर कभी-कभी चोर-चिमगादड़ के पंखों की खड़खड़ाहट सुनाई दे जाती और फिर पेड़ों पर चिड़ियों का शोरगुल उठता, जो अपने अंडों की रखवाली करने के लिए पहरा दिया करती थीं। लोग अपने-अपने घरों की ओर सोने चल पड़े।

सुबह होने लगी। (चक्कियों की घरघराहट ने रात के सन्नाटे को पीसना शुरू किया और आटे की तरह कोलाहल उजला-उजला होकर चारों ओर फैलने लगा। कुछ मूर्ख ऐसे थे जो उस कच्चे आटे को चाटना चाहते थे और कुछ बुद्धिमान ऐसे थे जो इस कोलाहल की पकी-पकाई रोटी खाना चाहते थे।)

लोगों में फिर चर्चा होने लगी और वे फिर चौपाल पर इकट्ठे हुए। निहालकौर की माँ बुलाई गई। चौड़ी नथ पहननेवाली नाइन आई—मुँह पर घूंघट काढ़े। उसकी धोती पीली थी, अलबत्ता साफ नहीं थी। उसके हाथों में चूड़ियाँ चमक रही थीं।

“निहालकौर की अम्मा! तूने कोई नया आदमी आता-जाता अपने खेत की तरफ देखा था?”

निहालकौर की माँ ने कहा, “मैं उस दिन खेत पर नहीं गई थी। मेरी लड़की निहालकौर गई थी। मैं अभी उसको बुलाकर पूछती हूँ और जवाब देती हूँ।”

निहालकौर बुलाई गई। माँ ने पूछा, “क्यों री, तैंने किसी नए आदमी को देखा था?”

निहालकौर के गले में स्वर अटक गया। माँ की तीखी आँखें उसके चेहरे पर गड़ गईं! निहालकौर ने थूक निगलकर कहा, “अम्मा, तेरी सौंह, मैंने तो उस दिन कोई आदमी नहीं देखा। मैं तो अपने खेत पर रखवाली कर रही थी।”

माँ ने कहा, “अरे, तूने कोई आहट-आवाज सुनी थी?”

लड़की का स्वर फिर गले में अटक गया।

माँ ने कहा, “अरी, तेरा बाप परदेश में नौकरी कर रहा है। हम दोनों इकली हैं। आजकल हम लोगों से लोग खिलाफ हैं, क्योंकि जब से हम लोगों की बिरादरी में जे तै हुई है कि जूंठन न उठाई जाए और सादी-ब्याह के बहुत से काम बन्द हो गए हैं, तब से गाँव वाले खिलाफ हैं। इधर भंगी-चमार पीछे पड़े हैं कि नाई उनकी हिजामत बनाएँ। इस पंचायत के कारन तेरा बाप परदेश चला गया है। लोग हम पर कुढ़े बैठे हैं और अब तू मेरा खून काहे को जलाए जा रही है? तेरे दीदे फूट गए हों तो बता दे। नहीं तो कह दे कि तूने किसी को उस दिन देखा था।”

निहालकौर पर जैसे एक आवेश-सा छा गया। उसने लरजते हुए स्वर से कहा, “अम्माँ, उस दिन सरपंच का लड़का और वार्ड पंच का लड़का जरूर आए थे। पहले वे मेरे

खेत की तरफ आए थे। बाद में वे इसके खेत की तरफ चले गए। मैंने कोई सोरगुल तो नहीं सुना। बस इत्ती सी बात मुझे जरूर मालूम है।"

नाइन तब अपनी बेटी निहालकौर को लेकर चौपाल पर आ गई और कहने लगी, "मेरी लड़की ने कोई बात नहीं देखी है। सिर्फ एक-दो बजे बाद दोपहर के बखत उसने सरपंच साहब और वार्ड पंच साहब के लड़कों को जरूर रास्ते से गुजरते देखा था।"

उसकी बात खत्म हो गई। वह चली गई और लोगों में आपस में बातें होने लगीं।

"हम लोग एक दिन की जमानत पर सरपंच के कहने से आए थे। आज हम लोगों को फिर चलना है। देर मत करो, खाना वगैरा खा लो। अगर देर हो गई तो दरोगाजी फिर तंग करेंगे।"

उसी समय सरपंच साहब की थोक की तरफ से एक आदमी आया और उसने नई खबर सुनाई कि आज सरपंच और वार्ड पंच के लड़के स्कूल छोड़कर भाग गए हैं। उनका कोई पता नहीं है। सरपंच और वार्ड पंच दोनों बड़े परेशान हैं। दोनों बेचारे रात के गए हुए हैं।

लोगों में सन्नाटा-सा खिंच गया।

और

उस सन्नाटे में दहशत थी, मजबूरी थी, घुटन थी, जैसे लोगों के सामने एक बिजली-सी कौंध गई थी। लेकिन इससे पहले कि वे आकाश के उस प्रकाश को देख पाते, फिर से घना अंधेरा छा गया था। हींस की झाड़ी में कुत्ता पनाह लेने नहीं जाता। आकाश की ओर उड़ने वाला पक्षी ऊपर उड़ जाने के बाद ललचाई निगाह से धरती के पेड़ों की तरफ देखने लगता है। लेकिन बात में कशिश होती है। बात में से बात निकलती जाती है, लेकिन निकल आने के बाद वह अपने-आप में एक व्यक्तित्व धारण कर लेती है। उसको पकड़ पाना सहज नहीं लगता। निहालकौर और बनैसिंह दोनों की बात एक थी। निहालकौर के गदराए चेहरे पर लोगों ने शंका देखी थी। बनैसिंह के चेहरे पर छबराई मूंछें थीं। उसकी भौंहें मिली हुई थीं। परिश्रमी आदमी था। कभी-कभी चुनावों में भाग लेता था। वक्त-बेवक्त कन्धे पर रफल भी लटका लेता था। एक बार झोलेटोले गाँव के कांग्रेसी सरपंच रामसिंह तिवाड़ी से उसकी तू-तू, मैं-मैं हो गई थी। वह सरपंच था तो जाति का ब्राह्मण, लेकिन मूंछें ऊँची रखता था। खद्दर का कुर्ता पहनता, खद्दर की धोती। अहिंसा के लेक्चर देता, लेकिन कन्धे पर बन्दूक लटकाकर चलता। जब कोई वोट देने से इनकार करता, तो उसकी छाती पर बन्दूक अड़ा देता। उसकी गुंडागर्दी की कहानियाँ बड़ी दूर-दूर तक मशहूर थीं। लेकिन कांग्रेस खामोश थी और वह अहिंसा का पुजारी माना जाता था। बनैसिंह ने उसको एक औरत भगाने के किस्से पर लताड़ा। वह हलवाई की दुकान पर बैठा रबड़ी सटक रहा था। उसने बन्दूक की धमकी दी। बनैसिंह ने ठाकुर जवाहरसिंह की रफल उठा ली, जो पास ही बैठा था। ठाकुर मन-ही-मन प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह पुराने विचारों का आदमी था। कांग्रेसियों के लत्ते बिखरते देखकर उसे खुशी होती थी हालाँकि स्वयं कांग्रेसी था। लेकिन हठात् उसे ध्यान आया कि लेसन्स उसका अपना था। उसने झपटकर बनैसिंह को रोक लिया था। रामसिंह तिवाड़ी ने उसे गाली दी थी तो बनैसिंह ने भी उसे गाली देकर उस चौराहे पर उसकी मर्यादा बिगाड़ दी थी और बनैसिंह का कोई कुछ नहीं बिगाड़ पाया था। बनैसिंह की बात में दम था। बनैसिंह की बात में इज़्ज़त थी। पर तब तिवाड़ी का नाम छोटा था। तब वह बनैसिंह से ज़रा ही ऊँचा था, पर इस समय उसके नौकर भी बनैसिंह से ऊँचे ही चुके थे।

एक ओर आपस में उनमें बातें होने लगीं, "बनैसिंह ने कहा था।"

"निहालकौर कह रही है कि सरपंच का लड़का और पंच का लड़का साथ थे। खेत में सन्नाटा था। लड़की कत्ल कर दी गई।"

"क्या सचमुच उन दोनों ने कत्ल किया है?"

"लेकिन यह हो कैसे सकता है! वे दोनों कत्ल क्यों करने लगे?"

"पढ़ने वाले लड़के हैं। घर के खाते-पीते हैं।"

फिर एक बात धीरे से सुनाई दी, "लड़के जवान थे।"

फिर दूसरी आवाज़ सुनाई दी, "लड़की भी जवान थी।"

फिर तीसरे आदमी ने दबी ज़बान से कहा, "सायद..."

और उनके चेहरों पर खुशी झलकने लगी। एक हल्की-सी खुशी, जो अपने-आपको ज़ाहिर नहीं होने देना चाहती, जो मानो अपने-आपसे डरती है। अब दो नये रूप आँखों के सामने खेलने लगे। घुंघराले बालों वाला सरपंच का लड़का—नरायन और वार्ड पंच का लड़का—माधोसिंह। उठान जवानी, रग-पुट्‌टों से तैयार—एक भदैल सांड-सा, तो दूसरा कुम्मैत घोड़े-सा। गुड़ से रोटी खाते थे। लौनी से चुचाती रोटी चबाते थे और छककर दूध-मलाई खाते थे। जब से मदरसे-बाहर पढ़ने चले गए रमोना में, तब से कनस्तर भरकर घी जाया करता था दोनों को। लड़कों में ऐसी दाँतकाटी रोटी थी कि भाई-भाई से लगते थे। जहाँ तक बन पड़ता, एक-से कपड़े पहनते। उन्हीं की दोस्ती के कारण सरपंच और पंच दोस्त हो गए, वरना पहले आपस में कभी-कभी मनमुटाव भी रहता था।

यह बात थोड़ी ही देर में सारे गाँव में फैल गई। लोगों ने सुना। आश्चर्य से एक-दूसरे से कहा। और यह खबर बढ़ रही थी कि वे दोनों लड़के गायब थे। इससे लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ। पानवाले की दुकान पर चर्चा छिड़ चली, क्यों भाग गए?"

"कर्ज़ा कर लिया होगा सालों ने किसी के यहाँ! और क्या!!"

"हलवाई ने पैसे माँगे होंगे। भाग गए होंगे।"

"अजी, आजकल के लड़कों का क्या भरोसा, मास्टर को तो जूती लगावें।"

"बिस का नाम, बिस का नाम," भगत बनिए ने कहा, "ठीक कह रहे हो। बीड़ी पीवें बीड़ी। हाँ, बिस का नाम।" और वह फिर एक कुल्लड़ में दूध ऐसे ठण्डा करने लगा जैसे कई गज़ सफेद कपड़े को इधर से उधर हिला रहा हो।

फिर किसी ने कहा, "ठीक है, लेकिन बात असल में यह है कि शक की गुंजाइश है।" और तब किसी दिलजले ने कहा, "अजी, खून हुआ है—खून रंग लाएगा।"

"ऐसे दो-दो कौड़ी के आदमियों के खद्दर पहन लेने से यह थोड़ी ही है कि जुल्म होने लगे। अरे, रावण का राज न रहा। कंस का राज न रहा। हिरनाकुश का राज न रहा। सो इन टुपिया वालों का रह जाएगा? कल साले भूखे मरते थे। आज हमारे सामने रिश्वत ले-लेकर राजा-महाराजा बन गए! वह जिलाध्यक्ष! क्या नाम है उसका? चौधरी बन गया है अब। क्या नाम है उसका? क्या कहें उसे? अरे हाँ-हाँ वही, वही बहादुर सिंह बटन ही बेचता था

कल तक। अब जमाई भी नौकरी में लगा हुआ है। बेटा भी अफसर-औहदेदार हो गया। फलाने के अल्लम-गल्लम के रिश्तेदारों की नौकरी हो गई है। उसकी भी चल रही है। हवेलियाँ ठुक गईं, खेतियाँ चल गईं। और भले आदमी के भले आदमी! कहाँ से आ गया इनके पास इतना पैसा? लुच्चे साले बदमाश! अजी कहनवाले की मौत है। हमने तो रजाई भी देखी। राजा भी ऐश करते थे; पर राजा राजा का बेटा था, टिकिया-चोट्टा नहीं था इनके जैसा, जो ला-ला जानते हैं, देना नहीं जानते।"

किसी और ने कहा, "अजी, वो देवाल तो गए। उनके यहाँ तो अब मक्खी भिनक रही हैं।"

किसी ने कहा, "गए अपने करम से। उन्होंने भी आदमी को आदमी नहीं समझा। किसी की सदा नहीं बनी रहती। हाँ, सब चले जाते हैं। दो दिन का खेल है—जिसका दाँव लग जाए खेल ले! बेट्टा!!"

"बिस का नाम, बिस का नाम!" भगत बनिये ने फिर कहा, "बर्फी लोगे? रबड़ी दूँ? ताजी बनाई हुई है।" और वह भद्दे स्वर से हँसकर बोला, बर्फी तोलते हुए, "हमने तो वह दिन भी देखे और यह भी देख रहे हैं। भैया, कुछ भी कहो, रजवाड़े में आदमी की इज़्जत तो नहीं थी। दुकानदारों की तो मुसीबत थी। ज़रा-ज़रा-सी रियासतें थीं। जगह-जगह टैक्स लगते थे। बिसका नाम, बिसका नाम—अब अपने देखो, पूरा भारत है, चाहे जहाँ से माल मंगाओ, चाहे जहाँ बेचो।"

फिर भीड़ में से आवाज़ उठी, "अबे हाँ बनिये! बनिए की मौज है। ब्लैक करो ब्लैक। पहले यह था कि ज़रा घी में कुछ मिलाया सो लगे जूते। अब जूते लगने बन्द हो गऐ हैं। पाजियों की चल रही है। रजवाड़े में एक को सलाम करनी पड़ती थी, बस राजा को, हजार बनियों की धौंस नहीं थी—जूते के नीचे रहते थे बनिये।"

भगत बनिया भभक उठा, "बिसका नाम, बिसका नाम...कैसे बोलते हो! तमीज नहीं आई तुममें?"

इसके बाद गुल-गपाड़ा होने लगा।

यह बाज़ार है। यहाँ ऐसे ही चलता रहता है। इन अनेक बात करनेवालों के नाम भी बताए जा सकते हैं लेकिन उनके बताने से कोई फायदा नहीं, क्योंकि ये हर जमाने में बने रहते हैं, ये हर जमाने में पैदा होते हैं और हर जमाने में स्वयं मरते हैं। ये हमेशा दूसरों की चर्चा किया करते हैं। और पहले ज़माने में इन्हें बोलने का हक नहीं था, लेकिन अब तो क्योंकि वोट लिए जाते हैं, इनकी कद्र होने लगी है। और कद्र इतनी कि चुनाव के पहले इन बेवकूफों को खुश— तन-मन से खुश किया जाता है, इनको पैसा दिया जाता है, इनको भरी बोतलें पिलाई जाती हैं, इनको जीपों में घुमवा दिया जाता है; सैर हो जाती है ताकि ये खुश हो जाएँ और उसके बाद में इनको दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक दिया जाता है—बाहर। और फिर ये पाँच साल तक इन्तज़ार करते रहते हैं, शांति से—कब वक्त

आए और कब फिर नेता को इनकी ज़रूरत आ पड़े और कब फिर इनकी कद्र हो। अगर वहाँ इनको कुछ मिल भी जाता है तो ये खुश हो जाते हैं और जय बोलते हैं। अगर वहाँ इनको कुछ नहीं मिल पाता है, तो ये विरोध करते हैं। ये अपने ईमान को, कसम को निभाने के हामी नहीं हैं। ये उन डरपोक गीदड़ों में से हैं, जो ऊँट का शिकार देख लेने के बाद बैठकर इंतज़ार करते हैं कि शेर कब खत्म कर ले और तब गिरी हुई बची-खुची जूठी जूठन में ये अपना मुँह मार सकें, अपने उदर की वह्नि को तृप्त कर सकें।

और सियाराम की लड़की निहालकौर के चेहरे पर एकदम उदासी छा गई। उस उदासी में अपने पाप की अनुभूति थी कि उसके दो दोस्त थे। अब उसको अपने जीवन की भयानकता का आभास होने लगा था। सदियों से गड़ी हुई संस्कारों की मेख अब उसकी जवानी के दलदल को पार करके भीतर के मन की धरती को कुरेदने लगी थी। वे गदराए आलिंगन, वह निर्लज्जता, वह मस्ती, जिसमें वह धर्म को भूल गई थी, वह सब उसको कचोटने लगी और इस भावना ने कि उसके कारण एक लड़की की हत्या हो गई थी, उसके कारण गाँव के सैकड़ों आदमियों में परेशानी फैल गई थी, उसके कारण कितने ही आदमी पुलिस के थाने में पिटे थे, कितनों को नींद हराम हो गई थी, कितनी ही स्त्रियाँ और बच्चों के भाग्य एक हल्के डोरे से लटके रह गए थे। यह सब वह सोचती और मन-ही-मन काँप उठती। और वे जो उसके प्रेमी थे, वे भाग चुके थे। अगर वे पकड़े गए और उनकी पुलिस में पिटाई हुई, तो? तो क्या वे सारी बात कह न देंगे? और तब जब निहालकौर का नाम आएगा, तब क्या होगा? निहालकौर को लगा, जैसे कोई उसके दिल पर रंदा चला रहा था, छिपटी-छिपटी उतरती आ रही थीं। भीतर से चिकनी जरूर होती चली जा रही थी, मगर कम होती चली जा रही थी। एक सख्त लोहा उसके भीतर-भीतर पैना गड़ रहा था, इतनी तेजी से कि वह सरपट चाल से उसको दूर तक चीरता चला जा रहा था। कैसी व्यथा थी उसकी! घर में अब भी वही उदासी थी। उदासी इसलिए कि वह पड़ोसिन थी उस गरीब लड़की की जिसकी कि हत्या हो चुकी थी। हिरदेराम उसका पड़ोसी था। इस हिरदे को वह काका कहती थी। हिरदे को उस पर प्यार था। हिरदे उस पर विश्वास करता था। हिरदे और सियाराम में दोस्ती थी। दोनों एक-दूसरे के काम आते थे। यह निहालकौर जब बीमार पड़ गई थी और गाँव के वैद्य और डॉक्टरों से काम नहीं चला था, तो हिरदेराम अपनी पीठ पर लाद कर उसे पाँच कोस दूर ले गया था, एक इलाजी के पास, और उसका इलाज करा के लाया था। क्योंकि उस दिन सियाराम खुद बीमार था, चल नहीं सकता था। सियाराम ने कहा था, “भैया, मुझसे चला नहीं जाता। अब तो जो इसे लाया है, वही ले जाएगा।”

और धनीराम के बेटे हिरदेराम ने कहा था, “अरे वाह सियाराम, तेरी बिटिया सो मेरी बिटिया। दोनों संग-संग गुड़ियों से खेलती हैं। मैं ऐसा कोई पत्थर दिल थोड़े ही हूँ। अरे,

इससे मेरे हल की कीमत बहुत ज्यादा है क्या?"

उसने उत्तर दिया था, "हिरदेराम, एक दिन हल छोड़ दोगे तो कैसे काम चलेगा? सात रुपये चले जाएँगे। ढूँढे से आदमी नहीं मिलेगा कल को। और आदमी भी मिल गया तो तुम जोतोगे डेढ़ बीघा, वह जोतेगा पौन। तुम जानते हो, मजदूरी में आदमी ईमानदार नहीं होता।"

"सो मैं जानता हूँ।" हिरदेराम ने कहा, "सो मैं जानता हूँ सियाराम। परमात्मा भाग्य से पड़ोसी देता है। परमात्मा भाग्य से एक-दूसरे को मिलाता है। अरे, जिस दिन मैं मर जाऊँगा सियाराम, उस दिन यह सारी दुनिया यहीं छूट जाएगी। कोई मेरे साथ नहीं जाएगा। हाँ, तुम ज़रूर मेरे साथ जाओगे मरघट तक। क्योंकि मैंने और तुमने साथ-साथ चिलम पी है, साथ बतराए हैं, साथ बखत काटा है।"

और वह हिरदेराम तब निहाल कौर को कंधे पर बैठाकर ले गया था। पीठ पर बैठाकर ले गया था। थक जाता था तो पेड़ के नीचे बैठ जाता था। निहालकौर को प्यास लगी तो उसी ने प्याऊ से उसे पानी पिलाया था, अपने हाथ से चुल्लू बनाकर।

निहालकौर की छाती फटने लगी। उसे लगा कि उसके मन के भीतर एक साँप मरोड़ खा रहा था और फुसफुसा रहा था। ओह, कितनी व्यथा थी! लेकिन उसे वह कह नहीं सकती थी, क्योंकि कहने में उसकी इज़्ज़त का सवाल था, उसकी जिन्दगी का सवाल था और उसे फाँसी की रस्सी झूलती दिखाई देती थी।

उसकी माँ अनवरत काम करती चली जाती थी। अब भी निहालकौर को वह खेत पर भेजती थी शाम को, और खेत पर जाने के बाद निहालकौर को डर मालूम देता। उसे ऐसा मालूम देता कि सहेली की आत्मा मेंड़ के बाहर खड़ी उसे बुला रही है, मानो वह कह रही है—'निहाल, तूने मुझे मरवा दिया। निहाल, तूने मेरे साथ जुल्म करवा दिया। तू मेरी सहेली-भाएली थी, मुझे तुझसे ऐसी आशा नहीं थी।'

निहाल की उदासी औरतों में धीरे-धीरे प्रकट हो गई, जैसे बरसात का इकट्ठा हुआ पानी धीरे-धीरे धरती के गर्भ में उतर जाता है।

करीब दिन के दस बजे का समय हो गया था। उन काश्तकारों को थाने पर पहुँचना था और इसलिए वे अपने सरपंच साहब और वार्ड पंच के मकान पर उन्हें बुलाने पहुँचे। एक लड़की ने निकलकर बताया कि वे तो रात से ही चले गए हैं। अभी तक नहीं आए।

"कहाँ गए?"

लड़की के चेहरे पर ऐसा भाव आया जैसे वह जानती तो थी लेकिन बताना नहीं चाहती थी। यह काश्तकारों के लिए एक नई परेशानी थी। वे लोग फिर इकट्ठे हो गए।

(अब यह वह समय है जब उनके नाम बताए जा सकते हैं, उनकी याद रखी जा सकती है, लेकिन अब उसकी भी जरूरत नहीं रही, क्योंकि अब संकट में वे एक थे, उन सबके व्यक्तित्व खो गए थे और वे सब एक हो गए थे।)

उनमें बातें होने लगीं:

"सरपंच साहब घर पर नहीं हैं।"

"और वार्ड पंच भी नहीं हैं।"

"आखिर दोनों को ऐसा क्या जरूरी काम था जो चले गए! उनको चलना नहीं है क्या?"

"अरे, उन्हें नहीं, हमको चलना है।"

"न चलें तो?"

"वह दरोगा खा जाएगा। एक-एक के नाथ डलवा देगा नाक में।"

इसके बाद बातें बन्द हो गईं।

थाना गाँव से तीन-चार मील दूर था, जहाँगीरपुर कस्बे में। यहाँ वे पहले भी लाए गए थे और आज वे खुद आए थे। उस दिन उनकी पिटाई हुई थी।

(और जब वे लोग पिटे थे तब वे उपन्यास के पात्र नहीं रहे थे, अलग नहीं थे कि उनमें से हर एक वर्णन किया जाता। वे जीवन के संघर्ष और घुटन के पात्र थे, संघर्षमय जीवन के।)

दोपहर हो गई थी। धूप छिटकी हुई थी गाँव में, कहीं कम, कहीं ज्यादा। खेतों पर भी लोग काम कर रहे थे। हरियाली फैली हुई थी। वृक्षों के नीचे ग्वारिये बैठकर बाँसुरी बजा रहे थे। दूर पहाड़ियों पर सफेद-सफेद गाएँ चरती हुई दिखाई देती थीं, नीलम और श्वेत। धौ के वृक्ष दूर से देखने के कारण छोटी-छोटी झाड़ियों-से दिखाई देते थे। जैसे-जैसे थाना करीब आता जाता, एक उदासी लोगों के मन पर छाती चली जा रही थी, एक आतंक उनके भीतर उग रहा था। वे नहीं जानते थे कि उनका क्या होने वाला है। वे सब लोग बेकसूर थे, लेकिन किसी हत्या की पकड़ के लिए घेर लिए गये थे, जैसे रई पानी मिलाकर सारे दही को मथ रही थी कि जाने इसके किस कण में से मक्खन निकलेगा। मक्खन निकालना ज़रूरी था, इसलिए सारे दही को मथना ज़रूरी हो गया था।

दरोगाजी ने सबको थाने में बिठाया। वे उस वक्त किसी जरूरी काम में लगे हुए थे। एक घंटे तक ये लोग इंतजार में बैठे रहे, चूंकि मुंशीजी भी काम में लगे हुए थे और कोई उनकी ओर देखनेवाला नहीं था। एक घंटे बाद दरोगाजी ने उनकी तरफ मुँह मोड़कर देखा तो लोगों के दिल में धुकधुकी-सी मच उठी। उन आँखों में ऐसा तेज था कि इन लोगों के मन भीतर-ही-भीतर मुरझा गए। उन आँखों के पीछे हुकूमत थी, उन आँखों के पीछे राज्य था, राज्य माने बन्दूक, तोप, हवाई जहाज, पानी के जहाज, रेलें, डाकखाना, लगान, टैक्स—वह सब उन दो आँखो के पीछे थे। यह डर उस व्यक्ति का डर नहीं था, यह उस राज्य का डर था।

दरोगाजी ने तफतीश शुरू की। सबसे पहले उन्होंने बनैसिंह को आगे बुलाया और कहा, "तुम यह बताओ कि तुम्हारा खेत कहाँ है?"

"महाराज, मेरा खेत रास्ते के सहारे है।"

"रास्ते के सहारे? तुम्हारा खेत वहाँ पहले था या रास्ता पहले था?"

बनैसिंह क्षण-भर समझ नहीं पाया। उसने अपने साथियों की तरफ देखा। वह सरपंच से अकड़ सकता था, लेकिन दरोगा से अकड़ना दूसरी बात थी। सरपंच चुनाव से आता था और चुनाव से मिट जाता था, लेकिन दरोगा चुनाव से आनेवाला प्राणी नहीं था। बनैसिंह यह भी जानता था कि किसी भी नेता की सिफारिश होने पर यह दरोगा उसके सामने दुम हिला सकता था, लेकिन झोले-टोले के सरपंच रामसिंह तिवाड़ी से झगड़ा करने के बाद उसके लिए कांग्रेस-रूपी नहर का पानी मिलना दुश्वार हो गया था। उस नहर के पानी से किसी समय खेत सिंचते थे, कम-से-कम जब वह नहर खोदी गई थी तब यह वायदा जरूर था। लेकिन बनैसिंह ने बगावत की थी और उसको सज़ा मिलना जरूरी था। उसके साथी चुप बैठे रहे जैसे उनके चेहरों पर कोई चमक बाकी नहीं थी। बनैसिंह ने साहस एकत्र करके उत्तर दिया, "हजूर, पुरखापत्ती से रास्ता चला आता है और पुरखापत्ती से गाँव बाहर खेत पड़ा है। मैं नहीं जानता महाराज कि पहले कौन हुआ और कौन था!"

दरोगाजी ने सिर हिलाया और कहा, "बहुत ठीक। यह सोच लो कि तुम सब इन्सपेक्टर गजराजसिंह से बात कर रहे हो। गजराजसिंह ने बड़े-बड़ों को सीधा किया है। राज बदल गया है, मगर यह न समझो कि हुकूमत करने के तरीके भी बदल गये हैं। जुर्म को हर हालत में वही सज़ा मिलेगी जो पहले मिलती थी। राज बदल जाएगा, लेकिन जुर्म को सज़ा मिलती रहेगी। हम लोग राज्य चलाने वाले कारिन्दे हैं। हम जानते हैं कि मुजरिम किस तरह बात करता है।" और हठात् उन्होंने स्वर उठाकर कहा, "और गजराजसिंह सब-इन्सपेक्टर बड़े-बड़ों को धूल में मिला चुका है। समझे? क्या समझे?"

बनैसिंह सकपका गया। भीड़ ने सिर हिलाया और काश्तकार लोग दरोगाजी को प्रसन्न करने के लिए एकसाथ कहकर भी अलग-अलग कहने लगे, "अजी महाराज"..."कौन नहीं जानता"..."अजी, बड़े न्यायवाले हैं"..."हुकूमत तो साहब हमेशा ही इन्साफ से चलती है"..."बड़ा दिल पाया है।"

हठात् दरोगाजी फिर चिल्लाए, "खामोश! कांग्रेस का हुक्म आ गया है कि लोगों से हम मीठा बोलें लोगों से श्रीमानजी कहकर बात करें। मुंशीजी!"

मुंशीजी ने नाक पर रखे चश्मे से ऊपर आँखें उठाईं और कहा, "हुजूर!"

दरोगाजी ने कहा, "मिठाई पर से मक्खी मना कर देने से रुकती है?"

मुंशीजी गलगलाती-सी हँसी हँसे और बोले, "हुजूर! हुज़ूर..."

दरोगाजी फिर गरजे, "रुक जाती हैं?"

मुंशीजी की कलम छूट गयी। वे बोले, "क्यों नहीं हुजूर!"

दरोगाजी ने फिर कहा, "यह बात ये लोग समझ सकते हैं?"

मुंशीजी ने कहा, "अजी, ये हुज़ूर..."

दरोगाजी फिर चिल्लाए, “क्यों नहीं ये समझ सकते ये मुंशीजी?”

मुंशीजी फिर हिल गए।

दरोगाजी ने कहा, “डंडा एक ऐसी चीज़ है, जो बड़े-बड़ों को सीधा कर देता है।”

मुंशीजी ने कहा, “वाह-वाह हुज़ूर, क्या बात कही है!”

दरोगाजी ने काटा, “अभी मैंने कहा ही कहाँ है मुंशीजी।”

मुंशीजी ने फिर मूर्ख-मुद्रा से उनकी आरे देखा और कहा, “हाँ हुज़ूर।”

दरोगाजी ने कहा, “लेकिन यह डंडे का ज़माना नहीं है। समझे आप, यह ज़माना डंडे का नहीं है।”

मुंशीजी ने बात करना बन्द कर दिया और वे अपना सिर हिलाने लगे कि यह ऊँट जाने किस करवट बैठेगा, इसलिए वे क्या कहें। कभी वे होंठ चौड़ा देते, कभी वे अपनी आँखों को फैला देते।

दरोगाजी ने सिर हिलाया, जैसे वे कुछ सोच रहे थे और फिर कहा, “लेकिन मुंशीजी, आप बोलते क्यों नहीं?”

“हुज़ूर, हुकुम।”

“मैं यह पूछता हूँ, अगर सुई की जगह सुई काम नहीं देगी, तो क्या तलवार काम देगी?”

मुंशीजी फिर गलगलाती हुई हँसी हँसे और बोले, “क्या बात कही है सरकार!”

दरोगाजी ने फिर कहा, “लेकिन मैं पूछता हूँ कि सुई की जगह तलवार काम क्यों नहीं दे सकती?”

मुंशीजी ने हार कर कहा, “हुज़ूर कैसे दे सकती है?”

“आप नहीं समझ सकते। अगर सुई इतनी बड़ी हो कि वह तलवार के बराबर हो तो तलवार सुई की जगह काम दे सकती है। समझे आप?”

“वाह-वाह हुज़ूर, वाह, क्या बात है, क्या बात है! क्या बाल की खाल निकाली है!”

“खाल निकालने का जमाना नहीं है मुंशीजी। प्रेम से बात करने का जमाना है। देखिए, थाने पर क्या लिखा हुआ है—सबसे प्रेम से बात करिए। कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।—आप पुराने रजवाड़ों की बात लिए डोलते हैं। समझे? आजकल मार का ज़माना नहीं है।” और यह कहकर उन्होंने सामने बैठे काश्तकारों की तरफ देखा।

काश्तकार उस दिन की मार भूल गए थे। दरोगाजी के चेहरे पर एक कोमलता दिखाई दे रही थी, लेकिन उनकी बटी हुई मूँछों पर वह जैसे पछाड़ खा-खाकर रो रही थी। उन्होंने बनैसिंह की ओर देखा और कहा, “कब जाते हो अपने खेत पर तुम और कब आते हो?”

बनैसिंह ने कहा, “महाराज थानेदार साहब, मैं अपने खेत पर सुबह के पाँच बजे के करीब जाता हूँ।”

"तुम अपने पास घड़ी रखते हो?"

"हुज़ूर, घड़ी मेरे पास कहाँ।"

"तो तुम्हें क्या मालूम कि तुम कभी पौने पाँच बजे जाते हो या सवा पाँच बजे जाते हो? हमारे सामने गलतबयानी करते हो? क्या तुम नहीं जानते, तुम किससे बातें कर रहे हो? अच्छा खैर, हम तुमको इस बार माफ करते हैं। यह कहो कि तुम अलस सुबह जाते हो। और लौटते कब हो?"

"हुज़ूर, झालर-बजे वापस आता हूँ।"

"अच्छा बनैसिंह, तुम यह बतलाओ कि तुमने किसी आदमी को केस के दिन आते-जाते देखा था?"

"हुज़ूर, थानेदार साहब, मैंने किसी आदमी को नहीं देखा था। मैं अपने मचान पर बैठा-बैठा अपने खेत की रखवाली कर रहा था। फसल बड़ी होने के कारन मुझे आसपास का आदमी और मवेशी कोई नहीं दिखता था। सारे दिन मचान पर बैठकर रखवाली करता था।"

दरोगाजी ने चिल्ला कर कहा, "झूठ बोलता है? जब तुझे मवेशी नहीं दिखाई देता था तो रखवाली किसकी करता था? कोई खेत काटकर ले जाता और तू बैठा देखता रह जाता? तेरे खेत पर बैठने का फायदा ही क्या था जब तुझको कुछ दिखाई नहीं देता, मुंशीजी, इसको कुछ दिखाई नहीं देता तो यह रखवाली किसकी करता है? पूछिए आप इससे।"

मुंशीजी ने सिर हिलाकर राय दी, "हुज़ूर, यह वैसे नहीं बतावेगा।"

गजराजसिंह खड़े हो गए। सिपाही को आवाज़ दी, "भीकम!"

"हुज़ूर! एक कद्दावर आदमी ने जवाब दिया, जो वर्दी से लैस खड़ा था।

"शुरू करो!"

भीकम ने बेंत मारना शुरू किया। बनैसिंह काँपने लगा और रोने लग गया। जैसे-जैसे बनैसिंह पर बेंत पड़ते थे, वह चिल्लाता था और उसके वाक्य बीच-बीच में टूटकर सुनाई देने लगे, "महाराज दरोगाजी...कुछ मेरी भी तो सुनिए...आप मुझे बुरी तरह क्यों पिटवा रहे हो..."

'साड़-साड़' आवाज़ आने लगी।

दरोगाजी बोले, "बोल, क्या कहता है?"

बनैसिंह ने भीकम के उठे हुए हाथ की ओर देखा, जो क्षण-भर के लिए रुक गया था और काँपते स्वर से कहने लगा, "महाराज, मैं खेत पर बैठा हुआ था। करीब दोपहर को, जिस वक्त मेला लग रहा था, गाँव में दो लड़के, जिनमे एक सरपंच का लड़का था और एक वार्ड पंच का लड़का थ़ा...अपने खेत देखने को आए थे।...वे लोग मेरे खेत के मोड़ पर

होकर गए थे। उन्होंने मुझे आवाज़ भी दी थी।...मैं मचान से उठ कर आया।...मेरे पास थोड़ी देर ठहरकर वे चले गए।...वापसी पर पता नहीं, वे लोग कहाँ होकर गये थे।"

बनैसिंह को एक ओर को धकेल दिया। अब दरोगाजी ने नम्बरदार और काश्तकारों को पास बुलाया और उनको मारना शुरू कर दिया। नम्बरदार चिल्लाने लगे, "आप हमको बुरी तरह क्यों मारते हैं! हमने रात को पंचायत करके कुछ असलियत निकाली है। आप को बतलाएँगे।"

दरोगाजी ने पुकारकर कहा, "तुम इतनी देर से खामोश क्यों बैठे थे? क्या तुम्हारे मुँह में दही जमा था? लातों का देव! तुमने क्या जाँच की है, बताओ।"

एक नम्बरदार ने जवाब दिया, "दरोगाजी, उस दिन सरपंच और वार्ड पंच के लड़के ही अपने खेत पर उस रास्ते से होकर गए थे। बनैसिंह ने भी उनको जाते देखा था। इसके बाद वे सियाराम नाई के खेत के पास पहुँचे। वहाँ उसकी लड़की निहालकौर रखवाली कर रही थी। हमने जब मामले में जाँच की तो मालूम हुआ कि उन लड़कों में और निहालकौर में मोहब्बत भी थी।"

दरोगाजी की भौंह नाक के ऊपर ऐसे आकर मिल गईं जैसे किसी दार्शनिक ने अपनी दोनों भुजाएँ अपने घुटनों पर टेक दी हों।

काश्तकार कहता रहा, "हमने निहालकौर को बुलाकर पूछा तो उसने जवाब दिया कि दोनों लड़के, सरपंच और वार्ड पंच साहब के, उस दिन उस तरफ आए जरूर थे और वे उसके खेत पर होकर अपने खेत पर चले गए थे, बाद की बात वह कहती है, उसे पता नहीं। आज जब हम गाँव चले गए थे, तब हमको मालूम हुआ था कि सरपंच और वार्ड पंच साहब के लड़के स्कूल छोड़कर कहीं चले गए हैं और वे दोनों अपने-अपने लड़कों की तलाश में रात से ही गए हुए हैं। वे दोनों अभी तक लौटकर नहीं आए हैं। इसलिए हम लोगों को ऐसा मालूम देता है कि स्याद इस मामले में सरपंच और वार्ड पंच साहब के लड़कों का कुछ हाथ हो। हजूर दरोगाजी, आप-माई बाप हैं। आप हमारी रच्छा करें। हम उनके सामने कुछ भी नहीं कह सकते, इसलिए आप किरपा करके सबसे पहले सियाराम की लड़की निहालकौर को बुलवाइए—उससे असलियत का पता लग जाएगा। वह हमारे सामने कुछ नहीं कहती है, लेकिन हुज़ूर, आप के खौफ से सब-कुछ बोल जाएगी।"

दरोगाजी क्षण-भर सोचते रहे। दो लड़कों से मुहब्बत करने वाली लड़की को देखने के लिए मन में कौतूहल जाग उठा था। उन्हें रिपोर्ट याद आयी—ज़िना बिल जब्र किया गया था यानी वे लड़के कुछ बदमाशी कर चुके थे। ऐसा नहीं हो सकता कि एक लड़की के साथ जबरदस्ती की जाए और उसकी आहट न हो। अगर उसकी आहट हुई होगी तो निहालकौर ने जरूर सुना होगा। लेकिन अगर वह बोल देती तो जरूर वे दोनों भाग गए होते। लेकिन वह बोली नहीं। नहीं बोलने की वजह यह थी कि उसकी मोहब्बत थी। शायद यह भी हो सकता है कि निहालकौर ने ही उन लड़कों को वहाँ भेजा हो।

अपनी दूरन्देशी का ठोस प्रमाण न होते हुए भी दरोगाजी की व्यवहारबुद्धि ने इसकी कल्पना की कि अवश्य ही निहालकौर से हत्या का ज्ञान सरल होगा। उन्होंने काश्तकार से कहा, “सच कहते हो तुम?”

“हुज़ूर माई-बाप, मेरी क्या मजाल जो मैं झूठ बोल जाऊँ! आप मेरी ज़बान खिंचवा लें।”

दरोगाजी ने कहा, “अरे, अगर ज़बान खिंचवानेवाला जमाना होता तो बात क्या थी! मगर यह तो श्रीमानजियों का ज़माना है। इसमें किसी पर जुल्म नहीं किया जा सकता। किसी को मारा-पीटा नहीं जा सकता।”

बनैसिंह अपने घाव सहलाने लगा था और उसने मन-ही-मन सोचा कि दरोगाजी के हिसाब से वह अभी पिटा नहीं था।

दरोगाजी जैसे भाँप गए। उन्होंने चिल्लाकर कहा, “क्या सोचता है तू, मैंने तुझे मारा है? अरे, मेरी मार खाकर तू बोल लेता? अब मैंने कांग्रेस का राज्य आ जाने के बाद लोगों को मारना छोड़ दिया, क्योंकि किसी को मारना पीटना अच्छी बात नहीं होती। अरे, मैं अहिंसा के उसूलों पर चलता हूँ।”

बनैसिंह कुछ नहीं बोला।

एक आरी ऐसी होती है जो लोहे को भी काटती है। उस अरी के दाँत खुद लोहे के होते हैं। आदमी की भूख दूसरे की भूख से खेलती है। एक ही भूख अहंकार बन सकती है और वही दूसरी जगह में किसी की मजबूरी। लेकिन काटने वाला लोहा कटे हुए लोहे को घिसता जरूर है और कटने वाले का बुरादा उसके दोनों ओर जमा होता रहता है। निहाल खेत से लौट आई। घर आ गई उसके सामने इतना बड़ा काण्ड हो गया और जब वह रात को लेटी तो उसने देखा कि चम्पो सो गई थी, लेकिन दीपक अभी भी जल रहा था। निहाल सोचने लगी—कहाँ चले गए हैं माधो और नरायन? वे तो घर पर ही थे न? नई खबर ने तो निहाल के पाँव डगमगा दिए। उसे ऐसा लगने लगा कि जैसे वह जिस मचान पर बैठी थी, वह मचान अचानक ही अर्राकर नीचे की ओर धंसा चला जा रहा था। अब उसके पास इतना समय भी नहीं था कि वह उस पर से कूद पड़ती। दूर दूसरे थोक की ओर गाँव के गूजरों के गीतों की आवाज़ आ रही थी। समवेत संगीत हो रहा था। मोटी आवाज़ से स्वर उठता। स्वर जैसे बलैयाँ लेता, आकाश को विदीर्ण करने का प्रयत्न करता और मानो त्रिकोण बन जाता और फिर झटके से वे लोग गीत को रोक देते। निहाल उसमें भूलना चाहकर भी अपने आपको नहीं भूल पाती। दूसरी ओर से अनवरत निनाद आ रहा था। कहीं मंजीरे बजाकर लोग कीर्तन कर रहे थे। स्वर तन्मयता के साथ झूमता चला जाता, लरज खाता और अपनी सत्ता को विभोर कर देने के लिए डूबने-उतराने लगता। निहाल के

मन पर उस संगीत की छाप ऐसे पड़ने लगी जैसे मोर के पंजे धूल में चूड़ीदार निशान-से छोड़ते चले जाते हैं। कैसी शीतल बयार थी! कैसा उनींदा-सा अँधेरा था! क्या सोचा था निहाल ने और क्या हो गया! एक खेल समझकर शुरू किया था, कच्ची उम्र और लम्बी पैंग, जैसे आम के पेड़ पर एक कैरी ने वसन्त को देखकर हुमस में बैसाख से होड़ लगाई थी और आँधी को थपथपाने की चेष्टा की थी उसका परिणाम क्या हुआ कि कैरी नीचे जा गिरी।

चम्पो ने करवट बदली। उसने निहाल की ओर देखा और कहा, "क्यों री अभी तक दिया नहीं बुझाया!"

निहाल खोई-खोई सी देखती रही।

"क्या बात है?"

"कुछ नहीं, अम्माँ?"

"तुझे नींद नहीं आई?"

"नहीं।"

"क्यों?"

निहाल ने उत्तर नहीं दिया। उठी और दिया बुझा दिया।

चम्पो ने कहा, "पानी पी ले, नींद आ जाएगी।"

निहाल ने उठकर पानी पिया। ठण्डा पानी गले के नीचे उतरा तो उसे लगा, जैसे एक ठण्डी लकीर भीतर खिंच गई हो। लेकिन भीतर का दाह और भी बड़ा था। उसे याद आने लगा—ब्याह हो गया था। ससुराल गई थी। लौट आई थी। और तब माधो ने एक दिन सूनी गैल में उसका हाथ पकड़कर कहा—तेरा गौना कब है? वह हँस दी थी। इतना-छोटा सा प्रारम्भ कितना बड़ा अंत बन गया था! निहाल समझती थी कि उसकी यह क्रीड़ा कोई नहीं जान पायेगा। उसका यह आनन्द लहराती फसल की तरह उठेगा और समय आने पर पककर दानों के रूप में सुनहला बन जाएगा। लेकिन उसे क्या पता था कि फसल पकने के पहले कोई बेदखली का हुक्म लेकर आ जाएगा और दूसरे की बोई फसल को काटने लग जाएगा।

बाहर हवा अब सनसनाने लगी थी। गीत और भी दूर तक झूमते चले जाते थे। तभी कहीं उल्लू बोला। उसकी डरावनी आवाज़ अँधेरे को कोंचने लगी जैसे वह खण्डहर-सी थी रात। और उल्लू की आवाज़ उस खण्डहर-सी रात में पुकार थी अपशकुन की, परम विध्वंस की। निहाल उसे सुनकर डरने लगी, उसे लगा, उल्लू उसी के लिए बोला था। और तब दो चमकीली आँखें उसे दिखाई देने लगीं। निहाल ने आँखें मींच लीं, लेकिन आँख मींच लेने के बाद भी वे आँखें दिखाई देने लगीं। वे आँखें थीं खून से भीगी हुईं। उन आँखों में प्रतिशोध था। और फिर भी उन आँखों के साथ एक चेहरा दिखाई देने लगा और वह चेहरा था उसकी सहेली का।

उसने कहा, ‘निहाल, मैं मर गई हूँ; लेकिन मैं गई नहीं हूँ, मैं यहीं मंडरा रही हूँ। मेरी प्यासी आत्मा यहीं भटक रही है। मुझे मालूम है, जब वे लोग मेरे साथ जुल्म कर रहे थे तब तू खड़ी देख रही थी। जब उन्होंने मुझे काटा था, तब तू वहीं मौजूद थीं लेकिन आज तू क्यों नहीं बोलती? क्या तुझे मेरी माँ रोती हुई माँ दिखाई नहीं देती? क्या तुझे मेरा रोता हुआ बाप दिखाई नहीं देता। अरी अभागिन, तुझे मेरा बाप कितना प्यार करता था! तुझे मेरी माँ ने कितनी बार रोटी खिलाई थी! तू बोलती क्यों नहीं?’

‘कैसे बोलूँ?’ निहाल ने कहा, ‘मैं कैसे बोलूँ मेरी भाएली? मैं अगर बोल देती हूँ तो मुझको फाँसी होगी। सच, मैंने पाप किया है इसमें कोई शक नहीं। लेकिन मैं कैसे बोलूँ? मेरा घरवाला है। मुझे कहीं और जाकर घर बसाना है। मेरी माँ मुझसे छूट जाएगी। यह गाँव मुझसे छूट जाएगा। यहाँ के रहने वाले सब छूट जाएँगे। मैं तो किसी और की हो गई हूँ। मुझे किसी और के साथ रहना है भाएली। एक दिन सभी लड़कियाँ ससुराल चली जाती हैं। मुझे क्या मालूम था कि जिसे मैंने दीपक समझकर रखा था, जलाया था, उजियारे की उससे आस की थी, वही मेरे आंचल में आग लगा देगा? मुझे क्या यह आसा थी? सच, मुझे अपने आप से घिन है। मुझे मालूम है मैं नरक में जाऊँगी। लेकिन मैं क्या करूँ भाएली? मैं कर भी क्या सकती हूँ! तू चली गई। अब लौटकर तो नहीं आएगी। अब चली जा। अब चली जा। मुझे सोने दे।”

उसको लगा, जैसे उसकी भाएली कह रही थी, हँस-हँसकर कह रही थी, ‘निहालकौर, अब तू कभी चैन की नींद नहीं सोएगी। अब मुझे कभी शांति नहीं मिलेगी। अरी, तेरे सामने मेरा कतल हो गया, खून! तू मेरा खून होते हुए देखती रही!’

निहाल की आँखें खुल गईं। उसने देखा कि वह पसीने से तर-बतर हो गई थी। उसके अंग-अंग शिथिल हो गए थे। उसे लगा जैसे अँधेरे में कोई उसके पास खड़ा था। और उसके मुँह से एक ज़ोर की चीख निकल गई।

चम्पो चौंककर जाग उठी। उसने कहा, “लाली, क्या हुआ?”

निहाल बर्राई, “अम्माँ, अम्माँ!”

उसका वह करुण स्वर सुनकर चम्पो का दिल हिल गया। उसने उसको पकड़ कर हिलाया और कहा, “अरी, नींद में क्यों चिल्ला रही है? छाती पर हाथ रखकर मत सो।”

निहाल उठकर बैठ गई। उसने फटी आँखों से चम्पो की ओर देखा।

अँधकार में उसकी माँ नहीं देख पाई। “सो जा। सो जा।” माँ ने कहा।

निहाल फिर लेट गई। पन्द्रह साल की लड़की थी। माँ ने सोचा, छोटी है, शायद डर गई हो।

बाहर अँधेरा था। माँ ने उसकी देह पर हाथ रखकर कहा, “सो जा, मैं तो यहीं हूँ। डरती क्यों है? तेरे भाग में यही लिखा था, लाली, तेरे भाग में यही था। मैं यह चाहती हूँ कि तू जल्दी से जल्दी अपनी ससुराल चली जाए तो तेरा यह डर तो छूट जाएगा।”

चम्पो का हाथ निहालकौर को सांत्वना देता रहा, लेकिन निहाल आँख मींचने से अब भी डरती थी। बार-बार उसकी भाएली का मुँह उसके सामने आ जाता था। उसको लग रहा था, उसके पाप की कहीं सीमा नहीं थी। कभी उसको लगता कि रक्त की एक नदी उछलती चली आ रही है और नदी के पीछे कोई भयंकर अट्टहास करता चला आ रहा है। वह आँख मींच लेती और फिर उसे लगता कि जैसे उसके रोम-रोम कांटों की तरह खड़े हो गए हैं।

और सरपंच चंचलसिंह के लिए दूसरी ही समस्या उठ खड़ी हुई थी। कत्ल के बाद जब वे घर गए थे तो पत्नी चमेली ने पूछा था, “क्या हुआ?”

नरायन आँगन के कोने में खाट पर लेटा था। चंचलसिंह ने थाली पास सरकाकर खाना खाते हुए कहा था, “नरायन की माँ, मैं तुमसे हमेशा कहता आ रहा हूँ और फिर वही बात दोहराऊँगा कि जिस ज़माने में हम रहते हैं, वह ऐसा अच्छा नहीं है जैसी कि हम आशा किया करते थे।”

चमेली ने आँख उठाई, मानो प्रश्न किया, “क्या बात हो गई?”

“तुमने नहीं सुना?” चंचलसिंह ने कहा, “हिरदेराम की लड़की का कत्ल हो गया।”

नरायन खाट पर लेटा-लेटा सुनता रहा।

“हिरदेराम की लड़की का?” चमेली ने चौंककर पूछा, “वह तो बेचारी किसी के लेन-देन में नहीं थी।”

“मैं इस गाँव का सरपंच हूँ।” चंचलसिंह ने कहा, “यह सच है कि मेरा काम लोगों की सेवा करना है, पर मैं कर भी क्या सकता हूँ! नरायन की माँ, कुछ पता नहीं चलता कि इस दुनिया में कब क्या होने वाला है। अरे, कोई वजह नहीं, कोई बात नहीं। कभी गाँव में पहले ऐसा होता था! गाँव की बिटिया का कभी इस तरह कत्ल किया जा सकता था! मैं कहता हूँ कि लोग मुर्दा हो गए हैं। लोगों में जान नहीं है। अभी तक लोगों ने कुछ किया ही नहीं।” फिर सोचते हुए कहा, “लेकिन वे कर भी क्या सकते हैं?”

चमेली ने कहा, “रोटी और लाऊँ?”

खाना खाते हुए कुछ देर सरपंच चुप रहे। उन्होंने कहा, “नरायन!”

नरायन ने कहा, “हाँ...!” उसका स्वर कुछ कांप रहा था।

सरपंच ने कहा, “तू क्या समझता है, यह काम किसी गाँववाले का है?” नरायन से कांपते स्वर में कहा, “किसी बाहर के का होगा!”

अपने ध्यान में मगन सरपंच अपने पुत्र के कण्ठ का कम्पन नहीं भांप सके। उन्होंने खाना खाने के बाद थाली सरका दी और पूछा, “हुक्का तैयार है?”

चमेली ने हुक्का लाकर रखा। सरपंच हँसे और बोले, “नरायन की माँ ने ये दो काम अपने हाथ में ऐसे रखे हैं कि किसी को नहीं देती—रोटी और हुक्का। बच्चे बड़े हो गए। दुनिया में बाप की चिलम बच्चे भरते हैं, लेकिन तुमने किसी को यह अधिकार नहीं दिया।” फिर हुक्के में थोड़े-से कश लगाकर सरपंच ने कहा, “गरीब आदमी है हिरदेराम। मैं पूछता हूँ, उसने किसी का क्या बिगाड़ा था? और अगर ज़मीन-जायदाद के पीछे झगड़ा होता तो हम मान लेते। अपने काम से काम रखता है। किसी के लेने में, न देने में। मैं जब सोचता हूँ कि ऐसे आदमी के साथ भी दुनिया में जुल्म हो सकता है, तो मुझे परमात्मा के बारे में भरोसा नहीं रहता। मुझे यह विश्वास नहीं होता कि संसार में धर्म और नेम जैसी कोई चीज है। मैं सोचता हूँ कि मेरे हाथ में वह खूनी आ जाए तो मैं उससे एक बात पूछूँ और वह यह कि एक चौदह-पन्द्रह साल की लड़की का कत्ल करके तुझे क्या मिल गया? और, नरायन की माँ, तुम्हें एक बात बताऊँ। उसने उस लड़की का कत्ल ही नहीं किया, उसने उसकी बेइज्जती भी की। और जब मैं यह बात सोचता हूँ कि कोई गाँव के बाहर का आदमी आकर हमारे गाँव की लड़की के साथ ऐसा कर गया, तो मेरी आँखों में खून उतर आता है। मैं उस हिरदेराम को क्या कहकर समझाऊँ कि उसके दिल का दर्द मैं समझता हूँ, क्योंकि मेरे दिल में वही दर्द है जो उसके में है। और तू जानती है, हिरदेराम उसमें कुछ नही कर सकता। ये तो गाँववाले हैं जो उसकी हिम्मत बढ़ा रहे हैं। हम लोगों का काम है कि हम इस मामले को आगे बढ़ाएँ, वरना पुलिस। पुलिस पर मुझे भरोसा नहीं, नरायन की माँ, पुलिस पर मुझे भरोसा नहीं।” यह कहकर सरपंच फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगे और धुआँ उगलने लगे।

और इन्हीं सरपंच को जिस समय ज्ञात हुआ कि लड़के स्कूल से भाग गए थे, तो उनकी समझ में नहीं आया था कि यह क्या हुआ। चमेली के निकट आए थे, “तुमने सुना नरायन की माँ?”

“क्या?”

“जान-बूझकर अनजान क्यों बनती हो?”

चमेली ने उनकी ओर देखा था।

“तुम्हारा लड़का भाग गया है स्कूल से।”

“कौन, नरायन?”

“हाँ नरायन।”

“क्या कहते हो,”

“और उसके साथ माधोसिंह भी भाग गया है।”

“किसका? देवर का लड़का?”

“हाँ, वही।”

“क्यों भागे ये दोनों? कहाँ गए हैं? भाग गए हैं या कहीं चले गये हैं?”

“अफवाह जो मेरे कानों में आई है, वह यह बताती है कि वे दोनों भाग गये हैं।”

“लेकिन तुम इसका मतलब भी समझ पा रहे हो कि भागने का मतलब क्या होता है?”

“यह तो मैं सुनी हुई कह रहा हूँ। नरायन की माँ, उनको भागने की क्या ज़रूरत थी?”

“फिर क्या होगा?”

“मुझको जाना होगा उन दोनों को ढूँढने। लेकिन मेरा दिल कांप रहा है।”

चमेली ने आशा से उनकी ओर देखा था।

“हाँ, हाँ।” सरपंच ने कहा था, “तुम सोच रही हो कि जिस चंचलसिंह का दिल आज तक कभी नहीं कांपा, उसका दिल आज कैसे कांप रहा है? नरायन की माँ, मैं चाहता था कि हिरदेराम की लड़की के कातिल को ढूढ़ूँ, अपने गाँव की इज्ज़त को बचाऊँ। मैं लोगों की ज़मानत देकर आया हूँ, क्योंकि पुलिस उनके ऊपर जुल्म कर रही थी। मैं अपनी आँखों से लोगों को पिटते देखता रहा। मैं जानता हूँ कि पुलिस को यह अख्तियार है कि वह किसी को भी मारे। खून कोई अपने-आप इकबाल नहीं करता। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि खून का इकबाल कराने का खेल है। यह लोगों को तंग करने का, परेशान करने का रास्ता है। मैं कुछ नहीं बोल सका, पर मैं इस इन्तज़ार में था कि किसी तरीके से कोई रास्ता निकालूँ। और अब मेरी समझ में नहीं आता कि मैं यह क्या सुन रहा हूँ कि अपना ही लड़का गायब है।”

यह कहते-कहते सरपंच का स्वर रुंध गया जैसे कोई गिद्ध विशाल वृक्ष की सबसे ऊँची चोटी पर अपना घोंसला बनाए, इस उद्देश्य से कि वहाँ बैठकर आँधियों से लड़ता रहेगा और उसके बच्चे अण्डों में से निकलकर जब बाहर आएँगे, तब सबसे पहले आँधियाँ सलामियाँ देती हुई उनका स्वागत करेंगी। लेकिन पहली ही बार घोंसला बैठ गया और अण्डा नीचे दब गया। और अब गिद्ध क्या करे? सरपंच ने चमेली की ओर देखा था। उस दृष्टि में अपमान था, घुटन थी, घृणा थी और आहत अहंकार था। चमेली उत्तर नहीं दे सकी।

और जब सरपंच ने यह सुना था कि पंचायत में लोगों ने निहालकौर को बुलाया था, तब उनकी घृणा पहले से भी अधिक उनके हृदय को कचोटने लगी थी। और लड़के उनको मिले थे स्कूल से बाहर दूर भटकते हुए। कजौरीसिंह उनके निकट पहुँचा था। सरपंच की इच्छा हुई कि वे भी निकट जाएँ, लेकिन क्षण-भर को ठिठक गए थे और कजौरीसिंह तब तक दोनों लड़कों को पास ले आया था।

सरपंच ने नरायन की ओर देखकर कहा था, “क्यों, तुम लोग स्कूल से क्यों भाग गये हो?”

“मास्साब परेशान करते हैं।” माधो ने कहा था।

"कौन-सा मास्टर परेशान करता है?"

माधो ने कहा था, "मास्साब इतना परेशान नहीं करते जितना हम लोगों पर कर्ज़ा हो गया है।"

लेकिन नरायन दोनों बार कुछ नहीं बोला था। उसकी आँखें नीचे झुकी हुई थीं।

"तू कुछ क्यों नहीं बोलता?" सरपंच ने पूछा था।

नरायन का सिर झुक गया था।

लेकिन तब सरपंच साहब को मन-ही-मन हँसी आ गई थी। लड़के हैं। लड़के भी कितने बेवकूफ होते हैं! अरे, यह भी कोई बात है कि मास्टर तंग करता था या हलवाई की दुकान पर कर्ज़ा हो गया था। इसलिए भी कोई स्कूल छोड़कर भागता है! बेवकूफ लड़के। सरपंच ने कहा था, "कजौरीसिंहजी, आप ज़रा जाकर देख लेना, कौन-सा मास्टर है। और रुपये दे दीजिए इन लोगों को। मैं आपका हिसाब फिर कर दूँगा।" और सोचा था सरपंच चंचलसिंह ने कि इतनी-सी बात का कितना बड़ा बतंगड़ हो गया था! उन्होंने एक बार फिर लड़कों को डांटा था और कहा था, "खबरदार जो स्कूल से कहीं इधर-उधर गए, वरना मुझे मास्टर और हेडमास्टर से कहना पड़ेगा कि वे तुम लोगों पर कड़ी निगाह रखें।"

और वे लोग लौट आये थे। लेकिन जब वे लोग रमोना के बाज़ार में आए थे तब कस्बे की फिजा कुछ बदली हुई थी। लोगों की आँखों में एक परिवर्तन था, एक विचित्र अविश्वास और घृणा उनमें झलक रही थी।

एकांत में चंचलसिंह ने पूछा था, "कजौरीसिंहजी, यह क्या बात है?"

कजौरीसिंह ने दबी ज़बान से कहा था, "सरपंच साहब, समय ठीक नहीं है।"

"क्यों?"

"हवा में बात कुछ दूसरी ही उड़ रही है। लोग कहते हैं कि कत्ल हमारे लड़कों ने किया था और वे इसी डर से भाग गए थे।"

सरपंच कठोर स्वर से चिल्ला उठे थे, "क्या कह रहे हैं आप? कजौरीसिंहजी, आप सोच रहे हैं, आपके मुँह से क्या निकल रहा है?"

कजौरीसिंह ने भीगी हुई बिल्ली की तरह कहा था, "मैं अपनी तरफ से नहीं कह रहा हूँ। दबी ज़बान से लोग जो कह रहे हैं, उसे सुन आया हूँ। मुझे अभी बिशम्बर ने आकर खबर दी है। वह आज एस. डी. एम. की अदालत में किसी काम से आया था।"

लेकिन सरपंच को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने फिर कहा था, "जब मुझे गाँव में यह खबर मिली थी तब मेरे मन के अन्दर, कजौरीसिंह जी, एक तरह का शक पैदा हुआ था। मैंने उस शक को नरायन की माँ पर ज़ाहिर नहीं होने दिया था, क्योंकि जो खबर मुझे मिली थी, मैं उस खबर को मानना नहीं चाहता था, क्योंकि वह मेरे सपनों के खिलाफ थी। उस खबर को मानने में मुझे अपनी मौत नज़र आ रही थी और इसीलिए मैं आपको लेकर चुपचाप चला आया था। और यहाँ आकर मुझे ऐसा लगा था कि शायद वह मेरी भूल थी;

लेकिन आपकी बात यह बताती है कि शायद वह भूल नहीं थी।" और हठात् सरपंच ने कजौरीसिंह का कन्धा पकड़कर कहा था, "कजौरीसिंह, क्या यह हो सकता है? क्या यह हो सकता है?" और सरपंच ने अपने माथे को दोनों हाथों से पकड़कर दबा लिया था। फिर वे चुप हो गये थे।

कजौरीसिंह ने कहा, "सरपंच साहब भूलिए नहीं, आप क्या कह रहे हैं। आँख खोलकर देखिए। हर आदमी दुनिया में अपने लिए जीता है और अपने घर के लिए मरता है। हिरदेराम बहुत नेक आदमी है, यह मैं भी मानता हूँ। लेकिन अब क्या करना होगा?" कजौरीसिंह ने सरपंच का हाथ पकड़कर कहा, "लेकिन सरपंच साहब, यह एक अफवाह ही तो है। इससे क्या बनता बिगड़ता है! हम लोग गाँव चल ही रहे हैं। चले चलें। स्कूल में लड़के पढ़ ही रहे हैं। किसी को क्या मतलब है! लोग उड़ा ही तो रहे हैं। इसका यह तो कोई मतलब नहीं कि हमारे लड़कों ने ही कत्ल किया है।"

"आप क्या कह रहे हैं? आप सोच भी रहे हैं, आप क्या कह रहे हैं? लड़के कत्ल कर आए हैं, आपको ऐसा शक होता है?"

कजौरीसिंह ने कहा, "नहीं, नहीं। आप मेरा मतलब नहीं समझे। मैं ऐसा कैसे कह सकता हूँ, सरपंच साहब!" और उसने स्वर बदलकर कहा था, "चंचलसिंहजी, गाँव लौट चलिए। डूंमरपुर हमारा गाँव है। हमको और किसी से ताल्लुक नहीं है। हमारे गाँव में कत्ल हो गया है। हमें उसका कातिल वहीं खोजना पड़ेगा। हम लोगों के यहाँ रहने से लोगों को ज़्यादा शक पड़ेगा।"

"आप ठीक कहते हैं।" सरपंच ने कहा था।

और वे दोनों लौट थे।

किन्तु हिरदे की आत्मा में एक अँधकार हो गया था। उसको सूझ नहीं रहा था कि वह क्या करे।

राजाराम ने उसके निकट आकर कहा था, "हिरदे पटेल, बिटिया चली गई!"

"हाँ भैया, चली गई।"

"हिरदे पटेल, वह कैसे चली गई?"

हिरदे ने सिर हिलाया और आँखें पोंछते हुए कहा, "उसका काल आ गया था, भैया राजाराम, उसका काल आ गया था।"

"काल नहीं आया था।" राजाराम ने कहा, "अकाल आ गया था। समय से पहले आ गया था। अब कुछ नहीं होगा।"

हिरदे ने उसकी ओर देखा और पूछा, "क्या कहते हो, कुछ नहीं होगा?"

राजाराम ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा था, "कातिल हाथ आ गया तो सबकुछ हो जाएगा। लेकिन अगर कातिल हाथ नहीं आया तो क्या होगा?"

हिरदेराम ने सोचते हुए कहा था, "भगवान चाहेगा तो वह भी हाथ आ जाएगा।"

और उसके बाद रामधन और मटरू उसके पास आ बैठे थे। दामी पड़ी-पड़ी रोती रही थी।

हुक्का पीते-पीते मटरू ने कहा था, "अरी, जानेवाली तो चली गई। अब जो बचे हैं उन्हें ही देखकर दिन काट। रो-रोकर जी हलकान करने से क्या मिल जाएगा तुझे!"

राजाराम ने कहा था, "भाभी, धीरज धर!"

"मैं और किसी बात को नहीं रोती, भैया देवर!" दामी ने रोते हुए कहा था, "मुझे वह मेरी बिटिया याद आ जाती है। सच, बड़ी असील थी, बड़ी हँसमुख थी!"

"अरी, मुझसे क्या कहती है, भाभी!" रामधन ने कहा था, बहुत भूलने की कोशिश करता हूँ, आँखों से नहीं टलती। वह बिटिया हज़ारों में एक थी।"

"ओ-हो-हो-हो-हो।" हिरदेराम ने विचित्र ध्वनि की और कहा, "हे भगवान, मुझे उठा ले, मुझे ऐसा दिन भी देखना बदा था!"

"क्यों भैया देवर!" दामी ने पूछा, "उसने गला काटा होगा तो उसे दर्द न आया होगा? अरे, लड़की थी, कोई मूली तो नहीं थी। अब वह क्या ले गया आखिर एक ज़िन्दगी बिगाड़कर? उसे आखिर क्या मिल गया?" और वह फिर फफकने लगी थी।

चम्पो ने बगल के घर से कहा अपने द्वार से, "अरी दामी, तू कब तक रोएगी? बेटा-बिटिया का दुःख तो मरने तक का होता है। उसका कोई अन्त नहीं होता।"

किन्तु दामी ने उसका उत्तर नहीं दिया था। वह मानो चम्पो के मन में जाकर गड़ गया था। हिरदे ने मानो चम्पो के मन को बढ़ावा देते हुए कहा, "अरे, सब उसकी मरजी है। कुछ हमने पुरबिले जन्मों में ऐसा किया होगा, किसी को सताया होगा, जब ही हमको भी काट-काटकर परमात्मा सता रहा है।"

अनन्त वेदनाएँ मरनेवाली की एक-एक स्मृति के साथ चिपकी अँधकार की एक-एक पर्त से निकली चली आती थीं। उनका जैसे कहीं अन्त नहीं था। असीम निराशा से भरे हुए हिरदे और दामी के मानस बार-बार उस कष्ट की कल्पना करते थे जो उनकी पुत्री को गरदन कटने के समय हुआ होगा और यह कल्पना ही दोनों को विह्वल कर उठती थी। लेकिन ऐसा लगता था जैसे कहीं राह नहीं थी। चलना चाहते थे लेकिन पाँव रखने की जगह नहीं थी। और जब राजाराम ने कहा, "हिरदेराम, पुलिस कातिल को खोज लेगी।"

हिरदेराम ने कहा, "क्यों नहीं!"

लेकिन दामी ने कहा था, "पुलस!" उसके स्वर में व्यंग्य आ गया था, "वह कभी कुछ नहीं करेगी। यह पुलस गरीबों को लूटने के लिए है और अमीरों की गुलामी करने को।"

"कैसी बात करती है, भाभी!" मटरू ने कहा था।

"अरे, मैं देख रही हूँ। मैं सब देख रही हूँ, भैया। ऐसे ही दिन चले जाएँगे। गरीबों की कौन सुनता है! पर मुझे डर यह होता है कि आज पली-पलाई एक चली गई, कहीं ये बाकी भी न चले जाएँ।" यह कहते-कहते उसने अपने दोनों हाथ उठाकर सामने लेटी अपनी दूसरी लड़की के सिर पर रख दिए।

उस समय हुक्का ठण्डा हो चला था और मटरू और रामधन के साथ हिरदेराम बाहर आ गया था।

दरोगाजी ने फौरन दो कांस्टेबलों को हुक्म दिया कि वे गाँव जाएँ और सियाराम नाई, उसकी औरत व उसकी लड़की निहालकौर को बुला लाएँ। कांस्टेबल अपनी मुहिम पर चल दिए। दरोगाजी ने हरएक व्यक्ति से अलग-अलग पूछना शुरू कर दिया। सारे काश्तकार परेशान थे। कोई कुछ कह रहा था और कोई कुछ। दरोगाजी ने एक-एक करके सबके बयान लिए और सबको हवालात में बन्द करवा दिया। बन्द हो जाने पर जैसे वे लोग बाहर की मुसीबत से बच गए थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब वे क्या करें। वे नम्बरदारान थे। उनकी अपनी एक इज़्ज़त थी। इस तरह बन्द हो जाने में उनका अपमान था। लेकिन कीच के फिसले और राज के पिटे का कोई विशेष अपमान नहीं माना जाता था। उनके घर का सारा काम बन्द पड़ा था, फसल में नुकसान हो रहा था और तब उन्हें याद आने लगा कि उनकी औरतें घर, ढोर-डंगर सँभालती रहेंगी, तो खेत उजड़ जाएँगे और खेत का काम वे कर नहीं सकेंगी। दुनिया-भर की मवेशियाँ घूमती रहती हैं। जब वे लोग बाहर थे तो उनमें से कई अधरात से भूमरें तक छिपे-छिपे पसर चराया करते थे। उन लोगों को दूसरे का खेत अपने जानवरों को चरा देते हुए दर्द नहीं आता था। लेकिन अपने खेत का एक पत्ता भी दूसरे को खाने देने को तैयार नहीं थे। जब बिजार पड़ोसी का खेत खाता था, तब वो कहा करते थे—अरे मत मारो, गऊ का जाया है, महादेव बाबा का वाहन है। भैया हम तो किसी की आत्मा दुखाना पसन्द नहीं करते। लेकिन जब वह गऊ का जाया उनके यहाँ चरने आता था, तब वे कहते थे—ले ससुर, तुझे और कोई जगह नहीं मिली, बाप का घर समझकर चरने आ गया। स्वार्थ उनकी रग-रग में भरा हुआ था। उनके छोटे हौसले थे, छोटे दायरे थे। और अब कल से जब वे मुसीबतों में चूर हुए, मवेशियाँ उन्हें बघेर बनकर डराने लगीं। जब वे कल्पना करते कि गाँव के लोग बेदर्दी से उनके खेतों को चरते देखेंगे, तब उनका कलेजा मुँह को आने लगा। लेकिन दरोगाजी अब अपने घर जा चुके थे। उन लोगों की बातों से उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

इधर गाँव में जब नाई के घर पर सिपाही पहुँचा तो माँ और बेटी घबरा गईं और सारी पट्टी में सनसनी फैल गई और औरतें आपस में कहने लगीं, "अरी बहना, यह कैसा राज है,

जिसमें बय्यरों पर भी लम्बर आने लग गया!" पहले औरत गाँव की अथाई पर नहीं चढ़ पाती थी, लेकिन अब कोई बचत नहीं थी। यह दूसरा ज़माना था। पहले औरतें चौका-चूल्हा समेटती थीं, लेकिन अब जब नेता उनके द्वार पर आते थे, तब वे ऐंठकर उनकी ओर देखती थीं। पुरानी औरतों को वोट देने का अधिकार नहीं था। माँ ने बेटी की ओर देखा और बेटी ने माँ की ओर। निहालकौर को लगा कि वह घिर गई थी, लेकिन उसके चेहरे पर एक दृढ़ता आ गई। माँ ने कहा, "डूब न गई तू कुआँ-पोखर में। फूट न गए तेरे दीदे। काहे को देखा तूने उन दोनों को। अब मैं तेरे बाप से क्या कहूँगी, जब वह लौटकर आएगा कि मैं थाने पर गई थी? जालम पुलिसवाले जाने क्या न करेंगे!" उसको लगा, वह रो देगी, लेकिन जाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं था। सिपाहियों के साथ वे दोनों थाने की ओर चल दीं। शाम के करीब पाँच बजे जब वे थाने पर पहुँची तब दरोगाजी अपने घर गए हुए थे। दरोगाजी के घर इत्तला भेजी गई। उन्होंने तुरन्त बाहर आकर अपनी तहकीकात शुरू कर दी। निहालकौर और उसकी माँ ने देखा तो गाँव के इज़्ज़तदार नम्बरदार व इर्द-गिर्द के काश्तकार उन्हें बन्द दिखाई दिए। आतंक के कारण वे दोनों घबरा गईं और रोने लगीं। दरोगाजी को देखा तो जैसे खून सूख गया। दरोगाजी ने फाइल निकाली और निहालकौर की माँ से पूछने लगे, "इधर आओ, क्या नाम है तुम्हारा?"

नाइन ने मुँह पर घूंघट काढ़ रखा था। लेकिन उसकी नाक के नीचे का हिस्सा दिखाई दे रहा था। अब उसकी उम्र ढल चुकी थी। उसने लाज दिखाने का अभिनय किया, क्योंकि वह डूंमरपुर गाँव की बहू थी। दरोगाजी चिल्लाए, "बोलती है कि नहीं बोलती?"

निहालकौर फटी आँखों से देखती रही। लेकिन गाँव की बहू अपना नाम बताने में बहुत झिझकती है। बहू हो जाने के बाद किसी की पत्नी बन जाती है या किसी की माँ। और उसका परिचय इन माध्यमों से ही होता है। अड़ोस-पड़ोस की औरतें यदि इन दोनों माध्यमों को नहीं पकड़तीं तो उसके गाँव के नाम पर उसे बुलाती हैं कि 'फलाने गाँववाली।'

दरोगाजी ने फिर अपने भारी स्वर से पूछा, "क्या नाम है तेरा?"

नाइन ने सहमे हुए स्वर में जवाब दिया, "इसकी अम्मा हूँ जी।"

दरोगाजी ने कहा, "इसकी अम्मा हूँ जी! फाइल में क्या यह लिखा जाएगा कि तू किसकी अम्मा और किसकी बीवी है? अगर खून तैने किया है, तो मुजरिम तू ही ठहराई जाएगी, कोई दूसरा नहीं। उसके लिए नाम जरूरी है।"

नाइन ने दोनों हाथ ज़मीन पर रख दिए, माथा धरती पर टेक दिया और घिघियाते हुए रोते हुए कहने लगी, "मैंने कतल नहीं किया। दादा की सौगन्ध, मैं नहीं जानती।"

भीकम चिल्लाया, "अभी हवालात में बन्द कर दी जावेगी। मक्कड़ बनाती है। हुज़ूर के हुक्म की उदूली करती है। हुज़ूर के पास इतना टैम नहीं, जल्दी-जल्दी जवाब दे। क्या नाम है तेरा?"

नाइन बैठ गई। उसकी मुद्रा से ऐसा लगा जैसे वह यह समझ गई थी कि इन लोगों से प्रार्थना करना व्यर्थ है। उसने आँखें पोंछ लीं और बोली, "चम्पो।"

दरोगाजी ने लिख लिया और फिर पूछा, "उस दिन तू खेत पर रखवाली कर रही थी?"

नाइन ने कहा, "मैं नहीं थी जी।"

"तो कौन था?"

"मेरी छोरी निहालकौर रखवाली कर रही थी।"

दरोगाजी ने निहालकौर से आँखे मिलाईं। वह कांप कर रोने लगी। दरोगाजी क्षण-भर तक अपनी पैनी आँखों से देखते रहे। और उन्होंने कहा, "अभी से तुम आँखों से आँसू क्यों बहा रही हो? इन बातों से हम लोग कभी नहीं डरते। समझ में आया? खबरदार जो नखरे किए। जो हम पूछते हैं उसका ठीक-ठीक जवाब दे, वरना समझ ले, हथकड़ियाँ पड़ जाएगी, हथकड़ियाँ।"

निहालकौर स्तब्ध हो गई। दरोगाजी ने फिर कहा, "सच-सच बतलाना, मैं जो तुमसे पूछूं, उसका जवाब ठीक से देना और फिर तूने ज़रा भी झूठ कहा तो मैं तेरी देह से खाल उतरवा लूँगा।"

निहालकौर ने आँसू पोंछे और कहा, "मैं सच-सच कहूँगी।"

"अच्छा बताओ, जिस दिन यह कत्ल का केस हुआ था, उस वक्त तू कहाँ थी?" निहालकौर ने जवाब दिया, "मुझे यह पता नहीं कि कतल का केस कब बना था। मैं अपने खेत पर रखवाली कर रही थी।"

दरोगाजी ने सिर हिलाकर लिखा और फिर कहा, "तेरा खेत इस गरीब किसान के खेत से कितनी दूर था?"

"मेरा खेत इसके खेत के बगल में है।"

"और तेरे पास कौन था?"

"मैं अकेली अपने खेत की रखवाली कर रही थी।"

दरोगाजी ने मुद्रा बदली। माथे पर तेवर बदल गए, उन्होंने कहा, "सच-सच बता, मैंने तेरी बाबत सब-कुछ जाँच कर ली है। यह केस तूने अपने हाथों से किया है। मैं खूब जानता हूँ कि तू कितनी चालाक है! तेरी माँ के बाबत भी मैंने सुन रखा है।"

चम्पो ने काटा, "महाराज, आप कैसी अनहोनी बातें कर रहे हो! भला बय्यरबानी ऐसा काम कर सकती है! जिसमें मेरी लड़की तो कभी ऐसा कर ही नहीं सकती। आप बड़े आदमी हो, ऐसा अपने मुँह से मत कहो।"

दरोगाजी गरजे, "तुम चुप रहो। जब मैं निहालकौर से पूछ रहा हूँ, तुम बीच में क्यों बोलती हो? बाहर निकल जाओ।"

चम्पो न उत्तर दिया, “महाराज, मैं अपनी लड़की को अकेली यहाँ नहीं छोड़ सकती।”

दरोगाजी ने कहा, “हम इस लड़की का क्या करते हैं? बयान लेकर वापस कर देंगे, तुम बाहर बैठ जाओ।”

लेकिन चम्पो अपनी जगह से नहीं हिली। उसका यह हठ दरोगाजी के क्रोध को भड़काने लगा। उन्होंने पुकार कर कहा, “भीकम, इस औरत को बाहर बैठा दो।”

दीर्घाकार भीकम ने एक ठोकर मारी और चम्पो को बाहर निकाल दिया। निहालकौर अकेली रह गई। उसने भयभीत दृष्टि से चारों ओर देखा। लेकिन दरोगाजी जैसे अपने ध्यान में तन्मय थे। उन्होंने कहा, “हाँ, अब बताओ। तुम्हारे पास उस दिन कोई आदमी आया था?”

“नहीं।”

“ठीक बताओ

लड़की चुप रही।

दरोगाजी ने कहा, “उस दिन सरपंच और वार्ड पंच के लड़के तुम्हारे पास नहीं आए थे?”

निहालकौर के चेहरे पर रंग बदल गए। फिर भी उसने दृढ़ता से कहा, “नहीं।”

दरोगाजी ने कहा, “लेकिन उस रास्ते से होकर अपने खेत पर ज़रूर गए थे?”

“हाँ, गए थे।”

“और तुम नीचे खड़ी थीं?”

“नहीं।”

“तो तुम कहाँ थीं? कहाँ से तुमने उन्हें देखा?”

“मैं मचान पर बैठी थी।”

“तो तूने उन्हें मचान पर से देखा। तूने वहीं से उनसे बातचीत की थी?” निहालकौर के मुँह से निकल गया, “हाँ।

दरोगाजी ज़ोर से चिल्लाए, “अब फिर तू कैसे कहती है कि वो तेरे पास नहीं आए थे?”

लड़की चुप हो गई। दरोगा जी उठ खड़े हुए और चिल्लाए, “झूठ बोलती है हरामज़ादी! बदज़ात नाई की लड़की! तेरी यह ज़ुर्रत कि हमारे सामने झूठ बोले?” और दरोगाजी के हाथ में एक बार बेंत सरसरा उठा और सटाक निहालकौर की पीठ पर बैठा।

लड़की कांप कर एकदम चिल्लाने लगी, “अरे, मार डाली रे, बचइयो!”

दरोगाजी ने दूसरी बार बेंत कसकर लगाया, और बोले, “खामोश! एक लफ्ज़ भी मुँह से निकाला तो खोदकर गड़वा दूँगा। कुत्ते छुड़वा दूँगा।”

निहालकौर खड़ी होकर रोने लगी। बाहर उसकी माँ रो रही थी। रास्ते के लोग तमाशा देख रहे थे। उनका पहला उद्देश्य था मनोरंजन, दूसरा कौतूहल।

शाम हो चुकी थी। दरोगाजी बेंत लेकर फिर आगे बढ़े। लड़की ने हाथ जोड़कर कांपते हुए कहा, “मत मारो महाराज, मुझे मत मारो।”

दरोगाजी ने कहा, “सच-सच बताएगी?”

निहालकौर ने कांपते हुए स्वर में उत्तर दिया, “मैंने सरपंच और वार्ड पंच के लड़कों को जरूर देखा था और मेरे खेत की तरफ आए भी थे।” और उसके बाद वह चुप हो गई।

दरोगाजी ने कहा, “फिर क्या हुआ?”

निहालकौर रोने लग गई। दरोगाजी ने ढांढ़स बंधाया, “रोती क्यों है, सच बता दे। अब मैं तुझको नहीं मारूँगा।”

निहालकौर ने कहा, “मेरे पास आकर वो बैठे थे। मैंने पूछा, तुम स्कूल से कब आए हो? तब उन्होंने जवाब दिया कि हम शाम की मोटर से आए थे। उन्होंने सबकी राज़ी-खुशी पूछी।” और फिर वह चुप हो गई।

दरोगाजी ने एक बेंत फिर बड़ी ज़ोर से उसकी पीठ पर लगाया कि लड़की ज़ोर से चीत्कार कर उठी। डर के मारे उसकी घिग्घी बँध गई और फिर साहस बाँध कर कहने लगी, “दरोगाजी महाराज, मुझे मत मारो, मैंने और कुछ नहीं देखा।”

“दरोगाजी ने कहा, “हमको पहले यह बताओ कि पहले से क्या तुम्हारी इन लड़कों से कोई मोहब्बत थी?”

लड़की ने जवाब दिया, “बचपन में साथ-साथ खेलते थे, एक गाँव के रहने वाले हैं, पड़ोस था।”

दरोगाजी ने कहा, “यह सब-कुछ ठीक है; लेकिन यह बताओ कि वह तुम्हारे पास कितनी देर ठहरे थे?” और निहालकौर के मुंह से निकला, “वे मेरे पास करीब दो घंटे ठहरे होंगे।”

दरोगाजी न कहा, “शाबाश! डर मत, अगर तू मुझे सच-सच बता देगी तो मैं तुझे छोड़ दूँगा और राज-गवाह बना दूँगा, वरना जेल में सड़-सड़ कर मर जाएगी। समझी? अगर तुझे डर लगता है तो अपनी माँ से और बात कर ले, मैं उसे अभी बुलवाता हूँ।”

दरोगाजी उठकर बाहर चले गए।

चम्पो को दफ्तर में भेज दिया गया।

माँ और बेटी ने जब एक-दूसरे की ओर देखा तो दोनों फूट-फूट कर रोने लगीं। निहालकौर ने कहा, “अम्मा, मेरी तो बुरी हालत हो गई। मुझे दरोगाजी ने बहुत बुरी तरह पीटा है और यह हाल कर रखा है कि मारता है और रोने नहीं देता।”

चम्पो ने कहा, “बेटी, मैंने तुझसे पहले ही कहा था कि सच-सच बात बता दे। हमारी बला से कोई मरे। लेकिन तूने इन दोनों लड़कों की बात पहले क्यों नहीं बताई? उनको भ्रम

बँध गया है। तुझको पहले ही कह देना चाहिए था। मैंने तुझसे घर भी पूछा था, लेकिन तूने मुझे कुछ भी जवाब नहीं दिया। मुझे लगता है कि तुझे इस केस का सारा सच्चा किस्सा मालूम है।"

निहालकौर ने नीचे देखते हुए कहा, "मैं कई रोज़ से दिल में यही सोच रही थी कि अम्मा को किसी के ज़रिए यह किस्सा सुना दूँ, लेकिन मैंने किसी को यह नहीं बताया।"

"लेकिन तुझे मुझसे यह नहीं छिपाना चाहिए था और अब भी बतला दे कि क्या मामला है।"

लड़की ने चारों तरफ देखा। थाने में वहाँ कोई नहीं था और कहने लगी, "उस दिन सरपंच और वार्ड पंच के लड़के मेरे खेत पर आए थे। करीब दो घंटे मेरे खेत पर बैठे रहे। उन्होंने मुझसे हँसी-मज़ाक भी किया। मैंने उनसे कहा, "तुम बड़े घरों के लड़के हो, यह बात अच्छी नहीं है। तुम यहाँ से चले जाओ, वरना मैं शिकायत कर दूँगी। और माँ आने वाली है। मैं अभी उसको बता दूंगी। तो मुझे उन्होंने जवाब दिया कि हम तेरे घर पर होकर आए हैं, आज तेरी माँ खेत पर नहीं आ रही है, कोई चिन्ता मत कर और मुझसे उन लड़कों ने छीना-झपटी भी की। इन सब बातों को मेरी भाएली देख रही थी। मैंने उन लड़कों से कहा कि तुम उसके खेत पर होकर निकल जाओ। उस लड़की ने यह सारा किस्सा देख लिया है। वह मेरी और तुम्हारी दोनों की बदनामी करेगी। उसको जाकर समझाओ कि मैं बेकसूर थी और उसके बाद वे दोनों उसके खेत की तरफ निकल गए और फिर मुझे पता नहीं, क्या हुआ। मैंने कोई हल्ला-गुल्ला भी नहीं सुना था। मैं अपने खेत पर बैठी-बैठी रखवाली करती रही। शाम को जब उसके बाप ने हल्ला मचाया, तब मैं उसके खेत पर ज़रूर गई थी। खेत पर जाकर उसकी लड़की का बुरा हाल देखा था।"

चम्पो लड़की को घूरती रही। उसको क्रोध आया। उसने कहा, "कल की छोरी मुझे बनाती है? बेसरम! मेरे पेट से पैदा हुई और मेरे को पट्टी पढ़ाती है, जैसे मैं कुछ समझती नहीं। आज तक तेरे मुँह में लड्डू भरे थे जो तू बोली नहीं। वो तेरे खेत पर आए थे, उन्होंने तेरे से छीना-झपटी की थी और दो घंटे तक वे तुझसे छीना-झपटी करते रहे। तूने हल्ला-गुल्ला भी नहीं किया और अगर तू अपनी भाएली को ही बुला लेती, तो वह हल्ला न कर देती, और दोनों को भगा देती? चालाक बनती है तू? मेरी ही आँखों में धूल झोंकना चाहती है! पैदा होते ही न मर गई तू! मेरे मुँह पर कालिख लगाने को बची थी! तेरा बाप परदेश में है और तेरे ये रंग-ढंग हैं? गाँव में कुआँ-पोखर न रहे डूब मरने के लिए?" उसने दोनों हाथों से अपने माथे को पकड़ लिया और पीटने लगी। अब फिर कहने लगी, "फिर तूने उन्हें वहाँ भेज दिया? अरे, तेरे दांत नहीं गिर पड़ते?"

निहालकौर उसे पत्थर की तरह देखती रही और फिर उसने बहुत ही धीरे से कहा, "मैंने सोचा था, राधे काका से कहूँ।" और यह कहकर उसने चम्पो की आँखों पर आँखें टिका दीं। चम्पो नरम बन गई। निहालकौर जानती थी कि राधे और चम्पो में कुछ गड़बड़

चल रही थी। चम्पो ने बात बदलकर कहा, “तू उस दिन ही मुझे यह किस्सा बतला देती तो मैं सारे गाँव को परेशान तो न होने देती।” क्रोध और क्षोभ से उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे अपनी लड़की से घृणा हो रही थी, लेकिन उसका अपना दामन उतना मजबूत और साफ नहीं था, इसलिए उसे आत्मग्लानि हो रही थी, उसने फिर कहा, “न मैं तेरी इतनी बेइज़्ज़ती कराती। खैर, किया तो तूने बुरा, लेकिन देख, अब मैं तुझे अभी छुड़ाती हूँ।”

दरोगाजी कुर्सी पर बैठे-बैठे अपने मातहतों से बातें कर रहे थे। नायब थानेदार साहब मधुसूदन अरोरा ने कहा, “रात हो चली है। इन लोगों को छोड़ देना चाहिए। सुबह फिर बुला लेंगे। रात को खाने का इन्तज़ाम करना पड़ेगा। रजिस्टर में मुल्ज़िमान के नाम दर्ज करने पड़ेंगे। इससे बेहतर यही है कि इनको छोड़ दें।”

दरोगाजी ने कहा, “देखो, अभी कुछ ही देर बाद या तो गाँववाले आएँगे या उनके घर वाले लोग। अभी उन्हें बन्द ही रहने दो। उनके आने पर छोड़ देंगे। एक रात में कोई भूखा नहीं मर जाता।”

नायब थानेदार ने कहा, “इन दो औरतों को लेकर जो दो कांस्टेबल आए थे, उनमें से एक कह रहा था कि गाँव में शोहरत हो रही है कि हिरदेराम की लड़की को सरपंच व वार्ड पंच के लड़कों ने काटा है। बदचलनी के शिकार हो गए वे दोनों लड़के। किसी कर्ज़े में फंस गए। अपने माँ बाप से माँगने की हिम्मत न रही तो उन्होंने पैसे इकट्ठे करने के लिए हिरदेराम की लड़की के खड़ुए और हंसुलिया वगैरह को उतार लिया। उस रात वे घर ठहरकर दूसरे दिन सुबह स्कूल को चल दिए। दूसरे दिन सुबह स्कूल में हाज़िरी लगवाकर, कहते हैं, कि वे दोनों लड़के भाग गए। उन दोनों के बाप उसी रात से उन्हें ढूँढ़ने के लिए गए हुए हैं, लेकिन उनका अभी तक पता नहीं चला है। हो सकता है वही मुज़रिम हों।”

दरोगाजी ने कहा, “मैं अभी जाँच कर रहा हूँ। आप लोग चिन्ता न करें। एक दो रोज़ में ही असलियत निकल आएगी। सचाई ज़्यादा देर छुप नहीं सकेगी।” यह कहकर दरोगाजी ने सिगरेट सुलगाई और कश खींचकर ढेर-ढेर धुआँ ऊपर की ओर छोड़ दिया। और फिर उन्होंने कहा, “नायब साहब, अभी आप नये हैं। आपका दिल नरम है। मैं जब इस नौकरी में आया था, तब मेरा भी दिल बहुत नरम था। लेकिन मैंने जिनके अण्डर में काम किया, वे बड़े तजुर्बेकार थे। उन्होंने मुझसे पूछा—क्या चोर अपने-आपको कभी भी चोर कहेगा? मैंने कहा—नहीं। उन्होंने मुझसे पूछा—क्या शराफत से पेश आने से गुंडा काबू में आ सकता है? मैंने कहा—नहीं। उन्होंने कहा—ठीक कहते हो। छोटी गुंडागर्दी को रोकने के लिए बड़ी गुंडागर्दी की ज़रूरत है। राज को उखाड़नेवाले गुंडागर्दी करते हैं। उस गुंडागीरी को रोकने के लिए शरीफ आदमी बड़े गुंडों की जमात को तैयार करते हैं। वह जमात सिविल ज़िन्दगी में पुलिस कहलाती है और मिलिट्री की ज़िन्दगी में फौज कहलाती है। इस बड़ी गुंडागर्दी को करने में कभी मत हिचकिचाओ, क्योंकि शरीफ लोग इसी के बल

पर ज़िन्दा रहते हैं। बरखुरदार! पुलिस को दुनिया बुरा कहती है, लेकिन अगर पुलिसवाला बुरा न हो तो दुनिया चल नहीं सकती। जिस ज़िन्दगी में खूनी, कातिल, बेईमान, जालसाज, मक्कार और झूठों से पाला पड़े, वहाँ कब तक तुम शराफत से ज़िन्दगी गुजार सकते हो? कब तक तुम्हारा उन पर असर नहीं पड़ेगा? तुम्हारा, चौबीसों घंटे, गलाज़त से काम पड़ता है। नाली साफ करनी है तो तुम गुलदस्तों से नहीं कर सकते, तुम्हें झाड़ू उठानी पड़ेगी। तुम जानते हो कि जो आदमी कसूर करेगा, उसके पीछे कुछ मज़बूरी होगी। उस मजबूरी ने उसको एक बेहयाई दी होगी और बेहयाई जब उसकी आदत बन जाएगी, तब वह मुज़रिम बन जाएगा और वह बेहयाई जब उसकी आदत बन गई, जब जुर्म उसकी आदत बन गया, तब उसको सज़ा देना ज़रूरी है। बरखुरदार! यह मत सोचो कि जुर्म अपने-आप में क्या है। जुर्म वह है जो कानून में लिखा हुआ है। हम पुलिस के लोग हैं। हमको यह नहीं सोचना है कि कानून ठीक है या गलत। हमारा जो कानून है वही ठीक है, वही कानून है। हमको पैसा दिया जाता है कि हम उस कानून को लागू करके दिखाएँ। हम तो नौकर हैं। हमें हुकूमत इसलिए नहीं दी गई है कि हम दूसरों को डाँट सकें या मार सकें। हमको हुकूमत इसलिए दी गई है कि हम राज के काम को चला सकें। हमें बूट दिए गए हैं कि हम आगे के हिस्से से ठोकरें लगाएँ। लेकिन उनकी एड़ियों को खट से मिलाकर अपने अफसरान की सलामी बजाते रहें।"

दरोगाजी ने सिगरेट की राख झाड़ते हुए कहा, "उस दिन से गजराजसिंह ने ज़िन्दगी का रवैया बदल दिया।" और रुककर मधुसूदन अरोरा की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "नायब साहब! मैंने बड़े-बड़े आलिमफाज़ल और बड़े-बड़े बांके लोग देखे हैं। बड़े-बड़े हुनरबाज़ लोग देखे हैं। वे आत्मा-परमात्मा की बातें किया करते थे। लेकिन मार एक ऐसी चीज है जो बड़े-बड़ों को ढीला कर देती है। जिस वक्त आदमी को नंगा करके बर्फ की सिल्ली पर बैठा दिया जाता है और जिस वक्त उसके मिर्चें भर दी जाती हैं, उस वक्त बड़े-बड़ों के छक्के छूट जाते हैं। और मैं आपसे यकीनन कहता हूँ कि इंसान को अपना जिस्म इतना प्यारा होता है कि वह मार से बड़ी जल्दी काबू में आता है। कांग्रेसवाले, मैं आपसे प्राइवेट तौर पर कहता हूँ, साले बड़े बेवकूफ हैं। चप्पल-चटकाई हैं। इनके बाप ने भी कभी हुकूमत की थी? दो-दो कौड़ी के परचूनिए हुकूमत करेंगे? अब उनकी सलामी बजानी पड़ती है। 'आइए महाशयजी, आइए महाशयजी' कहना पड़ता है। चार आने की टोपी लगा ली और मालिक बन बैठे। आकर बात करेंगे—देखिए श्रीमानजी, अमुक ग्राम में ऐसा हुआ। जी में तो आता है कि सालों को वहीं-के-वहीं हवालात में बन्द कर दूँ। अपना काम पड़ता है तो साले दुगुना पिटवाते हैं। उन्होंने सर्विसेज़ का डिसिप्लिन बिगाड़ दिया। उन्होंने मदरसों का डिसिप्लिन बिगाड़ दिया। उन्होंने फौज का डिसिप्लिन बिगाड़ दिया। दोहरी सरकार कायम कर दी और इन्साफ का गला घोंट दिया। मैं आपसे एक बात कहे देता हूँ कि इस खून के केस का मैं पता लगा लूँगा, लेकिन पंच और सरपंच मालदार आदमी हैं।

दुनिया कहती है कि पुलिसवाले बदमाश होते हैं, लेकिन मैं यकीन से कह सकता हूँ कि अगर उन लड़कों के बापों के पास पैसे हों तो ज़्यूडिशियरी में यह केस रद्द हो जाएगा और कातिल साफ छूट जाएँगे। हुकूमत अंग्रेज में यह चीज नहीं थी। कत्ल की सज़ा फांसी थी। हज़ार गुनाह थे, हज़ार जुल्म थे। लेकिन राज-कांग्रेस में इंसाफ नहीं, क्योंकि इंसाफ को पैसे से खरीदा जा सकता है। खादी की टोपी से खरीदा जा सकता है।" और फिर उन्होंने उठते हुए कहा, "लेकिन हमें वक्त के साथ चलना है नायब साहब! हमको अपना पेट पालना है। हमें क्या पड़ी है! जैसा ज़माना आएगा, सिर झुकाते जाएँगे। हुकुम मिला है—तफतीश करो! तफतीश करेंगे। हुकुम मिलेगा—कुछ नहीं होगा, छोड़ दो, छोड़ देंगे। अपने बाप का किसने, साले ने कतल किया है कि बदला लें। राज तुम्हारा है, तुम सँभालो।"

मुंशीजी सामने आ खड़े हुए थे। दरोगाजी ने कहा, "मुंशीजी!"

"हुज़ूर!"

"आपका क्या ख्याल है, मैं ठीक कहता हूँ?"

"बिलकुल हुज़ूर।"

"किस मामले में मुंशीजी?"

"यही हुज़ूर, जो अभी आपने फरमाया!"

"तो आप इत्तफाक करते हैं?"

"बिलकुल हुज़ूर, बिलकुल।"

थानेदार साहब ने नायब की ओर देखकर कहा, "हुकूमत ऐसे लोगों से चलती है। समझते हैं आप! मैं जानता हूँ मुंशीजी को नहीं मालूम कि मैं क्या कह रहा था। क्यों मुंशीजी?"

मुंशीजी ने सिर पकड़ते हुए कहा, "जी हाँ हुज़ूर।"

"फिर आप किस की हाँ-में-हाँ मिला रहे थे?"

"हुज़ूर की, रुतबे की, हुकूमत की, ओहदे की।"

"सुना आपने?" दरोगाजी ने कहा, "नायब साहब! अपने मुंशीजी पुराने आदमी हैं। वे जानते हैं कि डिसिप्लिन किसे कहते हैं। इसलिए कि वह कुर्सी की इज़्ज़त कर रहे थे। लेकिन मुंशीजी मेरी इज़्ज़त नहीं कर रहे थे। क्यों मुंशीजी?"

मुंशीजी ने कहा, "हाँ हुज़ूर।" फिर जैसे उनको याद आया कि उनके मुँह से क्या निकल गया था। बोले, "नहीं हुज़ूर।"

इसी वक्त कुछ लोगों का शोरगुल सुनाई दिया। नम्बरदारों और हवालात में बन्द काश्तकारों के कुटुम्बी लोग गाँव से थाने आए थे। वे लोग जाँच करने लगे कि उनके घरवाले कहाँ थे। सिपाहियों ने कठोरता से उत्तर दिया कि वे सब लोग हवालात में बन्द हैं। कुटुम्बियों में सन्नाटा छा गया। थाने में दो-एक चपरासी चालाक भी थे --नानिगराम और

हीरालाल। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। नानिगराम बाहर आ बैठा। उसको एकान्त में देखकर कुछ लोग उसके पास आ गए। नानिगराम ने कहा, “अरे भाई, वे लोग नहीं छूटेंगे।

“नहीं छूटेंगे?” एक ने पूछा, “सो क्यों?”

“उनपर जुर्म साबित हो गया है।”

“हो गया?”

“उनको तो जेल होगी।” नानिगराम ने बीड़ी सुलगाते हुए कहा। उसकी बातें सुनकर कुटुम्बी लोग घबरा गए। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। उनमें सबसे साहसी राजाराम था। उसने कहा, “भाई किसी तरह दरोगाजी से मिलाकर हमारे घरवालों को छुड़वाओ, हमारा सारा काम बरबाद हो रहा है। घर पर आज शाम को रोटी भी नहीं बनी।”

नानिगराम ने कहा, “यह राज का काम है कि घर का? जुर्म करेंगे तो मरेंगे, इसमें हम लोग क्या कर सकते हैं! अभी हम छोड़ दें तो दूसरे लोग चिल्लाएँगे। एम. एल. ए. के पास जाएँगे, ऊपर खबर पहुँचेगी। खबर फैलेगी कि पुलिस ने कुछ ले-देकर छोड़ दिया होगा। अब मान लो तुम्हारे साथ किसी ने कुछ जुर्म किया होता और हमने छोड़ दिया होता, तो तुम न पुकारते?”

राजाराम न नानिगराम के पैर पकड़ लिए। अब वह रोने लग गया।

नानिगराम ने कहा, “रोने से क्या काम चलता है भाई! अगर तुम लोग अपने घरवालों को निकलवाना चाहते हो तो दो सौ रुपये के नोट लाओ। हम अभी दरोगाजी से बातें करते हैं। हैं तुम्हारे पास नोट?”

राजाराम ने कहा, “महाराज, हम तो खाली हाथ आए हैं।”

नानिगराम ने हंसकर कहा, “अरे, खाली हाथों से काम नहीं चलता। अब तुमसे मुरव्वत की भी जाए तो किस बात से? तुम सोचो कि हम लोग राज का काम करते हैं। हमारी कौन-सी ज़मीन-जायदाद, दौलत गाड़ी है? कौन-सी बड़ी तनख्वाह मिलती है? हम जो तुम्हारे बाल-बच्चों का ख्याल करें तो तुम भी तो हमारे बाल-बच्चों का ख्याल करो। मोहब्बत दोनों तरफ से चलती है, मुरव्वत एकतरफा नहीं चलती। हम भी यह सोचें कि भाई अपना आदमी है, अपना मददगार है, काम आता है, तो तुम भी तो कुछ करके दिखाओ और फिर यों तो सभी चाहते हैं कि हमारा काम हो जाए। हर्द्द लगे न फिटकरी, बर्द्द-सी बहू आ जाए।”

राजाराम के पास उत्तर नहीं रहा। कुटुम्बी हताश-से अपने-अपने घरों को चल दिए। रात-ही-रात उन्होंने घर पहुँचकर दो सौ रुपयों का इन्तज़ाम किया और सुबह होते ही थाने आ गए।

नानिगराम ने देखा तो मुस्कराया और बोला, “देखो, यह बात ठीक है। अरे, दरोगाजी के सामने जाना पड़ेगा। कोई खेल है अफसर के सामने खड़ा हो जाना?”

राजाराम ने दोनों हाथों से उसके हाथ दबाकर कहा, "कैसे भी हो, अब की बेर उबार लो।"

नानिगराम ने उत्तर दिया, "यार देख, ज़बरदस्ती तो करे मत। कोशिश करना हमारे हाथ में है। नतीजा भगवान के हाथ में।"

उसने हीरालाल से जाकर कुछ बातें की। हीरालाल दरोगाजी के पास पहुँचा और एकान्त में कहने लगा, "हुज़ूर, आपने इतने आदमी क्यों बन्द कर रखे हैं? उन लोगों को छोड़ दीजिए। उनके घरवाले रात को हमारे पास आए थे। हमने उनसे बातें कीं और उन लोगों को हमने दो सौ रुपये पर राज़ी कर लिया है। अगर वो ले आवें तो क्या उनको ले लें?"

दरोगाजी ने सिगरेट का कश छोड़ते हुए कहा, "मेरे पास उनको लाने की ज़रूरत नहीं है, तुम ले लेना और नायब थानेदार से कहकर छुड़वा देना। पर दो सौ भी कोई रकम है?"

हीरालाल मुस्कराता हुआ बाहर निकल आया।

इधर नाइन चम्पो अपनी लड़की को छोड़कर थानेदार साहब के घर पर पहुँची और थानेदार साहब की पत्नी से चिकनी-चुपड़ी बातें बनाने लगी और रो-रोकर अपना किस्सा सुनाने लगी। सुशीला दसवें दर्जे तक पढ़ी थी। थी दरोगा की पत्नी, लेकिन दिल उसका कमज़ोर था। उसे दया आ गई। उसने एक नौकर को फौरन बुलाया और थाने पर भेजा। उस समय दरोगाजी निहालकौर का बयान लेना शुरू कर चुके थे। निहालकौर रोती चली जाती थी और जवाब देती जाती थी। दरोगाजी ने पूछा, "तो वे दोनों लड़के तुम्हारे पास दो घण्टे बैठे रहे?"

"हाँ, महाराज!"

"अच्छा, तो दो घण्टों में उन्होंने तुमसे क्या बातें कीं?"

"राज़ी-खुशी की बात कर रहे थे।"

"अच्छा, राज़ी-खुशी में दो घंटे तक क्या-क्या बातें हुईं? किस-किसकी राज़ी-खुशी पूछी गई?"

"यही घरवालों की।"

नौकर बाहर इन्तज़ार करने लगा।

"और उन्होंने तुमसे कुछ नहीं कहा?" दरोगाजी ने पूछा।

"नहीं।"

"अच्छा।" दरोगाजी ने कहा, "बाद में वो कहाँ गए?"

"वे अपने खेत पर चले गए।"

"किधर से गए?"

"पता नहीं वे किस रास्ते गए।"

दरोगाजी हँसे, “लड़की!” उन्होंने स्वर बदलकर कहा, “फिर चतुराई दिखला रही है। मालूम देता है कि तेरी पीठ में फिर खुजली मचने लगी है!”

निहालकौर कांप उठी और उसने कहा, “नहीं महाराज, तुम्हारे पाँव पड़ूँ, दुहाई है तुम्हारी।”

दरोगाजी ने कहा, “ठीक-ठीक कहो, घबराओ मत, मैं तुम्हारी सज़ा नहीं होने दूँगा। सच-सच बताओ।”

नौकर ने आगे बढ़कर कहा, “हुज़ूर, आपको घर याद कर रही हैं। खाना हो चुका है।”

दरोगाजी ने तहकीकात बन्द कर दी और घर की तरफ रवाना होने लगे। चलते-चलते पहरेवाले सिपाही से कहा, “तुम इस लड़की पर निगाह रखना, मैं अभी आता हूँ।” सिपाही कठोर दृष्टि से निहालकौर को देखता रहा। दरोगाजी चले गए। निहालकौर ने सिपाही से पूछा, “मेरी अम्माँ कहाँ चली गई है?”

सिपाही ने उत्तर दिया, “तेरी अम्माँ क्या मुझसे कहकर गई है! चली गई होगी कहीं।”

लड़की घबराकर रोने लगी। पहरेवाले सिपाही ने एक डाँट दी और निहालकौर सहमकर चुप हो गई।

दरोगाजी खाना खाने बैठे। सुशीला ने अपनी काजर-लगी आँखों से उनकी ओर देखा और कहा, “आप औरतों को ज्यादा तंग न करें। यह अबला जात होती हैं। आप बाल-बच्चेदार आदमी हैं। मैंने सुना है कि गाँव की एक नाइन और उसकी लड़की को आपने बहुत परेशान किया है।”

दरोगाजी ने बड़े आराम से कहा, “तुम औरत हो, तुम इन बातों को नहीं समझ सकतीं। तुम्हें क्या मालूम कि मुकदमे की छानबीन किस तरह से की जाती है। असलियत निकालना आसान नहीं होता। तुम औरतें तो घर का इन्तजाम करती हो। घर में वही जाने-पहचाने लोग होते हैं—बच्चे, लड़कियाँ, रिश्तेदार, जिन्हें मोहब्बत होती है। मर्दों को बाहर बिना जाने-पहचाने लोगों से काम पड़ता है। उनसे वे रोजी निकालते हैं, उनसे ज़िन्दगी गुज़रती है। इसलिए उनके पैंतरे दूसरे होते हैं, तुम्हारे दूसरे। तुम रूठ सकती हो कि हमें कोई तो मनाएगा; लेकिन बाहर मनाने वाला कौन है, अगर हम रूठ कर बैठ जाएँ? घर एक अमन की जगह है, शांति की जगह है और बाहर होड़ रहती है जैसे भेड़िए एक दूसरे को खा जाना चाहते हैं कि कब यह दांव चूक जाए और कब इसे दबोच लें! तुम्हें क्या मालूम कि मर्दों को कितनी मुसीबत से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ती है? नौकरी है यह। अफसर इसमें मुरव्वत नहीं करते। मातहत इसमें इसके इन्तज़ार में रहते हैं कि कब हम गलती करें और कब वे कचौंटी निकालें और अफसरों तक शिकायत पहुँचा दें। घर और बाहर में बड़ा फर्क होता है।”

सुशीला एकाएक उत्तर न दे सकी। उसने कहा, “आपका मतलब यह है कि औरतें कुछ काम ही नहीं करती हैं! लेकिन वे करें भी तो कैसे? उनको आज़ादी है ही कहाँ?”

दरोगाजी हँसे और बोले, “आज़ादी! अरे, आज़ादी का सवाल तब उठता है जब पुलिस के हाथ में हुकूमत होती है। यह जो बन-ठनकर शहर में लड़कियाँ चलती हैं, एक दिन में सब सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाए उनकी, अगर गुंडों का राज हो जाए। बराबरी का दर्जा चाहती हैं? मैं जिस मामले में तहकीकात कर रहा हूँ, उसमें उस लड़की का हाथ है। इसलिए उसको तंग किया जा रहा है। लेकिन वह अभी तक असलियत नहीं बतला रही है।”

सुशीला ने साग परोसते हुए कहा, “मैं सब बात जानती हूँ।”

“तुम जानती हो!” दरोगाजी ने आश्चर्य से देखते हुए कहा, “तुम कैसे जानती हो?”

“आज एक बुढ़िया मेरे पास आई थी। उसने रो-रोकर सारा किस्सा मुझको सुनाया था और वह बुरी तरह रो रही थी। उस औरत का घरवाला अभी गाँव में नहीं है। परदेस में बेचारा रोज़गार करता है। उसकी लड़की आपके सामने खुलकर बात नहीं करती, क्योंकि उसको कहने में शर्म लगती है। जवान लड़की है। उस लड़की की माँ ने मुझको सारा किस्सा सुना दिया है।”

दरोगाजी ने कौतूहल से पूछा, “क्या सुनाया है?”

सुशीला ने कहा, “आप खाना खा लीजिए। मैं उस लड़की की माँ को आपके सामने ले आऊँगी और उसी के मुँह से सारा किस्सा सुनवा दूँगी।”

खाना खाने के बाद दरोगाजी बैठक में आराम करने लगे और सुशीला उनकी चारपाई के पास मोढ़ा लेकर बैठ गई और उसने चम्पो नाइन को वहीं बुलवा लिया।

चम्पो कहने लगी, “महाराज, मेरी लड़की निहालकौर खेत पर रखवाली करने के लिए रोज़ जाया करती है। उस दिन की बात थी कि सरपंच और वार्ड पंच के लड़के छुट्टी पर अपने गाँव शाम की मोटर से आए थे। दूसरे दिन वे खेत पर गए थे। रास्ते में उन्हें बनैसिंह का खेत मिला। पहले वे उस खेत पर गए और वहाँ बातचीत की। उसके बाद वे मेरे खेत पर पहुँचे और करीब दो घंटे ठहरे। उन्होंने लड़की से छीना-झपटी भी की। लड़की इस किस्म की बात आपसे नहीं कर सकी। वह बहुत रोई थी। उसने उनसे कहा कि वह शिकायत करेगी। मेरी लड़की बड़ी असील है। तब वे लोग डरकर उसी रास्ते हिरदेराम के खेत पर होकर अपने खेत की तरफ चले गए। लड़की ने और कोई किस्सा नहीं देखा। शाम को जब हिरदेराम खेत पर गया तो वह रोने लगा और पास के कास्तकार वहाँ इकट्ठे हो गए। मेरी लड़की भी चली गई और वह अपनी भाएली को कटा देखकर बहुत रोई और रोते-रोते अपने गाँव में आई और उसने सारा क़िस्सा सुनाया। मैं एक गरीब की औरत हूँ। गाँववाले मुझसे गुस्सा रहते हैं, क्योंकि जब से हमारी बिरादरी ने पंचायत की है कि पत्तल-वत्तल नुक्ता में न उठाई जाए, दुल्हन के साथ नाइन न भेजी जाए, तब से गाँववाले हमसे

रंजिस रखते हैं; क्योंकि पहले हमारी बड़ी बेइज्जती होती थी, इसलिए हमारी बिरादरी ने यह पंचायत की थी। मैंने गाँव में किसी से कुछ नहीं कहा। रो-पीटकर घर बैठ गई, क्योंकि आजकल सरपंच और वार्ड पंच का बड़ा दबदबा है। सब लोग उनके डर से थरथराते हैं। किसी की मजाल नहीं कि उनके सामने बात कर ले। सब लोग चुप बैठे रहते हैं और जो कुछ वो लोग चाहते हैं, सो मनमौज करते हैं। गाँव में हमारी बिरादरी के दो-एक ही घर हैं। हमारी कोई नहीं सुनता और हमें बुरी तरह कुचला जा रहा है।"

सुशीला के मुख पर करुणा उभर आई। उसने कहा, "आप इन दोनों माँ-बेटी को छोड़ दीजिए। सोचिए कि जवान लड़की को पुलिस स्टेशन पर छोड़ना ठीक नहीं है। क्योंकि पुलिस के सिपाही अच्छे चलन के नहीं होते।"

दरोगाजी ने कहा, "तो तुम्हारी राय में मैं भी बदचलन हूँ?"

सुशीला ने कहा, "मेरा मतलब आपसे नहीं है।" और हठात् उसके मुँह से निकल गया, "एक बात जरूर है कि मर्दों का भरोसा नहीं।"

दरोगाजी ने कुछ रुष्ट होकर उसकी ओर देखा और कहा, "अरे, औरतों का बड़ा भरोसा होता है! ताली एक हाथ से नहीं बजा करती। पानी गड्ढे में जाकर ही भरता है। तुम समझती तो हो नहीं। अपने घर पर इन लोगों को बुलाना ठीक नहीं है। नाइन को भी थाने पर भिजवा दो। दोनों माँ-बेटी वहीं सो जाएँगी। तुम चाहती हो कि मैं नौकरी से हाथ धो बैठूँ?"

उनका बदला हुआ रूप देखकर सुशीला अपना अपमान होने के डर से, चम्पो के सामने और कुछ नहीं कह सकी। चम्पो को थाने पर भिजवा दिया गया। वह अपनी लड़की के पास जाकर बैठ गई। अँधेरी रात जैसे काटे नहीं कटती थी। आकाश में तारे निकल आए थे। हवा सनसना रही थी। कभी-कभी किसी रात्रि-पक्षी की टुहूकार सुनाई देती थी। चम्पो लेटी थी और निहालकौर आँखें फाड़े चुपचाप बैठी थी। बैठे-बैठे रात निकल गई। सुबह हुई। पक्षी चहचहाने लगे। फिर एक मनोरम वातावरण छा गया। कल जो कुटुम्बी दो सौ रुपये लेकर नानिगराम और हीरालाल के पास आए थे, आज वो फी आदमी दो सौ रुपया लेकर हाज़िर हुए थे, क्योंकि कल उनके जाल में कोई मछली नहीं फँसी थी। इतने आदमियों के लिए दो सौ रुपये ऊँट के मुँह में ज़ीरे के समान थे।

हीरालाल ने फिर आकर कहा, "हुजूर, वो लोग पैसे ले आए हैं, अगर आपका हुक्म हो तो उनसे ले लिये जाएँ।

दरोगाजी ने कहा, "मेरे पास लाने की ज़रूरत नहीं है।" हीरालाल चला गया।

चालीस आदमी हवालात में बन्द थे। उनकी एवज़ में हीरालाल और नानिगराम ने दो सौ रुपये फी आदमी के हिसाब से आठ हज़ार रुपये वसूल किए और उसके बाद हीरालाल ने कहा, "भाई राजाराम! इन रुपयों में से तो हमको कुछ नहीं मिलेगा; यह सब तो दरोगाजी की जेब में जाएगा। हम सिपाही लोग तो खाली रह गए।" राजाराम को लगा कि

धरती जैसे पांव के नीचे से खिसकने लगी थी। नानिगराम ने कहा, “हमारी मेहनत के दस-दस रुपये दो, तो काम चले। क्योंकि दरोगाजी तो अपनी रकम में से हमें कुछ देंगे नहीं।” आखिर तोड़ हुआ। सिपाहियों ने इस तरीके से उनसे चार सौ रुपये और ले लिए। आपस में हीरालाल और नानिगराम ने दो-दो सौ रुपये तकसीम कर लिए। थानेदार साहब ने चालीस आदमियों को हवालात से छोड़ दिया। भूखे-प्यासे लोग थाने से छूटकर अपने गाँव की ओर चल दिए। अब उनमें आपस में बातें होने लगीं:

“दरोगाजी दयावान है।”

“अजी, कौन छोड़ता था!”

राजाराम जैसे नानिगराम और हीरालाल के अहसानों से दबा जा रहा था।

फिर एक स्वर उठा, “भाइयो! आखिर ज़िन्दगी में यह हवालात और लिखी थी सो देख ली।”

फिर किसी और ने कहा, “अभी पता नहीं क्या और होना है।”

थाने से जब चालीस आदमी चलने लगे, तब चम्पो और निहालकौर के छक्के छूट गए और चम्पो ने रोते हुए कहा, “अगर कोई हमारा आदमी होता तो हमको भी छुड़ा ले जाता। पर हमारा कौन है? तेरा बाप परदेश में है, न जाने यहाँ कितने दिन पड़ा रहना पड़ेगा!”

निहालकौर ने देखा और सिर झुका लिया।

जहाँ कदम्ब-वन शुरू होता है, वहाँ से बड़ी सुगन्ध हवा पर चढ़ने लगती है। पड़ोस के बगीचों में वह सुरभि व्याप्त होती है और दिगंतों को भारालस बनाने की चेष्टा किया करती है। जब गगन में नीलम घटा गमगमाती है, तो उन्हीं जैसी पृथ्वी के छोर और भी अधिक भीग जाने के लिए आतुर हो उठते हैं।

पानी बरस चुका है। पानी और बरसेगा। प्यास का अन्त नहीं है। प्यास दाह से पैदा होती है, जैसे दाह किसी प्यास में से पैदा होती है। चौड़े पत्ते कहीं बिखराव-सा लिए हरे रंग को प्रभासित कर रहे हैं तो कहीं महुआ के रसभीने से पात रसाल को भी सिहरन से भर-भर देते हैं। एक बूँद गिरती है, टप-टप और फिर सन्नाटा छा जाता है। और फिर धीरे-धीरे अँधेरी छाने लगती है। पहले एक पर्त-सी खुलती है, फिर पर्तों पर पर्तें सुलझ जाती हैं और उसके बाद वह ऊपर से लेकर नीचे तक सराबोर-सा अँधेरा सब जगह छा जाता है। आकाश में जब मेघ घट जाते हैं तब घूंघट-सा हटाकर चाँद झांकता है और जैसे सब कोरें धुल गई हैं, उजियारी अपने आप में शर्मा रही है और जब कछुए की गरदन की तरह बादल बढ़ जाता है, तब अँधेरे में कभी-कभी बिजली कौंधती है जैसे सांपिन किसी को डसकर उल्टी हो गई हो। पपीहा पिऊ-पिऊ की अनवरत पुकार से मेघों को हिला रहा है, सनसनाती हवा पर दूर कहीं के गीत झूमते चले आ रहे हैं। उन गीतों में धपधपाते बोल हैं। स्वर कभी-कभी लड़खड़ाता है, फिर रात्रि-पक्षी पुकारता है—टीव-टीव, फिर टप-टप और

उसके बाद सन्नाटा खिंच जाता है और तब झींगुरों का समवेत स्वर, झिल्लियों की झंकार, भीगे-भीगे से फहरने लगते हैं और दादुर अपनी एकस्वरता से अन्तराल को जैसे क्षण-भर के लिए विक्षिप्त कर देते हैं।

देही माँसल है और माँसलता को पवन का स्पर्श अच्छा लगता है। नरायन लेटा है। होस्टल में इस समय नीरवता छा रही है। लड़के सो रहे हैं और एक घटना उसे याद आ रही है। यह सब उसके सामने क्या हुआ है? एक स्वप्न-सा; जैसे कोई एक कपूर की डली किसी ने जला दी, उसमें से क्षण-भर के लिए गंध उठी, और फिर बुझ गई। उसके बाद उसका निशान भी नहीं रहा। यह सब क्या था? निहाल अपने सारे माँसल सौंदर्य को लेकर उसके सामने आकर खड़ी हो गई। उसकी आँखें बन्द हैं, लेकिन वह सब कुछ देख रहा है। छरहरी देही की सुडौल निहाल पांव धरती पर धरती है, तो ऐसा लगता है जैस फूल मचकते चले जा रहे हैं। कैसी आग थी! निहाल को देखते ही नरायन को लगता है कि वह जो निहाल है वह आग की एक लपेट है।

रात्रि का पक्षी बोलता है, टीव-टीव, उसके बाद फिर सन्नाटा छा जाता है। वह सन्नाटा ऐसा लगता है कि जैसे किसी ने अपनी बँधी हुई मुट्ठी खोल दी हो और वह मुट्ठी अपने भीतर आकाश और धरती को समेटे हुई थी। उसके खुल जाने से जैसे एक पसीजापन-सा बाहर आ गया था और थोड़ी देर बाद रात्रि का पक्षी फिर बोलता है, टुप-टुप। कौन-सा है यह पक्षी? नींद नहीं जानने देती कि दिन में जागने वाले और हैं और रात में जागने वाले दूसरे हैं। एक ऐसी पूरी सृष्टि है जो रात को ही जागती है और नरायन को याद आया कि बाबा निरंजनदास, जो गाँव के बाहर रहते थे, उनके यहाँ एक छोटा-सा मंदिर भी था। बचपन में नरायन उस मंदिर में जाया करता था। जब सांझ हो जाती थी तो सफेद दाढ़ी और सफेद केश वाले बाबाजी शांत आँखें लिए मुस्कराकर बच्चों को पुकारते—आओ, गोपाल-सेना, आओ! देखो,आरती करेंगे, फिर कंजारुणम, भव भय हरं और जाने कितनी सुगन्ध, मिठास और अपने भीतर एक सलोनापन लिये छोटे-छोटे लड़कों के मुँह से स्वर निकलता था। बाबाजी का मोटा स्वर उस पतले स्वर के साथ उठा करता था। ठाकुरजी की मूर्ति हुआ करती थी। वह सब कितना अच्छा था! और बाबा फिर दीपक जलाकर एकान्त में गीता का पाठ करते थे। कभी-कभी नरायन पास बैठा रहता था और सुनते-सुनते उसे याद हो गया, 'या निशा सर्वभूतानाम् तस्यात् जागर्ति संयमी' और उसने बाबा से पूछा था-बाबा, इसका क्या मतलब है? तो बाबा ने कहा था-रात में सारी दुनिया सो जाती है, उसमें संयम करने वाला ही जागता रहता है। तो पूछा था—बाबा, संयम क्या? बाबा ने कहा था--बेटा, जब तू बड़ा हो जाएगा, तब भगवान तुझे संयम का मतलब अपने-आप बताएँगे। बाबा का नाम दूर-दूर तक फैला हुआ था। जब मरे थे तो सारे गाँव में हलचल हो गई थी। लोग उनके दर्शन करने के लिए दूर-दूर तक के गाँवों से इकट्ठे हुए थे और नरायन सोचता है संयम। और बड़े होने पर उसको बताया गया कि कसरत करनी चाहिए, देही को बनाना

चाहिए, लेकिन ब्रह्मचारी बन-कर रहना चाहिए और तब वह हनुमान-चालीसा गाया करता था—को नहिं जानत है जग में प्रभु संकट-मोचन नाम तिहारो। और उसका स्वर 'को' पर ऊपर उठता और 'रो' पर डूब जाता। नरायन करवट बदलता है और सबका अन्त कहाँ हुआ? माधो ने कहा था—यार नरायन, मेरी तो हिम्मत नहीं पड़ती, लेकिन अगर तू चाहे तो काम हो सकता है, और फिर देखा था एक नया उठता हुआ बादल। वह थी निहाल, जिसके आ जाने के बाद बाबा के उपदेश चले गए, माँ के दुलार हट गए, हनुमान-चालीसा खो गया और दिल में जैसे एक आग लग गई। एक ऐसी प्यास जग गई जो हर घूँट के साथ बढ़ने लगी और धीरे-धीरे एक समुद्र बन गया, लेकिन उस समुद्र में नमक था, अनन्त हाहाकार भरा, वह थपेड़ खाकर किनारे पर बार-बार टकराता था, और फेन-फेन हो जाता था। ऐसी थी निहाल, जिसने मानो नरायन को फुलझड़ी की तरह अपनी आग से छू लिया था। रात का पक्षी फिर बोलता है, टुप-टुप। अब नरायन का ध्यान टूट गया है। यह क्यों बोलता है रुक-रुककर? यह ऐसे किससे बोलता है? रात के सन्नाटे में इसकी आवाज़ कैसी डरावनी लगती है और मन कैसा विह्वल हो उठता है! कैसा भार डाल रहा है यह सारी कल्पना पर! अब वह बोलता है और अब कान सतर्क होकर जैसे अपनी सारी शक्ति केन्द्रित किए बैठे हैं कि वह पक्षी थोड़ी देर बाद फिर बोलेगा, इसलिए प्रतीक्षा करो। वह प्रतीक्षा करते रहते हैं और तभी ठीक उसके कान के पास फिर बोलता है, टुप-टुप। अँधेरा, भीगापन, सनसनाती पवन, काला आकाश, उमंगती धरती, सुलगता मन और कसकते प्राण, जैसे सब-कुछ एक हो गए थे और सबपर नागिन सी अलबेटे खा रही है निहाल की देही। नरायन उसे भूल जाना चाहता है। लड़के सब सो रहे हैं। मास्टर सो रहा है, नौकर सो रहे हैं। यहाँ तक कि होस्टल के कुत्ते भी सो रहे हैं। भीतें चुप हैं और ऐसा लगता है कि जैसे रात भी सो रही है। माधो पास में सो रहा है, लेकिन नरायन को नींद नहीं आ रही है। क्यों नहीं आ रही है? नरायन सोच नहीं पाता। यह कौन उसके सामने आ रहा है? यह कीचड़-सी कैसी फैल रही है? इस खिड़की का रंग लाल-लाल है। यह उसके हाथों पर क्या लग रहा है? यह किसके दाग हैं। उसके हाथों पर यह दाग! उसके हाथों से हट नहीं पाए! क्यों? उसने धोए तो थे! फिर भी क्या रह गया यह! किसी के खून का दाग। निहाल की गदराई देही इस खून से क्यों भीगी हुई-सी लगती है? उभरते सपनों की कोरें लाल-सी क्यों दिखाई देती हैं? नरायन इस सबको सोचना नहीं चाहता। वह करवट बदल लेता है और फिर ध्यान आता है, एक लाश पड़ी है। माधो और नरायन भाग जाते हैं और घर पहुँचते हैं। दोनों अपने-अपने घर चले जाते हैं, किसी को कुछ पता नहीं। नहाते हैं, खाना खाते हैं। एक दूसरे से आँखें नहीं मिलाते और माधो एकान्त में आकर कहता है, "नरायन, तूने सुना?"

"क्या?"

"खबर फैल रही है।"

नरायन को कौतूहल हुआ है, पूछता है, "क्या खबर?"

"लाश मिल गई।"

नरायन को ऐसा लगता है जैसे देह पर कांटे उछल आए। उसका सिर झुक जाता है लेकिन माधो के मुख पर अब भी चिकनाई है और उस चिकनाई में एक डर समाया हुआ है।

"नरायन, क्यों अब क्या होगा?"

"कुछ नहीं होगा, माधो।"

"हम लोग पकड़े गए तो!"

"हमको कौन पकड़ेगा?"

"तू समझता नहीं, निहाल पकड़ी गई तो क्या वह जाहिर न देकर देगी?"

नरायन सोचता है और फिर उसके मुख से निकलता है, "निहाल! निहाल कह देगी!" फिर दोनों बात नहीं करते और माधो कहता है, "नरायन, तेरे कारण ऐसा हुआ।"

"मेरे कारण ऐसा हुआ!" नरायन की आँखों में चिनगारियाँ सुलगने लगती हैं।

"अच्छा बता कि बाँक किसने चलाया था, तूने ही ना?"

"हाँ, लेकिन कहा किसने था कि इसे खत्म कर दो?"

"मैंने कहा ही तो था!" माधो कहता है और तब वे दोनों एक-दूसरे की ओर देखते हैं। उनकी आँखों में विष है। उनकी आँखों में घृणा है। फिर दोनों एक-दूसरे की ओर नहीं देखते। फिर दोनों एक-दूसरे को अपने मन में देखते हैं और अलग हो जाते हैं। आँगन में बूढ़ी दादी बैठी है। वह बड़बड़ा रही है, "अरे सत्यानास जाए उसका जिसने गाँव की क्वांरी लड़की की हत्या कर दी। ऐसा तो कभी देखा-सुना नहीं गया। अरे, उसका बंस नास हो जाएगा, जिसने ऐसा किया।" और फिर माँ का स्वर सुनाई देता है, "मेरा बस चले तो हत्यारे को काटकर चील-कौओं को खिला दूँ।" नरायन सुनता है। वह यह सब सुनना नही चाहता। छोटे लड़के और लड़कियाँ एक दूसरे से बात कर रहे हैं, "अरे, खून हो गया।"

“कैसा खून?”

“तू नहीं जानता, सिर काट दिया।”

“कौन काट गया होगा?”

“होगा कोई कमीना-लुच्चा।”

नरायन सुन रहा है और फिर सरपंच की आवाज़ सुनाई देती है, कठोर आवाज़, “नरायन की माँ, सुनती हो! दुनिया कहाँ से कहाँ आ गई है! खून हो गया है और लोग लाश को लिये गाँव के किनारे खड़े हैं, उसको जला भी नहीं सकते। बाप के दिल पर क्या बीतती होगी? मेरा मन तो यह कहता है कि अगर मुझे हत्यारा मिल जाए तो मैं उसे फांसी पर लटका दूँ।”

नरायन सुन रहा है। आधी रात हो गई है, अँधेरे में कोई उसको छू रहा है। शायद उसे झपकी आ गई है। उचककर कहता है, “कौन, कौन है? वह छत पर अकेला है।

“मैं हूँ।”

“कौन, माधो।”

धीमे स्वर में सुनाई देता है? “मैं हूँ।”

“क्या है?” वह फुसफुसाता है।

“नरायन।”

“बोलता क्यों नहीं?”

और माधो कांपते स्वर से कहता है। “नरायन, मुझको डर लगता है।”

“तो तू घर से यहाँ आया है?”

“हाँ।”

“क्यों?”

“मैं क्या करूँ नरायन। मुझको वह बराबर दिखाई देती है और मजबूरी यह है कि मैं किसी से कुछ कह भी नहीं सकता।” और नरायन सोचता है कि किसी से कुछ कह भी तो नही सकता। और फिर रात्रि का पक्षी बोलता है, टुप-टुप। फिर वही सन्नाटा। जैसे सन्नाटा बोलता है, फिर जैसे वही सन्नाटे में सन्नाटा बोलता है और सन्नाटे की प्रतिष्ठा में सन्नाटा बनकर गूँजता है और फिर नरायन प्रतीक्षा करने लगता है कि वह पक्षी फिर बोले और वह फिर सुने और तब वह फिर कान फैला देता है, दोने की तरह, और तब उसमें फिर वही स्वर आकर गिरता है, टुप-टुप, जैसे दोने में थोड़ा-सा पानी भर गया हो। जैसे यदि वह इसे पी सके तो पी ले और जैसे वह पानी को सँभाल नहीं पाता और वह पानी उछलकर गिर जाता है।

नरायन कहता है, “माधो! क्या सो रहे हो?”

“नरायन, मुझे नींद नहीं आती। तुझे आती है नरायन?”

नरायन कहता है, "नींद नहीं आती, माधो। कुछ ऐसा लगता है जैसे मैं कुछ खो चुका हूँ।"

"क्यों माधो, किसी का खून करना पाप होता है ना? सब लोग उससे घृणा करते हैं न? उस दिन तुम और हम किताब पढ़ रहे थे। उसमें लिखा था कि खून नहीं करना चाहिए, खून करने से लोग घृणा करते हैं, खूनी से घृणा करते हैं। मैं इससे डर रहा हूँ, अगर हम लोग ज़ाहिर हो गए तो सब लोग हमसे घृणा करेंगे।" और नरायन कहता है, "माधो! खूनी अपने-आपसे भी घृणा करता है, क्योंकि यह जवाबदेही परमात्मा के सामने देनी होती है। और बाबा कहा करते थे कि परमात्मा दूर नहीं रहता, मन के भीतर रहता है। मैं तब से अपने मन को जवाब देने की कोशिश कर रहा हूँ, माधो, लेकिन मुझे कुछ राह नहीं सूझती। तू तो मुझसे घिन नहीं करता माधो? औरों की बातें मैं सुन चुका हूँ और मुझे उनकी बातें सुन-सुनकर डर लगता है।"

माधो का सिर झुक जाता है, वह कहता है, "कोई नहीं जानेगा नरायन, कोई नहीं जान पाएगा।"

"तो तू जा माधो, सो जा।"

"मैं जा रहा हूँ नरायन।"

"हाँ माधो, जा। मेरी आँख झपकती है तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरे पास और कोई खड़ा है और वह मुझे सोते हुए देखकर कहता है—नरायन, खून करके आराम से सो रहा है और उसके घर के लोग परेशान हो रहे हैं।"

"धीरे बोल," माधो कहता है, "कोई सुन न ले। दीवारों के भी कान होते हैं।"

और नरायन कहता है, "मैं दीवारों के कानों से नहीं डरता, माधो, यह मेरे मन के अन्दर जो कान हैं ये सब सुन रहे हैं। मैं इनसे और भी ज़्यादा डर रहा हूँ।" नरायन करवट बदलता है। कहीं कोई मोर बोला, जिसका स्वर अब फैल गया है, लेकिन उसके स्वर को पकड़कर दूसरे मोर नहीं बोले, जैसे वे सब सो रहे हैं और पपीहा की टेर फिर सुनाई देने लगी है। नरायन गौर से सुन रहा है, क्या कह रहा है यह पपीहा—पिऊ कहाँ? पिऊ कहाँ?

नहीं-नहीं।

फिर पूछता है, तू कहाँ, तू कहाँ?

आकाश में मेघ गरज रहा है चमचमाती-सी बिजली चटक गई है। यह जो सरसरापन हो रहा है, आलोक क्षण-भर के लिए दूध-सा फैलता है और फिर सिमट जाता है, घिराव में आ जाता है और बादलों के स्याह कलेवर में डूब जाता है।

सुबह हो गई है। माँ कहती है, "नरायन बेटा, तुझे रात को नींद नहीं आई? क्या तू सोया नहीं?" और पिता का स्वर सुनाई देता है, "अरे, गाँव में कल रात सोया ही कौन था! मेरा ही तो बेटा है। गाँव में एक लड़की की हत्या हो जाए, वहाँ किसको गुस्सा न आएगा!

करवटें बदलते किसकी नींद न बीत जाएगी!” नरायन के दिल में सूल-सा गड़ता है। उसका साहस नहीं होता कि वह आँखें उठाकर देखे।

माधो आ रहा है। उसको देखकर लगता है कि वह माधो नहीं है, कोई गीदड़ है, जैसे उसने अपनी पूंछ समेटकर अपनी टांगों में छिपा ली है। वह सतर्क दृष्टि से इधर-उधर देखता है और कहता है, “अब क्या होगा?”

नरायन पूछता है, “क्यों, क्या हुआ?”

“पुलिस आई है!”

नरायन को लगता है कि उसकी देह में एक फुरफुरी-सी फैल गई है।

“निहाल कहाँ है?”

“निहाल! पता नहीं, मैं तो मिलने नहीं गया। मेरी हिम्मत नहीं पड़ती उसे देखने की। इतना मैंने सुना है कि वो बहुत रोई है, बहुत रोई है।”

“रोई है माधो! मैं भी रोना चाहता हूँ।”

“तुम मत रोना नरायन।”

“माधो! तुझे रोना नहीं आता?”

“नहीं आता, नरायन! मुझे डर लगता है। मुझे ऐसा लगता है कि मेरा कलेजा मुँह को आ रहा है। मेरा मन यह करता है कि मैं पुकार उठूँ, मैं चिल्लाऊँ।”

नरायन उसका हाथ पकड़कर कहता है, “चुप, चुप रह।”

सांझ हो गई है।

वही खामोशी, वही उदासी।

नरायन को रोटी अच्छी नहीं लग रही है। दादी कहती है, “अरे बेटा, रोटी तो खा ले। अरे, सब आते हैं सब चले जाते हैं, अपने-अपने भाग लेकर आते हैं।” और यह कहते-कहते दादी के स्वर में इतिहास बोलने लगता है, लेकिन नरायन कुछ नहीं कहता। रात को सरपंच का स्वर सुनाई देता है, “मुझसे नहीं देखा जाता नरायन की माँ, पुलिसवाले भूखे भेड़ियों की तरह घूमने लगे हैं। ये खून का पता नहीं लगाएँगे। ये सालिम गाँव को घेरकर मारेंगे, मैं जानता हूँ, मुझे तजुर्बा है।”

चमेली आसक्ति से देखती है और कहती है, “कैसी बात? हमारे ही गाँव की बेटी कटे और हमारे गाँव के लोग पिटें?”

माधो आता है, “नरायन, स्कूल चल।”

“अभी रात को जाएँगे?”

“हाँ, चलेंगे। यहाँ से भाग चल नरायन, यहाँ से भाग चल!”

“इस तरह गाँव में शक हो जाएगा माधो।”

“मैं तेरे पांव पड़ता हूँ, यहाँ से चला चल। घरवालों को ही तो मालूम है कि शाम को हम घर पर थे और कौन जानता है?”

नरायन उत्तर नहीं दे पाता।

सुबह हो जाती है। खबरें आ रही हैं—डाक्टरी रिपार्ट आ गई है। लड़की के साथ बलात्कार किया गया है। वायु में विक्षोभ है, लोगों में गुस्सा है। औरतें पनघट पर बातें करती हैं, "बहन अद्यानकी डूब गई। सारे गाँव की नाक कट गई। अब तो इस गाँव में कोई लड़की भी न देगा।"

वह आवाज़ बढ़ रही है। नरायन को लग रहा है, जैसे चारों ओर आग लग गई है और लपटें घिरती चली आ रही हैं। माधो कहता है, "नरायन, भाग चल।"

"तू क्यों भागना चाहता है माधो?"

"मैं यह सब-कुछ झेल नहीं पाऊँगा नरायन।"

वे लोग स्कूल आ जाते हैं। किसी को कोई शक नहीं होता।

फिर खबर आती है—पुलिस ने लोगों को मारा था। रमोना तक पहुँचती है खबर कि डूंमरपुर के गाँववालों को जहाँगीरपुर में पकड़कर मारा गया थाने में। रमोना के बाज़ार में फैलती है खबर कि पुलिस सालिम गाँव के लोगों को ढूँढ़-ढूँढ़कर मार रही है। रमोना में आतंकित हो जाते हैं लोग इन अत्याचारों की कहानियाँ सुनकर। कोई कहता है कि मिर्च भर देते हैं। कोई कहता है कि वे रात-भर सोने नहीं देते और माधो होस्टल में कांपते हुए नरायन से कहता है, "नरायन, मुझे लगता है, मैं मर जाऊँगा।"

"मर जा माधो।"

"तुझे लगता है कि तू मर जाएगा, लेकिन मुझे लगता है कि मैं मर चुका हूँ। पर मुझे अपनी लाश का मुँह काला दिखाई देता है माधो! मैं अगर काला मुँह लिए मरूँगा तो मेरा बाप क्या कहेगा, मेरी माँ क्या कहेगी?"

माधो कहता है, "मेरी माँ, मेरा बाप कुछ नहीं कहेंगे, वे मुझे बहुत प्यार करते हैं।

नरायन कहता है, "सबके माँ-बाप अपने बच्चों को बहुत प्यार करते हैं माधो। हिरदे भी ऐसा ही प्यार करता होगा। देख माधो! मेरे हाथ पर खून के दाग तो नहीं?"

"तू क्या कह रहा है नरायन?"

"एक काम क्यों न करें!" फिर माधो कहता है।

नरायन पूछता है, "क्या?"

"चल, कहीं भाग चलें।"

"लेकिन हम कहाँ जाएँगे?"

"कहीं भी भाग चलें।" माधो कहता है उसके स्वर में भय है, "कहीं भाग चल नरायन। यहाँ रहने में मुझे बहुत डर लगता है। अगर कहीं निहाल ने सब कुछ कह दिया तो!" थोड़ी देर माधव सोच कर कहता है, "पैसे तो हैं ही। दो-चार दिन में यह मामला ठंडा पड़ जाएगा, तो हम लोग लौट आएँगे।" सवेरे की घंटी बज गई है। लड़के कुएँ पर नहाकर

खाना खत्म कर रहे हैं। वे क्लासों में जा रहे हैं। पचौरी मास्टर सामने आ रहा है। माधो कहता है, “नमस्ते मास्टर साहब।”

“नमस्ते-नमस्ते।” पचौरी का स्वर उठता है, “अरे माधो, यह खबर सच है कि तुम्हारे गाँव में खून हो गया है?”

“पता नहीं मास्टर साहब।”

पचौरी कहता है, “हो गया होगा। होगा कोई बदमाश, होगी कोई बदचलन औरत। क्या ज़माना आ गया है! अठारह-अठारह साल के लौंडे आज इश्क करते हैं। और क्या होगा, वो सिनेमा देखेंगे तो यही होगा!” पचौरी चला जाता है। पचौरी के सफेद बाल दिखाई देते रहते हैं। फिर नरायन को लगता है कि वे बाल सफेद नहीं हैं, लाल हैं और वह ललाई फिर फैलती जाती है। उस ललाई में से एक सूरत दिखाई देने लगती है। वह एक लाश है, जिसका सिर दूर पड़ा हुआ है।

और फिर हवा की सूं-सूं सुनाई देने लगती है। सं-सां! हवा जैसे हाँफ रही है। हवा जैसे पुनः मौन थी, हवा जैसे भटक रही है। हवा जैसे आर्तनाद करती चल रही है, हवा जैसे खोह में पहुँच गई है। हवा एक दरिन्दा है। हवा एक भयानक जन्तु है। हवा अँधेरी है, जैसे अँधेरा बह रहा है। हवा जैसे बह रही है, सां-सां। नरायन करवट बदलता है। वे लोग भाग आए हैं। खेत के पास बैठे हैं। अब फिर अंधेरा आ रहा है। माधो कहता है, “नरायन, यह हम लोग कहाँ आ गए? हमारे सिर पर छत नहीं है। इस धरती को तो हम नहीं जानते। क्या यह खबर घर के लोगों को मिल गई होगी कि हम लोग भाग गए हैं?”

नरायन कहता है, “शायद।”

“पचौरी को पता चल गया होगा?”

“क्यों नहीं!”

नरायन कम बोलना चाहता है।

“होस्टल में लड़के क्या कह रहे होंगे?”

नरायन उत्तर नहीं देता।

“और गाँव से खबर तो आ ही गई होगी कि कत्ल हुआ है, तो क्या हम लोगों पर शक नहीं हो जाएगा?”

नरायन फिर भी कुछ नहीं बोलता।

“नरायन, तू बोलता क्यों नहीं?”

“तू तो ऐसा बन रहा है जैसे सारा कसूर मैंने ही किया है।” माधो चिढ़कर कहता है।

नरायन उसकी ओर टकटकी बाँधकर कहता है, “कायर! डरता है? अब डरने से क्या फायदा! हम लोग भाग आए हैं। हम लोगों ने शक पैदा कर दिया है।”

और माधो फिर स्वर बदलकर कहता है, “नरायन, तू गुस्सा मत हो; लेकिन मुझे भूख लग रही है, चल, लौट चलें।”

"अब हम लोग कहाँ जाएँगे?"

"तो फिर रात को हम इस जंगल में पड़े रहेंगे?"

"हाँ।" नरायन का कठोर स्वर गूंजता है और वह कहता है, "माधो, यह बियाबान कितना अच्छा है! चल माधो, हम निकल चलें। हम-तुम दूसरी दुनिया में निकल चलें। यह धरती बहुत बड़ी है। कौन पहचानेगा हम दोनों को? चल, हम साधु बन जाएँ। माँगकर खाते चलेंगे। भगवान का भजन कर-करके अपने पापों को धोएँगे। माधो, खून छिप सकता है, लेकिन पाप कैसे मिटेगा?"

माधो कहता है, "यार, खून छिप जाए, पाप की मुझे चिन्ता नहीं। पाप तो सभी करते हैं, कोई बड़ा कोई छोटा।"

"तू पाप से नहीं डरता?" नरायन कहता है।

"पाप?" माधो कहता है, "पाप! कौन-सा पाप?..."

"निहाल का ब्याह हो चुका है। निहाल से ताल्लुक रखना क्या यह पाप नहीं था? उस पाप में सुख मिलता था। मिलता था न नरायन? मुझे तो बहुत ही अच्छा लगता था। तब पाप क्या है? अरे पाप तब है जब वह प्रकट हो जाता है। हमने खून किया नहीं था, हम न मारते तो वह बांक चला देती। हमने उसकी इज़्ज़त नहीं बिगाड़ी थी। हम तो दिल्लगी कर रहे थे। मैंने तो यह सोचा था कि वह झूठी शर्म दिखा रही थी। ऐसे ही निहाल ने किया था। लेकिन उसके बाद क्या हुआ? निहाल खुद बुलाने लगी और मेरा तो बस यह विचार था कि एक बार झिझक खुल जाएगी तो यह भी हम लोगों को इसी तरह बुलाने लगेगी। और वह कमबख्त तो न जाने किस माटी की बनी हुई थी कि बवाले-जान बन गई। नरायन! अगर हम उसे न मारते तो वह हम लोगों को रहने नहीं देती। तुम समझ रहे हो न? वह हम लोगों को ज़िन्दा नहीं रहने देती। मान लो, हम अगर उससे कुछ न कहते और खाली छेड़खानी करके चले जाते, तब भी वह हमारी शिकायत करती और न जाने क्या-क्या नमक-मिर्च लगाकर कहती और तब भी गाँव-भर में हमारी बदनामी होती और घर पर आफत आ जाती। उसको जान से मारने का तो इरादा ही नहीं था, उसकी कज़ा आ गई थी, कज़ा।"

नरायन कहता है, "मैंने उसे मारना तो नहीं चाहा था माधो। मैं भूल गया था कि मेरे हाथ से कितने ज़ोर का वार होता है। लेकिन जब मैंने देखा कि उसकी गरदन कट गई थी, तो माधो, मुझे उस वक्त पाप-वाप नहीं सूझा था। उस वक्त मुझे गुस्सा छा रहा था।" और उसने सोचते हुए उसको देखा है, कहता है, "खड़ुए तुमने उसके क्यों कटवाए थे?"

"मैं उन्हें लेने तो नहीं गया था?" माधो ने कहा, "वहीं खेत में गड़े होंगे।" माधो का स्वर उठता है, "मुझपर धरते हो? तुमने कटवाए थे। कटवाए क्यौं थे, पैसे की तुम्हें कमी न थी।"

"लेकिन काटे तो तूने थे माधो! मैं तो गुस्से में कह गया था, तूने क्यों काटे थे?"

“मैं तो इसलिए काट गया था कि तुमने कहा था।”

“तू तो बच्चा था न, तू तो कुछ समझता ही नहीं। जो कुछ करता है, मैं कहता हूँ, वही तू करता है। तू तो यह कोशिश करता है कि मैं खूनी बन जाऊँगा। लेकिन माधो! जो कुछ भी मैंने किया है, मैंने अकेले ने नहीं किया है, तू भी मेरे साथ है।”

माधो उसका हाथ पकड़कर कहता है, “मैं तेरे साथ था, तो क्या हो गया? मैं तेरे साथ तभी नहीं था जब तू निहाल के पास जाता था? मैंने यार से यारी की है और फंद मैं नहीं जानता।”

“तू मुझे धोखा दे सकता है?”

नरायन उसके कंधे पकड़कर कहता है, “ऐसा नहीं हो सकता, ऐसा नहीं हो सकता माधो। अब ये नावें साथ रहेंगी, अब ये साथ डूबेंगी या साथ किनारे लगेंगी।” क्षण-भर के लिए वे एक-दूसरे की ओर देखते हैं। भयानक अँधेरा, आकाश का वज्रगर्जन फिर कांपता है। तड़तड़ाती-सी दिशाएँ जैसे चकनाचूर होकर गिरती हुई-सी दिखाई देती हैं और नरायन करवट बदलता है।

अब वे लोग लौट आते हैं।

लौट आते हैं क्योंकि अँधेरी रात में डर लगता है, क्योंकि अँधेरी रातें सूनी होती हैं, शायद अँधेरी रातों का कोई अन्त नहीं होता, क्योंकि हर सवेरा अपने साथ एक अँधेरा लाता है और दूसरी समस्या उठ खड़ी हुई है। वे क्यों भटक रहे हैं, उन्हें कहाँ जाना है? नरायन कहता है, “माधो! स्कूल लौट चलो।” राह जैसे फैली हुई है। कजौरीसिंह काका, सरपंच चंचलसिंह दादा; चार आँखें इधर हैं, चार आँखें उधर हैं। इन चार आँखों में प्रश्न है, लेकिन ये चार आँखें अँधेरी हो गई हैं, कुछ कह नहीं सकतीं। वे लोग घूमने आए थे।

महू के मेले का नाम सुनकर वे लोग संतुष्ट चले गए हैं। मास्टर पचौरी मिलता है। उसने पूछा, “लड़को! तुम कहाँ चले गए थे? तुम्हारी गैर हाज़िरी लगा रहा हूँ।” पचौरी क्लास में चला जाता है।

सांझ हो चुकी है। दोनों लड़के बाजार से रबड़ी खरीदकर पचौरीजी के पास पहुँचते हैं, फिर पचौरी कुछ नहीं कहते।

लड़के ज़रूर पूछते हैं। महू के मेले की बात इधर-उधर फैल जाती है। हेडमास्टर तक बात नहीं पहुँचती, क्योंकि क्लास-टीचर पचौरीजी को ही हेडमास्टर ने सारी ज़िम्मेदारी दे रखी है और अब सब कुछ खत्म हो गया है। तब नरायन पूछता है, “क्या यह ठीक है? क्या अब मैं खूनी नहीं हूँ? क्या मैंने खून नहीं किया है? क्या मैंने कोई पाप नहीं किया है?”

और माधो कहता है, “अरे ससुरी मर गई, मर गई...उसको तो कमबख्त को मरना ही था।”

नरायन कहता है, “नहीं, यह बुरा हुआ कि वह मर गई। उसको मरना नहीं चाहिए था।”

माधो कहता है, “मरना तो नहीं चाहिए था, लेकिन अब क्या करें?” “गाँव की कुछ खबर आई है?” नरायन पूछता है जैसे वह माधो का ही वाक्य है।

“हाँ,” माधो कहता है, “सुना है, उसे पुलिस ने बहुत मारा-पीटा है।”

दूसरा दिन आता है। वॉलीबॉल का खेल हो रहा है। माधो और नरायन खेल रहे हैं। लड़कों में जोश है। दो-तीन मास्टर भी साथ हैं। आकाश में से छाया उतर रही है और रमोना धीरे-धीरे अँधकार में डूबता जा रहा है। लेकिन नरायन को नींद नहीं आ रही है। वह अब भी करवट बदल रहा है। और उसकी किसी गहराई से जैसे आवाज़ आती है, ‘सब शांत हो गया नरायन, लेकिन पूछ! अरे! अपने दिल से यह बात कि क्या जो कुछ हुआ है वो ठीक हुआ है? इस कानाफूसी से ऊपर है तेरा धर्म। वह धर्म कोई पाप-पुन्य नहीं बताता,’ फिर उसी रात्रि-पक्षी की आवाज़ आती है, टुप-टुप और फिर वह गहन अँधेरी, अब पानी बनकर पत्तों पर से झरने लगती है और सनसनाती दूर-दूर फैलती चली जाती है, फैलती चली जाती है।

महू गाँव मे किसना नाई का बेटा पन्ना अपनी एक यात्रा में निकट के नगले में गया। वहाँ उसे अपनी ससुराल से आए गिरधर सुकुल मिले। गिरधर सुकुल लम्बे आदमी थे और देखकर ऐसा लगता था जैसे बुढ़ापा दीमक बनकर उनकी हड्डियों पर चढ़े माँस को करीब-करीब चाट ही चुका था। लेकिन फिर भी उनमें फुर्ती थी। पन्ना ने पालागन की और अपनी ससुराल के हालचाल पूछे। गिरधर सुकुल ने हुक्का पीते हुए कहा, “अरे लाला, तू तो हमारे गाँव का मेहमान है, तू महू का है ना?”

“हाँ।”

“किसना का ही बेटा है ना?”

“हाँ, महाराज।”

“अरे तो लाला, तैने नहीं सुनी?”

“कैसी पंडितजी?”

“अरे सो तो...तेरी तो सास और बहू दोनों थाने में बन्द हैं।”

“थाने में?”

पन्ना चौंक उठा।

“सो कैसे महाराज?” उसने पूछा।

“अब भाई, पूरी बात तो हमें क्या पता! पर अपने यहाँ कतल का एक केस हो गया है ना? सियाराम ही तेरा ससुर है ना? क्या नाम है उसका? उसकी एक छोरी है, क्या नाम है उसका...निहालकौर।”

"हाँ-हाँ महाराज वही है।" पन्ना ने घबराए स्वर से कहा। पन्ना ने अधिक जानने की कोशिश की। लेकिन उसको पता नहीं चल सका। वह अपने गाँव को लौट गया। महू में यह खबर किसना के पास पहुँच चुकी थी। पन्ना के मुँह से सुनी तो बात पक्की हो गई। वे लोग डूंगरपुर पहुँचे। लेकिन डूंगरपुर के लोगों में दहशत छाई हुई थी। पन्ना और किसना को केवल इतना मालूम हुआ कि चालीस आदमी थाने में बन्द थे और पन्ना की सास और औरत भी बुला ली गईं थीं। किसना को लगा, उसकी नाक कट गई थी। जिस लड़की से उसके बेटे की शादी हुई थी, वह थाने में बन्द थी। गाँव में सनसनी थी। पन्ना और किसना महू को लौट गए। उन्होंने दो-चार सौ रुपयों का इन्तज़ाम किया और अपने इलाके के एम. एल. ए. प्यारेरामजी के पास पहुँचे। किसना ने कहा, "महाराज, आपकी खवासिन और समधिन थाने में बैठी हुई हैं। उनके जिम्मे वहाँ के थानेदार ने कोई केस लगा दिया है। अब आप जल्दी चलें और उनको किसी तरह छुड़ावें। इसमें हमारी बड़ी बदनामी हो रही है।"

प्यारेराम की मूँछे आधी काली और आधी सफेद थीं। सफेद खद्दर के वस्त्र पहनते थे; विनम्र हिन्दी में वार्तालाप किया करते थे। नाक के स्वर से बोलते थे। बोले, "भांई, समंय बड़ा खरांब हैं। किन्तु वर्तमान समंय में न्याय अवश्य अभी तंक अंपने स्थांन पंर स्थांपित हैं अतएँव आंप लोंग जांइए और अंपने सांथ कुंछ धन ले आइंए, क्योंकि भांई, खांली हाँथ का कहीं महंत्त्व नहीं है।"

किसना ने कहा, "महाराज, बड़ी दया होगी। बड़ी आसा से मैं आया हूँ। बड़े महाराज की तो मुझपर बड़ी कृपा थी।"

प्यारेरामजी ने यह बात सुनी और मूंछों में मुस्कराए। उन्हें वह दिन याद था जब किसना के बाप ने एक दफे उनके पूज्य पिताजी में जूते लगा दिए थे, क्योंकि उनके पूज्य पिताजी जाति के छीपी थे और उनका दारिद्रय अड़ोस-पड़ोस में प्रसिद्ध था। प्यारेरामजी मिडिल तक पढ़े। फिर उन्होंने विशारद उत्तीर्ण किया। यहाँ तक कि उन्होंने साहित्यरत्न कर लिया। उसके बाद वे राजा के ज़माने में खद्दर के वस्त्र धारण करने लगे और रजवाड़े की दलदल में सफेद कमल की तरह दिखाई देने लगे। इस समय उनको दो बार जेल भी हुई, पर प्रजामंडल में उनका दर्जा ऊँचा चढ़ गया और वे नेताओं में गिन लिए गए। फिर उन्होंने बड़ी सफलता से चुनाव में गूजरों के बहुमत को अपनी ओर तोड़ लिया, क्योँकि आस-पास के इलाके में छीपी बहुत अधिक थे। इसलिए उनको सफलता प्राप्त हो गई। वे अपनी बिरादरी के बड़े रक्षक थे और समय के फेर ने ठाकुर साहब के पास जाकर पांवचप्पी करने वाले किसना को उनके पास भेज दिया। उन्होंने किसना से कहा, "देखो, हमारी जींप में पैट्रोल और डलवा लों।" दूर-दूर तक के देहात में उनकी गाड़ी प्रसिद्ध थी। पहले चुनाव में कांग्रेस की ओर से चार-पाँच गाड़ियाँ आई थीं। यह करिश्मा अभी तक झोलेटोले गाँव के सरपंच रामसिंह तिवाड़ी जैसे तिकड़मी और ज़िला प्रमुख बहादुरसिंह जैसे उस्ताद भी नहीं समझ पाए थे कि किस प्रकार इन गाड़ियों में से एक गाड़ी अन्त मे एम. एल. ए. श्रीमान

प्यारेरामजी की हो गई। यह एक रहस्य ही बना रह गया। लेकिन अब वह गाड़ी प्यारेरामजी की थी। नाई एम. एल. ए. साहब का था। उसकी जेब में अब चार सौ रुपये थे। गाड़ी थाने की ओर चल पड़ी।

किसना सुनाने लगा, "महाराज! हमारे परबाबा के ज़माने में महाराज विजयसिंहजी का राज था। उन दिनों दो नाई थे, महाराज के खास-खवास। नाक के बाल। महाराज विजयसिंह ने उनके लिए हवेलियाँ ठुकवा दीं। पर जब बीमार पड़े तो बोले अरे गधाबच्चा, अब मेरा बखत आ गया है। तुमने बड़ी मौज की छानी और जो शरमदार हो तो ऐसा इन्तज़ाम करो कि मेरे मरने के पहले ही तुम दोनों मर जाओ, वरना तुम समझ लेना कि रियासत का बच्चा-बच्चा तुमसे बदला लेगा। एक तो यह सुनते ही वहीं का वहीं मर गया। मगर दूसरा बच गया। अब फिर राजा के भाई-बन्दों ने राजा के बाद उसको कुत्तों की मौत मरवा दिया। सो महाराज, वो दिन ऐसे खराब थे। अब कांग्रेस का जमाना है। अपने आदमियों की हकूमत है, दयावान लोग हैं अब। अब के राजा आप हो हमारे। अब हमने टेर लगाई, फौरन गाड़ी पर चल दिए जैसे गजेन्द्र हाथी की बिनती पर बिषनु भगवान गडरजी पर बैठकर चल दिए थे।"

प्यारेरामजी ने मुस्कराकर कहा, "अरें रजंवाडों की क्यों पूंछते हों, कितंनी बांर हमें जेंल न जांना पंड़ा औंर लांठियाँ न खानीं पडीं।"

"हैं-हैं महाराज," किसना ने उनके पांव पकड़ते हुए कहा, "बखत का फेर है, बखत का फेर है महाराज। अब भंगी-चमार भी कहते हैं कि हमारी हजामत बनाओ। कांग्रेस ने और तो सब ठीक किया, लेकिन यह हजामत का चक्कर बुरा लगा दिया। अब महाराज, गाँधीजी तो समरथ थे। अब आप इत्ते बड़े आदमी हैं, लेकिन बाल-बच्चों का ब्याह तो जात में ही देखकर करते हो। कुजात में तो नहीं करते। फिर हम तो ठहरे गरीब आदमी, कैसे इन्तजाम कर सकते हैं?" और फिर उसने बड़ी चतुरता से धीरे से कहा, "महाराज, यह दरोगा कैसा आदमी है?"

प्यारेरामजी ने कहा, "अरे, पुलिसवाला है।"

अपने बत्तीसों दाँतों को निपोरकर किसना ने जीप की सीट से नीचे उतरकर नीचे बैठते हुए कहा, "बस-बस महाराज, मन की कह दी, मन की कह दी। क्या बात कह दी। पन्ना!"

पन्ना ने मूर्ख दृष्टि से देखा। वह अभी पिता की तरह कुशाग्रबुद्धि नहीं हुआ था। किसना ने हताश होकर सिर हिलाया और कहा, "महाराज! इन लड़कों में अकल नहीं आई। अरे, एक जमाना था, हम हाँडी पै काजर चढ़ाकर पहले उस पर उस्तरा फेरकर हाथ साधते थे, तब कौन साबुन लगाता था हजामत पर! मगर अब के लड़के सबसे पहले तो बाप की हजामत शुरू करते हैं। महाराज लड़का बड़ा गाबदू है।"

प्यारेरामजी फिर मुस्कराए।

प्रायः नाई का मुँह और केले का तना एक-से होते हैं। उसको छीलने पर चिकने से चिकने दल निकलते चले जाते हैं और नाई के मुँह से ऐसी मीठी लच्छेदार बातें निकलती चली जाती हैं कि उनका अन्त ही नहीं होता।

प्यारेरामजी कुछ सुनते, कुछ अनसुने से दूर देखते रहे और उन्होंने कहा, “थांना आं गयां।”

जीप देखकर थानेदार ने समझा कि शायद हमारा कोई अफसर आ गया। पहरेवाला सिपाही फौरन सन्नद्ध होकर खड़ा हो गया। एम. एल. ए. साहब गाड़ी से उतरकर ऊपर थाने पर पहुँचे। सिपाही ने कुर्सी डाल दी। प्यारेरामजी ने बैठते हुए कहा, “दंरोगांजीं कहाँ हैं?”

“घर गये हैं हुज़ूर?”

“फौरन उन्हें बुंलवाओ, मुझे उंनसे कुंछ बातें करनी हैं। कंह देना, मेरे पांस वंक्त कंम है, क्योंकि अभीं मुंझे मिनिस्टर सांहब सें मिलने कें लिए गाड़ी में हीं जंयपुर जांना है।”

सिपाही ने कहा, “जो हुक्म हुज़ूर!”

और उसने दरोगाजी से जाकर कहा, “हुंजूर, एम. एल. ए. साहब बुला रहे हैं आपको। यों कह रहे हैं, जल्दी आ जाएँ, मुझे अभी मिनिस्टर से मिलने जाना है।”

“कौन हैं?” दरोगाजी ने पूछा, हालांकि वे समझ गए थे।

“हुज़ूर प्यारेरामजी हैं।”

दरोगाजी ने कहा, “उनको बैठाओ, मैं अभी हाज़िर हुआ।” और उन्हें अपनी इस विनम्रता प्रकट करने के लिए खेद हुआ। मन-ही-मन वे सिपाही के व्यंग्य पर क्रुद्ध हो उठे, लेकिन अवसर न देखकर उसे पी गए।

निहालकौर ने पीछे की तरफ देखा तो लाज के मारे सिकुड़ गई। चम्पो की निगाह पड़ी तो उसने इशारा किया। पन्ना पास आया। चम्पो ने कहा, “लाला! अब की बेर किसी तरह से बचाओ, हम तो बहुत परेसान हो गए।”

पन्ना ने अपनी पत्नी को देखा। उसने गौरव से कहा, “घबराओ मत, मैं आज ही दोनों को छुड़ाकर ले जाऊँगा।” दोनों ने उसकी ओर ऐसे देखा जैसे कोई संग्राम-विजयी महापुरुष सामने खड़ा था।

दरोगाजी थाने पर आ गए। एम. एल. ए. ने अहसान-सा करते हुए उनसे हाथ मिलाया। दोनों कुर्सियों पर बैठ गए, बातें होने लगीं। प्यारेरामजी ने बातों ही बातों में नाइन का किस्सा छेड़ा और बोले, “यहं आंपके यहाँ नांई की औरंत आंई है। उंसकी एंक लड़कीं भीं है निहालकौर। वहं हमारे यहाँ के इस नांई के लड़कें कों ब्याही है।”

दरोगाजी ने किसना और पन्ना की ओर देखा। दोनों जैसे इसी इन्तज़ार में थे कि कब दरोगाजी की नज़र हम पर पड़े और कब हम उनको राम-राम करें।

दरोगाजी ने बड़ी मुलामियत से कहा, "बैठ जाओ भाई, बैठ जाओ। थाना एक ऐसी जगह होती है जहाँ घबराए हुए लोगों को राहत दी जाती है। आप लोग किसी तरह की चिंता न करें।" और फिर उन्होंने किसना से कहा, "श्रीमानजी, आपका शुभ नाम क्या है?"

इतना अधिक गौरव पाकर किसना सकपका गया। उसने दयनीय स्वर से दोनों हाथ जोड़कर कहा, "महाराज! मैं एम. एल. ए. साहब का खवास हूँ।"

दरोगाजी ने बहुत ही विनम्रता से सिर हिलाया और कहा, "और श्रीमानजी, यह आपके साथ दूसरे श्रीमानजी कौन हैं?"

किसना ने अत्यन्त विभोर स्वर से कहा, "हुजूर, गरीबपरवर! आपका बच्चा है। इसी से उस लड़की की शादी हुई है। हजूर, बड़ी बदनामी हो रही है।"

तब दरोगाजी ने मुड़कर एम. एल. ए. प्यारेरामजी की ओर देखकर कहा, "और श्रीमानजी, आपकी क्या आज्ञा है? मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

पहले दोनों श्रीमानजियों के बाद अपने को तीसरे श्रीमानजी के रूप में स्वीकार करना प्यारेराम को अच्छा नहीं लगा। लेकिन वे क्या करते! इस समय उन्हें दरोगाजी से काम निकालना था। इसलिए इसका बदला लेने की भावना को उन्होंने अपने अहिंसा-भरे हृदय में भविष्य के लिए रख लिया कि जब कभी किसी मिनिस्टर से मुलाकात होगी, तब वे दरोगा के खिलाफ कुछ धीरे से अवश्य सरकाकर रहेंगे। बोले, "यें मेरें पास पहुँचा और इंसने कहा कि मेरीं औरत इस कंतल के केस में बुंलाई गंई हैं, उंसको आंप निकलवां दो। मैंने कहा—भाई, पुंलिस अपनां काम करतीं हैं। रोंज़ के झंगड़े बुंरे होतें हैं। इंसलिए मैं आंज यहाँ आया हूँ कि थोंड़ां आंप मुझे बताए कि क्या मामला हैं—क्या इस केस में इस औरत का भी हाथ है?"

दरोगाजी ने उत्तर दिया, "इसका हाथ तो इस केस में नहीं है, लेकिन इसका खेत उस गरीब किसान के खेत के पास था। उसकी लड़की और यह नाई की लड़की दोनों साथ-साथ खेत पर जाया करती थीं। दिन-भर साथ रहा करती थीं। इस लड़की को इस केस के बाबत कुछ खास बातें मालूम हैं। मैंने इसका बयान वगैरा भी ले लिया है। कुछ असलियत का भी पता चला है। लड़की की माँ इसके साथ आई है। वैसे मैं इसको राज-गवाह बना लूँगा। इसको इस केस में से निकलवा तो दूँगा, लेकिन अभी मैं इसकी जाँच कर रहा हूँ। अभी कुछ नहीं कह सकता। शायद इसे अलग ही कर सकूँ!"

प्यारेरामजी ने कहा, "यंह संब ठींक है, लेकिन आंप इंसको किसी तरह से यहाँ सें निकलवाएँ। बात यंह हैं कि औरतों का थाने में रहनां ठींक नहीं है। अभी तों आपकी तहकीकात चल रही हैं आगे न जांने क्यां बने। इस वक्त आप चाहे तो निकांल संकते हैं।"

दरोगाजी पर दोहरी मार पड़ी। घर मे सुशीला उनके विरुद्ध थी। अब बाहर एम. एल. ए. साहब ज़ोर दे रहे थे। पल-भर को वे चक्कर में पड़ गए।

प्यारेरामजी ने दो सौ के नोंट कागज़ की एक पुड़िया में बँधे-बँधाए दरोगाजी की जेब में सरका दिए और बोले, "मेरे पास ज़्यादा टांइम नहीं है। मैं जा रहा हूँ, आंप पीछे से देंख लेंना सब ठीक सें सुंलझ जाएं।

दरोगाजी ने कहा, "एम. एल. ए. साहब, मैं इनको अभी छोड़ दूंगा। आपकी बात मैं टाल नहीं सकता। मैं आपको बहुत दिनों से जानता हूँ और जानता हूँ कि आपने सदा ही देश की सेवा की है।" और यह कहते हुए उनका हाथ जेब में पड़ी हुई पुड़िया के पास चला गया, "आपने हमेशा हम जैसे गरीब सरकारी नौकरों की मदद की है। यह बात सारा इलाका जानता है। आपकी डी. एस. पी., एस. पी., कलक्टर और मिनिस्टर तक पहुँच है, और अगर मैं गलती नहीं करता हूँ तो मूख्यमंत्री भी आपको जानते होंगे, और इसमें कोई ताज्जुब नहीं कि भारत के प्रधानमंत्री से भी शायद आपकी कुछ मुलाकात हो।"

प्यारेरामजी विनम्रता से हँसे और बोले, "अंजी रहने दीजिए, आंप भी क्यां कंह बैठे। गाँधीजी मुझसे कहा करतें थें कि भाई प्यारेंराम, तुम तों हमारे ही पांस रंह जांओं, लेंकिन मैंने कंहा, बांपू। हंम अपने इंलाके में जाकर आपका संदेश फैलाएँगे।"

किसना और पन्ना अपने सम्मुख खड़ी हुई इस विभूति को देखकर पराजित हुए चले जा रहे थे।

प्यारेरामजी ने कहा, "काग्रेस में कुछ लोग ऐसे आ गए हैं जो अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं आप मुझे जानते हैं मैं ऐसें लोगों कों पसन्द नहीं करतां। अब आंप यहाँ हैं, तंब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। यंह तो घरं कीं सीं बांत हैं।"

दरोगाजी ने कहा, "लेकिन मैं आपको एक बात बता दूं। इस लड़की और उसकी माँ को मैं छोड़ तो देता हूँ, लेकिन लड़की को डूंमरपुर अभी मत ले जाइएगा। यह लड़की अपनी ससुराल चली जाए, वरना आप जानते हैं कि कानून का फंदा...है...आप तो समझते हैं।"

दरोगाजी ने नाइन को रिहा कर दिया। एम. एल. ए. साहब अपनी गाड़ी में बैठकर जयपुर की सड़क पर चल दिए, क्योंकि उनको मिनिस्टर से मिलना था। जब चौराहा आ गया, तो उन्होंने ड्राइवर से कहा, "मोंड़ ले यँार गाँव कों, अंब उंधर जाने सें क्या फांयदा! कांम हों गयां।" और गाड़ी मोड़ ली गई।

इस समय उनकी जेब में दो सौ रुपये बाकी थे, क्योंकि उन्होंने किसना से चार सौ रुपये लिए थे। कागज की पुड़िया बन्द कर उन्होंने दरोगाजी को केवल दो सौ रुपये दिए थे। किसना ने समझा कि दरोगाजी को सब दे चुके थे। मोटर में पैट्रोल डलवाया था, उसकी कीमत किसना ने अलग चुकाई थी। लेकिन जब नाई अपनी समधिन और बहू को लेकर महू गाँव में पहुँचा तो चारों ओर धाक जम गई। लेकिन नाइन चम्पो ने घर के भीतर घुसने से इनकार कर दिया। वह लड़की के घर में नहीं रहना चाहती थी। उसके लिए वहाँ का पानी भी वर्जित था। चुनांचे दामाद अपनी सास और बहू को लेंकर अपनी ससुराल डूंमरपुर

लौट गया। गाँव जाकर चम्पो ने अपने मकान का ताला खोला और झाड़ू-बुहारी करके पानी वगैरा लाई। उसने रोटी बनाई और अपने मेहमान को खाना खिलाया और उसके बाद माँ-बेटी ने भी खाना खाया। संध्या आने पर चम्पो निहाल को साथ लेकर बाहर गई। सारा जंगल-का-जंगल सूना पड़ा था। चम्पो ने देखा कि चिड़िया फसल को चुग रही थीं, खेत उजाड़ हो रहा था निहाल मन-ही-मन सोच रही थी, कहीं कोई आदमी उसके पति को न बता दे कि वार्ड पंच और सरपंच के लड़कों के नाम के साथ उसका नाम भी जोड़ा जा रहा था। एकान्त में उसने माँ से कहा, "अम्माँ। मैं ससुराल जाऊँगी।"

चम्पो ने आश्चर्य से देखा और कहा, "बेसरम! गौने तक तो रुक जा! कैसी है तू?"

निहाल ने कहा, "तू तो बस जाने क्या सोचती है? मैं कहती हूँ कि किसी ने तेरे दामाद के कान भर दिए तो..."

चम्पो ने लड़की की दूरदर्शिता को देखा। मन-ही-मन उसकी बात को तोला और कहा, "ठीक कहती है, तेरा चला जाना ही ठीक है। पर एक बात है।"

"क्या?"

"आज नहीं तो कल तो गौने की रसम करनी ही होगी। ऐसा न हो जाए कि गौने के पहले ही तेरे कोई बाल-बच्चा हो जाए!"

लड़की ने मुँह फिरा लिया। उसने कहा, "तू भी जाने क्या बकती है?"

"इसीलिए तो तुझे घर छोड़कर न आई।" चम्पो ने फिर कहा, "मुझे तेरा भरोसा नहीं।

निहाल का मुख जैसे स्याह पड़ गया। फिर उसने निर्लज्जता से उसकी ओर देखकर कहा, "अम्माँ! मैं चली जाऊँगी तो तू अकेली रह जाएगी!"

चम्पो ने लम्बी सांस लेकर कहा, "एक दिन तो ऐसा आना ही था।"

"फिर तेरी मदद कौन करेगा?"

"भगवान।"

"क्या राधे काका भी काम नहीं आएँगे?"

चम्पो ने मुँह फिरा लिया और कहा, "अरे अँधेरा हो चला? चल, घर चल। मेहमान अकेला होगा।"

उदास-मन नाइन चम्पो जब बेटी के साथ खेत की हालत देखकर व्याकुल-सी घर लौटी तो उसके मेहमान पन्ना ने कहा, "अब आप अपनी लड़की को मेरे साथ भेज दो। यहाँ रखना ठीक नहीं है। हमारे ऐमेले साहब ने थानेदार साहब से बातें कर ली हैं। उन्होंने भी कहा है कि लड़की को ससुराल भेज दो, गाँव में रखना ठीक नहीं है। इसलिए मैं आपको भी वहाँ ले गया था। लेकिन आप मानीं नहीं। अब तो आप कल ही रवाना कर दो तो अच्छा है।"

चम्पो ने सुना और कहा, “लाला, जो तुमने कहा सो ठीक है, लेकिन अभी तक लड़की की राह भी नहीं पलटाई है, न गौना किया है। पहले गौना किया जाएगा तब लड़की भेजी जाएगी। बताओ, मैं क्या करूँ? इस वक्त लड़की का बाप भी यहाँ नहीं है। दुनिया नाम न धरेगी?”

पन्ना ने उत्तर दिया, “इस वक्त नाम धरने का सवाल नहीं है। किसी बात का ख्याल न करो। बिना किसी भरम के मेरे साथ भेज दो। जब इस केस की पूरी जाँच हो जाए तब आप बुलवा लेना। इस वक्त यहाँ रखना ठीक नहीं है।”

चम्पो ने कल्पना की—गाँव में रह गई लड़की तो बात फैलेगी और बात फैलने पर मुमकिन है पुलिस को फिर पकड़ने को मजबूर होना पड़े। उसने कहा, “लाला, तुम जो कह रहे हो सो ठीक है। मैं कल भेज दूँगी। पर कोई नाम धरे तो सहारा न खींच लेना।”

“कैसी बातें करती हो?” पन्ना ने कहा।

दूसरे दिन सवेरे ही उसने अँधेरे-से में लड़की को दामाद के साथ भेज दिया। अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने देखा, लेकिन इससे पहले कि वे टोकते, पन्ना अपनी बहू को ले जा चुका था। अब चम्पो घर पर अकेली रह गई। घर का काम-काज करके खेत पर रखवाली करने जाती और शाम को घर वापस आ जाती। दो ही दिन में उसे ऐसा लगने लगा जैसे ज़िन्दगी एक बहुत बड़ा पहाड़ थी जिसे अब ढोना था और ढोये जाना था। उसे लगा कि वह टूट गई थी। गाँव अब भी उसके सामने था। अड़ोस-पड़ोस भी था, लेकिन स्त्रियाँ व्यंग्य करतीं और उसके कानों में तरह-तरह की बातें आतीं:

“अच्छा किया, गौने के पहले लड़की भेज दी।”

“अब तो बच्चा भी होगा तो उसी का कहलाएगा।”

स्त्रियाँ हँस दीं।

“चलो, भेजा तो उसी के साथ, जिसके साथ फेरे पड़े थे।”

“नाइन की जात, न जाने वह किस-किस को बिगाड़ रही थी!”

“अच्छा किया।”

और अन्तिम वाक्य सबसे भयानक था, “अजी, दुनिया देखी है इसने। अपनी बेटी को बचा लिया। अपनी जैसी न होने दिया।”

नाइन सुनती और खून का घूँट पीकर रह जाती।

दो-तीन दिन बीत गए थे। सरपंच और वार्ड पंच अपने गाँव को लौट आए थे। उनके चेहरों पर उदासी छाई हुई थी। गाँव में आकर पूछा कि कत्ल के केस में क्या हो रहा है? लोगों को नया रस आया।

राजाराम ने बताया, “चालीस आदमी, सियाराम नाई की औरत और उसकी लड़की छूटकर आए हैं। पुलिस की तहकीकात जारी है। थानेदार साहब ने और तो कुछ नहीं कहा।”

लेकिन यह अनुमान गलत निकला। कुछ ही देर बाद दो कान्स्टेबल आ गए। एक ने कहा, “थानेदार साहब को पता चला है कि सरपंच साहब के लड़के नरायन और वार्ड पंच साहब के लड़के माधोसिंह आज ही अपने मदरसे से आए हैं। चार-पाँच रोज़ से वे दोनों लड़के भाग गए थे। उनको बुलाया है।”

सरपंच साहब ने देखा और कहा, “किसने कहा कि वे यहाँ आए हैं? यह गलत है। दोनों स्कूल में हैं।” लेकिन वे मन ही मन घबरा गए।

बयान वार्ड पंच का भी यही था कि वे दोनों स्कूल में हैं, इसलिए दोनों कांस्टेबल लौट गए। सरपंच और वार्डपंच को लगा कि बला टल गई थी, लेकिन थानेदार गजराजसिंह ने सिपाहियों को भेजकर दोनों लड़कों को स्कूल से पकड़वा मंगाया। थे तो देखने में दोनों हट्‌टे-कट्‌टे, लेकिन उम्र उनकी अठारह-उन्नीस के फेर में थी। नरायन और माधो को जीवन का अनुभव नहीं था। दोनों आराम से पले थे। थाने में आए तो दोनों घबरा गए और रोने लगे।

दरोगाजी ने कहा, “तुम डरते क्यों हो? हम तुमसे कुछ नहीं कहेंगे। घबराओ मत।”

लेकिन लड़कों को चैन कहाँ था! उनके पांव कच्चे थे। दरोगाजी ने देखा, चिड़िया फंस गई थी। उन्होंने नरायन को देखा और कहा, “तुम उस दिन कहाँ गए थे, जब यह केस हुआ था?”

नरायन ने सोचते हुए कहा, “मैं शाम की बस से अपने साथी माधोसिंह के साथ घर आया था। दूसरे दिन हम लोग अपने खेत पर फसल देखने गए थे। रास्ते में हमको बनैसिंह का खेत मिला था। हम दोनों करीब एक घंटे उसके खेत पर बैठे और हमने उससे राज़ी-खुशी की बातचीतें कीं। फिर हम अपने खेत पर चले गए।”

दरोगाजी ने पूछा, “फिर तुम रास्ते में किसी और के खेत पर नहीं रुके थे?”

नरायन हिचकिचाया। दरोगाजी ने फौरन उसकी पीठ पर हण्टर लगाया। वह तगड़ा लड़का बिलबिला गया और चिल्लाने लगा। दरोगाजी ने तुरन्त एक दूसरा हण्टर कसकर लगाया और चिल्लाए, “खामोश, औरतों के से नखरे करता है। खून भी करता है और सिर पर भी चढ़ता है।”

ज्योंही उन्होंने अपना हण्टर तीसरी बार उठाया, लड़के ने कांपते हुए दोनों हाथ जोड़कर कहा, “दुहाई है दरोगाजी की। मैं अभी सारा किस्सा बताता हूँ।”

दरोगाजी ने कहा, “बोल, क्या कहता है?”

नरायन ने कांपते हुए स्वर से कहा, “हम दोनों लड़के बनैसिंह के खेत से सियाराम नाई के खेत पर गए। वहाँ पर उसकी लड़की निहालकौर अपने खेत की रखवाली कर रही थी। हमने उससे बातचीत की और फिर हम अपने खेत पर चले गए।”

दरोगाजी फिर उठ खड़े हुए। उनकी आँखें सुर्ख हो गईं और उन्होंने हण्टर घुमाया।

लड़का चिल्लाया, “दुहाई है।”

दरोगाजी के मुँह से वज़नी गाली निकली और फिर उन्होंने हण्टर मारना शुरू किया और मारते-मारते लड़के की चमड़ी उधेड़-सी दी। लड़का नीचे गिर गया। उसके मुँह से उफ भी नहीं निकला। दरोगाजी थक गए, लेकिन लड़के ने एक शब्द भी नहीं कहा।

दरोगाजी ने पुकारा, "भीकम!"

दीर्घाकार भीकम आ गया।

उन्होंने कहा, "ले जाओ इसको, बन्द कर दो। और दूसरे को भेज दो।"

वार्ड पंच का लड़का माधोसिंह भीतर घुसा, लेकिन दरोगाजी उससे भी कुछ तथ्य नहीं निकाल पाए। तब उन्होंने उसको मारना शुरू किया। लेकिन यह मार फांसी के तख्ते से हल्की थी, इसलिए वह भी नहीं बोला। दरोगाजी ने उसको भी हवालात में बन्द करवा दिया।

रात के करीब दस बजे उन्होंने उनको हवालात से फिर निकलवाया और फिर पिटाई शुरू की। करीब दो घण्टे दोनों लड़के बेहोश पड़े रहे। दरोगाजी उस बीच में आराम करते रहे और जब लड़कों को कुछ होश हुआ, तो दरोगाजी फिर हण्टर लिये सामने दिखाई दिए, और हण्टर को देखते ही दोनों लड़के फिर बेहोश हो गए। माधोसिंह चिल्लाने लगा, "पानी, पानी!" लेकिन नरायन और भी अधिक कठोर था। उसने पानी की भी माँग नहीं की। सारी रात थाना जी-जान से लगकर उन दोनों को तंग करता रहा। उनको एक मिनट भी सोने नहीं दिया गया और जब होश आता, तभी उन पर मार पड़ती। सुबह होते-होते लड़कों की ऐसी हालत हो गई कि अच्छी तरह उठ बैठ नहीं सकते थे।

पौ फटी। दरोगाजी ने फिर बयान लेना शुरू किया। लेकिन अब दोनों लड़के ढीले पड़ गए थे। दरोगाजी ने कहा, "हाँ, फिर कहाँ गए तुम?"

नरायन नहीं बोला। तब सूजे हुए शरीर पर दरोगाजी ने माधोसिंह के एक करारा हण्टर लगाया।

वह कमज़ोर बैल था। चिल्लाकर बोला, "बताता हूँ, बताता हूँ।"

नरायन ने उसे खूनी आँखों से देखा, लेकिन अब गाड़ी का संतुलन बिगड़ चुका था। माधो में अधिक सहन करने की शक्ति नहीं थी।

उसने आतुरता से कहा, "हम निहालकौर के खेत पर ठहरे थे।"

"कितनी देर ठहरे थे वहाँ?"

"करीब दो घण्टे ठहरे थे।"

नरायन ने सुना तो नीचे के होंठ को ज़ोर से दाँतों से काट लिया। उसके खून झलक आया। दरोगाजी ने क्रोध से बेंत मँगाया और कई बार उससे नरायन के मुँह पर आघात किया। उन आघातों से नरायन कुत्ते की तरह चिल्लाने लगा। उसने खून थूका।

दरोगाजी ने कहा, "सूअर का बच्चा! आँखें दिखाता है? हीरालाल!"

हीरालाल, नागिनराम और छह-सात सिपाही भीतर घुस आए।

दरोगाजी ने गरजकर कहा, “टाँग दो साले को उल्टा ले जाकर।” और फिर उन्होंने माधोसिंह से कहा, “तू भी लटकना चाहता है।”

“नहीं हुज़ूर।”

“तो बोल, फिर क्या हुआ? निहालकौर से तुम्हारी मुलाकात हुई थी?”

“हमारे घर की नाइन थी...”

“याराना था?”

माधो चुप हुआ।

“अबे बोल, हरामी, मुँह में गधे की लीद भरवा दूँगा।”

माधो ने कहा, “था।”

उस समय असह्य आत्मिक ग्लानि, अपराध की स्वीकृति और पाप की भावना ने माधो के मन को जैसे खण्ड-खण्ड कर दिया। आज तक उसको ठसक थी। आज उसका वह अहंकार टुकड़े-टुकड़े हो गया था। अब उसके अन्तरमन में सहसा एक भाव जगा, जैसे उसने भीतर से पुकार कर कहा, “माधो! देह के लिए देखा, कितना दुःख होता है? और जब तूने पैर काटकर खड़ुए निकाले थे, तब उसे कितना दर्द हुआ होगा? जब तूने उससे जबरदस्ती की थी, तब उसके दिल पर क्या बीती होगी?” उसने एक शब्द कहा था, “था” और इतने दिनों का पाप का विचार उस ‘था’ में सिमट आया था और वह छोटा-सा शब्द एक भयंकर दानव की तरह उसे डराने लगा।

“उसके बाद?” दरोगाजी ने फिर पूछा।

“इसके बाद हम हिरदेराम के खेत की तरफ चले गए। उसकी लड़की रखवाली कर रही थी। हम दोनों उस मचान के नीचे बैठ गए और उससे मज़ाक करने लगे।”

“फिर?”

“इस पर उसने कहा, ‘तुम बड़े भद्दे लड़के हो! पढ़े लिखे हो, तुमको गाँव की बहिन-बेटियों के साथ हँसी-मज़ाक नहीं करना चाहिए। यह अच्छी बात नहीं है। आगे चलकर तुमको बड़ा आदमी बनना है।’ लेकिन उसने यह भी कहा कि “मैं आज गाँव जाकर तुम्हारे दादा-भैया से भी शिकायत करूँगी। इसपर हम लोगों को डर हुआ कि यह लड़की हमारी जरूर शिकायत करेगी। इसमें हमारी बदनामी होगी। हमने उस लड़की को मचान से पकड़कर खींच लिया और जब वह चिल्लाने लगी तो उसके मुँह में रूमाल भर दिया। मचान के पास एक बांक पड़ा था। उससे उसकी गरदन काट डाली और नार की हंसुली और पैर के खड़ुए उतारकर ले आए। उसी वक्त ज़ोर से हवा चलने लग गई। चिड़ियाँ चिल्लाने लग गईं और हम दोनों उसके खेत से निकलकर अपने खेत पर चले गए और वापस उस रास्ते न आकर दूसरे रास्ते अपने घर की ओर चले आए। पानी बरस रहा था।”

दरोगाजी ने कहा, “और खड़ुए-हंसुली तुमने कहाँ रखे?”

“हमने उन्हें खेत की मेंड़ पर गाड़ दिया। दूसरे दिन सुबह अपने स्कूल को चले गए। बाद में जब आपने गाँव के आदमी बुलवाए और डंडे लगवाना शुरू किया तो हम डर की वजह से स्कूल छोड़कर भाग गए। यह कत्ल हमने किया है, चाहे आप छोड़ो, चाहे मरवाओ,।”

दरोगाजी ने सुना। उस समय नरायन लटका-लटका बेहोश हो चुका था। सिपाहियों ने उसको उतार लिया था। माधो और नरायन को अलग-अलग हवालातों में बंद कर दिया।

कस्बे में चारों तरफ बदनामी फैल गई थी। चारों तरफ देहातों में शोहरत हो चुकी थी। सरपंच और वार्ड पंच दोनों के सिर झुक गए थे।

दिन बीत चुका था। सरपंच और वार्ड पंच ने थाने में आकर देखा कि उनके लड़के अलग-अलग हवालातों में बन्द थे। दरोगाजी को राम-राम की। दरोगाजी ने बैठाया। दरोगाजी ने कहा, “सरपंच साहब। हमने असलियत की जाँच कर ली है। इस केस में आप दोनों के लड़के कातिल हैं।”

एकान्त था। सरपंच ने कहा, “जो कुछ हुआ सो हुआ दरोगाजी! अब क्या किया जाए? अगर इन लड़कों को सज़ा भी हो गई, तो इनकी ज़िन्दगी बरबाद हो जाएगी। वैसे हमारी बदनामी चारों तरफ गाँवों में हो चुकी है, कस्बे में फैल चुकी है। अब किसी तरह से इस केस को छोटा किया जाए और इन बच्चों को इसमें से निकाला जाए। अभी रमोना तक बात नहीं फैली है।”

‘बच्चे’ कहते वक्त सरपंच साहब के मुख पर असीम ममता केन्द्रित हो गई और वार्ड पंच दया-भरी आँखों से टुकुर-टुकुर ताकने लगे।

दरोगाजी ने कहा, “सरपंच साहब, आपके लड़के ने खून किया है। खून कितनी बड़ी चीज़ होती है, यह तो आप जानते हैं ना? मान लीजिए, आपके लड़के का किसी ने खून किया होता, तो आप उसका बदला चाहते ना? अगर मैं उस वक्त इस केस को छोटा कर देता, तब आपकी इन्सानियत पुकार-पुकारकर दुहाई देती। लेकिन आज आपके बेटे ने खून किया है, इसलिए आपको खून भी एक मामूली चीज़ नज़र आ रही है। कत्ल के केस से ये दोनों लड़के कैसे निकल सकते हैं? इन लड़कों को सज़ा ज़रूर होगी। सज़ा हुए बिना तो ये दोनों बच नहीं सकते। कोई राज उठ तो नहीं गया है, राज बदला है। जज बदला है, कचहरी नहीं बदली। अफसर बदले हैं, दफ्तर नहीं बदला। ऐसा तो कहीं सुना नहीं कि नये राज्य में खूनियों को आसानी से छोड़ दिया जाया करेगा।”

सरपंच चंचलसिंह और वार्ड पंच कजौरीसिंह के सिर नीचे हो गए। क्षण-भर के लिए दोनों उत्तर नहीं दे सके। हठात वार्ड पंच कजौरीसिंह ने कहा, “किसी तरह से नहीं बच सकते?” फिर जैसे बुद्धि का सन्तुलन बिगड़ गया था। कह उठे, “हम दूसरों पर यह केस लगा सकते हैं और सबूत दिलवा सकते हैं।”

दरोगाजी ने घृणा से उनकी ओर देखा और कहा, “मजबूरी यह है कि पुलिस के सामने कही हुई बात सच्ची नहीं मानी जाती। हर मुजरिम यह कह देता है कि पुलिस ने मुझे मारकर यह कहलवा लिया। लेकिन रिश्वती-से-रिश्वती मजिस्ट्रेट की बात सही मानी जाती है। लोग कहते हैं कि पुलिसवाले बेईमान हैं। मगर मैं पूछता हूँ, कौन साला बेईमान नहीं? डाक्टर बेईमान नहीं है, जो झूठी रिपोर्ट देता है, रिश्वत लेकर? तहसीलदार और डिप्टी कलक्टर बेईमान नहीं, जो रिश्वत लेकर झूठे केस तय करते हैं? जज और मुन्सिफ बेईमान नहीं, जो रिश्वत लेकर केस छोड़ते हैं? और अपनी गलती छुपाने के लिए हर कोई पुलिस को बदनाम करता है। दुनिया में हज़ार बेइमान हों, लेकिन सबसे ज़्यादा बेइमान रंडी का बेटा होता है। आपको यह कहते शर्म नहीं आती कि कत्ल का केस दूसरों पर लगवा देंगे? हुकूमत मेरे हाथ में है। मैं चाहूँ तो आपको दूसरे केस में पकड़कर बन्द कर सकता हूँ। लेकिन आपने जो गधे की सी खाल के खद्दर के चोले अपने ऊपर चढ़ा लिए हैं, इससे आप समझते हैं, आप बच जाएँगे? आपके लड़के नहीं छूट नहीं सकते। उन सालों को फांसी के तख्ते पर झूलते हुए दिखवा दूँगा। आपके कहने से मैं असली मुलज़िमों को छोड़ दूँ?”

लेकिन बेईमानों का वर्णन करते हुए दरोगाजी ने सरपंच चंचलसिंह की तीव्र बुद्धि के सामने अनेक मार्ग खोल दिए थे। सरपंच ज़मीन पर बैठ गए। उन्होंने घुटने टेक दिए और कहा, “माफ कर दीजिए दरोगाजी! आस-औलाद के मोह ने कजौरीसिंह को पागल कर दिया था, वरना ऐसी बात तो कोई हैवान भी नहीं करता। मेरे बेटे ने कत्ल किया है।”

दरोगाजी ने कहा, “कत्ल ही नहीं किया है, ज़िना भी किया है और जिस औरत से उन्होंने ज़िना भी किया था, अगर उसका कत्ल भी उसी हाथ से कर सकते हैं, तो उनसे बढ़कर जानवर इस दुनिया में नहीं है। उन्हें जीने का हक किसलिए होना चाहिए? उन्होंने नाइन की लड़की से नाजायज़ ताल्लुक रखा। मैं जानता हूँ, जवानी दीवानी थी; लेकिन जवानी में ऐयाशी दूसरी चीज़ है और कत्ल दूसरी चीज़ है।”

सरपंच की आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने कहा, “इस लड़के को फांसी लग जाए तो मेरी छाती ठण्डी हो जाती। लेकिन मेरी माँ अस्सी साल की है। जब वह सुनेगी कि उसके नाती को फांसी हो गई तो उसके दिल पर क्या बीतेगी? जब इसकी माँ यह सुनेगी तो वह क्या करेगी? मेरा यह बड़ा लाड़ला बेटा है।”

सरपंच ने अपनी जेब में हाथ डाला और सौ-सौ के दस के नोट उनकी मुट्ठी में निकल आए। और उन्होंने कहा, “लड़की मर चुकी है। जो मर चुकी है, वह वापस नहीं आ सकी। दरोगाजी, मेरी यह नज़र मंजूर कर लो और ना मत कहो।”

दरोगाजी ने कहा, “एक हज़ार रुपया! क्या होता है एक हज़ार रुपये से आज कल? पाँच हज़ार रुपये से कम नहीं लूँगा।”

दरोगाजी का न्याय बदल चुका था। और उन्होंने फिर कहा, “लेकिन लड़कों को नहीं छोड़ूँगा। शर्त यह होगी कि मैं इस केस में इन दोनों लड़कों का चालान करूँगा, लेकिन, अदालत से बरी कराऊँगा, हाँ, सज़ा नहीं होने दूँगा।”

सरपंच चंचलसिंह अविचलित बैठे रहे। उन्होंने गम्भीर स्वर से कहा, “और अगर आप इनका चालान नहीं करें तो कितने रुपये में फैसला करेंगे?”

दरोगाजी ने सिर हिलाकर कहा, “ऐसा नहीं हो सकता कि इनका चालान न किया जाए। मुझे दस हज़ार रुपये भी दे दो, तो भी बात इतनी ज्यादा खुल चुकी है कि मैं इसको दबा नहीं सकता। केस कमज़ोर कर सकता हूँ, लेकिन इस तरह आज़ाद नहीं कर सकता, वरना इस उन हज़ार रुपयों का मैं क्या करूँगा, जब उल्टे मुझपर इन्क्वायरी आ जाएगी; और मैं उस वक्त क्या जवाब दूँगा? मैं जानता हूँ कि आप दोनों कांग्रेसी हैं। एम. एल. ए. प्यारेरामजी भी इस मामले में मदद करेंगे, क्योंकि वह नहीं चाहते कि नाइन की लड़की निहालकौर इस मामले में कचहरी में बुलाई जाए। लेकिन और भी नेता इस इलाके में हैं। झोलेटोले के सरपंच तिवाड़ी रामसिंह, ठाकुर जवाहरसिंह, बहादुरसिंह जिलाध्यक्ष और न जाने कितने पंच और वार्ड पंच हैं। इस ज़माने में कौन नेता नहीं है? कौन बादशाह नहीं बन गया है? मैं किस-किसका मुँह बन्द करता फिरूँगा? दूसरी बात यह है कि आप हमारे अफसरान सर्किल इन्स्पेक्टर साहब, डी. एस. पी. साहब व एस. पी. साहब से जरूर मिल लें। मैं अपने पाँच हज़ार रुपयों में से इनको एक पैसा भी नहीं दूँगा।”

सरपंच ने कहा, “भगवान आपका भला करें। मैं आपको दो हज़ार रुपये भेंट करता हूँ। बस, अब हमारे पास नहीं हैं।”

दरोगाजी ने कहा, “मैं पाँच हज़ार रुपये से एक पैसा भी कम नहीं लूँगा। अगर मर्ज़ी हो तो बातें करो, वरना मत करो। मुझे ज़रूरत नहीं है। अलावा इसके एक और बात है कि पीछे की बकाया एक पैसे की नहीं करूँगा। पूरी रकम आज ही ले लूँगा।”

वार्ड पंच ने अपनी जेब से एक हज़ार रुपये और निकाले।

दरोगाजी ने कहा, “नहीं।”

तब एक हज़ार के नोट उसकी जेब से और निकले। चार हज़ार में मामला तय हुआ।

सरपंच ने कहा, “अब हमारी एक प्रार्थना है। इन दोनों लड़कों को ज़्यादा बन्द न करें। इनकी ज़मानत कोर्ट में ज़रूर करा लें।”

दरोगाजी ने कहा, “पहले आप अफसरों से मिल लें।”

सरपंच ने कहा, “आप उनसे यह न कहिएगा कि आपको हमने इतने रुपये दिए हैं, वरना वे भी हमसे इतने ही माँगेंगे।”

दरोगाजी ने मुस्कराकर कहा, “मैं तो उल्टा उन पर अहसान रखूँगा कि उनके कहने पर मैं यह सब कर रहा हूँ। आप इसकी फिक्र मत करिए। अगर आपको ज़्यादा खतरा हो तो आपके मामले को मैं तय करा लाऊँगा।”

वार्ड पंच ने स्वीकृति में सिर हिलाया। सरपंच ने कहा, "यह सबसे अच्छा है।"

लेकिन हठात् दरोगाजी ने कहा, "नहीं, नहीं, यह ठीक नहीं है। तुम लोग खुद जाओ। मैं इस बीच में नहीं पड़ता। वे तुमसे एक-एक हज़ार के नोट नकद ले लेंगे। अब देर करने की ज़रूरत नहीं है, जल्दी चले जाइए।"

अब सरपंच चंचलसिंह और वार्ड पंच कजौरीसिंह थाने के बाहर आए, तब उन्हें ऐसा लगा जैसे दलदल में उनके हाथ में कुछ घास आ गई थी और उसको पकड़ लेने के बाद शायद वे बाहर निकल सकते थे।

हवालात में लड़कों को आराम मिलने लगा। लेकिन दरोगाजी ने उनसे कुछ भी नहीं कहा। थाने के लोग अभी यह जान नहीं पाए थे कि इस परिवर्तन का रहस्य क्या था। लेकिन दरोगाजी से उन्हें खतरा नहीं था। वे जानते थे कि दरोगाजी आपस में दगा करने वाले नहीं थे।

दरोगाजी लेटे थे। सुशीला ने पत्र रख दिया और कुछ सोचने लगी। दरोगाजी ने कहा, "क्या हुआ?"

सुशीला कुछ सकपकाई और फिर कहा, "समझ में नहीं आता, घर में क्या कमी थी जो चन्दो ऐसा हो गया!"

"क्यों क्या हुआ?"

चन्दो—दरोगाजी का साला था चन्द्रप्रकाश, बाईस-तेईस वर्ष का युवक—जिला केन्द्र अमोलपुर में रहता था। जहाँगीरपुर से रमोना तक बस में जाकर फिर रेल पकड़नी पड़ती थी। सुशीला का मायका था। सुशीला ने कहा, "चिट्ठी आई है बड़े भैया की। चन्दो ने एम. ए. कर लिया है इस साल; लेकिन काम-वाम कुछ नहीं करता। वह मदनमोहन घीया 'जागते रहो' अखबार निकालता है, उसमें यह भी सम्पादक हो गया है। कम्युनिस्टों के साथ उट्ठक-बैठक है। सरकार वैसे ही खिलाफ है। अरे, कुछ नंगा-भूखा हो और यह काम करे तब भी ठीक है। इसको क्या ज़रूरत है?"

गजराज सिंह ने लेटे-लेटे कहा, "अरे, ऐसे ही लोग कम्युनिस्ट बनते हैं। जो कम्युनिस्ट बनेगा या तो वह जो बिलकुल नंगा होगा या वह जो खाते-पीते घर का होगा। और दोनों ही तरह के लोग कम्युनिस्ट इसलिए बनते हैं कि जो उनके पास नहीं होता, उससे ज़्यादा वे कुछ और चाहते हैं।"

"क्या चाहता है वह?" सुशीला ने कहा।

"अरे, मैं कोई पैसे की बात थोड़े ही करता हूँ।" गजराजसिंह ने कहा, "नाम भी तो एक बड़ी चीज़ है जिसे आदमी चाहता है।"

सुशीला ने कहा, "पता नहीं, आजकल के लड़कों को जाने क्या हो जाता है। लिखा है, चुंगी के चुनाव में खड़ा हुआ था। जनता ने तो कोई मदद की नहीं, जमानत जब्त हो गई।"

गजराजसिंह हँसे और बोले, "वह तो होनी ही थी। अरे, कांग्रेस की तरफ से जनता बोलती थी, दस उसके साथ जय बोलने वाले तो थे। यह एक पार्टी है, जिसके साथ जनता नहीं है, लेकिन ये कहते हैं, हम ही जनता हैं।"

सुशीला रसोई की तरफ चली गई और दरोगाजी को याद आने लगा। जब वे कॉलेज में थे तो उन्होंने शौकिया साहित्य-रत्न की परीक्षा भी पास की थी और कुछ कविताएँ भी लिखी थीं, लेकिन अब वे कविताएँ कहाँ गईं? पुलिस लाइन ने सबको बराबर कर दिया। कठोर जीवन, परेड, कठोर मुख, अपराधियों का संसर्ग और सब छूट गया और वह भक्ति-काव्य, वह रीति-काव्य। कॉलेज में लोगों से बातें होती थीं, तरह-तरह के सपने होते थे। तब देश आजाद नहीं हुआ था। तरह-तरह की बातों में गजराजसिंह भी कल्पना किया करते थे कि वे भी स्वतंत्रता के आन्दोलन में संघर्ष करें। लेकिन फिर शादी हो गई, फिर एक बच्चा हो गया, फिर ज़िन्दगी जैसे दुश्मन हो गई। पहले रस लेकर जिया जाता था, अब रस देकर जीने की नौबत आ गई। खुले हुए कमरे के सब किवाड़ बन्द हो गए, खिड़कियाँ बन्द हो गईं और तब मोरी में से आती हुई हवा में से सांस लेकर ज़िन्दा रह पाए। यह तो थी पुलिस लाइन।

दरोगाजी ने जिन्दगी शुरू की थी, तो मन-ही-मन कौल किया था कि रिश्वत नहीं लेंगे। नहीं लेते थे रिश्वत। पर फिर हुकुम आया ऊपर से कि घोड़ा रखो, अच्छा घोड़ा रखो। और तब गजराजसिंह ने सोचा था, घोड़ा कहाँ से आएगा? तब घोड़ा किसी की मजबूरी के जरिए आया था। वह पहली रिश्वत थी। उसके बाद। जो रिश्वत अपने-आप आती थी वह कम पड़ने लगी और तब गजराजसिंह टेढ़ी उंगली करके घी निकालने लगे। लेकिन खर्चा फिजूल का बिलकुल नहीं करते थे। सारे विभाग में जब वे रिश्वत नहीं लेते थे, लोग उनको नाकाबिल बताया करते थे। उनके दुश्मन थे जो उन पर फब्तियाँ कसते थे, लेकिन जब दरोगाजी जमात के और लोगों की तरह खुद भी गेरुआ पहनने लगे, तो सब लोग जय-जयकार करने लगे। हंसों के झुंड में एक और हंस आ बैठा और मंत्र चहचहाने लगा। गजराजसिंह को आश्चर्य होने लगा, कैसे शुरू किया था और कहाँ अंत हुआ है और अब इसका अन्त नहीं है। यह ऐसे ही चलता आ रहा है और चलता रहेगा। अब यही बच्चे बड़े हो जाएँगे, इनकी शादियाँ हो जाएँगी, ऐसे ही फलाना एक्ट और फलानी दफा, फलाना कैदी और फलाना जुर्म रटते-रटते ज़िन्दगी निकल जाएगी। लोग सामने सलाम करते रहेंगे, पीछे से गाली देते रहेंगे और ये आतंक के बल पर चलते रहेंगे, जीते रहेंगे। ज़िन्दगी के वे मेरे सपने थे! सब कहाँ चले गए? जब सुशीला आई थी तो कितना रस था उसकी आँखों में! बच्चे भी क्या चीज़ हैं! माँ को निचोड़ लेते हैं, बाप को निचोड़ लेते हैं। इन दोनों की

शक्तियों पर पनपते हैं। जब माँ-बाप मर जाते हैं, तो बच्चे उनको भूल जाते हैं। माँ-बाप का बच्चों पर जितना प्रेम होता है, बच्चों का माँ-बाप पर उतना नहीं होता। दरोगाजी के मन में एक अजीब-सी कचोट उठी और ध्यान आया कि शायद वे कविताएँ जो उन्होंने कभी लिखी थीं, वे अब खो गई होंगी और नहीं खोई होंगी तो उनको खो जाना चाहिए, क्योंकि जिस व्यक्ति ने उन्हें लिखा था, वह काल के गाल में समा चुका था और जीवित नहीं था।

इलाके में धाक थी। गजराजसिंह कभी शराब नहीं पीते थे। कभी उन्होंने औरतों की तरफ निगाह उठाकर नहीं देखा। और लोग व्यभिचार की ओर जाते थे, लेकिन सुशीला उनके जीवन में एक रिक्ति की पूर्ति थी और अब उन्हें लगता था कि उन्हें और कहीं भटकना नहीं था। सुशीला का जीवन तृप्त था। उसका पति उसके पास था, उसके बच्चे उसके अपने थे। उसका पति उसके खर्च के लिए इन्तज़ाम करता था, जैसे और दुनिया के मर्द अपनी औरतों के लिए इन्तज़ाम करते हैं। इस सबसे सुशीला को क्या मतलब कि वे कैसे इन्तज़ाम करते हैं। जैसे और औरतें नहीं सोचतीं कि उनका पति कैसे इन्तज़ाम करता है। सुशीला जानती थी कि सब रिश्वत लेते हैं, कलक्टर, मिनिस्टर तक; तो वह क्यों न ले, जो उसका पति है! इस महकमे में तनख्वाह भी तो कम दी जाती है।

गजराजसिंह ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा, “सुशीला!”

सुशीला आई, “क्या है?”

“यह मैं चन्दो की पूछता हूँ कि वह कोई नौकरी क्यों नहीं कर लेता?”

“यही तो मैं पूछती हूँ।” सुशीला ने उल्टा सवाल पूछा, “अरे, दादाजी का कसूर है। शादी कर देते उसकी, सो तो की नहीं। वह तो कॉलेज में ही चक्कर में पड़ गया था। चिट्ठी लिखी है बड़े भैया ने, कुछ दिन को शायद वह यहाँ आ जाए।”

दरोगाजी चौंके, “यहाँ आकर वह अपनी कम्युनिस्टी तो नहीं करेगा? नया मुसलमान अल्ला ही अल्ला पुकारता है।”

सुशीला हँसी और कहा, “बहन के घर में रहेगा आकर, कायदे से रहना पड़ेगा। मैं उसे नेतागीरी नहीं चलाने दूँगी यहाँ।”

दरोगाजी हँसे और कहा, “अरे, तुम क्या चिन्ता करती हो, और वह नेतागीरी करे भी तो उसकी यहाँ सुनेगा कौन! यहाँ तो सुशीला, रोज़ एक न एक नेता आता है। एक वह बाबा घूमता है लौंडा-सा भैरवानन्द। वह साधु-समाज के संगठन की तरफ चल रहा है। सारे साधुओं की एक जमात बन गई है देश-सेवा के लिए। कोई अफसर आएगा तो उससे मिलने जरूर जाएँगे। फूल ले जाएँगे। पता नहीं, यह साधु-समाज क्या कर पाएगा! एक वह सर्वोदयी घूमता है, जिसे ‘चेतन, चेतन’ कहते हैं लोग। अजीब उसकी धजा रहती है। वह यों कहता है कि सब बांट दो, सब बाँट दो, अपने पास कुछ मत रखो। अखबार वाले अलग तूती बजाते हैं। पर नगाड़ा तो एक का बजता है, कांग्रेस का। अब तुम देख ही रही हो, कांग्रेसवालों के क्या हाल हैं। इसलिए मैं तो चिन्ता करता नहीं हूँ। हाँ, ज़्यादा से ज़्यादा

सर्विसवाले यह कह सकते हैं कि देखो भाई, इनके खानदान में एक कम्युनिस्ट है। कहीं ऐसा न हो कि ये भी कम्युनिष्ट खयालात रखते हों। पर इससे क्या होता है! अपना काम भी तो कुछ है। नहीं, आ जाने दो! करेगा भी क्या! आकर बहस करेगा; और फिर वह बहस भी तो तुमसे ही करेगा, मुझसे तो करेगा नहीं। चाटता रहेगा तुम्हारा अपना दिमाग।"

सुशीला कुछ बुरा मान गई। बोली, "आपको तो मेरा भाई अच्छा नहीं लगता।"

"इसमें भाई अच्छा न लगने का सवाल क्या? बस, खुद मैके की बुराई किए जाएँगी, लेकिन कोई दूसरा करे तो खड़ी हो जाएँगी उससे लड़ने के लिए। अजीब होती हैं साहब औरतें! अरे, वह जिस 'जागते रहो' में काम करता है, वह उस मदनमोहन घीया का अखबार है। एक नम्बर का बेईमान है वह आदमी। इधर से ले जाता है खबरें, उधरवालों को धमकाता है और उधरवालों को धमकाकर इधरवालों से पैसा ले जाता है। मैं खूब जानता हूँ। उस अमोलपुर में एक दरोगाजी थे। उन्होंने उसे धमकी दे दी कि बन्द कर दूँगा। बस, पीछे पड़ गया अपने अखबार में कि साहब, नागरिक-स्वतन्त्रता छीनी जा रही है। हमने उससे पूछा—क्यों भाई! दूसरी पार्टी का सवाल ही क्या उठता है तुम्हारे राज में? तुम्हारे राज में कांग्रेस को ज़िन्दा रहने का अधिकार भी है या नहीं? तो उसने कहा कि नहीं। तब हमने कहा कि तुम यह कहते हो कि नागरिक स्वतन्त्रता का अधिकार होना चाहिए। नागरिक स्वतन्त्रता? तो उनका हर बात में यही जवाब कि हम तो जनता हैं और बाकी लोग जनता नहीं हैं। यह तो बड़ा अजीब हिसाब है!" गजराजसिंह ने कहा, "नहीं सुशीला, इन लोगों से कुछ नहीं होगा। ऐसे ही प्रजा-सोशलिस्ट हैं। आ गया है एक जहाँगीरपुर में प्रह्लाद नारायण। उसको हमने एक दफे देखा। पता चला कि साहब प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का दफ्तर खुल गया है। उन्होंने कुछ चमारों को पटा रखा है। लेकिन किस्सा असल में यह है कि यहाँ कांग्रेस के दो दल हो गए हैं। वे, एक दल के बल पर जब दूसरे को बदनाम करना होता है, कोई-न-कोई हड़ताल किया करते हैं और जिस दल के हाथ में हुकूमत है उसके खिलाफ बगावत की आवाज़ उठती है और उनकी भी अपनी गाड़ी चल रही है। बात एक यह है सुशीला कि दुनिया में ईमानदारी नहीं। अरे, गाँधी महात्मा थे; उनका एक सिद्धांत था। अरे भाई, गलत था या ठीक, इससे तो कोई बहस नहीं, लेकिन सिद्धांत सिद्धांत था। जो कहते थे उसके हिसाब से चलते थे। लिहाज़ा ऐसे आदमी को हम सिर झुका सकते हैं। अब ये साले मौकापरस्त! वह बाबा भैरवानन्द! पैर दबवाएगा तो किससे? औरतों से! वह सर्वोदयी चेतन, दुनिया-भर में बुराई करेगा मद्यपान की, धूम्रपान की और अकेले में बीड़ी पीएगा। उस प्रजा-सोशलिस्ट प्रह्लादनारायण के याराना ताल्लुक हैं सारे कांग्रेसियों से। अब तुम्हारा यह चन्दो तैयार हुआ है। हविस है। हविस निकलनी चाहिए बढ़-बढ़कर बातें करने के लिए। और भाई, कुछ अलग बनकर नहीं रहेगा तो नाम क्यों आएगा?"

सुशीला ने बात टालते हुए कहा, “अरे, लड़का है, सब समझ जाएगा। आप तो इतना तूल दे बैठे!”

“अरे, मैं नहीं तूल देता,” दरोगाजी ने कहा, “मुझे इन सब मुसीबतों से पाला पड़ता है। अब तुम क्या समझती हो? अब कांग्रेस के चुनाव थोड़े दिन में आने वाले हैं। उसमें ये लोग मौजूद मिलेंगे। यही जहाँगीरपुर कस्बा है। इसमें माइक्रोफोन बोलने लगेंगे कि भोंपू ही भोंपू बजेंगे। मैंने तो यह सिद्धांत बना लिया है कि जितने दिन निकल जावें उतना अच्छा और जो हाथ पड़ जाए सो ठीक।”

सुशीला फिर काम से चली गई। दरोगाजी फिर सोचने लगे और उन्हें ध्यान आया चंचलसिंह सरपंच का। अजीब आदमी है! दबंग मशहूर है, लेकिन एक ही केस में ढीला हो गया। अब फिर कल्पना में निहाल आई। एक गेहुँआ सुंदर-सा चेहरा आँखों के सामने आया और चला गया। थाने में रही! उस लड़की में ऐसी क्या बात थी? दो-दो लड़कों से उसने किस प्रकार एकसाथ दोस्ती की? और शादीशुदा लड़की, जिसका दस-पाँच दिन में गौना होने वाला था! कैसे लोग इतने पतित हो जाते हैं? और अच्छे घराने के लड़के नरायन और माधो, इनको हो क्या गया था? कैसे खून कर बैठे? कैसे कर लेते हैं लोग खून, क्यों करते हैं? वासना का वह कौन-सा आवेग होता है जिसमें मनुष्य इतना पशु बन जाता है? पशुता तो हम भी दिखाते हैं, अत्याचार करते हैं, लोगों को मारते हैं, पीटते हैं, उनसे पैसा भी वसूल करते हैं। उनको डराते हैं, धमकाते हैं, लेकिन कत्ल कभी नहीं करते। और कत्ल किसलिए? थोड़ा-सा शारीरिक सुख लेने के लिए? बहुत बुरी बात है। अपराधी की मनोवृत्ति कैसी विचित्र होती है! लेकिन दरोगाजी ने मन ही मन कहाः ये लड़के पेशेवर अपराधी नहीं हैं। इन्होंने अपनी इज़्ज़त और लोक-लाज के लिए हत्या की है। इसमें तो कोई शक नहीं कि इन्होंने हत्या की है; और कट्टर नरायन है, माधो उसका कुत्ता है। आखिर कजौरीसिंह और सरपंच में भी तो फर्क है। एक दबंग है, दूसरा उसका पिछलग्गा। दोनों लड़के पहले निहाल के पास जाया करते थे। लेकिन लड़के कैसे बेशर्म हो गए! एकसाथ! और घृणित न लगता होगा उन्हें यह सब! यौवन की वासना इतनी भी भयानक हो सकती है! यह आवेश ही बताता है कि अपराध के बीज उनमें थे, तभी तो वे इतने भयानक जंतु से प्रकट हुए और उन लोगों ने एक लड़की से जबरदस्ती ज़िना किया और उसका कत्ल कर दिया। दरोगाजी सिहर उठे। मेज पर रखी घड़ी टिक-टिक कर रही थी।

दरोगाजी उसकी ओर देखने लगे। उनका भटकता हुआ मन जैसे केन्द्रित हो गया। आवाज़ आती रही और वे उसे सुनते रहे। आज बार-बार टिक-टिक सुनने में भी उनको सांत्वना मिल रही थी। ज़िन्दगी भी तो एक घड़ी की तरह चली जाती है। पुलिस का काम है कि जब यह घड़ी अटक जाए और उसकी सुई आगे न बढ़े, तो उसकी चाबी भरे और फिर उसको आगे चलाए। पाप परमात्मा के सामने होता है, अपराध समाज के सामने। लेकिन पाप खाली परमात्मा के सामने नहीं होता। पाप में परमात्मा और समाज एक-दूसरे में मिल

जाते हैं। अपराध वह है जिसे मनुष्य इसलिए करते हुए डरता है कि कोई देख न ले, लेकिन पाप वह है जिसमें मनुष्य उस बात को न्याय नहीं समझता, किसी भी तरह उस बात को अपने लिए उचित नहीं समझता, अपने-आपसे डरता है और उसका अन्तःकरण उसको इसलिए स्वीकार नहीं करता, क्योंकि वह अपने-आप से उसे छिपा नहीं पाता और अपने-आप की सत्ता में उसे परमात्मा के दर्शन होते रहते हैं। कितनी तरह के अपराध उनके सामने आ जाते हैं। अब दरोगाजी याद करने लगे। हत्या एक पाशविकता है, लेकिन उस पाशविकता के पीछे आत्म-प्रवंचना अपने मुख्य रूप में विद्यमान हुआ करती है। किसी भी अवस्था में मनुष्य ऐसा पागल-सा हो जाता है कि वह अपने विवेक को खो देता है। उस पल-भर में वह कुछ से कुछ कर जाता है। दरोगाजी ने सिगरेट दूर फेंक दी और आँखें मींचकर सोने की चेष्टा करने लगे और फिर उन्हें ध्यान आया—उस लड़की के बाप की सूरत कैसी उतर गई थी! वह बेचारा कैसा हारा-हारा था! गरीब आदमी था न। उसका कोई सहारा इस दुनिया में नहीं। परमात्मा आदमी को जब जन्म देता है और जन्म देने के बाद उसे दूसरे आदमियों के बीच में छोड़ देता है, लेकिन उसके हाथ में पैसा नहीं देता, तब शायद आदमी के लिए इससे बढ़कर कोई दण्ड नहीं हो सकता। बियाबान में आदमी रहे, तो कंद-मूल खाकर जी सकता है, उसे पैसे की ज़रूरत नहीं पड़ती। लेकिन आदमी को आदमी के साथ ज़िन्दा रहने के लिए पैसे की ज़रूरत पड़ती है। यह कैसा विचित्र संसार है। और तभी आँखों के सामने एक बिजली-सी कौंध गई, दामी आ खड़ी हुई। उस औरत की आँखों में कितने अरमान थे! उसने कितनी बड़ी याचना से दरोगाजी के सामने देखा था कि ये हमारी बेटी के खून का बदला लेंगे! कैसी आँखों से उसने देखा था जैसे दरोगाजी परमात्मा थे! जैसे भयानक क्रूर जीवों से भरी हुई इस दुनिया में एक ही इन्सान था जो उसकी बेटी के खून का न्याय करने के लिए आया था! और क्या दरोगाजी ने वैसा किया था? दरोगाजी ने बेचैनी से करवट ली। अब उनके दिमाग में एक दूसरी बात आई। खूनी कौन है? खूनी वह है जो खून करता है या खूनी वह है जो खून को छिपाता है? आवेश में मनुष्य कोई अपराध कर देता है, तो वह बड़ा अपराधी है या बड़ा अपराधी वह है जो बिना आवेश के ठंडे दिमाग से सब-कुछ सोचता हुआ, कानून को जानते हुए भी, अपराधी को अपराध में से निकल जाने का तरीका बताता है। और दरोगाजी की आँखों के सामने निहाल की आँखें फिर झलक आईं। उनमें यौवन का हलाहल भरा था, लेकिन इस समय कुचले हुए सांप की तरह जिसकी पुतलियाँ लटक आई थीं। उनके सामने माधो की वे कायर आँखें आ गईं और आँखें आईं कठोर नरायन की और सरपंच की वे जलती हुई आँखें जिनमें घुटन थी, प्रतिरोध था, विक्षोभ था और अपमान का धुँआ घुट रहा था और फिर वे नीले आकाश की तरह फैली हुई हिरदे की आँखें। और फिर वे रौंदी हुई धरती-सी पड़ी हुई दामी की आँखें। इतनी आँखें, आँखें और आँखें! न्याय, न्याय की प्यासी आँखें! और क्या किया था दरोगाजी ने? क्या किया था उन्होंने?

फिर ध्यान आया, सरपंच मालदार आदमी है। लड़की मर चुकी है। अगर दरोगाजी बीच में नहीं आते तो कांग्रेसवालों की मदद से सरपंच ऊपर के अफसरों को रिश्वत देता। ऊपर से नीचे तक भीगे हुए, तेल से भीगे हुए विभाग को। अकेले दरोगाजी चाहें कि पकड़ लें तो क्या वे इस फिसलन को सँभाल पाएँगें? नहीं, वे उसे नहीं रोक सकते। अगर वे ज्यादा ईमानदार बनने की कोशिश करेंगे तो उनका तबादला कर दिया जाएगा और उन्हें किसी ऐसे देहात में पटक दिया जाएगा जहाँ से किसी गाँव के पास पहुँचने के लिए भी उनको तीन दिन लगेंगे। तब उनके बच्चों की पढ़ाई मर जाएगी, तब उनके नाते-रिश्तेदार उनसे मिल भी नहीं सकेंगे और उजाड़ बियाबान में वे निराश, एकाकी जीवन व्यतीत किया करेंगे, जहाँ सुशीला का मन नहीं लगेगा, जहाँ वह दिन-रात ज़िन्दगी को कोसा करेगी। अपने-आपको बचाने के लिए दरोगाजी ने जो कुछ किया वह ठीक है। और इस दुनिया में सैकड़ों आदमी आते हैं, सबकी किस्मत एक-सी तो नहीं होती। सबको अलग-अलग तरीके की मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। लड़की तो मर चुकी, पर इसी का क्या सबूत है कि...आखिर निहाल ही की तो सहेली थी? मुमकिन है रंगरेली को उसने यारों को बुलाया हो और फिर मोहब्बत की जलन में झगड़ा हो गया हो। शायद वह बोली हो कि तुम मेरे ही पास आया करो, निहाल के पास मत जाया करो। ऐसा भी होता है, और उन्हें पुलिस केस याद आने लगे। औरतें सौतों को काटकर चूल्हे के नीचे गाड़ चुकी थीं। यह भी उन्होंने देखा था कि चाची ने भतीजे का खून कर दिया, ईर्ष्या के लिए। यह कौन-सी मनोवृत्ति होती है मनुष्य के अन्दर, जो ऐसा भयंकर से भयंकर काम करने में नहीं हिचकती? लोग कहते हैं। अपराध भी कैसा होना चाहिए? लेकिन ऐसे अपराधी कभी ठीक हो सकते हैं? यह जो लोग धर्म के नाम को नहीं जानते उन्हें कानून क्या रोक सकता है? और दरोगाजी ने मन ही मन दोहराया: डर से दुनिया चलती है। अगर आज आतंक हटा लिया जाए तो सारी दुनिया में गुंडे-ही-गुंडे उठ खड़े हों। दरोगाजी ने कल्पना की: गुंडों का राज हो रहा है। तो क्या सुशीला, उनके बच्चे, उनकी शांति, उनमें से कोई भी जीवित रह सकता है? नहीं रह सकता। लेकिन यह शांति कैसी है? ये नियम कैसे हैं? कानून तो सबके लिए बना था। गरीब हो, अमीर हो, कानून सब के लिए एक है। कानून हुक्मरां, और रिआया, दोनों के लिए एक-सा है। लेकिन दुनिया में सदा से जिसके पास हुकूमत रही है, उसने कानून को अपने लिए मोड़ा है, चाहे वह कोई भी नियम क्यों न हो। अँग्रेजी राज में यही होता था। नाज़ी लोग यही करते थे, रूस के कम्युनिस्ट भी यही करते हैं और वही कांग्रेस में हो रहा है और यही सदैव होता रहेगा, क्योंकि हुकूमत कभी भलमनसाहत से नहीं हो सकती। शायद इसीलिए पुराने ज़माने के लोगों ने यह सोचा था कि राजा के बेटे को राज दे दिया जाए, तो बहुत-सी बुराइयाँ शायद मिट जाएँ; लेकिन दरोगाजी को याद आने लगा कि रियासतों के मिटने से पहले जब वे रजवाड़ों की पुलिस में थे, तब वे किस तरह राजा की निरंकुशता पर निर्भर थे। एक बार राजा ने, नाराज़ हो जाने पर, जंगल में उन्हें मोटर से उतार दिया था

और कह दिया था कि पैदल आ जाना। उस दिन दरोगाजी बीस मील पैदल चलकर किसी तरह थाने पहुँचे थे। उन दिनों एक मिनट में मुअत्तिल कर दिया जाता था और फिर पच्चीसों खुशामदों के बाद फिर से नौकरी मिलती थी। लेकिन दरोगाजी ने कहा, उन दिनों रियायतें भी बहुत मिलती थीं। निकाल दिया जाता था, तो रख भी लिया जाता था। राजा जब खुश होता था तो मोटर से उतारने के बजाय बीस मील की जगह एक सौ बीस मील मोटर में चढ़ाता भी था।

अब उनका ध्यान फिर दूसरी तरफ चला गया और फिर जिस तरह आसमान हमेशा धरती के कन्धे पर सिर टिकाने के लिए मजबूर हो जाता है, जिस तरह समुद्र किनारे पर ही पछाड़ खाता है, जिस तरह भौंरा फूल पर ही गुनगुनाता है, जिस तरह पक्षी घोंसले में ही चैन पाता है, जिस तरह अंधेरे की लटों पर ही सूरज अपने होंठों को रखता है, उसी तरह उनके मन में एक बात बराबर आने लगी कि अपराधी कौन है, अपराधी कौन है? क्या उन्हें सरपंच से रुपये लेने चाहिए? क्या वे खूनी नहीं बन जाते? क्या वे कातिल नहीं? वह खून जो नरायन और माधो के हाथों में लगा है, क्या वह उनके हाथ में भी नहीं लगा है? क्या वे भी खूनी नहीं हैं?

दरोगाजी बेचैन हो गए। घड़ी अब भी टिक-टिक कर रही थी और टिक-टिक किए जा रही थी। सुई घूमती चली जा रही थी। अलार्म बजने लगा। हठात् इस स्वर को वे सुनना नहीं चाहते थे। उन्होंने हाथ बढ़ाकर बटन दबा दिया। अलार्म बन्द हो गया। आए हुए विचार भी जो उन्हें जगाने के लिए आए थे, बोलते-बोलते चुप हो गए।

सर्किल इन्सपेक्टर हरिमोहन माथुर मोटे आदमी थे। सरपंच चंचलसिंह और वार्ड पंच कजौरीसिंह उनसे मिले। सर्किल इन्सपेक्टर साहब ने पूछा, “कहिए, कैसे आना हुआ?”

सरपंच ने कहा, “हमारे गाँव में एक कत्ल का केस हुआ है और दरोगाजी ने हमारे लड़कों को बन्द कर दिया है। इन्स्पेक्टर साहब, किसी तरह से हमें बचाइए।”

इन्स्पेक्टर साहब ने अनुभवी आँखों से देखा और कहा, “उस तहकीकात को मैं अपने हाथ में ले रहा हूँ। मैं आप लोगों को देखकर जवाब दूँगा। वैसे मैं इसमें अभी क्या कर सकता हूँ!”

सरपंच साहब ने बिना देर किए एक हज़ार रुपये के नोट निकालकर उनके सामने रख दिए।

सर्किल इन्स्पेक्टर ने देखा, मोटी मुर्गी है। कहा, आप लोगों को रुपया देने की ज़रूरत नहीं। मैं वैसे ही देख लूँगा। चिन्ता न करिए। मैं आज थाने का मुआइना करने जा रहा हूँ। मैं आज शाम को या कल जवाब दे दूँगा।”

लेकिन नोट वहीं पड़े रह गए। सर्किल इंन्सपेक्टर के यहाँ से दोनों उठकर डी. एस. पी. के यहाँ गए। वहाँ पहरेवाले सिपाही को सूचना दी गई तो मालूम हुआ कि डी. एस. पी. साहब दौरे पर तशरीफ ले गए हैं और शाम तक वापस आएँगे। उन लोगों ने दफ्तर में पहुँचकर जाँच की कि किस तरफ गए हैं, तो मालूम हुआ कि डी. एस. पी. और एस. पी दोनों कत्ल के केस में तहकीकात में गए हुए हैं। पता नहीं, कितने दिन में वापस आएँगे।

सरपंच और वार्ड पंच दोनों उसी वक्त थाने की ओर वापस चल दिए और करीब शाम तक वे वहाँ आकर लगे। डी. एस. पी. और एस. पी. साहब दोनों डाकबंगले में ठहरे हुए थे। डी. एस. पी. साहब थाने का मुआइना कर रहे थे। मुआइने में ही उस कत्ल के केस की फाइल भी आई। डी. एस. पी. साहब मि. गोयल हट्टे-कट्टे आदमी थे, अच्छे कपड़े पहनने के शौकीन। उन्होंने पूछा, “दरोगाजी, इस मामले में क्या हो रहा है?”

दरोगाजी ने कहा, “हुजूर, अभी तो इसकी तहकीकात चल रही है। वैसे मैंने असली मुलज़िमान की जाँच कर ली है।”

“कौन हैं वे?”

“वही सरपंच चंचलसिंह और वार्ड पंच कजौरीसिंह के लड़के हैं।”

“कहाँ हैं वे?”

“मैंने दोनों को हवालात में इसी केस में बन्द कर रखा है।”

“और लोगों को क्यों छोड़ दिया है आपने? अपनी तहकीकात में आपने और लोगों का ज़िक्र भी नहीं किया? इस केस में तो बहुत-से मुलज़िम बन सकते हैं।”

“हुज़ूर, मैंने इस केस में चालीस आदमियों को बन्द किया था, लेकिन फिर उनको जमानत पर छोड़ दिया और उन लोगों से मैंने आठ हज़ार सिर्फ उनको छोड़ने के ले लिए थे। वे मेरे पास मौज़ूद हैं। मुझे ज़्यादा काम की वजह से फुर्सत नहीं मिली थी, इसलिए मैं आपसे मिल नहीं सका था। अब मैं डाकबंगले पर आता हूँ। उन रुपयों में से मैंने थाने के सिपाहियों को एक हज़ार रुपये दिए हैं और हेड मुहर्रिर और मुंशी को पन्द्रह सौ रुपये दिए हैं। पन्द्रह सौ रुपये श्री सर्किल इन्स्पेक्टर साहब को भिजवा दिए हैं और दो-दो हज़ार आपके और एस. पी. साहब के मेरे पास रखे हुए हैं। उनको मैं हाज़िर करता हूँ।”

दरोगाजी घर गए और थोड़ी ही देर में लौट आए और उन्होंने चार हज़ार रुपये हवाले कर दिए। डी. एस. पी. ने दो-दो हज़ार की गड्डियाँ बनाकर जेब में रख लीं। मुआइना ठीक हो गया था। डी. एस. पी. साहब खुश होकर डाकबंगले पर लौट गए थे। डाकबंगले पर डी. एस. पी. साहब ने एस. पी. साहब के सामने दो हज़ार के नोट रख दिए।

खाने का इन्तज़ाम दरोगाजी की तरफ से हो रहा था। बोतलें खुल रही थीं। मुर्गा पक रहा था। दरोगाजी जब डाकबंगले पर पहुँचे तो उन्होंने एस. पी. साहब को सेल्यूट दी और दूसरे कमरे में डी. एस. पी. साहब के पास बैठ गए। एक खिड़की में से देखा, एक कोने में

सरपंच और वार्ड पंच दोनों खड़े थे। दरोगाजी ने कहा, “मालूम देता है, ये दोनों आदमी आपसे मिलना चाहते हैं।”

डी. एस. पी. साहब ने देखा। उन्होंने सिपाही को आवाज़ दी। सिपाही ने बूट मिलाकर सेल्यूट दिया। डी. एस. पी. साहब ने कहा, “देखो, बाहर जाओ और ये दो आदमी खड़े हुए हैं, इनको बुलाकर लाओ। ये लोग कौन हैं?”

सिपाही ने फौरन उनको आवाज़ दी और बुलाया। उनके आने के पहले दरोगा जी बाहर चले गए।

डी. एस. पी. गोयल साहब बैठ गए और उन्होंने कहा, “आप लोग कौन हैं?”

सरपंच ने कहा, “हुजूर, मैं सरपंच चंचलसिंह हूँ और ये वार्ड पंच कजौरीसिंह हैं। हम लोग डूंमरपुर के रहनेवाले हैं, उसी गाँव में जहाँ एक कत्ल का केस हुआ है। हम श्रीमान जी से मिलने आए हैं।

डी. एस. पी. साहब ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा, “क्या काम है आप लोगों का?”

सरपंच ने कहा, “हमारे लड़के इस कत्ल के केस में बन्द हो गए हैं। दोनों लड़के स्कूल में पढ़ रहे हैं। उनकी ज़िन्दगी बरबाद हो जाएगी। यह केस इन लड़कों ने नहीं किया है, लेकिन मार-मारकर उनसे इकबाल करा लिया गया है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि आप उन दोनों को बचाइए।”

“अच्छा!” गोयल साहब ने कहा, “तो वे तुम्हारे लड़के हैं! लेकिन तुम्हारे लड़कों को तो ऐसा काम नहीं करना चाहिए था ना?”

कजौरीसिंह ने कहा, “हुजूर, उन्होंने ऐसा काम नहीं किया है। उन पर झूठा इल्ज़ाम लगाया गया है। वे तो बच्चे हैं। पढ़ते हैं। जिस दिन यह केस हुआ था, उससे पहले दिन शाम को ये छुट्टी में अपने गाँव की बस में बैठकर आए थे। दूसरे दिन ये लोग अपने खेत देखने के लिए चले गए। उसी दिन यह वाकया हुआ। लोगों ने दरोगाजी के कान भर दिए कि सरपंच साहब और वार्ड पंच साहब के लड़के यहाँ ज़रूर आए थे। शायद यह कौतुक उन्होंने ही किया हो। उसके दूसरे-तीसरे दिन दरोगाजी ने गाँववालों को बुलाया था। मैं भी गाँववालों के साथ था। जिस वक्त उन लोगों को दरोगाजी ने मार लगाई थी तो थाने के सामने के रास्ते पर आदमी गुज़र रहे थे और ये लड़के भी स्कूल की छुट्टी होने से देखने आए थे। जब इन्होंने अपने गाँव के लोगों को पिटते हुए देखा तो दहशत खा गए, दूसरे दिन स्कूल छोड़कर भाग गए। इसपर लोगों को कुछ सुबहा हो गया, वरना हमारे लड़कों ने तो ऐसा काम नहीं किया है।”

“ऐसी बात है?” डी. एस. पी. साहब ने कहा, “मैं अभी दरोगाजी से जाँच करता हूँ। तुम लोग ज़रा बाहर बैठ जाओ।”

दोनों जाकर बाहर बैठ गए। डी. एस. पी. ने दरोगाजी को बुलवाया और कहा, “अरे भाई गजराजसिंह, यह क्या किस्सा है? ये लोग तो कोई दूसरी ही बात कहते हैं। इस केस

की फाइल तो मंगवाओ।"

दरोगाजी ने कहा, "हुज़ूर, मैं खुद साइकिल पर जाकर अभी फाइल लाता हूँ।"

दरोगाजी फाइल लेने साइकिल पर चले गए और थोड़ी देर बाद थाने से लौटकर उन्होंने फाइल पेश कर दी। डी. एस. पी. साहब ने फाइल को पढ़ा और समझा। और कहा, "दरोगाजी, इसमें इन दोनों लड़कों के खिलाफ कोई चश्मदीद सबूत तो नहीं है। मुकदमा कैसे चल सकता है?"

दरोगाजी ने कहा, "मैं इस कोशिश में घूम रहा हूँ और चश्मदीद सबूत ढूँढ़ रहा हूँ। अभी तक मौके का कोई सबूत नहीं मिल सका है।"

डी. एस. पी. साहब ने फाइल वापस कर दी। दरोगाजी फाइल को लिए हुए थाने पर चले गए। तब डी. एस. पी. साहब ने सरपंच और वार्ड पंच को बुलवाया और कहा, "बैठिए।"

दोनों बैठ गए। डी. एस. पी. साहब ने कहा, "भई, मैंने फाइल देख ली है। उन लड़कों का बचना तो मुश्किल है। उनको सज़ा ज़रूर होगी और यह भी हो सकता है कि कोर्ट उनको फांसी की सज़ा दे दे। जिनके खेत आसपास हैं, उनके बयान से यह साबित हो चुका है कि उस लड़की का इन दोनों ने ही कत्ल किया है। हम इस केस में कुछ भी नहीं कर सकते। हमने दरोगाजी को यह भी हुक्म दिया है कि वे इनका चालान कोर्ट में पेश कर दें और फौरन कर दें, क्योंकि ऐसे कातिलों को छोटी हवालातों में नहीं रखा जा सकता। इन पर जुर्म साबित हो चुका है। इन लोगों की तो जमानत भी नहीं कराई जा सकती।"

चंचलसिंह और कजौरीजिंह ने गोयल के मुख की तरफ देखा। वे कठोर दीख रहे थे। उनको लगा कि नाव उनके हाथ से फिर छूट गई थी। अब वे फिर अथाह भंवर में डूबने लगे थे।

सरपंच ने कहा, "हुज़ूर डी. एस. पी. साहब! यह केस इन लड़कों ने नहीं किया है। यह जो इन्क्वायरी की गई है, यह झूठी है। कोई भी मौके का सबूत नहीं है। ज़रा हमारी भी तो सुनिए। इसके अलावा आप आसपास के देहातों में यह भी तो जाँच कराइए कि ये दोनों लड़के कैसे हैं, इनका चाल-चलन कैसा है। बिना जाँच किए दरोगाजी पर आप भरोसा मत कीजिए। आप खुद जाँच कीजिए। हम यह साबित कराएँगे कि इन लड़कों ने कत्ल नहीं किया है।"

गोयल साहब क्षण-भर चुप रहे और फिर बोले, "अच्छा, मान लिया जाए कि आपकी बात सच है, तो फिर बताइये इस लड़की का कत्ल किसने किया है? यह तो नहीं हो सकता कि लड़की खुदकुशी करके मर गई है, क्योंकि वह अपने हाथ से अपनी गरदन इस तरह नहीं काट सकती। अलावा इसके डॉक्टर ने अपनी रिपोर्ट में साफ लिखा है कि इसकी गरदन किसी लोहे के औजार से काटी गई है। और इसके अलावा यह भी लिखा गया है कि इसके साथ ज़िना-बिल-जब्र किया गया है। इससे साफ मालूम होता है कि

इसको किसी आदमी ने काटा है, क्योंकि औरत यदि अपनी गरदन काटती तो अपने साथ ज़िना नहीं कर सकती थी। आप बताइए, वह कौन था?"

कजौरीसिंह ने कहा, "हुज़ूर, अगर हमें पता ही होता तो उसी को न दरोगाजी के सामने लाकर पेश कर देते? लेकिन कातिल का पता तो आज तक हमें खुद को नहीं लगा है।"

"ठीक है।" गोयल साहब ने कहा, "अब आप बताइए, आप गाँव के सरपंच हैं और आप उस गाँव के वार्ड पंच हैं। गाँव के होते हुए अब तक आप कातिल का पता नहीं लगा सके हैं, तो इसका क्या मतलब निकलता है? यही कि आप छुपा रहे हैं, और पुलिस ने पता लगा लिया है। हम इसको झूठा कैसे कह सकते हैं?"

सरपंच ने परिस्थिति को समझा और कहा, "अच्छा महाराज, जो आप कह रहे हैं, वह ठीक है। लेकिन ये दोनों लड़के तो इस तरह नहीं बचते। इनको आप किस तरह से बचा सकते हैं?"

गोयल साहब कुछ नरम-से दिखाई दिए। उसी समय सरपंच ने दो हज़ार रुपये के नोट निकालकर डी. एस. पी. साहब की जेब में रख दिए।

गोयल साहब ने कहा, "अरे भाई, यह क्या? मैं ऐसे मामलों में कभी नहीं लेता। आप इनको वापस ले जाएँ। आखिर में अंजाम बुरा निकलता है।"

सरपंच ने कहा, "महाराज, यह भी बड़ा धर्म है कि आप इन दोनों बच्चों की ज़िन्दगी को बचा लें, वरना इन दोनों की ज़िन्दगी खराब हो जाएगी। यह भी एक बहुत बड़ा धर्म है हुज़ूर! यह भी एक बहुत बड़ी बात है।"

डी. एस. पी. साहब ने धीरे से कहा, "अच्छी बात है, मैं कोशिश करता हूँ। मैं जानता हूँ, बाप का दिल कैसा होता है। आखिर जो लड़की मर चुकी है, वह तो लौटकर आ नहीं सकती। मैं तो इस कानून के ही खिलाफ हूँ कि हत्या का बदला हत्या से लिया जाए लेकिन मजबूर हूँ। सरकारी नौकर कानून नहीं बदल सकते। इससे दूसरे देखने वालों पर दहशत पैदा की जा सकती है, मगर मुज़रिम को सुधारा नहीं जा सकता। खैर! लेकिन एक बात मैं आपसे साफ कह दूँ, अगर आप को देना ही है तो दो हज़ार रुपये के नोट और ले आइए, क्योंकि ये नोट तो एस. पी. साहब के पास चले जाएँगे, क्योंकि फाइल उनके पास पहुँच गई है। वही चालान वगैरह का हुक्म देंगे।"

सरपंच ने कहा, "हुज़ूर, हम बरबाद हो गए। अब किसी तरह आप बचा लीजिए। बड़े हुज़ूर से आप इसे तकसीम कर लीजिए। अब हमारे पास कुछ नहीं है।"

और उस समय सारे गाँव पर हुकूमत करनेवाले सरपंच और पंच ने जमीन पर बैठकर डी. एस. पी. के पैर पकड़ लिये। लेकिन गोयल साहब ने कहा, "यह आप क्या करते हैं! निकल जाइए यहाँ से। मैं इस तरह की बातें सुनने का आदी नहीं हूँ। मैं इस तरह जुर्म को छिपा नहीं सकता।"

उस कठोर स्वर को सुनकर एक सिपाही भीतर घुस आया और उसने उन दोनों को धक्का देकर बाहर निकाल दिया। सरपंच की आँखों में आँसू आ गए। वार्ड पंच के चेहरे पर जैसे स्याही पुत गई थी। वे लोग बाहर नहीं गए। फिर कमरे में घुस आये और वार्ड पंच ने बढ़कर सिपाही के चले जाने पर एक हजार रुपए के नोट उनके सामने रख दिए और गिड़गिड़ाकर कहा, "हुज़ूर, एक हजार और ले लें। अब हमारे पास कुछ नहीं।"

गोयल साहब ने धीरे से कहा, "यह बनिये की दुकान नहीं है, समझे, कि जो चाहे, चाहे जिस दुकान से खरीद ले। यहाँ भाव बताया जाता है और वही सच्चा उतरता है।"

उस पाषाण-मुद्रा को देखकर वार्ड पंच ने एक हजार रुपये के नोट और निकाले।

गोयल साहब मुस्कराए और विनम्रता से बोले, "आप लोग बैठ जाइए।" दोनों बैठ गए।

गोयल साहब ने फिर सिगरेट सुलगाई और कहा, "हम तुम लोगों के लड़कों की ज़मानत कोर्ट में कल पेश करा देंगे। तुम उस फाइल पर सर्किल इन्स्पेक्टर साहब की रिपार्ट कराके हमारे पास ले आओ। हम यहीं उस पर हुक्म दे देंगे।" उस समय गोयल साहब की आँखों में जैसे कोमलता दिखाई दे रही थी। और उन्होंने कहा, "सच, बाप का दिल बड़ा नरम होता है। क्या बतावें, कानून कम्बख्त ऐसा है कि इससे कोई बच नहीं सकता। आप लोग नहीं जानते, इसमें हम लोगों को कितनी मुसीबत उठानी पड़ेगी। आप समझेंगे कि हमने आप लोगों से वैसे ही कुछ ले लिया है, और यह आप लोगों की ज़िन्दगी की कीमत है, आप लोगों की औलाद की ज़िन्दगी की कीमत है। आप उसे एक हज़ार से भी कम समझते हैं? आप लोग उसे दो हज़ार रुपये के बराबर भी नहीं समझते?"

दोनों उत्तर नहीं दे सके। उनपर अब एक आवेश-सा छा गया। जैसे वे डूब चुके थे और अब पूरी तरह डूब जाना चाहते थे। जब दोनों थाने की तरफ चले, तो उन्होंने एक-दूसरे से बात नहीं की। दोनों ऐसी मुद्रा में चल रहे थे कि दूसरे के पुत्र ने उसके पुत्र को बिगाड़ दिया है और वे एक-दूसरे के कारण बरबाद हो गए हैं। किसी ज़माने में उन दोनों में अदावत थी, और सरपंच को यह बात खाये जा रही थी कि पंच उससे नीचे था और इस केस में उसकी धूल कुट गई थी और वह एक साधारण वार्ड पंच की हैसियत के बराबर हो गया था और उसके सामने डाँट खा रहा था। कजौरीसिंह सोच रहा था, नरायन असली खूनी रहा होगा। माधोसिंह ऐसा नहीं कर सकता। और तब अपने-अपने परिवार की उनको याद आने लगी। वह ऐसे कच्चे धागे में लटकता हुआ क्षण था जब-एक दूसरे से घृणा करते हुए भी वे एक रस्सी की तरह एक-दूसरे में बटे हुए थे और बटे रहने में उनकी शक्ति थी, अन्यथा उनके खण्ड-खण्ड हो जाने का भय था।

सर्किल इन्सपेक्टर साहब श्री हरिमोहन माथुर अपने मोटापे को एक कुर्सी पर फैलाए थाने में ही विराजमान थे। दरोगाजी उनके पास बैठे थे।

दरोगाजी ने कहा, “आइए सरपंच साहब! कहाँ से आ रहे हैं?”

सरपंच ने हारे हुए स्वर से उत्तर दिया, “मैं कस्बे से आ रहा हूँ।”

दरोगाजी ने कहा, “कहिए, क्या काम है?”

सर्किल इन्सपेक्टर साहब ने कहा, “कोई खास बात है?”

कजौरीसिंह पीछे था, चंचलसिंह आगे। चंचलसिंह ने कहा, “महाराज, मैं आप ही के पास आया हूँ।”

मोटे माथुर साहब ने कहा, “कहिए, मेरे लायक कोई सेवा?”

जिस तरह ग्रामोफोन के टूटे रिकार्ड पर सुई अटक जाने पर बार-बार एक ही शब्द निकलता है, उसी तरह टूटे हुए सरपंच के मुँह से वही शब्द निकलने लगे, “हुजूर, मेरे लड़के व इस वार्ड पंच के लड़के एक साथ कत्ल के केस में बन्द कर दिए गए हैं। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि आप किसी तरह हमारे बच्चों को बचा लें।”

इन्सपेक्टर साहब ने फाइल निकाली, देखी और कहा, “दरोगाजी, तुमने अभी तक सरपंच और वार्ड पंच को बन्द नहीं किया है? मैंने तुम्हें कल ही हुक्म दिया था। ये लोग अभी तक आज़ाद क्यों घूम रहे हैं?”

दरोगाजी ने कहा, “हुजूर मैंने कल ही दो कान्स्टेबल गाँव में भेजे थे, लेकिन ये गाँव में नहीं थे। अच्छा है, ये लोग खुद अब हाज़िर हो गए हैं। वैसे ये लोग ऐसे नहीं हैं कि भाग जाएँ। घर के खानदानी हैं। पंचायत के सरपंच और पंच हैं। ये लोग भागकर कहाँ जा सकते हैं?”

सर्किल इन्सपेक्टर ने कहा, “अच्छा, अब आप लोग इन लोगों को बन्द कर दीजिए।”

चंचलसिंह और कजौरीसिंह को ऐसा लगा जैसे उन दोनों को खड़े-खड़े बीच में से चीर दिया हो। अपमान से चंचलसिंह का मुँह तमतमा गया। उन्होंने कहा, “इन्सपेक्टर साहब, आप एकदम इस तरह हुक्म क्यों दे रहे हैं, हम न चोर हैं, न कातिल हैं। अगर हम चोर और कातिल होते तो अब तक भाग न जाते। हम भागनेवाले आदमी नहीं हैं। लेकिन आप पहले अपनी बात कह रहे हैं। कुछ हमारी भी तो सुनिए।”

सर्किल इन्सपेक्टर ने कहा, “क्या कहना चाहते हो तुम? हमारी इन्क्वायरी से तुम लोग कातिल पाए जाते हो। हम तुम लोगों को कतई नहीं छोड़ेंगे।”

चंचलसिंह के मन में आया कि इन्सपेक्टर का गला घोंट दे। लेकिन वह अपने क्रोध के उमड़ते हुए सागर को पी गए और उस समुद्र का क्षार उन्हें भीतर ही भीतर व्याकुल करने लगा। उन्होंने विनम्र स्वर में कहा, “इन्सपेक्टर साहब, हमको आप बन्द कर दीजिए, लेकिन कुछ हमारी भी तो सुनिए।”

मोटे इन्सपेक्टर साहब ने कहा, “हम तुम्हारी ज़रूर सुनेंगे। कहो, क्या कहना चाहते हो? और अगर कुछ सुननेवाली बात होगी तो हम उसपर अमल भी करेंगे।”

सरपंच ने कहा, “इन्सपेक्टर साहब, हम इस केस में कातिल नहीं हैं। पहले-पहले मैंने इसकी रिपोर्ट पंचायत के जरिए आपके थाने में भिजवाई थी और दरोगाजी के साथ रहकर इसकी तहकीकात भी करवाई थी। इस केस में मेरे और वार्ड पंच के लड़कों को दरोगाजी ने स्कूल में से पकड़कर बन्द कर दिया है। अब आपसे यह निवेदन है कि हमारे दोनों लड़कों को किसी तरह से छुड़वा दीजिए या उनकी ज़मानत करवा दीजिए।”

इन्सपेक्टर साहब मुस्कराए। बोले, “यह ठीक है, लेकिन दरोगाजी ने जो इन्क्वायरी की है, वह भी ठीक है। यह कत्ल खुद-ब-खुद तो नहीं हो सकता। इसको किसी आदमी ने किया है। आसपास के खेतवालों के बयान से यह साबित होता है कि इस केस में आपके व वार्ड पंच के लड़कों का हाथ है।”

कजौरीसिंह मूर्ख की तरह देखता रहा, लेकिन चंचलसिंह ने गम्भीरता से सोचते हुए कहा, “इन्सपेक्टर साहब, यह सब-कुछ ठीक है, लेकिन मौके पर कोई सबूत नहीं।”

दरोगाजी बाहर चले गए। इन्सपेक्टर साहब ने कहा, “अब आप क्या चाहते हैं?”

सरपंच ने कहा, “इन्सपेक्टर साहब, आपसे यह निवेदन है कि अगर आप इनको ज़मानत पर छोड़ सकते हैं तो छोड़ दीजिए। हमको जगह-जगह क्यों बुलवाते हैं! अगर आप छोड़ दें तो अच्छा है।” और सरपंच ने बात खतम करते-करते एक हज़ार रुपये के नोट जेब से निकालकर इन्सपेक्टर साहब के सामने कर दिए। और कहा, “महाराज, सब-कुछ ठीक है। आप हमारे परमेश्वर हैं। सब-कुछ आपके ही हाथ में है। आप चाहे जिसको मारें और चाहे जिसको छोड़ दें। मैं आपके पांव पर टोपी रखकर कहता हूँ कि आप हमारे लड़के जल्दी से जल्दी हवालात से छोड़ दें, ताकि उनकी ज़िन्दगी बरबाद न हो। पढ़ाई का पट्ट हुआ जा रहा है।”

इन्सपेक्टर साहब ने नोटों को जेब में रखते हुए धीरे से कहा, “इस तरह से तो हम नहीं छोड़ सकते। हम तुम्हारी फाइल श्रीमान् डी. एस. पी. साहब के पास भेजते हैं। उनसे चालान की मंजूरी मंगवाकर कार्ट में चालान पेश करवाकर ज़मानत मंज़ूर करा लेंगे। तुम्हें उन लोगों के लिए डाक्टर का सर्टिफिकेट पेश करना होगा। अलावा इसके हम मौके का सबूत नहीं होने देंगे। इतना हम कर सकते हैं, बाकी अदालत की मर्जी—वह चाहे छोड़े, फांसी दे या सज़ा दे। हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं होगी।”

चंचलसिंह और कजौरीसिंह की आँखों में कृतज्ञता के भाव झलक आए, मानो वे इस अहसान से दबे जा रहे थे। मोटे सर्किल इन्सपेक्टर श्री हरिमोहन माथुर, जिनका कि एक बंगला जयपुर में बन रहा था और जिन्होंने हाल में अपनी लड़की की शादी में बीस हज़ार रुपये खर्च किए थे, कुछ आगे झुके और उन्होंने फौरन डी. एस. पी. को चालान की मंजूरी के लिए लिख दिया।

सरपंच ने कहा, "आप फाइल मुझको दे दीजिए, मैं डाकबंगले पर ले जाऊँगा।"

इन्सपेक्टर साहब ने सिर हिलाकर कहा, "ऐसे केस की फाइल दस्ती नहीं दी जाती। हम अपने सिपाही को भेज रहे हैं। आप इसके साथ चले जाइए।"

इन्सपेक्टर साहब ने दरोगाजी से कहकर सिपाही के साथ फाइल डी. एस. पी. के पास भेज दी और डी.एस.पी. साहब ने पहले अपनी राय लिखी और खुद दस्ती उसे लेकर एस. पी. के पास चले गए।

एस. पी. कल्ला साहब कश्मीर के रहनेवाले थे और अपने का राजघराने का आदमी समझते थे। वे शराब पीते थे तो हुकूमत से पीते थे, मर्गा खाते थे तो भी अपने गौरव में कमी नहीं आने देते थे। अपने को आधा अंग्रेज समझते थे और वैसे अपने को पंडित भी कहते थे। उनकी बहुत दूर-दूर तक पहुँच थी। बड़े-बड़े सेक्रेटरी उनके मुलाकाती थे और बड़े-बड़े हुकूमत करनेवालों के खानदान की औरतों से उनके खानदान की औरतों का मेल-जोल था। गोया नीचे से वे कितने भी मुलायम क्यों न हों, ऊपर से कछुए की पीठ धारण करते थे, जिसपर कोई हमला नहीं कर सकता था। और बड़ी-बड़ी मुश्किलों में वे मुस्कराते थे। हँसना वे जानते नहीं थे। उन्होंने चालान पेश करने की मंजूरी देकर डी. एस. पी. की ओर देखा। तब तक डी. एस. पी. साहब दराज़ में कुछ रख चुके थे। डी. एस. पी. साहब फाइल ले आए और उन्होंने फौरन फाइल सर्किल इन्सपेक्टर साहब के पास भेज दी।

अब एकांत था। दरोगाजी ने सरपंच और वार्ड पंच को भीतर बुला लिया और कहा, "मैं कल मुन्सिफ साहब की अदालत में चालान पेश करूँगा। तुम ज़मानत की दरख्वास्त वकील के मार्फत पेश करना, तुम खुद पेश मत करना, वरना तुम्हारे लड़कों की ज़मानत नहीं होगी। इसके अलावा तुम सुबह ही पी. आई. साहब से और मिल लेना। वे कहीं ज़मानत में रोड़ा न अटका दें, क्योंकि हमारे कहने पर तो वे लोग कुछ शक करेंगे। अलावा इसके तुमको एक और काम करना है कि मुन्सिफ साहब ज़मानत पेश करने पर ज़ामिन की हैसियत की तस्दीक और माँगेंगे। इसलिए अभी से, दस बजे का टाइम तहसील का है, तुम फौरन तहसील में दो ज़ामिनों की तरफ से दरख्वास्त पेश करा दो ताकि तहसीलदार साहब उसपर हुक्म दे दें कि पटवारी हल्का सायल की हैसियत तस्दीक करके रिपोर्ट पेश करे।"

अब सरपंच और वार्ड पंच दोनों थाने से चल दिए और उन्होंने एक आदमी गाँव में भेजा और उससे कहा, "तुम फौरन हमारे गाँव में चले जाओ और वहाँ जाकर तुम हमारे घर के पास में जो मंगू और श्यौपाल नाम के नम्बरदार हैं, उनको अपने पास बुला लेना और उनसे कहना कि तुमको सरपंच और वार्ड पंच बुला रहे हैं। वे फौरन तुम्हारे साथ आ जाएँगे। अगर वे लोग अपने घर पर न मिलें, तो अपने खेत पर मिलेंगे। खेत उनके, गाँव के

नज़दीक ही हैं। तुम खुद जाकर बुला लाना या हमारे घर पर जाकर कह देना, वे किसी के ज़रिए बुलवा देंगे।”

तहसील में भीड़ ज़मा थी। पटवारी और अहलकार अपने-अपने काम में लगे हुए थे। खज़ानेवाले सिपाही दरवाज़े के सामने बैठे बातें कर रहे थे। जब चंचलसिंह और कजौरीसिंह तहसील में पहुँचे, अर्ज़ीनवीस भानालाल ने उन्हें बड़ी इज़्ज़त से बैठाया। लेकिन इन दोनों के होश उड़ रहे थे। चेहरे पर कालिमा छा रही थी। वे लोग अच्छी तरह से बात न कर सके। भानालाल एक ही काइयाँ था। उसकी मूँछे पतली और माथे के ऊपर के बाल छितराए हुए थे। बगल में बस्ता दबाकर जब चलता तो लड़के उसे देखकर ‘झाऊ आया’, ‘झाऊ आया’ कहकर चिढ़ाया करते थे। बैठे-बैठे लिखते रहने के कारण उसको पेट का रोग था और वह तरह-तरह की आवाज़ें हवा से पैदा किया करता था। एक बार एक मुआइने में डिप्टी साहब के सामने उससे गलती हो गई, जिसपर डिप्टी साहब बहुत खफा हो गए। उसने हाथ जोड़कर कहा, “हुज़ूर, बहुत दिन से बाय बन्द हो गई थी। मैंने हिंगास्टक चूर्ण का प्रयोग किया है, उससे ज़रा गलती हो गई।” डिप्टी साहब को हँसी आ गई और उन्होंने उसको माफ कर दिया था। वह खुद तो बदनाम था ही, उसकी बीवी ने उसको और भी अधिक बदनाम कर रखा था। लेकिन अब उसने उस तरफ ध्यान देना बन्द कर दिया था। भानालाल ने दाँत निकालकर चंचलसिंह की ओर देखा और कहा, “आज बड़े दिन बाद दरसन दिए।”

चंचलसिंह का ध्यान उधर नहीं था। उसने कहा, “भानालालजी, आप दो दरख्वास्तें मंगू और श्यौपाल नम्बरदार की ज़मानत के लिए हैसियत तस्दीक कराने के लिए लिख दें, ताकि हम तहसील से उसपर हैसियत तस्दीक करा लें।”

अर्ज़ीनवीस भानालाल ने दोनों हाथ जोड़ते हुए बड़ी मुलायमियत से नज़रों को पलटते हुए कहा, “जो हुकुम, अभी लिख देता हूँ। लेकिन नम्बरदार कहाँ हैं? मैं उनके बिना कहे कैसे लिख सकता हूँ?”

चंचलसिंह ने कहा, “उन्हें बुलाने को हमने आदमी भेज दिया है, तब तक आप तैयार कर दें।” और फिर उसकी टटोलती नज़रें देखकर बोले, “आप कोई चिन्ता न करें। जिस वक्त वो लोग आ जाएँ, तब उनके दस्तखत कराकर उन्हीं को दे देना। लिखाई के पैसे हम दे देंगे।”

अर्ज़ीनवीस ने कहा, “आप भी कैसी बात करते हैं! लिखाई के पैसे क्या आपसे लूँगा?”

सरपंच ने कहा, “भाई, यह सब ठीक है। आपका यह रोज़गार ठहरा, इस तरह घोड़ी अगर घास से नाता जोड़ेगी तो खाएगी क्या?”

भानालाल हँसा। बोला, “सरपंच साहब! आपकी निगाह में दौलत है। आप चाहे जहाँ से हमको पैसा पैदा करा सकते हैं। आप तो हुकुम दे दो, मैं अभी अर्ज़ी तैयार करता

हूँ।”

“मैंने आपसे कहा ना कि आप लिख दीजिए।”

अर्ज़ीनवीस ने फिर दोनों हाथों को जोड़ते हुए कहा, “कित्ती देर लगती है! बस, ज़रा नम्बरदार आ जाएँ, मैं अभी तैयार किए देता हूँ।”

कजौरीसिंह ने कहा, “वाह भैया भानालाल! तुम तो यार, भरोसा भी नहीं करते?”

भानालाल ने दाँत निकालकर कहा, “कैसी बातें करते हो! मालिक होकर मैं आपका भरोसा नहीं करूँगा! यह रखा है मेरा बस्ता, आप जो कहो सो लिख दूँ। पर मैं तो यों सलाह देता था कि देहाती आदमी बड़े गंवार होते हैं। आप बड़े आदमी हो। आपने उसपर हज़ार एहसान किए होंगे, लेकिन मौके पर ज़रूर अपनी आँख पलटे बिना नहीं रहेंगे। मैं तो जानता हूँ ना, ओछे आदमी से एक काम पड़ जाए, पच्चीस नखरे करता है। आप लिखवा लो! वह मना कर दे, अच्छा नही लगता ना? आप जैसे बड़े आदमी की बात ठुकरा दी जाए। क्या मैं झूठ कहता हूँ?”

कजौरीसिंह ने कहा, “अरे यार! तुम खुद नखरे कर रहे हो।” उसकी आतुरता देखकर चंचलसिंह ने डाँटकर कहा, “कजौरीसिंह! क्या कर रहे हो? भानालाल मेरा खास आदमी है। आधी रात को कह दूँ कि जाग, तो जाग उठे।”

भानालाल ने कहा, अब देख लो साहब! मैंने तो आपके भले की बात कही थी। आप बुरा मानते हो साहब, तो, लिख देता हूँ साहब! वार्ड पंच साहब का गुस्सा ज़रा तेज लगता है मुझे। बड़े आदमियों का दिल तो बड़ा होना चाहिए साहब, जैसे हमारे सरपंच साहब का है। अरे--

बूंद अघात सहें गिरि कैसे ।
खल के बचत संत सहें जैसे ।।

मैने कुछ गलत तो नहीं कहा साहब?

कजौरीसिंह ने ऊबकर कहा, “आप लिखिए तो सही।”

“मैने कब इन्कार किया है साहब। पान-वान लाऊँ? मैं तो यों कहता था कि वे लोग मना न कर दें, मुकर न जाएँ?”

चंचलसिंह ने कहा, “देखो भानालालजी! वे लोग नहीं मुकर सकते। आखिर जब हम कह रहे हैं, तो कुछ सोच कर ही तो कह रहे हैं।”

“अब बस मुझे यकीन हो गया।” भानालाल ने कहा, “आपने कह दी, मेरी दिलजमई हो गई।” और उसने अपनी दवात खोल ली।

अर्ज़ी लिखकर उसने कहा, “आप एक काम करें, हल्का-पटवारी से कह दें कि वह घर न चला जाए। तहसील का टैम खतम होने को आ रहा है। अभी पटवारी लोग मीटिंग से फारिग होकर ऊपर गए हैं। जब तक आपके नम्बरदारान आएँगे, तब तक पटवारी-हल्का अपनी रिपोर्ट तैयार कर लेगा, क्योंकि उसको इन नम्बरदारों को जमीन की छाँट करनी होगी। यह छाँट जमाबन्दी से होगी। उनका रकबा उनके हिस्से के मुताबिक निकालना पडेगा। बाद में रजिस्टर-मालशुमारी व उनके मवेशी, घर, मशीन वगैरा को उसे देखना पड़ेगा। फिर वह यह देखेगा कि रजिस्टर-तकाबी में उनके नाम की कोई रकम तो बकाया नहीं। इस तरह से पटवारी को काफी वक्त लग जएगा।” अब चंचलसिंह और कजौरीसिंह

पटवारी के पास चले। रास्ते में दो जमींदार बात करते हुए दिखाई दिए। ठेठ देहात के निवासी। एक कह रहा था, “नकल मिल गई?”

दूसरे ने कहा, “पटवारी रुपये माँग रहा है।”

पहले ने उत्तर दिया, “पटवारी अपने बाप का काम भी बिना पैसे लिये नहीं करता। रुपये निकालकर दे।” चंचलसिंह और कजौरीसिंह आगे बढ़ गए। पटवारी जैराम ने सामने देखा तो उठकर राम-राम की। चंचलसिंह ने मंगू और श्यौपाल की हैसियत तस्दीक जमानत की बाबत कहा तो पटवारी फौरन कागजात निकालकर देखने लगा! क्योंकि चंचलसिंह गाँव के सरपंच थे। पटवारी सरपंच के अधीन था, इसलिए उसकी हिम्मत नहीं पड़ी कि देर लगाता। चुपचाप कागज देखने लगा। उसने पहले मंगू का रिकार्ड देखा फिर श्यौपाल का और फिर दोनों की रिपोर्ट बनाकर तैयार करने लगा। उसने मिल्कियत की नकल की। उसके लिए वह जमाबन्दी चौसाला लाया। उसके बाद उसने खसरा चौसाला नकल ली, जिसमे हरएक काश्तकार की काश्त दर्ज रहती थी, इसलिए दोनों नम्बरदारों के काश्त की तफसील की। इसके बाद उसने रजिस्टरउजरत में उन नकलों का इन्द्राज किया। बाद रजिस्टर-तकाबी देखा कि कोई बकाया तो इनपर नहीं है। इसके बाद जमाबन्दी में यह नोट देखा कि यह जमीन किसी बैंक वगैरा मकबूल तो नहीं हो रही है। इतनी लम्बी रिपोर्ट तैयार करने और मेहनत करने के लिए पटवारियों को सरकार से तनख्वाह नहीं मिला करती, गरज़मन्द उसके लिए खुशामद करके पटवारियों को रुपये देते हैं तब यह काम होता है। लेकिन पटवारी मातहत था। इस समय उसने आवश्यकता से अधिक कागजों को उल्टा-पुल्टा और चंचलसिंह को यह दिखाया कि वह उनका कितना बड़ा खिदमतगार था। कुछ देर बाद उसने रिपोर्ट तैयार कर ली। थोड़ी देर बाद भानालाल अर्ज़ीनवीस ने आवाज़ दी, “सरपंच साहब! आपके नम्बरदार आ गए हैं। आप जल्दी आ जाइए।”

चंचलसिंह नीचे गए। नम्बरदार मंगू और श्यौपाल ने राम-राम की। चंचलसिंह गम्भीर थे। मंगू ने कहा, “कैसे याद किया?”

श्यौपाल बोला, “हम तो खबर मिलते ही चल पड़े।”

चंचलसिंह ने कहा, “भाई, क्या बताएँ! आपको कल हमारे लड़को की ज़मानत देनी है, इसलिए हमने आपको बुलाया है।”

मंगू ने कहा, “हमने एक बार एक जमानत दी थी, जिसमें वह फरीक नहीं आया और दो-दो सौ रुपए की मुचलका ज़मानत जब्त हो गई थी, और हमने अपनी इज्जत बचाने के लिए अपनी गाँठ से पैसा दाखिल किया। तब से हमने यह गाँठ लगा ली है कि आइन्दा हम किसी की ज़मानत नहीं देंगे। हमारे पड़ोस में एक बाबा रहते थे। वह यह कहा करते थे कि आदमी को चार बातों से बचना चाहिए,” और मंगू ने बड़े अंदाज से कुछ गाते हुए स्वर में कहा:

“जो सुख चाहे जीव को, तो बातें छोड़ो चार ।

चोरी, चुगली, जामिनी और पराई नार ।।"

और उसने बड़े नाटकीय ढंग से कहा, "यह बात उस बखत हमारे सामने आ गई जब जेब से दो-दो सौ रुपये के जमानती मुचलके जब्त हुए थे।"

श्यौपाल ने काटकर कहा, "लेकिन सरपंच साहब, अब क्या करें! जल में रहें और मगर से बैर करें? अगर ज़मानत नही देंगे तो आप नाराज होंगे।"

मंगू ने कहा, "आपने हमको अपने विश्वास पर बुलाया है, इसलिए ज़मानत तो हम दे देंगे, भले ही इसमें तबाह हो जाएँ। लेकिन आदमी का ही आदमी से काम पड़ता है और आप जैसे इज्जतदार आदमी का काम मुश्किल से ही पड़ पाता है। काहे को तो आपके लड़कों पर ऐसा नाम लगता और काहे को आपके माथे पर कालिख पुतती?"

चंचलसिंह ने बात काटकर कहा, "यह झूठ है भाई! तुम जानते हो, ये दुश्मनों की उड़ाई हुई बातें हैं।"

श्यौपाल ने कहा, "झूठ तो है ही। मैं तो यह कहता हूँ वह गाँव की लड़की थी। बात नहीं कहनी चाहिए, क्योंकि गाँव की बहू अपनी बहन-बेटी लगती है। हिरदेराम की लड़की की कोई सूरत थी? फटे जूते-सा तो उसका मुँह था। जब नाइन की छोरी से उनकी मेल-मुलाकात थी, तो वो उसे छोड़कर उसके पास क्यों जाने लगे!"

मंगू ने सिर हिलाकर कहा, "चलो तो चलो, जे भी ठीक रही। अजी, चम्पो की छोरी के रहते और कौन जीत सके! सियाराम भाग लिया। देखा न गया उससे चम्पो का खेल इस उतर पर भी।"

"यही तो मैं कहता हूँ", चंचलसिंह ने कहा, "लड़कों को बदनाम किया गया है।"

"येल्लो", श्यौपाल ने कहा, "बदनामी में क्या कसर रह गई है अब? बय्यरबानी पनघट पर बतराती हैं, और पास के गाँवों में सोहरत हो गई है, लेकिन ज़मानत हम देंगे।"

कजौरीसिंह ने कहा, "भाई, वक्त की बात है। इस वक्त ऐसी ही चीज़ है। वरना तुमको मालूम है कि हमने भी काफी जमानतें दी हैं। इस केस में हम खुद नहीं दे सकते। अगर आप लोगों को खतरा हो तो पैसे जमा करा लो।"

श्यौपाल ने कहा, "कैसी बात करते हो वार्ड पंच साहब! अरे, हमारे आप के ऐसे घराना ताल्लुकात हैं, दिन-रात का उठना-बैठना है। यह आपने खूब कही, और कोई होता तो इत्ती सुनकर तो मैं लौट गया होता। पर मैं तो आपकी सूरतें देखता हूँ। हाय-हाय, क्या गुलाब का सा खिला हुआ चेहरा था। पाँखुड़ी-पाँखुड़ी करके खिले जा रहे थे। पहले कैसा आँखों से दबदबा बरसता था। हाय-हाय छाती फटती है देखकर कि जहाँ कभी बाजे-गाजों की आवाज़ आती थी, आज वहीं सन्नाटा छा रहा है। मैं तो अभी घर की तरफ होकर आया हूँ आपके, कुत्ते रो रहे हैं सड़क पर, कोई पूछनेवाला नहीं। अम्माँ बैठी थीं बाहर आपकी। अब दीखता उनको है नहीं, और लड़के की माँ पर क्या बीत रही होगी!"

चंचलसिंह का गला भीतर ही भीतर भर आया। उन्होंने श्यौपाल का हाथ पकड़कर दबाते हुए कहा, "जाने दो, इसे जाने दो। चलो, दरख्वास्त पर दस्तखत कर दो।"

दरख्वास्त तहसीलदार साहब के सामने पेश की गई। तहसीलदार कटारा साहब प्रसिद्ध थे कि वे ग्यारह बच्चों के बाप थे। उनका एक लड़का ग्वालियर में डाक्टरी पढ़ रहा था, एक लड़का आगरा के दयालबाग के टेक्नीकल कालेज में पढ़ता था, तीसरे को उन्होंने रुड़की में ओवरसियरी करने भेज रखा था। चौथा बीकानेर में वेटरनरी कालेज में ढोरों की डाक्टरी का कोर्स पास कर रहा था। चारों लड़के होस्टल में रहते थे और वे उन्हें सौ-सौ रुपया महीना भेजा करते थे। दो लड़कियों की शादी हो चुकी थी। तीन लड़कियाँ छोटी थीं और कस्बे के स्कूल में ही पढ़ती थीं और एक लड़का इण्टर में पढ़ रहा था, जो भी होस्टल में रहता था। एक लड़के को उन्होंने वहीं स्कूल में भर्ती करा रखा था। इतना खर्चा वो अपनी तनख्वाह में किस तरह चलाते थे, यह एक रहस्यमय बात थी। उनके बाप एक कानूनगो थे, जो रिटायर हो चुके थे, जिन्होंने जयपुर में तीस हजार की लागत का एक मकान बना लिया था, लेकिन यह कोई नहीं पूछता था कि उनके बाप के पास वह रुपया कहाँ से आया था?

हाँ, लेकिन रुपया एक बहुत गन्दी और छोटी चीज़ है और उसके बारे में इतनी छानबीन अच्छी नहीं हुआ करती। अतः अच्छा यही है कि दूसरे के द्रव्य को मिट्टी के ढेले के ही समान समझा जाए।

तहसीलदार साहब सरपंच को जानते थे। उन्होंने दरख्वास्तों पर हुक्म लिख दिया और सरपंच साहब उन्होंने दस्ती लेकर पटवारी के पास गए, जहाँ उन्होंने फौरन रिपोर्ट शामिल कराई और नकल वगैरा जमीन व काश्त व मालशुमारी की शामिल कराके, दस-दस हजार रुपए की हैसियत तस्दीक करा ली और गिरदावर के पास गए। गिरदावर सांवलदास ने चश्मे में से देखा और स्याही से नीली हुई अंगुलियों को चटकाया और सरपंच के दबदबे से फौरन दरख्वास्तों पर रिपोर्ट करके कागजात फिर सरपंच के हवाले कर दिए। सरपंच चंचलसिंह ने वार्ड पंच की मार्फत दस-दस रुपये के नोट पटवारी और गिरदावर को दिए, लेकिन दोनों ने लेने से इन्कार कर दिया। कजौरीसिंह ने जबरदस्ती उनकी जेब में रख दिए और कहा, "अरे भाई, यह तो बच्चों की मिठाई है।"

गिरदावर ने कहा, "आप ही का दिया खाते हैं महाराज!"

"ठीक है, ठीक है।" कजौरीसिंह ने बोझा उतारते हुए कहा।

चंचलसिंह फिर कागज़ लेकर तहसीलदार साहब के पास पहुँचे। तहसीलदार साहब इजलास से खड़े हो चुके थे, लेकिन सरपंच साहब को देखकर बोले, "क्या ले आए?"

चंचलसिंह ने दरख्वास्त तहसीलदार साहब के सामने पेश कर दी। तहसीलदार साहब ने उन दरख्वास्तों पर, गिरदावर और पटवारी की रिपोर्ट पर, दस-दस हजार रुपए की हैसियत तस्दीक कर दी।

अहलकार ने फौरन तहसीलदार साहब की मोहर ठोककर उनके दस्तखत कराकर सरपंच साहब को कागज़ दे दिए।

अब चंचलसिंह, कजौरीसिंह और नम्बरदारों को लेकर गाँव की ओर चले। बाजार में लोग इकट्ठे हो रहे थे। पानवाले की दुकान पर कुछ पेशेवर ठलुए ताश खेल रहे थे, उनमें से एक ऐसा भी था जो हर चुनाव में भाग लेता था। वह गत वर्ष मगनसिंह के विरुद्ध दानामल की ओर था तो अगली बार दानामल के विरुद्ध रामप्रसाद की ओर था। उसको सरपंच ने देखा तो निगाह बचाकर चलने लगे। मगर उसने आवाज़ दी, "हजूर, इस गरीब गोबिन्द को योंही छोड़ जाओगे?"

चंचलसिंह रुक गए। हलवाई पूड़ियाँ उतार रहा था। सुगन्ध आ रही थी। वह डालडा की पूड़ियाँ बनाता था, लेकिन न जाने कौन-सा एसेंस उसमें डालता था कि बनते वक्त उसमें से असली घी की महक आती थी। मंगू और श्यौपाल ने पूरियों की ओर देखा। श्यौपाल ने कहा, "वार्ड पंच साहब, चलते-चलते आप थक गए होंगे, कुछ खाय लो।"

चंचलसिंह ने गोविन्द से बात करते-करते इस बात को सुन लिया और कहा, "कजौरीसिंह जी! आप लोग खाना खाओ, कुछ नाश्ता कर लो।" दोनों नम्बरदार हलवाई के यहाँ जम गए।

हलवाई ने कहा, "पूड़ी दूँ? कितनी तोलूँ?"

"अरे, तोल दे," मंगू ने कहा, "चाहे जितनी तोल दे—पूड़ी का क्या खाना!" कजौरीसिंह ने कहा, "अरे, कुछ मीठा भी दे भाई। कुछ कलाकन्द-वलाकन्द बना है?"

"ताज़ा बना है ताज़ा।"

जब नम्बरदारान के साथ चंचलसिंह और कजौरीसिंह घर पर पहुँचे, तब सूरज ढल चुका था।

सरपंच चंचलसिंह का मन भारी था। वे अकेले लेटे सोच रहे थे। एक-एक करके घटनाएँ उन्हें याद आती थीं और जैसे दिल में एक नई बरछी-सी घुस जाती थी। यही थी वह व्यवस्था जिसके लिए सहस्रों आदमियों ने बलिदान दिया था। आज भी चारों ओर तरक्की का हल्ला हो रहा है। नई-नई चीज़ों के बारे में अखबार में निकलता है—फलानी योजना चल रही है, अभी और बनेगी, यह बनेगा, वह बनेगा। लेकिन जो विरासत हमको मिली, उसे कांग्रेस ने आगे क्या बढ़ाया? लालटेन के प्रकाश में उन्होंने देखा, एक छिपकली दीवार पर चिपकी दिखाई दे रही थी और उससे काफी दूर एक पतंगा बैठा हुआ था। चंचलसिंह के नयन उधर ठहर गए और उन्होंने विचार किया—सबका जीवन इस पतंगे की तरह होता है। यह समझता है कि मैं उड़ना जानता हूँ, लेकिन काल छिपकली से भी भयानक होता है। छिपकली उड़ना नहीं जानती, लेकिन काल उड़ना भी जानता है। तो

फिर वे इतने हाहाकार में क्यों पड़े हुए हैं? उन्होंने मन ही मन कहा—चंचलसिंह, तू इतने चक्कर में क्यों पड़ गया है? तूने गाँव में अपनी इज्ज़त हासिल की थी। यह कजौरीसिंह आज तेरे पास आकर बैठने लगा है। आज तुझे उससे सलाह करनी पड़ती है। लेकिन यह क्या है? यह कोई खानदानी आदमी तो नहीं। खानदान! यह विचार आते ही चंचलसिंह को लगा, जैसे किसी गलत तार पर अंगुली रख दी गई थी। उसने सारी बात को बेसुरा कर दिया था। खानदान क्या है? यही कि जिसके पास थोड़ा पैसा है, वह पैसे के लिए लपकता नहीं है, क्योंकि पैसा उसका देखा हुआ होता है। लेकिन लोभ कहाँ नहीं होता? पैसा पैसे को माँगता है। राजा थे, तो वे राज्य के लिए लड़ते थे। सेठ हैं, तो वे धन के लिए लड़ते हैं। एक इंच धरती कोई अपनी नहीं छोड़ना चाहता। हम अपने दिमाग में अपनी इज्जत का एक ढकोसला बनाते हैं और उसके लिए ज़िन्दा रहते हैं।

दीवार पर छिपकली ऐसी मालूम दे रही थी जैसे सो रही हो, उसे किसी बात का ध्यान नहीं। वह पतंगा अपनी जगह से उड़ा और छिपकली से कुछ दूर आकर बैठ गया। यह अपने काल से कितना गाफिल है! इसे नहीं मालूम है कि सामने यह छिपकली क्या है। यह इसे अभी निगल जाएगी। चंचलसिंह की आँखें उधर टकटकी लगाकर देखने लगीं और फिर विचार आया कि अब फिर क्या होगा? वह छिपकली अपनी जगह से आगे सरकेगी और इस पतंगे को निगल जाएगी। आदमी इतना चक्कर बाँधता है, इतनी घेरेबन्दियाँ करता है। हर बार काल से यही कहता है कि ज़रा रुका रहे। और मुझे थोड़ा समय दे दे। और मुझे थोड़ा समय दे दे। कुल मिलाकर कितनी-सी भीख मिलती है—तीस वर्ष, चालीस वर्ष, पचास वर्ष। होश में आने के बाद। इससे ज्यादा तो नहीं। और ऐसे चला जाता है। गधे के सिर से सींग की तरह कि फिर उसका पता भी नहीं चलता। उसे लोग जला देते है। वह राख में मिल जाता है। उसके बाद उसका वंस चलता है, लेकिन लोग उसे याद नहीं करते। और अगर याद भी कर लेते हैं तो मरनेवाले को क्या मिल जाता है? कुछ नहीं। पर यह सब क्या है, यह सब क्यों है, यह सब किसलिए है? यह घर, यह परिवार, यह गाय, ढोर-डंगर, यह इज़्ज़त, यह पैसा, ज़मीन-जायदाद और हुकूमत की प्यास—ये सब आदमी को दीवाना क्यों बनाए रखते हैं? इनके लिए आदमी इतने पाप क्यों करता है?

रात्रि की नीरवता में पास के मोहनजी के मन्दिर से किसी का स्वर आने लगा। उस स्वर को चंचलसिंह ने पहचाना—गाँव के एक बौहरे का स्वर था। बौहरा भी कौन? रूपदास, जिसे चंचलसिंह पसन्द नहीं करते थे, जो चंचलसिंह की काट करता था। लेकिन इस समय वह मन्दिर में बैठा था। भगवान ने उसे रूप नहीं दिया था। भगवान ने उसे तन से गन्दा बनाया था और सिर के बाल गिर गए थे। उसकी आँखें चुँधियाई-सी लगती थीं। जब वह चलता था, तब लंग करता था। लेकिन। उसे ऐसा कोमल स्वर मिला था कि सुननेवालों को आश्चर्य होता था—यह स्वर कहा से आ रहा था? और इस समय वह विभोर होकर गा रहा था। उसके गीत की एक-एक कड़ी चंचलसिंह के मन में उतरने लगी। उतरने लगी, जैसे

पानी उतरता है सूखी दरार में। उतरने लगी, जैसे पाँखी घुस जाता है अपने घोंसले में। क्षण-भर के लिए शांत हो गए उद्वेग। मिट गया हृदय का हाहाकर और उस माधुरी-भरे स्वर में समग्र अन्तराल समाहित होकर मानो प्रतिध्वनित होने लगा। गीत उठने लगा—हे प्रभु, मेरे अवगुणों पर चित्त मत धरो। बार-बार स्वर उठता—चित्त न धरो, चित्त न धरो, चित्त न धरो! ओह! चंचलसिंह तू यह क्या सुन रहा है? कोई ऐसी सत्ता है जहाँ जाकर मनुष्य पुकार सकता है—मेरे अवगुणों पर चित्त न धरो। सारा संसार अवगुणों से भरा है। आज उस सत्ता को हम लोग भूल क्यों गए हैं, जहाँ जाकर मनुष्य को अपने पापों के डर की आवश्यकता नहीं है। उसका प्रायश्चित्त करने के लिए पुकार हो रही है। उसकी अन्तरात्मा निर्धूम ज्वाला की तरह जल रही है, अपना स्नेह जलाकर। यह माटी है या रूई। माटी का स्नेह रूई की तरह जलता है, तब आलोक मिलता है। और स्वर उठता है—चित न धरो, चित न धरो। प्रभु! तुम्हारा नाम समदर्शी है। तुम चाहो तो पार कर सकते हो, सचमुच उससे यह कहने की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य को उसका कृपा-कटाक्ष पाने के लिए, जो अपने-आप नहीं मिलता है। और सामने वह कृष्ण है। क्या उसमें करुणा नहीं होगी? करुणा होगी। लेकिन मनुष्य का अहंकार ऐसा है जो उसके और परमात्मा के बीच में व्यवधान बन जाता है।

और चंचलसिंह ने सोचा—क्या सचमुच वे इस योग्य थे कि उसके सामने अपना हाथ भी न उठा सकें। आज उन्होंने क्या किया था? उन्होंने पाप के रास्ते पर अपना पांव उठाया था। आज वे एक गन्दे नाले की तरह थे। उन्होंने सारी सड़ांध को अपने अन्दर भर लिया था। आज उन्होंने नीच से नीच आदमी के सामने सिर झुका दिया था। यह था चंचलसिंह का रूप। पहले तो ऐसा नहीं था। चंचलसिंह ने सरपंची, के लिए संघर्ष किया था, लेकिन अपना सिर झुकाकर नहीं। चंचलसिंह सरपंच था, लेकिन लोग गाली नहीं देते थे। समय बदल गया। अब अहंकार की जगह विनय ने ली। और सरपंच ने भी समयानुकूल अपने में परिवर्तन किया, लेकिन लोग हँसे नहीं, क्योंकि उनके पीछे एक परम्परा थी अपने पुरखों की, जिन्होंने अंग्रेजों से लोहा लिया था। उनके पीछे एक परम्परा थी बलिदानों की, चंचलसिंह ने अंग्रेजों से लोहा लिया था। उनकी गाथा थी कि उन्होंने एक राजा के ज़माने में सिर नहीं झुकाया था। चंचलसिंह के पिता ने जेल काटी थी। उस ज़माने में जेल काटी थी, जब लोग अंग्रेज को हौआ समझते थे। लेकिन चंचलसिंह ने सब कुछ देखते हुए भी कभी कांग्रेस का विरोध नहीं किया। लोगों ने जबरदस्ती उनको सरपंच बनवाया था। लेकिन परपंच बन जाने के बाद वे क्या हो गए थे? उनको ऐसा लगने लगा जैसे उनके शरीर से दुर्गन्ध आने लगी। क्या सोचा विचार था? जो पहले थे, अधिकारों को पाने के बाद उसको बनाए रखना प्रजातंत्र में कितना कठिन होता है! लोग किसी की उन्नति देख लेते हैं तो जलते हैं और वे ऐसे हथकण्डे काम में लेते हैं कि देखकर घृणा होती है। उस समय चंचलसिंह को मजबूर होकर अपने-आपको बचाए रखने का प्रयत्न करना पड़ता था।

लेकिन वह सब आपसी दौड़ थी। उसमें किसी का सर्वनाश नहीं किया गया था। लेकिन यह वे क्या कर रहे थे? इसके लिए उन्होंने इतना पैसा लुटा दिया था। निश्चय ही उन्होंने पाप किया था। भयंकर पाप किया था। हिरदेराम, तू अपनी बेटी को प्यार करता है। मैंने यह तेरे साथ क्या किया? अगर मेरी बेटी के साथ ऐसा होता तो क्या मैं तेरी तरह व्याकुल नहीं होता? मेरी भी बेटी होती! मैं भी उसको कुंआरी देखता, तो मेरी इच्छा होती कि वह अच्छी जगह जाए। अच्छे घर में उसका ब्याह हो, फले-फूले। यह मैंने आज पाप किया है। चंचलसिंह का मन भीतर ही भीतर उनको कुतरने लगा, जैसे चूहा लग गया था। हे भगवान! क्या मेरे लिए कोई मार्ग नहीं? यह मैं ममता में क्या कर रहा हूँ ये सब लोग यहीं रह जाएँगे। जब मैं अकेला ऊपर जाऊँगा तो क्या जवाब दूँगा? क्या मेरे लिए कोई निस्तार नहीं है?

और बौहरे रूपदास की आवाज़ आने लगी। एक लोहा पूजा में रखा जाता है। एक लोहा वधिक के यहाँ पड़ा रहता है। लेकिन पारस यह नहीं देखता। वह गुन-औगुन पर नहीं जाता! वह जिसको छू लेता है, उसी को सोना बना देता है। चंचलसिंह को लगा, उनके जले हुए हृदय के ऊपर जैसे किसी ने मरहम लगा दिया हो। यह रूपदास, जो रुपये पर दो आने ब्याज लेनेवाला आदमी है जो सुबह से उठकर शाम तक अपनी उगाही के लिए गाँव के घर-घर चक्कर लगाता है, जिसको देखकर लोग घिन करते हैं, उससे कोई आज नहीं पूछता कि क्यों इतना पाप करता है? वह कैसे मीठे स्वर से कृष्ण को बुला रहा है! चंचलसिंह को लगा, जैसे उनके रोम-रोम में वे स्वर बिंध रहे थे।

और रूपदास ने फिर गाया—एक नदी कहलाती है, एक नाला कहलाता है, मैले नीर से भरा हुआ। लेकिन जब दोनों मिल जाते हैं, तब उसका नाम गंगा पड़ जाता हैं, सुरसरि पड़ जाता है। पतितपावनी जाह्नवी लोक का उद्धार करने के लिए इस पृथ्वी पर बहती है। चंचलसिंह का मन कराह उठा—क्यों नहीं वे आज तक तीर्थ-यात्रा पर गए? और सुने हुए वर्णनों के प्रभाव उनके मस्तिष्क पर गिरने लगे भस्मावृत-सा हिमालय तपस्या में रत, समाधिलीन महायोगेश्वर के समान आकाश तक अपना सिर उठाए है। कैलास उनको दूर से बुलाने लगा। समुद्र के थपेड़ों से कांपती धरतीवाला जगन्नाथपुरी का तीर्थ मन्दिर उनको पुकारने लगा। जाएँगे। वे जाएँगे जहाँ द्वारका है, जहाँ एक दिन लीला-पुरुष कृष्ण ने अनन्त समुद्र को पृथ्वी के ऊपर छोड़ दिया था। जाएँगे वे केदारनाथ। नहाएँगे वे त्रिवेणी में। वृन्दावन-मथुरा के झनझनाते घण्टे, गूँजती हुई झालरें, आरतियाँ, विभोर मानस, तन्मय समर्पण—क्या वे सब भूल गए? क्यों न वे रामेश्वरम् जाएँ जहाँ समुद्र और आकाश मिलकर पृथ्वी को चूमते हैं? दक्षिण के वे विशाल मन्दिर, जिनके बारे में वे सुना करते थे, तीर्थ-यात्रियों से! बदरीधाम! अरे, वे कितने भूले रहे! हर साल किसान-स्पेशल जाती थी, वे उसमें भी नहीं गए। खुद ही तो लटके रहे, किसी ने रोका थोड़े ही था। आदमी का पाप जब उसे रोकता है तब उसकी आँखें मुंद जाती हैं, जैसे कोल्हू का बैल आँखें मुंदें घूमता चला

जाता है। तेल किसी और का निकलता है, लेकिन बैल घूमता है। हे प्रभु, यह मैंने आज तक अपने जीवन का क्या किया! माँ पुकारती रही, मैं उसे एक जगह भी नही ले गया। माँ के अरमान अधूरे रह गए। मैं उसे तीर्थ-यात्रा को क्यों नहीं ले गया? इस पृथ्वी पर जन्म मिला मुझे किसलिए? इसीलिए ना कि अपने पापों को धोए जाऊँ। लेकिन मैंने क्या किया? मैं यह बन जाऊँ—मैं वह बन जाऊं। ओफ! हे प्रभु! यह मैंने क्या किया?

और रूपदास का करुण स्वर फिर सुनाई दिया—'हे प्रभु! अब की बार मुझे उबार दो, अब की बार मुझे जल्दी उबार दो। अगर नहीं उबारोगे तो तुम्हारा प्रण टल जाएगा। ओह! तो प्रभु ने प्रण किया था कि वे पतितों का उद्धार करेंगे। एक दिन सबका उद्धार करेंगे।'

और रूपदास का मधुर स्वर और उसके बाद फिर कहीं बजती हुई बांसुरी, मानो उसकी तान पर एक संगीतिका छिड़ रही हो।

नीरव रात। कोई स्वर नहीं। कोई पास नहीं। कितनी शांति आ रही है! ऐसा लगने लगा चंचलसिंह को जैसे वे मन्दिर के सामने खड़े हैं। मोहिनी मूर्ति उन्हें देखकर मुस्करा रही है। चंचलसिंह की आँखों में आँसू आ गए।

बाहर जूतों की आवाज हुई। मुड़कर देखा, शायद कोई आ रहा था। चंचलसिंह को लगा, जैसे किसी ने उनके दिल में कील ठोंक दी हो। इस समय किसी को आने की क्या ज़रूरत थी? एक क्षण प्रभु ने अपने पास बुलाया था, इशारा किया था। और ये कौन आ गए हैं बाधा डालनेवाले?

दीवार पर निगाह गई। छिपकली पतंगे की ओर बढ़ने लगी थी। चंचलसिंह को लगा, अब वह निगल जाएगी, निगल जाएगी उस कीड़े को! लेकिन अत्यन्त प्रसन्नता के साथ उन्होंने देखा कि छिपकली जब उसके पास गई कि पतंगा उड़ गया और उसकी पूंछ की तरफ जा बैठा। नहीं, नहीं निगल सकती। बचानेवाला उसको बचा रहा है। बचानेवाला जिसको बचा लेता है, उसको कोई नहीं मार सकता।

नीचे से आवाज़ आई, "सरपंचजी हैं!"

"कौन? आ आओ ऊपर।"

कुछ लोग जूते पहनकर ओटे पर चढ़ने लगे। आगन्तुकों की छाया गिरी और दीवार पर का पतंगा दिखाई देना बन्द हो गया। अब केवल छिपकली दिखाई देने लगी।

सरपंच ने पहचाना, "अरे, आप लोग हैं!"

खद्दर की टोपी लगाए, खद्दर के कुर्ते पहने, खद्दर की धोतियाँ पहने, गौ-रक्षक जूते पहने तीन व्यक्ति थे—मोटावाला मगनसिंह था, दुबला-पतला दानामल और तगड़ावाला रामप्रसाद।

सरपंच ने कहा, "ओह हो, आज तो काफी दिनों बाद आना हुआ। बैठो!" सामने की खाट पर रामप्रसाद बैठ गया और उसने अपना अंगोछा कंधे पर से उतारकर गोद में रख

लिया। दानामल और मगनसिंह मूढ़ों पर बैठ गए।

सरपंच तकिए पर कोहनी टिकाए बैठ-से गए और कहा, “आज कैसे याद कर लिया इस वक्त?”

और सरपंच ने बीड़ी का बंडल आगे बढ़ाया। दानामल और मगनसिंह ने बीड़ियाँ सुलगाईं। रामप्रसाद ने कहा, “आप तो जानते हैं, मैं पीता नहीं।” और यह कहते हुए उनके लम्बे दाँत छिरछिरे-से ऊपर उभरते हुए से दिखाई दिए।

बौहरे रूपदास का गाना बन्द हो चुका था। अब सड़क पर कुत्ते भौंक रहे थे। नीरवता टूट चुकी थी और दीवार पर रामप्रसाद की विशाल छाया ने पतंगा और छिपकली, दोनों ही छिपा दिए थे।

रामप्रसाद ने अपनी पैनी आँखों से देखते हुए कहा, “सरपंच साहब, अब के किसकी रही?”

सरपंच ने भोला बन कर पूछा, “किसमें?” उनको संदेह हुआ कि कहीं ये लोग केस के बारे में कोई बात करने न आए हों।

रामप्रसाद ने दानामल की ओर देखा। सरपंच चंचलसिंह को मालूम था कि कोई ऐसा चुनाव नहीं था, जिसमें ये तीनों व्यक्ति नहीं खड़े होते हों। छोटा हो या बड़ा, मौजूद ये हर जगह रहते हैं, चाहे एक-दूसरे के खिलाफ लड़ रहे हों या सब मिलकर किसी और के खिलाफ। कोई ऐसा सरकारी कर्ज़ नहीं था, जिसके लिए ये अर्ज़ी नहीं देते हों, चाहे वह इन्हें मिले या नहीं। जब सरकार की तरफ से एक बार दूध के कुछ टीन मुफ्त बंटे थे, ये तीनों आदमी तब भी गरीब बनकर आ गए थे और एक-एक टीन ले गए थे। तीनों आदमी पार्टीबन्द थे और तीनों में ही एक विशेष गुण था कि अभी जो बात उनसे कही जाती थी, वह वहाँ पहुँच सकती थी जहाँ उसे नहीं पहुँचना चाहिए था। ऐसे थे वे बातों को पहुँचाने के शौकीन। चंचलसिंह ने कहा, “आपने मुझे बताया नहीं?” और मन में शंका फिर उठ खड़ी हुई।

दानामल ने कहा, “हम तो चुनाव के बारे में बात करने आए थे। कांग्रेस की आप कापियाँ भरवा रहे हैं कि नहीं सदस्यता की? बात यह है जिसके ज्यादा सदस्य बनेंगे, वही चुनाव जीतेगा। जो अपनी जेब से ज्यादा चवन्नियाँ भरेगा, उसी का बहुमत होगा।”

सरपंच ने कहा, “मैं इस बार अपने लड़के के केस में फंस गया हूँ। आप जानते हैं, मुझे उससे फुरसत नहीं मिलती।”

मानसिंह ने अफसोस से सिर हिलाकर कहा, “हमने भी सुना है साहब। हमें भी यकीन नहीं हो रहा है। खैर, वे लड़के अगर बेकसूर हैं, तो उसमें क्या है! और आप ऐसे ऐरे-गैरे तो हैं नहीं, जिसे कोई भी दबा ले। और सरकार तो अपनी है। जो कुछ अड़ंगा डालती है, वह पुलिस डालती है। पुलिस को खार है कि पुलिस के अधिकार को सरकार ने कम कर दिया है। वैसे पुलिस है क्या, जो आपके सामने बोले!”

सरपंच ने उसकी बातों की आज की घटनाओं से तुलना की। उनका मन भीतर ही भीतर मरोड़े खाने लगा। ऐसा लगने लगा जैसे प्राणांतक वेदना हो रही थी। ऊपर से मुस्कराकर कहा, “यह तो आप ठीक कहते हैं, लेकिन वक्त तो लगता ही है। जो समय मुझे देश-सेवा में लगाना चाहिए, वह मैं कहाँ लगा पा रहा हूँ!”

दानामल ने कहा, “लेकिन रामसिंह तिवाड़ीजी ने बड़े सदस्य बनाए हैं अब के। बड़ी कापियाँ भरी हैं।” और फिर धीरे से कहा, जैसे वह स्वयं भी अपनी बात को नहीं सुनना चाहता था, “एक वह जमाना था, एक यह जमाना आ गया है। सरपंच साहब, “मेम्बर थोड़े ही बनाए हैं इतने! चवन्नी में सदस्यता, जाने अल्लम-गल्लम कितनों के नाम भरवा दिए अपने गाँव के ऐरे-गैरों के, जिनसे पूछो कि कांग्रेस का मतलब क्या है तो वे नहीं जानते। और चवन्नियाँ सबकी भर दीं। अब बताइए, इसका मतलब यह है कि आयन्दा चुनाव में वहीं जीता करेंगे जिनके पास गुल्लक होगी, वरना इतनी सदस्यता के लिए कहाँ से पैसा आएगा!”

रामप्रसाद हिला और छाया भी हिली। अब सरपंच चंचलसिंह को छिपकली फिर से आगे बढ़ती हुई दिखाई दी। उसके सामने फिर पतंगा आ गया था। उनका ध्यान उधर ही केन्द्रित हो गया। उन्होंने बीड़ी का धुआँ छोड़ा और कहा, “चुनाव में तो सब-कुछ होता है। और ठाकुर जवाहरसिंह क्या कर रहे हैं?”

“आप उनको अपना समझते हैं!” दानामल ने कहा, “लेकिन तिवाड़ीजी आपके नहीं हैं। मैं तो कहता हूँ कि ठाकुर जवाहरसिंह उनके मुकाबले में आपकी तरफ ज्यादा रुझान रखते हैं, जबकि आपका ख्याल है कि आपके खिलाफ हैं। आपको नहीं मालूम, प्यारेरामजी, ठाकुर जवाहरसिंह की तरफ हैं। तिवाड़ी से उनकी चटक रही है। उन्होंने तो ऊपर पी.सी.सी.को भी लिख दिया है। अब देखिए साहब, क्या होता है! बड़ों की बातें तो बड़े ही जानें।”

छिपकली और आगे सरक आई थी। चंचलसिंह ने कहा, “इस चुनाव पर बहुत कुछ दारोमदार है ज़रूर। लेकिन देखिए, ऊँट किस करवट बैठता है! अब आगे पब्लिक का चुनाव आएगा, उसका बहुत-कुछ इसपर निर्भर है। इससे कांग्रेस की असलियत मालूम पड़ेगी। राजा जब से खतम हुए हैं, तब से पहला चुनाव तो हो चुका, दूसरा यह आनेवाला है। बाकी के छोटे-मोटे चुनाव हुए है—चुंगी के, टाउन बोर्ड के, ये-वो, बाकी असल चुनाव तो विधानसभा का ही होगा। उससे पता चलेगा। अभी तो यह भी पता नहीं चलता कि लोग कांग्रेस का राज्य चाहते हैं या राजाओं के राज्य को चाहते हैं। मैं तो अक्सर यही लोगों से सुनता हूँ कि भई, पहला राज्य अच्छा था। तब मुझे बड़ा ताज्जुब होता है यह देखकर कि बहुत-से चमार सोशलिस्ट पार्टी में चले जा रहे हैं जबकि कांग्रेस इस बात के लिए बदनाम है कि वह चमारों की पार्टी है और चमारों को बहुत ज्यादा सिर पर चढ़ा रही है।”

छिपकली पर उमंग आने लगी थी। पतंगा बेचारा सहमा हुआ-सा पीछे हट रहा था। भीतर से चमेली आई, लेकिन राजनीति का दुर्धर्ष खड्ग अब दुधारी मार करने लगा था। वह न केवल समय को काटता था, वरन मनुष्य के अच्छे हृदय को भी काटने की सामर्थ्य रखता था। अब वे लोग कांग्रेस के भीतर चलनेवाली पार्टीबन्दियों की चर्चा करने लगे और धीरे-धीरे एक-एक पर्दा सा खुलने लगा। और चंचलसिंह ने कहा, "अरे, एक बार कुर्सी मिल जाने पर कैसे छोड़ सकते हैं! आप ही बताइए, कुर्सी के पीछे कितने झगड़े हैं। हम क्या करें? गांधीजी कहा करते थे कि हम हुकूमत नहीं लेंगे, हम जनता की सेवा करने का अधिकार लेना चाहते हैं। लेकिन हमने क्या बदला? जो शान पहले थी वह शान अब भी है—वर्दी बदल गई है, कपड़े बदल गए हैं, नाम बदल गया है, लेकिन चीज़ तो नहीं बदली। वही तौर-तरीके, वही कायदे-कानून। दानामल जी, आदमी करे तो क्या करे?"

"हम तो यह कहते हैं साहब!" दानामल ने कहा, "आप अभी तक अपने रास्ते पर अटके हुए हैं, अपने कौल पर डटे हुए हैं। आपने सच्चे दिल से लोगों की सेवा की है।"

अब चंचलसिंह को लालटेन के उजाले में पतंगा दिखाई देने लगा, क्योंकि इस बार दानामल की छाया ने छिपकली को ढक लिया था और चंचलसिंह ने मन-ही-मन सोचा—क्या सचमुच उन्होंने ईमानदारी से काम किया था? अगर वे इतने ईमानदार थे तो उनके पास इतना पैसा कहाँ से आया था? लेकिन यह पैसा उन्होंने किसी से ज़बरदस्ती नहीं लिया था। सरपंच थे, लोग खुशामद में काम कराने आते थे! लेकिन जिनका काम करते थे, जिनका काम करना जायज़ होता था, उनसे लेते थे। उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया कि किसी से लेकर किसी के प्रति अन्याय कर दिया हो।

रामप्रसाद ने कहा, "हमने भी चुनाव लड़कर देख लिया, सरपंच साहब, लेकिन आपने कभी अपने दुश्मनों को बुरा नहीं कहा। यह बात दिल पर असर छोड़नेवाली है। सरपंच साहब! आप नहीं जान सकते अपनी अच्छाई को। लेकिन हम आपके मुँह पर कहते हैं। क्योंकि दाना दुश्मन नादान दोस्त से अच्छा होता है।"

सरपंच ने कहा, "मेरी आपसे क्या दुश्मनी है?"

"अरे, नहीं-नहीं, आप समझे नहीं। मेरा मतलब यह नहीं था कि मेरी आपसे दुश्मनी है। मैं तो बात की बात कहता था।"

तब मगनसिंह ने कहा, "कुछ भी हो, सरपंच साहब, बखत निकालिए। चुनाव में हम आपको आगे करेंगे। अरे, क्या बात है जो ऐरे-गैरे सिर पर चढ़ जाते हैं लेकिन आप-जैसे काबिल आदमी, ईमानदार, शरीफ, फिर भी उसको मौका नहीं दिया जाता। हम आपकी तरफ से बोलेंगे।"

सरपंच ने कहाँ, "अरे, नहीं-नहीं भई। ऐसे तो हर कोई झगड़ा करने लगेगा। सब काम शांति से हो जाए वही अच्छा है। कांग्रेस की एक इज़्ज़त है। हमें चाहिए कि हम उसे बचा लें।"

"क्यों नहीं?" रामप्रसाद ने कहा, "अरे, वह हमारी-आपकी इज़्ज़त नहीं है, वह गाँधीजी की इज़्ज़त है, भारतमाता की इज़्ज़त है। उसे ऐसे नहीं खोया जा सकता सरपंच साहब।" उसने आराम से सिर हिलाकर कहा, "वह तो रहेगी, उसके लिए खून फिर से बहाया जाएगा। लेकिन आप तैयार रहिएगा।"

"आप खड़े हो रहे हैं क्या?"

"मैं नहीं होऊँगा तो इन दोनों में से कोई होगा। हाँ!" मगनसिंह ने कहा, "भई, जिसे लोग कह देंगे वही खड़ा होगा, क्योंकि लोकतन्त्र का युग है। आजकल तो लोगों से काम चलता है। कोई खानदानी हिसाब तो है नहीं।"

उन लोगों के चले जाने के बाद सरपंच को लगा कि जैसे उनके सामने एक नई मुसीबत आ खड़ी हुई थी। एक बार फिर कमरे में सन्नाटा छा गया और उन्हें ध्यान आया—क्या सोच रहे थे और उन लोगों के आने ने वह शांति कैसे भंग कर दी! इसका अन्त कहाँ है? उस सबका परिणाम क्या होगा? क्या कर रहे हैं वे सब? तब उनके सामने एक बच्चे का मुँह उभर आया। वह नरायन का था, उनका बड़ा बेटा नरायन। सरपंच के मुँह से निकला—लड़के, तूने मुझे कहीं का नहीं रखा। मैं क्या करूँ? मैं पाप कर रहा हूँ, लेकिन जो कुछ कर रहा हूँ, मैं तेरे लिए कर रहा हूँ। क्या मैं सचमुच यह सब तेरे लिए कर रहा हूँ? नहीं। सब मैं अपनी इज़्ज़त के लिए कर रहा हूँ। लेकिन क्या है मेरी इज्जत? क्या वह तेरी मोहब्बत से भी बड़ी है? शायद नहीं। चंचलसिंह ने आँखें उठाकर ऊपर देखा, दीवार पर छिपकली ने अचानक लपककर पतंगे को अपने मुँह में दबा लिया था और अँधेरे में खाने चली गई थी।

धनीराम के बेटे हिरदेराम का जीवन अपनी लाड़ली बेटी के बिना नीरस हो गया था। अब वह खेत पर जाता तो उसे अपनी बेटी की याद आती। उस दिन उसे ताप चढ़ आया और वह खोर ओढ़कर घर पर सो रहा। बड़ी लड़की के मरने के बाद उसके पास अब तीन बच्चे थे। शम्भू गोद में था, जिसे उसकी पत्नी दामी छाती से लगाए डोलती, चौका-चूल्हा करती और ढोर-डंगर का काम करती। बिलैया उसकी लड़की नौ वर्ष की थी, जो कुएँ से पानी ले आती और सात साल का निरोती बुदका-पट्टी लेकर स्कूल जाने लगा था। गाँव में एक छोटा-सा प्राइमरी स्कूल था। उसमें मास्टर रामस्वरूप पढ़ाया करता था। रामस्वरूप दसवाँ दर्जा पास था और जात का धाकर था। हिरदेराम भी धाकर था, अतएव कभी-कभी रामस्वरूप से मिलने हिरदेराम आता-जाता रहता था।

दामी ने उसे लेटे देखा तो कहा, "आज हल लेकर खेत पर कौन जाएगा?" हिरदेराम को जाड़ा चढ़ रहा था। बेटी के मरने के बाद से उसको ऐसा लगता था जैसे वह अब एक बड़े जंगल में असुरक्षित पड़ा हुआ था। उसकी आस्थाएँ डगमगा चुकी थीं। आहत पौधे की तरह झुका हुआ वह असीम आकाश की ओर देखा करता, लेकिन बोलता कुछ नहीं था। दामी भी नहीं बोलती थी। यह बात कि वह गरीब था और कुछ नहीं कर सकता था, उसके

गाँव के बड़े आदमियों के बेटों ने उसकी लड़की को अपमानित किया और उसकी हत्या कर दी थी, उसको मन-ही-मन कचोटा करती थी।

दामी ने कहा, “अभी तो कुछ खेत खड़े हैं। खेत पर कोई भी न जाएगा तो जो चाहे काट ले जाएगा।” लेकिन हिरदेराम फिर भी नहीं बोला, क्योंकि चढ़ते हुए जाड़े ने उसमें कंपकंपी भर दी थी और वह चाह रहा था कि वह चुपचाप पड़ा रहे। कोई उसकी मौन शांति में व्याघात न डाले। दामी ने हाथ का काम खत्म किया और बिलैया से कहा, “देख, तू यहीं रहियो। निरोती पढ़कर आ जाए तो उसको रोटी निकालकर दे दीजो और देख, दादा को बुखार है, इधर-उधर खेलने मत लग जइयो।”

जब दामी खेत पर पहुँची तो उसे लगा कि वह ऐसी जगह आ गई थी, जहाँ उसे नहीं आना चाहिए था। मचान के पास बैठते ही उसे लगा, कोई उसके पास आ बैठी थी। उसने चौंककर कहा, “कौन?...”

कोई नहीं था, तब वह फूट-फूटकर रोने लगी, क्योंकि उसकी बेटी को इसी खेत में काटकर गाड़ दिया गया था। पुरखापत्ती से इस खेत में अनाज पैदा होता था, जिसे हिरदेराम खाता था, हिरदेराम के बाप धनीराम ने खाया था और धनीराम से पहले की पीढ़ियाँ खाती चली आ रही थीं। जाने कब से वे लोग काश्त करते चले आ रहे थे! पहले वे एक तरह से खेतों के मजूर थे, जिनको बेदखल किया जा सकता था। अब वे इस साढ़े चार बीघा खेत के एक तरीके से मालिक हो गए थे। अब उन्हें यह धरती अपनी लगने लगी थी। इस खेत से प्राण चलते थे। इस खेत से ब्याह होते थे। इस खेत से ज़िन्दगी चलती थी। बाकी वक्त में, खेत से खाली रहने पर, हिरदेराम और दामी दोनों कुछ मजूरी कर लेते थे और किसी तरह उनकी गाड़ी चल रही थी। लेकिन जिस खेत ने उसकी बेटी को पाला था, वही खेत उसको खा गया। और जब दामी को याद आया कि उसकी बेटी के साथ बलात्कार किया गया था, तो उसे ऐसा लगा कि उसके प्राणों को जैसे कोई मरोड़े दे रहा था। उसके भीतर एक विष-सा फैल गया और उसे हिरदेराम पर क्रोध आने लगा। सारे गाँव में शोहरत थी कि नरायन और माधोसिंह ने कुकर्म किया था, लेकिन किसी की मजाल नहीं थी कि वह उनके खिलाफ आवाज़ उठा दे और हिरदेराम असमर्थ था, सब-कुछ सहे और देखे जा रहा था। दामी के मन में आया कि वह चिल्ला-चिल्लाकर सबसे कहे कि मेरी बच्ची का खून हुआ है। अरे, गाँव के लोगों, उठो! तुम्हारे साथ जुलम हो रहा है, तुम चेतते क्यों नहीं? तुम दहशत में पड़े घुट क्यों रहे हो? और तब वह कल्पना करने लगी, क्यों न वह दरोगाजी के पास चली जाए और उनसे धरम उठाकर कहे कि वह रिश्वत न लें। एक क्वांरी कन्या के खून का बदला लें। इसमें मुकदमे की क्या जरूरत है? माधोसिंह और नरायनसिंह से गंगाजली उठवाकर पूछ लिया जाए कि उन्होंने ऐसा किया है या नहीं। तब उसे सांत्वना हुई कि कातिल बन्द थे और उसने मन-ही-मन दोहराया कि गरीबों की भी सुनवाई होती है। उसके राज में देर है पर अँधेर नहीं। वह हर बात जानता है और हरएक का लेखाजोखा भी

रखता है। ऐसा नहीं हो सकता कि राज जीते-जी इतनी बड़ी मक्खी निगल जाए और कातिल छूट जाएँ।

उसने बच्चे को एक पेड़ की छाया में सुला दिया। अब वह उठकर इधर-उधर टहलने लगी। हठात् उसकी दृष्टि बगल के खेत पर गई, चम्पो बैठी थी। वह अपने खेत की रखवाली करने आई थी। आजकल वह अकेली थी और घर में कोई नहीं था। बहुत दिनों से दोनों में बातचीत नहीं हुई थी। उसको देखकर दामी का मन क्रोध से व्याकुल होने लगा। उसने मन-ही-मन कहा—जैसी माँ छिनाल, वैसी ही बेटी। उसकी बेटी का नरायन और माधोसिंह से नाता न होता, तो ऐसी घटना ही क्यों घटती? कैसी बेशर्म थी वह निहाल, जो एक छोड़ दो-दो से इकट्ठे छिनाला करती थी और किसलिए? इसलिए कि उसकी माँ स्वयं कुलटा थी। कैसी भोली बनकर उस दिन रोती हुई साथ-साथ आई थी! मुझे बेवकूफ बनाना चाहती थी। सब जानती थी मन ही मन। अरे, अगर उसकी लड़की का हाथ न होता तो काहे को गौने से पहले उसको उस तरह से ससुराल भगा देती! नाइन की जात! लोग तो पहले ही उससे कहा करते थे कि दामी! तेरी पड़ोसिन चम्पो एक नम्बर की नागिन है, इससे दूर ही रहा कर और स्वयं उसने राधे को उसके पास छुपकर आते देखा था। उसने सोचा था कि किसी के भले-बुरे से अपने को क्या! तब वह चुप हो गई थी और उसी का नतीजा निकला कि उसकी बिटिया कट गई और माटी में गाड़ दी गई। इस विचार से ही उसका हृदय विक्षुब्ध हो उठा। दामी का जी किया कि वह आज चम्पो से अपने मन की निकाल ले। दोनों की आँखें मिलीं। चम्पो ने आँखें हटा ली, लेकिन दामी ऐसे खड़ी थी जैसे लड़ने को तैयार हो। उसने एक बार पक्षियों को उड़ाया और सुनाते हुए बोली, “अरे, तुम्हारे मन की नहीं होने दूँगी। ऐसे नहीं लुट जाने दूँगी अपना खेत। हत्यारिन ने बिटिया छीन ली तो कोई कुछ न बोला, लेकिन अब मैं चुप नहीं रहूँगी।”

चम्पो ने सुना तो दिल में आग लग गई। वह समझ गई कि यह बात स्पष्ट ही उसकी ओर ढालकर कही गई थी।

उसने कहा, “बहना! अपना-अपना करम होता है। कोई किसी पर दोस लगाए से काम नहीं चला लेता। सब अपना-अपना भाग लेकर आते हैं।”

दामी ने उत्तर दिया, “इस दुनिया में तो हमने यही देखा कि लोग कुलटा को पतिबर्ता कहते है! छिनाल की कथा में सब आते है, भलों का ही गला काटा जाता है। दुनिया की रीत उल्टी हो गई है, अब नेम-वेम कुछ नहीं रहा। अपने ही देखो ना! बेटी बिना गौने के ससुराल भेज दी, ऐसे हो गया जैसे मेहमान भगा ले गया हो। ऐसी कौन जल्दी पड़ी थी,”

चम्पो तिलमिला गई। बोली, “गुंडों का राज है। करे कोई, भुगते कोई। कमजोर को सब दबाते हैं। उसका बाप होता तो वह भी कुछ करता। मैं अकेली कहाँ तक क्या करूँ? किसी ने जाकर चुगली कर दी कि मेरी बेटी ने यह कतल करवाया था। भगवान ही

समझेगा ऐसे झूठों और मक्कारों से। जो पी न पावे वह दूसरों का लुढकाकर रहे। आप जले तो दूसरों के जलने से क्या मिल जाएगा? कौन जाने, मरने-वाली के क्या औगुन थे!”

दामी को लगा, जैसे जीते-जी उसकी खाल उतार ली गई थी। उसने कहा, “देख लिए हमने भी बड़े-बड़े साँचाधारी! थाने में पकड़ में आ गई थी। रात-भर तो सिपाहियों में रही, कौन जाने क्या-क्या हुआ! जैसी माँ वैसी बेटी। गुंडे बुलाती थी खेत पर। मेरी बेटी ने देख लिया तो कतल करवा दी।”

“हाँ-हाँ सब पता है”, चम्पो ने कहा, “हमने भी दागदरी रपट की सुन ली है। जैसा काम उस क्वांरी ने किया, उस पर तो उसे काट देना ही ठीक था।”

दामी चिल्लाई, “खबरदार, जो मेरी बेटी पर दोस लगाया! हलक में हाथ डालकर जीभ खींच लूँगी। यारों के भरोसे न रहियो। मुझे पता है, राधे रुपये देकर तुझे छुड़ाकर लाया और तैने तो जवानी में बड़ी खिदमत की है सारे गम की! नाइन की जात!”

चम्पो को लगा कि उसका हृदय क्रोध के कारण शब्दों के साथ मुँह के बाहर निकल जाएगा। उसने अपने बाल नोच लिए। धूल उठाकर माथे पर लगा ली, मिट्टी में तीन कलामुंडी खा लीं, तो ऊपर से नीचे तक धूल-धूसरित हो गई और फिर बाल बिखराए भूतनी की तरह चिल्लाती हुई गाँव की ओर भागी, “अरे कोई बचाइयो रे! मार डाली रे! दुहाई है, बचाओ, बचाओ!”

दामी क्षण-भर तो हतबुद्धि-सी खड़ी रही, लेकिन उसकी स्त्री-बुद्धि तुरन्त जाग्रत हो गई और उसने एक निकट का पत्थर उठाकर जोर से अपने माथे पर मारा, जिससे रक्त की धारा बह चली और इसके बाद बच्चे को गोद में उठाकर भयंकर हाहाकार करती हुई वह भी गाँव की ओर रक्त से भीगे कपड़े लिए भाग चली।

चम्पो सीधे सरपंच के यहाँ गई। सरपंच की बूढ़ी माँ उस समय नाती की याद करती हुई खटोले पर पड़ी थी और सरपंचिन चमेली बैठी चर्खा कात रही थी। बुढ़िया बीच-बीच में कुछ रुदन-सा करती हुई कहने लगती, “बहू! वो जेल में कैसे रहता होगा?” यह कहते समय उसकी झुर्रियाँ काँपने लगतीं और सफेद लटें थहर उठतीं। सरपंचिन का चर्खा चल रहा था। वह जैसे इन सब को याद करना नहीं चाहती थी। रूई की तरह उसका मन उसके हाथ में अटक गया था। तकुआ था जेल। काल के चक्र को जैसे वह चला रही थी। आशाओं का सूत उसके मन में से निकलकर लम्बा होता जाता था और सारा का सारा जेल-रूपी तकुए पर पौनी बनकर सिमटता जा रहा था। आज वो रो नहीं रही थी, चुप बैठी थी। जब उसने सुना था कि उसके बेटे ने बलात्कार किया था और हत्या के जुर्म में पकड़ा गया था, उसके मन को ठेस लगी थी। यह उसके लिए एक अपमान का विषय था। जिस बच्चे को उसने अपनी कोख से जन्म दिया था, जिस बच्चे को उसने अपनी छाती का दूध पिलाकर पाला था, वह एक दिन ऐसा नाम कमाएगा, इसकी उसे बिलकुल आशा नहीं थी। लेकिन बुढ़िया कहती जाती थी, “बहू! वह तो धरती पर सोता होगा। खाना जाने कब

मिलता होगा!” किन्तु बहू अब ऐसी छोटी नहीं थी। उसके भी बाल कनपटियों पर सफेद हो चले थे। पैंतालीस साल की उम्र थी। जब से यह केस हुआ था, वार्ड पंच कजौरीसिंह की औरत उम्मेदी उसके पास अनेक बार आकर अपने बेटे माधोसिंह के लिए रो चुकी थी। चमेली कभी मन में सोचती कि यह काम उसके अपने बेटे नरायन ने नहीं किया होगा। उसको उकसाने वाला माधोसिंह रहा होगा। लेकिन जब उसकी सास इसी बात को शब्दों में प्रकट करती और कहती, “अरी, यह कजौरी तो ठेठ का चालाक है, जरूर माधोसिंह ने ही ऐसा किया होगा,” तब न जाने क्यों चमेली की आँखों के आगे माधोसिंह और नरायन के रूप आ जाते और वह अपने मातृत्व की समस्त ममता से भी अपने मन को ठीक से नहीं समझा पाती। उसने देखा था, बचपन से ही माधो नरायन का पिछलगा था, दब्बू था और उसके हुकुम को टालने की मजाल नहीं रखता था और यह कल्पना कि अपने अंतःकरण में यह अनुभव करती थी कि असली अपराधी उसका अपना पुत्र था, उसे जैसे पत्थर बनाए दे रही थी। वह देख रही थी कि उसकी सास परेशान थी, उसका पति दो-दो कौड़ी के लोगों से खुशामद करता फिर रहा था। उसका पति सरपंच, जिसको देखकर गाँव के लोग सिर झुकाते थे, जिसके गौरव से चमेली को सम्मान मिलता था! अब वह स्वयं शर्माती थी बाहर निकलने में। सरपंचिन इज़्ज़तदार औरत थी। वह कुएँ पर पानी भरने नहीं जाती थी, औरतें उससे ऐसी बातें करती थीं जैसे उसकी खुशामद कर रही हों और अब वह जानती थी कि जाने कितने लोग दिन-रात उसी के पुत्र की बदनामी किया करते थे और बड़ी-बूढ़ियाँ कहा करती थीं, “अरी बहू चमेली, अच्छा लाल जना तूने! ऐसे को तो पैदा होते ही गला घोंटकर क्यों न मार दिया!” लेकिन उसकी सास इस विवाद से परे हो चुकी थी। उसमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह तर्कबुद्धि से काम लेती। उसके सामने एक ही सवाल था—नाती छोटा है, नाती बच्चा है, नाती नासमझ है। ऐसी बात लोगों ने उड़ाई है, तो लोग झूठ बोलते हैं। वह अनसमझ लड़का ऐसा कैसे कर सकता है! उसकी ममता का स्वार्थ बुढ़ापे की दीवारों में घिर कर इतना संकरा हो चुका था कि वह अपनी कहना जानती थीं, दूसरों की सुनना नहीं।

चर्खा चल रहा था। घर में उदासी थी। बाकी बच्चे इधर या उधर निकल जाते और हारी और नौकर चुपचाप अपना काम करते रहते। उसी समय कोलाहल सुनकर चमेली चौंक पड़ी। सामने से चम्पो भागी चली आ रही थी। उसका वह रूप देखकर चमेली का हाथ चर्खे पर से हट गया। बुढ़िया खटोले पर उठकर बैठ गई। चम्पो ने आते ही बुढ़िया के पांव पकड़ लिये और घिग्घी बाँध कर रोने लगी।

बुढ़िया ने कहा, “अरी, क्या हुआ? क्या हुआ, कुछ बोल तो सही।”

चमेली को इस नाइन से घृणा थी। वह जानती थी कि नाइन चलती-फिरती औरत थी। उसने कुछ नहीं कहा।

बुढ़िया ने कहा, “क्यों री, क्या बात है,”

चम्पो ने नाटक रचाया और मुँह छिपाकर आँसू बहाने लगी और बीच-बीच में उसके बोल फूट पड़ते, “मुझे तो तुम सबने बरबाद कर दिया, तुम्हारे पीछे मैं तो बर्बाद हो गई। मेरा घरवाला भाग गया, भूखी मरती रही, फिर भी न बोली, क्योंकि गाँव में बहू बनकर आई थी; लेकिन तब भी किसी ने ध्यान नहीं दिया। मुझे थाने में बन्द कर दिया सिपाहियों ने, बड़े-बड़े घरवाले देखते रहे, किसी ने यह भी नहीं सोचा कि अकेली बय्यर है, चलो रे इस पर दया करें। मुझे समधियाने की धूल माथे लेनी पड़ी।” और यह कह कर वह फिर फूट-फूट कर रोने लगी।

बूढ़ी का हृदय द्रवित हो गया। नाइन कहने लगी, “ओ दादी, तू बैठी है पर कुछ बोलती नहीं। गाँव में बरगद हो तो पास के बटोही उसकी छाया में बैठते हैं। तुझे भगवान ने पूतों फलाया, दूधों नहलाया, खत्तियों में नाज भरा, ढोर-डंगर दिए; तेरे बेटे की कलम चली, लोगों ने सीस झुकाया; पर तेरे राज में गरीबों को सुख न मिला।”

बूढ़ी ने कहा, “लेकिन हुआ क्या, कुछ बता तो सही!”

नाइन रोती रही। बूढ़ी ने कहा, “बहू! तू पूछ तो सही, क्या बात है।”

चमेली ने चरखा चलाना फिर शुरू कर दिया, जैसे उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। नाइन ने चमेली के पैर पकड़ लिये और कहा, “अरी मालकिन! तेरा बेटा जेल में पड़ा है, लेकिन तू चुप बैठी है!”

चमेली ने उसकी ओर देखा धीरे से कहा, “क्या कहना चाहती है? अभी तेरा जी नहीं भरा है?” यह कहते-कहते उसका स्वर कुछ कठोर हो गया।

चम्पो ने छाती पीटकर कहा, “मेरा जी तो भर गया सरपंचिन! तुम्हारे बेटे के पीछे मेरी बेटी बदनाम हुई। तुम तो नाक वाले बड़े आदमी हो गए और नाइन की इज़्ज़त कुछ नहीं रही! बाप चला गया था, इसलिए मैं अकेली अबला रह गई; इसलिए तुमने मेरी नाक कटवा दी। तुम्हारा बेटा असील बन गया, और मेरी बेटी थी इसलिए बदनाम हो गई और आज तुम्हारे पीछे दामी ने मुझे मारा।”

चमेली ने स्थिर दृष्टि से देखते हुए कहा, “दामी ने मारा?”

बूढ़ी कांपते हुए स्वर में कहने लगी, “किसने मारा, किसको मारा? अरे धनीराम के बेटे हिरदेराम ने मारा! धनीराम के पास थोड़ा-सा पैसा हो गया था। इसलिए वह बड़ा घमंड में आ गया था। चंचल के बाप से अकड़ा था वो। उसको रहन रखने का शौक हो गया था, लेकिन एक न चली उसकी। जब वह मरा तो यह हिरदेराम लड़का-सा था। चंचल सिंह के बाप ने बाप का बदला बेटे से नहीं लिया। सारी जमीन इधर-उधर दब गई थी काश्तकारों के नीचे, तब मेरे आदमी ने अपना पैसा खर्च करके इसकी कुछ जमीन बना दी थी। तब से वह खा रहा है मेहनत-मजूरी करके। कल का मजूरा, आज उसकी लुगाई की यह हिम्मत हो गई कि हाथ उठाए!”

नाइन को बल मिला। उसने बूढ़ी के पांव पकड़कर कहा, “ओ दादी! तू धरम कर, तू न्याव कर। कहने लगी कि सत्यानास जाएगा उनका, जिन्होंने मेरी बेटी को काटा और बोली कि देख ले नरायन को बन्द करवा दिया है हमने।”

चमेली ने सिर उठाकर कहा, “दामी ने बन्द करवा दिया मेरे नरायन को?” उसकी कठोरता में प्रतिहिंसा का भाव झलकने लगा और उसने कहा, “माँजी! तुमने सुना?”

बूढ़ी कहने लगी, “अरे बेटा! पुराने जमाने नहीं रहे। हम ठाकुर। काहे को तो चंचल को सरपंची करनी पड़ती और पहले तो हरएक ठाकुर सरपंच था। पर जमाने का ही फेर है। सारे नीच-कमीन ऊपर उठ आए?” और बुढ़िया ने बिना इस बात का विचार किए कि एक नाइन सामने बैठी थी, कहा, “अब तो नाऊ भी ठाकुर हो गए, पत्तल उठाने से इन्कारी करने लगे।”

नाइन ने कहा, “न करते तो क्या करते दादी? पहले खवास ठाकुर के पांव में पड़ा रहता था तो समझता था कि परमात्मा के पांव में पड़ा है। नाई और ठाकुर का मेलजोल दिन-रात का था; लेकिन अब ठाकुरों के हाथ से चली गई ताकत, तो नाऊ क्या करते! दुनिया कहे कि नाऊ की जात तीन और छः का जोड़ बनकर छत्तीसा होय; लेकिन असल में नाऊ चालाक होता है, हुसियार। हमने तो पहले ही देख लिया था—अभी से यह सब काम नहीं रोकेंगे तो कल से भंगी-चमारों की पत्तल भी उठानी पड़ेगी। बामन-ठाकुर की जूठन उठाने में हमारे हाथ नहीं गल जाते; लेकिन एक ठाकुर नहीं बोलता, सारे चमार यों कहते हैं कि हमारी हजामत बनाओ। जो हाथ ठाकुर की ठोड़ी में लगे हैं, वे चमार की ठोड़ी में भी लगेंगे?”

बूढ़ी बोली, “अरे, आग लगेगी इस राज में, यह भी न बचेगा।”

“लेकिन,” चमेली ने कहा, “पहले नाऊ भी दुकान लगाकर नहीं बैठता था।”

चम्पो ने कहा, “उठ गई दुकान, ढह गए मकान। मैं तो दामी की कहने आई थी।”

चमेली ने कहा, “चुप पड़ जा चम्पो। अभी लड़के छूटे नहीं हैं। इस बखत नीच-कमीनों के हुड़दंग का जमाना है। खून का घूँट पी रह। बखत आने दे। नरायन के बाप को आने दे। एक-एक को देख लिया जाएगा। जल में रहकर मगर से बैर नहीं चलता चम्पो। लेकिन तैने अच्छा नहीं किया कि गौना बिना किए ही लड़की गाँव से भगा दी। इससे पुलिस का सक बढ़ गया।”

चम्पो ने कहा, “तो बुलवा लूँ? आगे की जिम्मेदारी तुम्हारी।”

चमेली ने कहा, “ऐसा मत कर। मौका हो तो बुला लीजो। पर अभी ठहर, एक बार ज़मानगत हो जाने दे। मुकदमा तो होता रहेगा।”

चम्पो लौट गई।

किन्तु दामी हरहराती आंधी-सी खून से भीगी हुई बीच गाँव में आकर पुकार उठी, “अरे, कहाँ गए गाँव वाले! तुम्हारे गाँव में मैं बहू बनकर आई। मेरी बेटी का कतल हो गया

और छिनाल की बेटी ने छिनाला किया, तुम देखते रहे। बिना गौने के बेटी भगा दी और तुम्हारे गाँव की इज़्ज़त न गई। आज मुझी पे यह पत्थर से हमला करे और तुम देखते रहो?"

हिरदे का बुखार उतर चुका था। शोरगुल सुनकर वह बाहर आ गया। उसने आगे बढ़कर कहा, "क्या बात है? दामी, क्या हो गया?"

दामी ने पुकारकर कहा, "मरी बेटी के बाप! कुछ मत पूछो! पूछो, क्या नहीं हुआ।"

उसी समय उसकी गोद में शम्भू रोने लगा। बिलैया ने बच्चे को गोद में बढ़कर ले लिया! लोग इकट्ठे हो गए, कोलाहल होने लगा।

जिस समय चंचलसिंह, कजौरीसिंह, श्यौपाल और मंगू गाँव पहुँचे, चारों तरफ एक नई सनसनी फैली हुई थी कि चम्पो नाइन ने दामी को पत्थर से मारा है और उसके खून निकला था और हिरदेराम दामी को लेकर डाक्टरी मुआइना कराने अस्पताल जाने वाला है।

चंचलसिंह घर पहुँचा। माँ ने रोना शुरू कर दिया, किन्तु चमेली नहीं बोली। राधे, मंगू, श्यौपाल तथा अन्य कुछ लोग चंचलसिंह के पास आ गए, लेकिन बूढ़ी बके जा रहीं थी, "बेटा, अब इस गाँव में धरम नहीं रहा, हिरदे की बहू ने चम्पो को मारा है और कहा है कि उसने बन्द करवा दिया हमारे नरायन को थाने में। अरे, धनीराम का बेटा है, धनीराम का। यह हिरदे ज़रा-सा था, जब धनीराम मरा था। तेरे बाप ने इसकी ज़मीन बचवा दी उस बखत दया करके, और नहीं तो आज भूखों मर चुके होते सबके-सब। अरे, नाग को तो जितना पालो उतना ही जहर उगलता है।"

लेकिन चंचलसिंह की गम्भीर मुद्रा में कोई परिवर्तन नहीं आया। उसने धीरे से कहा, "तुम चिंता मत करो अम्माँ! मुझे तुमसे ज्यादा फिकर है। मैं जल्दी-से-जल्दी नरायन को छुड़ा लाऊँगा।"

भीतर गया तो हाथ-मुँह धोने के लिए लोटे में पानी देते हुए चमेली ने कहा, "लेकिन वह अब दामी को लेकर अस्पताल गया है? उसका क्या होगा?"

चंचलसिंह सोचने लगा और उसने कहा, "किसका नाम लिखाएगी? चम्पो का ही ना?"

चमेली ने कहा, "लिखाएगी तो चम्पो का, पर चम्पो कहाँ जाएगी? थाने में बन्द हो गई तो निहालकौर अपने खसम को लेकर लौट आएगी। उसको देखकर लोगों की आग भड़केगी और नुकसान हमारा होगा;"

सरपंच को आश्चर्य हुआ। उसकी स्त्री इतना सब सोच लेती है! यह उसको कुछ नई-सी बात लगी। उसने मुँह धोते हुए कहा, "सब भगवान भला करेंगे। अपना ही सिक्का खोटा निकला, तो किसी दूसरे का क्या दोष!" और हठात् उसने उठकर कहा, "नरायन की

माँ! तुमने उसको जनम दिया। कौन-सी घड़ी थी वह जिसमें तुम्हारी कोख से ऐसा नीच और कमीना पैदा हुआ?"

चमेली ने मुँह मोड़ लिया। उसने कहा, "मैं कब कहती हूँ कि उसे बचाओ, मेरा मन कहता है कि दरांती से अपना पेट काट लूँ।"

चंचलसिंह ने आकाश की ओर देखते हुए दृढ़ स्वर से कहा, "मैं गंगा मैया की सौगन्ध उठाकर कहता हूँ कि कजौरीसिंह की तरह मैं अपने बेटे की जान बचाने के लिए कोशिश नहीं कर रहा हूँ। वह कमीना इसी लायक है कि उसी फांसी लग जाए। मैं उसके पीछे तबाह हुआ जा रहा हूँ। चंचलसिंह इसलिए रुपए खर्च नहीं कर रहा है कि उसका बेटा फंस गया है, लेकिन इससे भी बड़ी चीज है मेरे खानदान की इज़्ज़त। मेरे परबाबा के जमाने में जब गदर हुआ था तो हमने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा लिया था। हम हार गए। राजा ने मौका पाकर हम लोगों को गरीब कर दिया। मेरे बाबा ने सारी जायदाद रेहन कर दी। मेरे बाप ने कांग्रेस में जेल काटी और मैंने खानदान की लुटी हुई इज़्ज़त को फिर से ऊपर किया। क्या था हमारे पास? लेकिन आज भगवान ने सब कुछ दिया है और सब कुछ लुटा जा रहा है। किसलिए? एक खूनी और नालायक बेटे के पीछे। तुम समझती हो कि वह छूट जाएगा तो मैं मोहब्बत कर लूँगा? क्या तुम इस बात को भूल सकती हो कि एक लड़की से ज़िना करके उसने गला काटा था? मैं बहुत बड़ा पाप कर रहा हूँ। उस अभागे की माँ! सुन लो कि मैं बहुत बड़ा पाप कर रहा हूँ। आज उसी की वजह से इन दो-दो कौड़ी के आदमियों की इतनी मजाल हो गई कि राह में हमारा नाम लेकर पुकारने लगे और मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि जब मैं उसे छुड़ा लाऊँगा और यह मामला शान्त हो जाएगा, तब चंचलसिंह नरायन को घर से बाहर निकाल देगा, क्योंकि पुश्त-दर-पुश्त हम लोगों ने हुकूमत की है, लेकिन कमीने काम कभी नहीं किए। हमने दुश्मनों को सारी विद्याओं से हराया है, लेकिन ऐसे नीचे गिर कर नहीं।"

आँसू पोंछती हुई चमेली भीतर चली गई। लेकिन बूढ़ी का स्वर सुनाई देता रहा, "अरे मेरा नाती, अरे मेरा वह लाड़ला कैसे सोता होगा कालकोठरी में? अरे तेरा बाप ज़िन्दा होता चंचल! तो आज हिरदे की खाल खिंचवा ली गई होती। उसकी मजाल कैसे हो गई? अरे, तुझे क्या हो गया है चंचल? क्या तेरे बाप का खून तेरी रगों में नहीं बोलता? तेरे बाप के मारे तो राज कांपता था। वह जेल से लौटता तो हज़ारों की भीड़ आती थी।"

चंचलसिंह चुपचाप बाहर चबूतरे पर चला आया। चेहरे पर स्याही-सी छा रही थी। गाँव में कोई ऐसा न था जिससे वह बात करता। लोग अब भी उसके ओटे पर बैठे रहते थे। चमेली ने कहलवाया, "खाना खा जाएँ।" सरपंच नहीं उठा। वह खुद द्वार की ओट में आई और कहा, "रोटी तो खा लो।"

चंचलसिंह उठकर भीतर गया। खाने की कोशिश करता था, लेकिन खाया नहीं जाता था। तीन-चार दिन से वह भूखा था। शरीर में शिथिलता आ गई थी। खाना खाने के

बाद वह खाट पर लेट गया और उसने अपने चपरासी को वार्ड पंच कजौरीसिंह को बुलाने के लिए भेजा।

रात के दस बज चुके थे। कजौरीसिंह फौरन ही आ पहुँचा। चंचलसिंह ने खाट पर बैठते हुए कहा, "बैठो!"

कजौरीसिंह सामने पड़े खटोले पर बैठ गया और उसने कहा, "क्या बात है, इस बखत कैसे बुलाया?"

"क्यों, क्या कर रहे थे?"

"घर में रोना-धोना हो रहा था, उसी से उलझा हुआ था।"

सरपंच ने कहा, "वह तो चलता ही रहता है।" फिर रुककर कहा, "एक बात पूछता हूँ तुमसे कजौरीसिंह, हम और तुम बर्बाद हुए चले जा रहे हैं!"

"हाँ, क्यों नहीं! अब बर्बादी में कसर ही क्या है!"

"यह बताओ कजौरीसिंह, क्या हमारे और तुम्हारे लड़कों ने खून किया है?"

कजौरीसिंह सकपका गया।

"बोलते क्योँ नहीं?"

"मैं क्या जानूँ? गवाह तो कोई नहीं।"

"भाई, मैं तुम्हारे मन की गवाही पूछता हूँ।"

कजौरीसिंह कोई उत्तर नहीं दे सका।

"तुम नहीं बता सकते कजौरीसिंहजी!"

"आपका क्या ख्याल है? लड़कों ने कत्ल किया है?"

"ज़रूर किया है।"

कजौरीसिंह इतने बड़े सत्य को स्वीकार करने के लिए तत्पर नहीं था। उसने कहा, "लेकिन यह ठीक है?"

"कजौरीसिंहजी! हमको वही सब करना पड़ेगा जो हम कर रहे हैं। लेकिन

इस एक पाप को ढकने के लिए हमको अनेक पाप करने पड़ेंगे, क्योंकि धोबी जब कपड़े पर इस्तरी करता है तो उसे हर कोने की सिकुड़न मिटानी पड़ती है।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि लड़के अभी छूटे नहीं हैं। मेरे एक-दो बेटा ही नहीं है और भी आस-औलाद है। खानदान की इज़्ज़त है। अब हम लोगों की नाक का सवाल है। इसके लिए हम बर्बाद हुए जा रहे हैं। लड़के न भी छूटें, लेकिन खानदान की इज़्ज़त को हमको फिर भी बचाना पड़ेगा और उसके लिए जो कुछ भी किया जा सकता है, वह हमको करना ही पड़ेगा!"

कजौरीसिंह ने कहा, "क्यों नहीं!"

"तो मैं आपसे यह चाहता हूँ कि अब आप ध्यान से सुन लें। हिरदेराम, मैं जानता हूँ, एक सीधा आदमी है; लेकिन हर सीधा आदमी एक बेवकूफ होता है। जो कुछ हम लोग अभी तक कर रहे हैं, यह मत समझो कि गाँववाले इसको नहीं जानते। इसकी भनक जरूर पड़ती जा रही है। हिरदेराम को भड़काने वाले काफी लोग हैं। आज निहालकौर की माँ चम्पो नाइन और हिरदे की घरवाली दामी में झगड़ा हुआ है, यह आपको मालूम है। बेसहारा होने की वजह से हम लोगों का दामन पकड़ रही है और निहालकौर वाली यह बदनामी इस वजह से हमारे लड़कों के साथ मिलती चली जाएगी जो हमारे मुकदमे पर अच्छा असर नहीं डालेगी। है न यही बात?"

"बिलकुल ठीक।" कजौरीसिंह ने मन-ही-मन चंचलसिंह की बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा।

"लेकिन," सरपंच ने कहा, "चम्पो का सहारा अगर हम न बनें तो उसको ये लोग दबा लेंगे और उसका नतीजा यह होगा कि निहालकौर गाँव लौट आएगी और गाँव के लुंगाड़े-लुच्चे अपना बाजार गरम करेंगे और उसकी वजह से हिरदेराम की पार्टी मजबूत हो जाएगी। क्या आप जानते हैं कि हिरदेराम दामी को लेकर आज अस्पताल गया है? इसका मतलब यह है कि अगर यह सच है तो खबर कस्बे में पहुँच जाएगी; और कस्बे में कितनी ही तरह के लोग ऐसे हैं जो फुरसत से ताश खेलते हुए उसको तरह-तरह की रायें दे सकते हैं। वह थाने भी जा सकता है। डाक्टर की रिपोर्ट देखने के बाद थानेदार को रिपोर्ट भी लिखनी पड़ेगी।"

कजौरीसिंह को लगा कि धरती पांव के नीचे से खिसक गई थी। वह वार्ड पंच था। उसकी अकल डूंमरपुर बस्ती में चलती थी। लेकिन कस्बे की चट्टान से टकरा कर थपेड़ा मारने वाली बुद्धि उसमें नहीं थी और इसीलिए चंचलसिंह सरंपच था, क्योंकि वह उससे ज्यादा समझता था।

"इसलिए आप एक काम करिए," सरपंच ने कजौरीसिंह को सोचने का अधिक समय न देते हुए कहा, "जो मैं कहूँ वह किया जाए।"

"आप हुक्म दीजिए।"

सरपंच ने कहा, "बैठने से काम नहीं चलेगा। रात ही रात में गाड़ी जोड़कर एम. एल. ए. साहब प्यारेराम के पास चले जाओ, क्येंकि उनको सुबह छः बजे मुंसिफ साहब के पास ले चलना है। उनके पास गाड़ी है। उसमें बैठकर फौरन चले जाएँगे। एम. एल. ए. साहब मुंसिफ साहब से बातें कर लेंगे और मैं पी.आई. साहब से बातें कर लूँगा। टैम ज्यादा नहीं है। और गोविन्द को बुलवाइए। उसके जरिये मैं हिरदेराम को पट्टी पढ़वा दूँगा कि वह कहीं न जाए। आप गोविन्द को बीस रुपए दे आओ।"

वार्ड पंच ने बात काटकर कहा, "सरपंच साहब, यह सब-कुछ ठीक है। लेकिन मुंसिफ वगैरा का ताल्लुक तो हाईकोर्ट से होता है। उन पर एम. एल. ए. साहब का क्या

असर हो सकता है? गोविन्द को तो मैं समझा दूँगा।"

सरपंच साहब ने कहा, "तुम नहीं समझ सकते। ये लोग भी नेताओं से ताल्लुक रखते हैं। दूसरी बात यह है कि ये हमारे एम. एल. ए. साहब के साथ पढ़ते थे। एम. एल. ए. साहब किस घर के हैं यह तो तुम जानते ही हो। मैंने बहुत-से काम इन्हीं एम. एल. ए. साहब के जरिए से इस मुंसिफ से निकलवाए हैं। मुंसिफ साहब लेने के भी शौकीन हैं, लेकिन ज्यादा खुले रूप में नहीं लेते। इस इलाके में इनके एक-दो एजेण्ट हैं, ज्यादा नहीं। इनमें से एक हमारे एम. एल. ए. साहब भी हैं। और यह भी एक बात जरूर है कि ये कम आते-जाते हैं, ज्यादा खुले रूप में उनसे नहीं मिलते। इसलिए उनकी बात को मुंसिफ साहब बहुत ज्यादा मानते हैं।"

कजौरीसिंह ने कहा, "सरपंच साहब, यह तो बताओ कि जब आपका एम. एल. ए. साहब से इतना गहरा दोस्ताना है और वे मुंसिफ साहब से सिफारिश भी कर सकते हैं, तो आपने बेकार नौ हजार रुपये क्यों खर्च किए। आखिर में चालान तो वे इसी अदालत में करते! इतना रुपया आप यहीं खर्च करते तो अच्छा था।"

चंचलसिंह हँसे, "अरे यार, तुम भी आदमी कुछ भोले हो! हमेशा कोई काम करने के लिए जड़ मज़बूत करनी चाहिए। तुमको पता नहीं कि अगर हम थानेदार से बातें नहीं करते तो वह झूठे-सच्चे मौके के सबूत पैदा करता और केस को सच्चा करके दिखला देता। उसके अलावा डी. एस. पी. व एस. पी. साहब से जो बातें की हैं वे इसलिए कि अब वे लोग इस केस में थानेदार पर ज़्यादा दबाव नहीं देंगे और इस अदालत के अलावा मुकदमा खारिज होने पर अपील करने की इजाजत नहीं देंगे। एक गलती हमसे बड़ी तगड़ी हो चुकी है। अगर हमको यह पहले ही पता चल जाता कि यह कत्ल हमारे लड़कों ने किया है, तो हम डाक्टर की रिपोर्ट को भी अच्छा बनवा लेते।"

कजौरीसिंह ने कहा, "सरपंच साहब! यह तो आपने वाकई अच्छा सोचा। मेरा दिमाग इतनी दूर तक नहीं पहुँच सकता था। अब आप यह बतलाइए कि मुंसिफ साहब को क्या चाहिए?"

चंचलसिंह ने कहा, "कम से कम दो हजार रुपये के नोट। अव्वल तो हम पहले उनको एक हजार के नोट ही देंगे। और अगर वे ज्यादा माँगेंगे तो फिर कुछ और दे देंगे। अलावा इसके पी. आई. को कम-से-कम सौ का नोट ज़मानत कराने का देना होगा, जिससे वे कोर्ट में ज्यादा बहस नहीं करेंगे। एक वकील भी करना है, वह भी कम से कम पाँच सौ रुपये माँग लेगा। लेकिन उसको पहले दो सौ रुपये देंगे, बाकी बाद में फैसला होने पर देते रहेंगे। इसलिए रुपयों का इन्तजाम करके ही चलना है, वरना चलने से कोई फायदा नहीं।"

कजौरीसिंह ने कहा, "सरपंच साहब! मेरे पास तेरह सौ रुपये तो इस वक्त नहीं हैं। आप अपने पास से ले चलिए। अगर आपको मेरी तरफ से कोई खतरा हो तो खाता डलवा

लीजिए।”

चंचलसिंह ने कहा, “अरे यार, तुम कैसी बात करते हो! जो चाहो उतना ही ले लो। तुम्हारे लिए कभी इकार नहीं है मेरे पास। अगर तुम आधी रात पर भी चले आओ तो उस वक्त भी तुम्हारे लिए घर खुला पड़ा मिलेगा। चाहो सो ले सकते हो।”

सरपंच साहब ने कजौरीजी को कमरे में ले जाकर बैठाया और अपनी अलमारी से बही निकाली और वार्ड पंच से बोले, “सिर्फ याददहानी के लिए खाता डाले देता हूँ।”

कजौरीसिंह ने कहा, “हाँ, हाँ, ज़रूर।”

सरपंच ने खाता डाल दिया और वार्ड पंच के नाम तेरह सौ रुपये लिखकर टिकट लगवाकर दस्तखत करवा लिये।

कजौरीसिंह ने दस्तखत करके उनकी ओर देखा।

सरपंच ने कहा, “अब देखो, जो मैं कहता हूँ उसे ध्यान से सुनो। तुम जानते हो कि दामी खिलाफ और हिरदेराम के खिलाफ और उसके गिरोह के खिलाफ चम्पो के जरिये तुमको दफा 107 के दावे करवाने होंगे कि उसको उन लोगों से जान का खतरा है और इसलिए उनके मुचलके लिवाने होंगे। इतना करते ही उन लोगों की हिम्मत टूट जाएगी। इस काम के लिए आपको राधे को फोड़ना होगा, क्योंकि राधे और चम्पो का ताल्लुक है। मैं जानता हूँ। इस वक्त और किसी का सहारा न पाने पर वह राधे का दामन पकड़ लेगी। दूसरी बात यह करनी होगी कि पटवारी जैराम के अलावा हसनपुर के पटवारी को भी तैयार करना होगा, ताकि हिरदेराम को किसी ऐसे चक्कर में फांस दिया जाए कि इस मुकदमे के बजाय वह अपने दूसरे मुकदमे में लगा रहे। आप पूछेंगे कि हसनपुर मैंने क्यों चुना? मैं सरपंच होने के नाते जानता हूँ कि हिरदे का फायदा वहाँ अटका हुआ है। इसके लिए इन दोनों पटवारियों को समझाकर सौ-सौ रुपये देने होंगे। और चूंकि वो हमारे मातहत हैं, इसलिए बाकी सब काम वे लोग खुद कर लेंगे। वैसे मैं आपको बातए देता हूँ कि एक नया कानून निकला है और यह कानून है इन्फिकाक रेहन। इन कानून के तहत सरकार ने हर तहसील में ऐसे आदेश भेजे हैं कि हर गाँव का एक नक्शा तैयार कराया जाए, जिसमें नम्बर शुमार, नाम तहसील, नाम ग्राम वगैरा और ज़ेर-रेहन इत्यादि का लेख हो। जल्दी से जल्दी नक्शे बना कर पेश करने के हुक्म तहसीलदार की तरफ से पटवारियों को दे दिए गए हैं। पटवारी रजिस्टर-दाखिलखारिज से इस काम में मदद ले रहे हैं। सरकार ने एक नया महकमा भी कायम किया है, और उसका नाम रखा है डेट कंसीसन बोर्ड।” चंचलसिंह ने अंग्रेजी के शब्द को याद करते हुए कहा और फिर यह सोचकर कि शायद उसने ठीक नहीं कहा, अपने-आप उसने हिन्दी में अनुवाद किया, “यानी रेहन से आज़ाद करने वाली अदालत। इसमें सरकार ने एक चेयरमेन व दो मेम्बर व दो किलर्क व चार चपरासी तैनात किए हैं। जो नक्शे जात तहसील से तैयार कराए गए हैं, वे नई अदालत में

भेजे जाएँगे। यह इन्फिकाक रेहन का कानून सरकार ने जमींदारों यानी किसानों के हक में बनाया है और उस ऐक्ट में ये बातें हैं।"

यह कहकर उँगलियों पर गिनते हुए चंचलसिंह ने कहना शुरू किया, "अगर किसी ज़मीन को तीस साल से ज्यादा रेहन रखे हुए हो गए हों, तो बिला कोई रकम दिए फक कर दी जावेगी। उसमें ज़मींदार से कोई रकम नहीं ली जावेगी। और तीस साल से अगर कोई रकम रेहन है, उसके फक करने के लिए जेर रेहन में जितनी साल की रेहन हो, उतनी साल का भाग देकर जो रकम आवे पेमेंट की जावे और रकम जो इंफिकाक रेहन में मुरतहनान को दी जावेगी, वह रकम जमींदारान से किश्तों के जरिये तहसील वसूली के साथ-साथ वसूली करेगी और किश्त कायम करने का हक चियरमेन बोर्ड को होगा। अगर किसी जमींदार पर किसी बौहरे का कर्ज़ा हो, तो उसका फैसला इसी अदालत से किया जाएगा।"

यह कहकर सरपंच ने कहा, "इसमें दो काम करने होंगे। श्यौपाल के बाप ने धनीराम के बाप से अपनी हसनपुर की ज़मीन रेहन रख दी थी। तुम इसका इन्तज़ाम करो कि हिरदेराम उस ज़मीन की कोशिश करे और अगर उसे रुपयों की ज़रूरत हो तो उसके लिए किसी बौहरे का इन्तज़ाम करवाओ और इस तरह दूसरे हाथ से श्यौपाल और मंगू की पीठ ठोको, ताकि वे लोग हम लोगों का दामन पकड़ने में अपना फायदा समझें।"

कजौरीसिंह धैर्य से सुनता रहा। वह सरपंच की दूरदर्शिता से चकित रह गया था। सरपंच ने फिर कहा, "रात के बारह बज चुके होंगे। देर मत करो। ठोकर जल्दी जुड़वाओ और काम शुरू कर दो।"

कजौरीसिंह ने कहा, "सरपंच साहब! मैं तो तब अच्छा था जब मैं कुछ भी नहीं था। खेत जोतता था, आराम से खाता था और पीता था। इस लड़के ने तो मेरी नाक कटा दी, इसने मुझे कहीं का न रखा। जी करता है कि थानेदार को कुछ रुपये इस बात के लिए दे आऊँ कि इस लौंडे को इतनी मार लगाए, इतनी मार लगाए, कि अक्ल दुरुस्त हो जाए। उस सूअर के बच्चे को क्या पता चलेगा कि हम लोगों पर क्या बीती!"

सरपंच ने उदास आँखों से देखते हुए कहा, "यह भी वक्त की बात है कजौरीसिंह यह भी वक्त की बात है!"

सरपंच साहब ने अपने नौकर को बुलवाया और गाड़ी जुतवाकर एम. एल. ए. साहब के यहाँ रात-रात में ही चल दिए। सुबह करीब पाँच बजे वे एम. एल. ए. साहब के यहाँ पहुँचे और उन्होंने एम. एल. ए. साहब के नौकर को सूचना दी। एम. एल. ए. साहब उस समय सोकर ही उठे थे। एम. एल. ए. साहब का नौकर रमझू देखते ही सरपंच साहब को पहचान गया। उसने राम-राम की और भीतर इत्तला देने चला गया।

एम. एल. ए. साहब ने रमझू को देखा तो पूछा, "क्यों? क्यां बांत है?"

"डूंमरपुर के सरपंच ठाकुर चंचलसिंह आए हैं।"

"संबेरें-संबेरें?"

"हाँ।"

"क्यों, क्यां बांत हैं? पैंदल हैं?"

"नहीं, गाड़ी जुतवाकर लाए हैं।"

"तुंमने पूंछा?"

"मैंने तो नहीं पूछा।"

"बैंठा दिंया? बैंठक कीं किवाड़ें खोंल दें!"

"मैंने बिठा दिया है।"

"तों देंख, उनसें कहं कि मैं आंतां हूँ। तंब तंक तूं जंल्दीं सें जल्दीं चांय तैंयार कंर लें।"

रमझू चला गया। नीचे फिर जाकर इत्तला दी, "अभाल आ रहे हैं।" और चाय बनाने लगा।

एम. एल. ए. साहब मन ही मन सोचने लगे—मालूम देता है, सरपंच साहब पर कोई मुसीबत आ गई है। हो-न-हो, यह उसी कत्ल के केस में आए हैं जिसमें हम अपने नाई की बहू को छुड़ाकर लाए थे। शायद यह उसी में न फंस गए हों!

थोड़ी देर में एम. एल. ए. साहब बैठक में पहुँचे और उन्होंने सरपंच साहब से हाथ मिलाया। दोनों बैठ गए। चंचलसिंह ने कजौरीसिंह को इशारा किया। वह बाहर गाड़ी में जा बैठा। अब दोनों में खुलकर बातें होने लगीं।

सरपंच ने कहा, "एम. एल. ए. साहब मैं इस वक्त बड़ी मुसीबत में हूँ। आपने शायद सुन लिया होगा।"

प्यारेरामजी ने कहा, "क्यां हुंआ?"

सरपंच ने जवाब दिया, "डूंमरपुर में जो कत्ल का केस हुआ था, उसमें मेरा लड़का फंस गया है। मेरा यह बड़ा लड़का स्कूल में पढ़ता है, हाईस्कूल में। घर के लोग उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे, इसलिए वह अपनी क्लास के लिए काफी बड़ा है। दादी का लाड़ला है, इसलिए लोगों की नज़र में उसकी तन्दुरुस्ती गड़ती है। पुलिस ने उसपर कत्ल का केस चला दिया है। उसके साथ में एक वार्ड पंच कजौरीसिंह, जिसे मैंने अभी बाहर भेजा है, उसका लड़का माधोसिंह भी है। उसपर भी वही केस दायर करके दफा 302 ताजीरात हिन्द कायम कर दी गई है। मैं कई रोज़ से बड़ा परेशान हूँ। कल उनका चालान पेश किया जाएगा। इसलिए उनकी ज़मानत करानी है।" यह कहकर सरपंच ने रहस्यमयी दृष्टि से एम. एल. ए. साहब की ओर देखते हुए कहा, "चालान मुन्सिफ साहब की अदालत में पेश होगा।"

"कौंन मुंन्सिंफ?"

"मुन्सिफ जगन्नाथस्वरूप।"

"अंच्छा। अंरे भांई संरपंच साहब, यंह बतांओ किं यंह आंपको कैंसे पंता चंल गयां किं चांलांन मुंन्सिफ कीं अदांलत में पेंश होंगा?"

"एम. एल. ए. साहब, मैंने दरोगाजी से बातें कर ली हैं। आप तो दरोगा गजराजसिंह को जानते होंगे?"

"हाँ-हाँ, मैं उसें जांनता हूँ। आंदमीं चांलांक हैं।"

"मैं तो यही कहूँगा, पुलिस के हिसाब से सीधा है।" सरपंच साहब ने कुछ सिर हिलाकर कहा।

"ज़ंरूर, ज़ंरूर।" एम. एल. ए. साहब ने कहा, "ऐंसा हैं? क्यों नहीं, क्यों नहीं! हाँ, तों यंह बांत उन्होंने आंपको बंताई हैं?"

"जी हाँ। उन्होंने ही कहा है कि वे कल चालान पेश करेंगे।"

एम. एल. ए. साहब ने गम्भीरता से पूछा, "आंप यह बताइए किं आंपने अभीं कोंई वकींल कियां हैं यां नंहीं। अलांवां इंसके आंप पुलिंस कें पीं. आई. से बांतें कंर चुंके हैं यां नंहीं?"

सरपंच ने कहा, "एम. एल. ए. साहब, मैंने अभी वकील नहीं किया है। लेकिन मैं आज कर लूँगा। इसके अलावा पी. आई. से भी मैंने बातें नहीं की हैं, लेकिन आज मैं उनसे भी बात कर लूँगा। क्योंकि कल तो चालान पेश करने की बात तय कराई थी। इसलिए इन दोनों कामों को आज मैं पूरा कर लूँगा। आप मुन्सिफ साहब से मिल लें। अगर ज़मानत आज नहीं हुई तो मेरी बड़ी भारी बदनामी होगी।"

एम. एल. ए. साहब ने ऐसे सिर हिलाया जैसे वे इस बात को नहीं सुनना चाहते थे। बोले, "आंप चिंन्ता न करे। भंगवांन अंच्छा हीं करेंगे। जहाँ तंक कोंशिश होंगी, आंप ज़मांनत करां लाऊँगा। आंप मुंझसे पंहले मिलें होतें तों मैं इस कैंस कों खत्मं कंरवा देंता।"

सरपंच ने लरज़ते हुए स्वर से कहा, "कसूर माफ हो, एम. एल. ए. साहब अव्वल तो मैं आपकी ताकत को इतना बड़ा न समझता था। आप मेरी बात का बुरा न मानें, लेकिन बाद में जब मुझे ख्याल आया, उस वक्त देर हो चुकी थी। मैंने दिल ही दिल में कहा—ओ चंचलसिंह, तू मूर्ख है। दुनिया का फायदा करने वाला तुझपर मेहरबान है लेकिन मुझे तब तक यह केस मालूम नहीं हुआ कि यह केस इन लड़कों ने किया है। लेकिन जब वे स्कूल से भाग गए तो मुझे कुछ शुबहा हुआ। हम उनको देखने गए तो हमने उन्हें स्कूल में फिर छोड़ दिया। जब हमने उनसे कुछ पूछा, तो उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा। लेकिन थानेदार ने उसी वक्त उन लड़कों को स्कूल से बुलवा लिया और मार-मारकर इकबाल करा लिया।"

एम. एल. ए. साहब ने सिर हिलाकर कहा, "आंप तों जांनते हीं हैं किं स्वंतंत्रतां के बांद यंह पुंलिस बंदली नंहीं गईं। अंगर हमं लोंगों कां जनंता पंर पंहले सें इतंना असंर नं होतां तों अंग्रेजीं हुकूंमत कें बाद यहं पुलिंस राज्यं हंथियां लेंती। इंस पुंलिस में कुंछ फंर्क

नंहीं आंया। जों दंमन पंहले करतीं थीं वहीं आंज भीं कंरती हैं, जों भ्रंष्टाचांर इंसमें पंहले थां वहीं आंज भीं हैं। कांग्रेस नें लोगों कें हृदय में शक्तिं जंगाई, इंस पुलिंस कां सांमना करंना सिंखाया और इसीलिए पुलिंसवांले आंज भीं कांग्रेसवांलों सें नांरांज हैं। वें नहीं चाहंते कि कांग्रेस उंनके कांम में दखंलन्दाज़ी दें। लेकिंन आंप बतांइए, जनंता हमें चुंनती हैं, हमं किंस तरंह अंधेर होंते देंखते रहें? लोंग हमांरे पांस आंते हैं, हंमसे शिकांयत करते हैं, हंमसे उम्मीद कंरते हैं कि हंम उनका कुंछ भंला करें। औंर यंह संरकारी अंहलकार, अंफसर, यें पुलिंस कें लोगं यहं चांहते हैं किं पुरानें अंग्रेज़ी निंज़ाम कीं तरहं यें लोंग चैंन की छांनते रहें औरं इनकें बीचं में बोलंनेवांला कोंई नं हों। नंहीं, आप फिंक्र मंत कींजिए।”

इसी समय रमझू ने चाय लेकर प्रवेश किया। एक जोटा और दो गिलास उसके हाथ में थे।

एम. एल. ए. साहब ने बात बदलकर कहा, “अंब देंर कंरने की ज़ंरूरत नहीं। चांय आ चुंकी हैं। आंप चांय पींजिए औंर आंपके सांथ जों आएं हैं, उनकों भी पिलाइएं।”

सरपंच साहब ने चाय पी। एम. एल. ए. साहब ने अपना गिलास पकड़ा और बाकी चाय लेकर रमझू बाहर कजौरीसिंह को पिलाने चल पड़ा। जब एकांत हो गया, तो जेब से एक हज़ार रुपये के नोट निकाले चंचलसिंह ने और एम. एल. ए. साहब के हवाले कर दिए।

एम. एल. ए. साहब ने आश्चर्य से कहा, “यंह क्यां है?”

सरपंच ने उत्तर दिया, “ये रुपये मुन्सिफ साहब को दे दीजिए। रुपये की मार अच्छी होती है। वे फौरन ज़मानत ले लेंगे और इसका नतीजा यह होगा कि वे फैसला भी अपने माफिक कर देंगे।”

एम. एल. ए. साहब क्षण-भर सोचते रहे और फिर उन्होंने कहा, “आंप एंक कांम करें, मंय फैंसले कें पाँच सौं रुंपये और दें दें। वैंसे तों शांयद वंह ज़्यांदा पैंसे माँगेगां, लेकिन मैं उसें समझां दूंगां औंर रांजी कंर लूँगा और काम भीं अच्छां बंन जाएंगा।”

सरपंच साहब के माथे पर शिकन नहीं पड़ी। उन्होंने चुपके से पाँच सौ रुपये के नोट देकर चलने की तैयारी कर दी और अपने नौकर से कहा, “तू गाड़ी वापस गाँव ले जा।”

एम. एल. ए. साहब ने अपने ड्राइवर को आवाज़ दी, “अरे जंल्दी से जंल्दी गांड़ी तैंयार कंरो, हंमको आंज बाहर जांना हैं।” और फिर उन्होंने सरपंच की ओर देखकर कहा, “आंप ज़ंरा इंसमें पैंट्रोल डंलवां लाइएँ, तंब तंक मैं तैंयार हुंआ जांता हूँ।”

जब तक सरपंच साहब ड्राइवर के साथ जाकर पैट्रोल की टंकी फुल कराकर लाए, एम. एल. ए. साहब तैयार बैठे थे। उसी समय नाश्ते के लिए बैठक में चाय और हलुआ लाया गया। भीतर सरपंच और एम. एल. ए. साहब ने नाश्ता किया, बाहर ड्राइवर और कजौरीसिंह ने। इसके बाद वे लोग गाड़ी में चल दिए।

अपनी गाड़ी से उतरकर मुन्सिफ साहब के मकान पर पहुँचने पर एम. एल. ए. साहब ने आवाज़ दी। चपरासी फौरन भीतर आया। पहचानकर बोला, “हुज़ूर, क्या हुकम है?”

“मुंन्सिफ सांहब कहाँ हैं?”

“भीतर हैं।”

एम. एल. ए. साहब ने कहा, “भंई, उंनसे कंह दों किं एंम. एंल. एं. सांहब आंपसे मिलंने आंए हैं।”

चपरासी ने भीतर जाकर सूचना दी।

“मुन्सिफ साहब ने कहा, “कमरे की कुंडी खोलकर भीतर बैठा उन्हें, मैं अभी आता हूँ।”

एम. एल. ए. साहब को भीतर बैठे देर नहीं हुई थी कि मुन्सिफ साहब तशरीफ ले आए। छोटे-से आदमी थे, गोरे। जासूसी रचनाएँ पढ़ने के बहुत शौकीन थे। उसकी साली कविताएँ भी लिखती थी, इसलिए जब भी मौका पड़ता तब वे साहित्य में अभिरुचि दिखाने का प्रयत्न करते, क्योंकि उन्होंने अपनी साली से काफी साहित्यकारों के नाम सुन रखे थे।

एम. एल. ए. साहब ने खड़े होकर हाथ मिलाया।

मुन्सिफ साहब ने कहा, “आप बैठिए।” और चपरासी को आदेश दिया, “अरे भई, फौरन चाय लाओ।”

चपरासी अन्दर चला गया। चाय शायद तैयार थी। शीघ्र ही वह ट्रे में चाय ले आया। चाय की प्याली में चम्मच चलाते हुए एम. एल. ए. साहब ने कहा, “मूंन्सिफ सांहब, आंज आंपसे एंक ज़ंरूरी कांम है।”

मुन्सिफ साहब ने पहला घूंट पीकर आँखें उठाईं और कहा, “कहिए!”

एम. एल. ए. साहब की मूंछें कांपीं और फिर उन्होंने देश के कल्याण की चिन्ता में मग्न मुद्रा अपने ऊपर धारण करके कहना प्रारम्भ किया, “हंमारे इंलाके कें पांस एंक डूंमरपुर गाँव है। वहाँ एंक सरंपंच है और एक बार्ड पंच। उंनके लंड़कों के खिंलाफ पुंलिस ने एंक जुर्म दफा 302 तांजीरांत हिंन्द कां केंस चलां दियां हैं और उंनको बंन्द कंर रखां हैं। आंज उंनका चांलान पेंश होंना हैं। वें लड़कें स्कूंल में पंढ़ते हैं। उंनकी पंढ़ाई में हंर्जा हों रहां हैं। घंरवांले बड़ें परेंशान हैं। सरंपंच कें लड़कें कीं माँ कां यंह हांल हैं किं उसनें आंज चार-पाँच रोंज से खांना नहीं खांया हैं। उनके खिलाफ कोंई सबूंत नहीं है, लेकिंन आंजकल पुंलिस कीं रफ्तांर एंक निंराली चांल चलं रहीं हैं। पुलिंसवालें चाहें जिसकों बन्दं कंरते हैं, चांहे जिंसको छोंड़ देंते हैं। उनंका एंक अंलग हीं कांनून बंना दिंया गंया हैं। यें लोगं चौंबीस घंटे तंक तों चांहे जिंस आंदमीं कों बंन्द कंर देनें के हकूंक पां गएं हैं। संरकार इनंपंर कोंई एंक्शन नहीं लेंती। ऊंपर कें अफंसरानं इंन थांनेदारों से मिंले रहतें हैं। थांनेदार लोंग अंपने

अफंसर लोगों कों हरं मांह सांमान औरं रुंपये भेंजते रंहते हैं। आंज आंपके सांमने जों चांलान पेंश होंगा, आंप उंसको देंखकरं यंह कंह संकते हैं किं पुलिंस ने सचंमुचं हीं एंक झूंठा केंस लगांया हैं। अंठारह-अंठारह सांल कें स्कूंल में पंढ़नेबालें लड़कें भलां कभीं ऐसां करं सकंते हैं? लेकिन मुंन्सिफ सांहब! क्यां बंताए, आंजकल कें रांज्य में बड़ीं गर्दी आं गंई हैं। आंप यंह नं कंहिएगां किं मैं भीं उसं कांग्रेसं में हूँ। आंज आँप जैसें ईमांनदार न्यांयाधीश नं हों तों भंले आदंमी जेंल में संड़-संड़कर मंर जांएँ। बंस, मैं आंपसे यहीं अर्ज़ करनें आंया थां कि आंज उंनकी ज़ंमानत होंना जंरूरी है।"

मुन्फिस साहब सारा किस्सा शांति के साथ सुनते रहे, और फिर उन्होंने कहा, "आने दीजिए। देख लेंगे। अगर ज़मानत के काबिल केस हुआ और पुलिस ने ज्यादा बहस नहीं की तो हम ज़मानत तो लेंगे।"

एम. एल. ए. साहब ने सिर हिलाया, "यंह संब तों ठींक है, लेंकिन भंला पुंलिस बंहस क्यों नहीं करेगी? उंसने तों झूंटा-संच्चा चांलान पेंश किंया हैं, वंह तों ज़ंरूर बहंस कंरेगी।"

"अच्छी बात है।" मुन्सिफ साहब ने कहा, "देख लेंगे। आप चिन्ता न करें, ज़मानत ज़रूर हो ज़ाएगी।"

"बंस, मैं यंही सुंनने आंया थां।" एम. एल. ए. साहब ने कहा; "मुंझे मांलूम थां, आंप इंन्साफ कों कभीं नहीं छोंड़ेंगे। आंपके दिल में मुंसीबतज़दा लोंगों के लिए हंमदर्दी हैं। ऐसें अच्छें नंरमदिंल अंफसर कभीं-कभीं आंया कंरते हैं। मैं वंर्षों से देखं रहां हूँ। कोंई आंपकी कुंर्सी मेरे लिंए नंई नहीं हैं। लेंकिन आंप हीं एक पहलें आंदमी हैं, जैंसा बांबा तुलंसीदास कहं गएं हैं :

भंरतंहि होंइ नं रांजमंद विधिं हरिं हरं प्रंद पांइं ।

कंबहुँ कि कांजी सींकरनि, छींरसिंधु विनसाइं ।।

तों मुंन्सिफ सांहब, जिंस तरंह भंरत कें लिए कंहा गंया है किं ब्रंह्मा, बिंष्णु औंर महेश कां पदं पांकर भीं भंरत कों रांजमदं नहीं हों सकां, क्योंकि खंटाई कीं एकं बूंद क्षींरं-सांगर कों नहीं फांड़ संकती, उंसी तंरह आंपके दिंल में भीं ये बातें कुछं फंर्क पैंदा नंहीं कंर संकती।" और एम. एल. ए. साहब ने कहा, "अंच्छा, इंजाज़ंत।" और जेब से एक कागज़ की पुड़िया में कुछ चीज बँधी हुई निकालकर मुन्सिफ साहब के सामने मेज़ पर रख दीं और बाहर चले गए।

मुन्सिफ साहब ने बिना कुछ कहे हुए उस पुड़िया को उठा लिया और अन्दर घुसकर देखा, सौ-सौ के नोट थे। चुपचाप बक्स में रख दिए और दफ्तर की तैयारी करने लगे।

अब चंचलसिंह, कजौरीसिंह को साथ लिए, पी. आई. से जाकर मिले। पी. आई. काला था। उसका चेहरा चिलकता था। करीब बत्तीस-तैंतीस साल का आदमी था। उसकी पतली मूँछें ऐसी लगती थीं जैसे ऊपर से बहकर आती हुई चेहरे की सारी स्याही होंठ के

ऊपर आकर इकट्ठी हो गई हो, और उसे डर था कि अगर ज़रा और नीचे उतर आएगी तो कहीं वह निगल न ली जाए। नाम था सक्सेना। आदमी हँसमुख था।

"अरे भाई, केस तो देख लूँ या पहले जवाब दे दूँ?"

चंचलसिंह ने उत्तर दिया, "केस में क्या रखा है पी. आई. साहब! आज आप हमारे लड़कों की जमानत करा दीजिए। हम आपके इस अहसान को ज़िन्दगी भर नहीं भूलेंगे।" और सरपंच ने सौ रुपये का एक नोट निकालकर पी. आई. की ओर बढ़ा दिया।

पी. आई. की खुशी उसके चेहरे पर भी झलक उठी। वह उसे कोशिश करके भी छुपा न सका। उसने बड़े घरेलू तरीके पर कहा, "एक काम करना; तुम अपना अच्छा-सा वकील कर लेना जिससे वह बहस करे; और मैं बहस कम करूँगा। तुम्हारे लड़कों की ज़मानत हो जाएगी।"

पी. आई. के यहाँ से निकलकर चंचलसिंह ने कहा, "कजौरीसिंहजी!"

कजौरीसिंह ने चौंककर देखा। वह चंचलसिंह के बौद्धिक पराक्रम को देखकर पराजित हो गया था। उसको यह लग रहा था कि सरपंच एक असाधारण व्यक्ति था। उसकी पहुँच बहुत बड़ी थी। उसकी पूछ बहुत थी और उसकी इन चालों को निश्चय ही, कजौरीसिंह का मन चाहता था, अपूर्वता के अन्तर्गत गिने, क्योंकि उसका अपना स्वार्थ सन्निहित था, इसलिए वह यह सोच रहा था कि अगर सरपंच न होता तो इतनी कड़ी टक्कर झेल पाना कजौरीसिंह के तो बाप के भी वश की बात नहीं थी। पहाड़ी से उतरने वाला आदमी एक-एक पत्थर पर पाँव रखते हुए उतरता आता है और जब वह समतल धरती पर आ जाता है, तब वहाँ से मुड़कर ऊपर की ओर देखता है तो उसे आश्चर्य होता है कि वह उस दुर्गम ऊँचाई पर पहले कैसे पहुँच गया था। पहाड़ी से उतरते समय, एक-एक पत्थर पर पांव रखते समय, जीवन के प्रत्येक पल के संघर्ष में मनुष्य नहीं घबराता, क्योंकि संघर्ष उसका दैनंदिन जीवन बन जाता है, लेकिन उस संघर्ष में से निकल जाने के बाद जब उसे लगता है कि संकट पूरा हो गया, तो उसे स्वयं आश्चर्य होता है कि कैसे वह उन संकटों को पार कर आया और तब गगन में उठती-सी लगनेवाली दुर्भेद्य चट्टानों को देखकर उसका जी कांपने लगता है। जिन पत्थरों को रौंदकर वह आया है, उन पत्थरों के भीतर छिपे अन्धकार को देखकर वह डरने लगता है। तब वह सोचता है, जब उसने पांव रखे थे, अगर उस समय उसके भार से एक भी पत्थर हिल जाता या सरक जाता तो न जाने किस घाटी में वह खण्ड-खण्ड होकर बिखर जाता। लेकिन समतल ही एक ऐसा प्रदेश है जहाँ मनुष्य सोचता है। मनुष्य तब सोचता है जब उसके आवेश क्षण-भर के लिए थम जाते हैं और इसी को वह सुख कहता है।

कजौरीसिंह को लगने लगा कि इस भयंकर अग्नि-भरे पथ में केवल चंचलसिंह ही था जो अविचलित बैठा रहा था। अब उसको सफलता सामने दिखाई दे रही थी, लेकिन चंचलसिंह के माथे पर अभी भी अँधेरा-सा दिखाई दे रहा था।

कजौरीसिंह ने कहा, "बस, काम बन गया!"

चंचलसिंह ने उसकी ओर न देखते हुए कहा, "अभी नहीं बना, वार्ड पंच साहब, अभी मंज़िल दूर है।"

कजौरीसिंह समझ नहीं पाया, लेकिन उसे समझने में देर नहीं लगी। कुछ ही देर बाद सरपंच ने वकील साहब के यहाँ प्रवेश किया। वकील महेन्द्रकुमार जौहरी चौड़े माथे का साँवला-सा व्यक्ति था। बहुत ही विनम्र। वह उस समय अपने बरामदे में एक मूढ़े पर बैठा था। उसने इन लोगों को बैठाया। वार्ड पंच तखत के एक कोने पर बैठा रहा।

सरपंच ने किस्सा सुनाना शुरू किया, "मेरे लड़के व वार्ड पंच, ये जो बैठे हैं, इनके लड़के के खिलाफ पुलिस ने जुर्म दफा 302 का मुकदमा लगा दिया है।"

महेन्द्रकुमार ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा, "मुझे सारा केस सुनाइए।"

सरपंच ने कहा, "मैं भी यही चाहता था।" और उसने अपना सारा किस्सा सुनाकर कहा, "दरोगाजी के पास मौके का कोई सबूत नहीं है। केस झूठा लगाया गया है। हम चाहते हैं कि यह केस आप अपने हाथ में ले लें। जो कुछ आप कहेंगे, वह हमें मंजूर है।"

महेन्द्रकुमार ने सिर हिलाया और कहा, "आप मुझे इस केस की पैरोकारी करने के लिए पाँच सौ रुपये दे दीजिए, जिसमें से आधा रुपया, यानी की दो सौ पचास रुपये मैं आज ले लूँगा और बाकी ढाई सौ रुपये आप मुझे फैसला होने पर दे दीजिए।"

सरपंच ने कहा, "वकील साहब, ऐसा क्यों करते हैं! हम गरीब आदमी हैं। हम बरदाश्त नहीं कर सकते। आप सच्ची-सच्ची बतला दो।"

वकील साहब बोले, "अगर आपको अच्छा वकील करना है तो पाँच सौ रुपये देने होंगे, क्योंकि कत्ल का केस है; और आप छोटा-मोटा वकील चाहते हैं तो वह सौ रुपये में भी मिल जाएगा। आजकल वकीलों की कमी तो है नहीं।"

सरपंच ने कहा, "वकील साहब, लोग पानी के लिए सफेद बादल को नहीं टटोलते, काले को पूछते हैं। बुझती राख को कोई उजाले के लिए नहीं टटोलता। हम आपका नाम सुनकर आए हैं। आप देर मत कीजिए, अदालत का टाइम हो गया है। आप इतना हठ मत कीजिए। हम लोग तो हमेशा आप लोगों के पास आते-जाते हैं, आज कत्ल है तो कल ज़मीन है, जायदाद है। और आपके इशारे पर सारा इलाका रहेगा, क्योंकि भगवान ने मुझे सरपंच बनाया है। अगर आप ज्यादा कहते हैं तो तीन सौ रुपये में सारा केस तय कर लें।"

वकील साहब क्षण-भर सोचते रहे और फिर कहा, "अच्छा, आप लोग नहीं मानते तो चार-सौ रुपये दे दीजिए, मैं इस केस में वकालत कर दूँगा।"

सरपंच ने कहा, "अब आप इतना ही जोर देते हैं तो मैं आपको कुल केस की पैरोकारी के लिए तीन सौ पचास रुपये दे दूँगा और दो सौ रुपया आज नगद दे दूँगा, बाकी डेढ़ सौ रुपये फैसला होने पर दे दूँगा।"

वकील साहब ने सिर हिलाया और कहा, "आपको वकील नहीं करना है।"

सरपंच ने उनके हाथ पकड़ लिए और कहा, “वकील साहब, आप कहेंगे तो मैं पाँच सौ भी ला दूँगा, लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप मेरा दिल दु:खा दें, क्योंकि मेरी और आपकी दोस्ती इस केस के साथ खत्म नहीं होगी। अगर आप-जैसा वकील मेरे साथ रहा, तो न जाने कितने केस पैदा होते रहेंगे। आप एक बार हाँ कह दीजिए।”

वकील साहब मुस्कराए और बोले, “अच्छी बात है, सरपंच साहब, जब आप कहते हैं तो यही सही।”

सरपंच ने दो सौ रुपये तुरन्त पेशगी दे दी और वकील साहब ने डेढ़ सौ रुपये फैसला होने के बाद लेने का वायदा करा लिया।

बाहर आने के बाद सरपंच ने कहा, “कजौरीसिंह, आप श्यौपाल और मंगू नम्बरदारान को यह कह आए थे न कि तुम कल नौ बजे मुन्सिफ की कचहरी में आ जाना?”

“हाँ, मैं कह आया था। मैं खुद गया था।”

“वे लोग अभी तक नहीं आए?”

कचहरी का टाइम हो चला था। लोग आने-जाने लगे। अरायज़नवीस अपने बस्ते फैला चुके थे। मंगू और श्यौपाल आ पहुँचे। वकील साहब ने फौरन दो अलग-अलग दरख्वास्तें ज़मानत मुचलके की लिखकर तैयार करा लीं और उनपर मंगू और श्यौपाल दोनों नम्बरदारों के दस्तखत करा लिए। सरपंच साहब वकील साहब को छोड़कर बस अड्डे पर एम. एल. ए. साहब के पास पहुँचे और बोले, “क्यों साहब, ठीक कर आए?”

“कोंई चिन्ता कंरने कीं बांत नहीं हैं।” एम. एल. ए. साहब ने कहा, “सब ठीक हों गंया। पूंरे रुंपये देंकर आंया हूँ।” और सहसा स्वर बदलकर कहा, “मैं अभीं तहसींलदार कें मकांन परं ठहंर रहां हूँ। जब तुम्हांरे लंड़कों कीं ज़मांनत हों जांए तो मुझें सूचंना दें देनां। तंब तंक मैं अंपने गाँव कों नहीं जांऊंगा, क्योंकि मुंझे तुंमसे ज़्यांदा चिंन्ता हैं। अंब आंप जांइए, ज़्यांदा टांइम बंरबाद कंरने की ज़ंरूरत नहीं है, क्योंकि मुंसिफ सांहब ठीकं टांइम पंर दंफ्तर पहुँचं जांते हैं।”

जिस समय सरपंच वकील के पास पहुँचा, दरोगा गजराजसिंह दोनों लड़कों के हाथ में हथकड़ी डालकर ले आया था। कजौरीसिंह ने यह हालत देखी, तो उसकी आँखों में आंसू आ गए। लेकिन सरपंच जैसे पत्थर हो रहा था। उसने कनखियों से देखा और एक बार उसने सारी कचहरी की ओर दृष्टि दौड़ाई और उसे ऐसा लगा जैसे वह भेड़ियों के बीच में आ गया था। उसने अपने पुत्र को देखा तो उसे घृणा हुई। ममता ने पुकारकर भीतर से कहा, ‘तेरा बेटा हथकड़ी में बंधा खड़ा है। आज वह एक कातिल बना हुआ है। लोग उससे नफरत कर रहे हैं। तेरे खानदान की इज्ज़त मिट्टी में मिल रही है।’ और यह विचार आते ही

जैसे सरपंच की घृणा हज़ार हाथ उठाकर खड़ी हो गई और उसके हज़ार हाथ हिलने लगे और मानो वे इशारा करने लगे, ‘चंचलसिंह, यह तेरा बेटा होने के लायक नहीं है, क्योंकि और बातों से ऊपर यह बेवकूफ है, क्योंकि इसने पाप भी किया तो पाप को छिपाना नहीं सीखा। और इस दुनिया में जो लोग पाप को छुपाना नहीं जानते, वे ही लोग सज़ा पाते हैं। इस दुनिया में वे ही लोग सज़ा पाते हैं जिनका दिल कायर होता है, क्योंकि करते वक्त वे कर जाते हैं लेकिन बाद में डरते हैं और अपने किए हुए को देखकर कांपते हैं।’ उस वक्त सरपंच की आँखों के आगे चमेली का मुख घूम गया। वह कितनी प्रसन्न रहती थी अपने इस छोटे-से लाड़ले बालक को देखकर! उसे कितनी आशाएँ थीं इस लड़के से! सरपंच की माँ अपने इस नाती को देखकर रोम-रोम से पुलकित हो उठती थी। सारा घर जिस बच्चे को देखकर झूमता था, आज वह हथकड़ी से बँधा खड़ा था। उसे पुलिस ने निर्दयता से पीटा था, जैसे वह पासी या चमार था। क्या यह सरपंच का लड़का होने लायक था? क्या यह खानदान का लड़का कहलाया जा सकता है? और सरपंच इसके पीछे बरबाद हुआ जा रहा है। उसके चेहरे पर ममता की एक भी रेखा दिखाई नहीं दी। वह ऐसा खड़ा था जैसे यंत्रवत् सारे काम करता चला आ रहा था, जैसे उसे कुछ काम करने थे और वह किए जा रहा था। खुद के बच्चे का लगाव उसके लिए समाप्त हो चुका था। लेकिन कजौरीसिंह की आँखों में से आँसू बहने लगे थे और नरायन और माधो कोनों में मुड़कर छिपकर रो रहे थे, इसलिए कि वे लोग पिटे थे, अपमानित थे, समाज में आज घृणित बन गए थे, और अपराध भी ऐसा जो जघन्य कहाता था। इसलिए ही आज उनमें इतना नैतिक साहस नहीं था कि बलात्कार करके भी पिताओं की ओर देख सकें।

कजौरीसिंह ने सरपंच का हाथ दबाकर कहा, “देखते हो?” और उसका ग्लपित कंठ प्रकम्पित हो उठा। लेकिन सरपंच ने मुड़कर नहीं देखा। उसने बात टालने के लिए वकील से कहा, “वकील साहब, यह कागज़ ठीक है?”

वकील साहब ने नितान्त व्यापारिक ढंग से कहा, “सरपंच साहब, यह तो बताइए कि इन नम्बरदारों की हैसियत तस्दीक कौन करेगा? मुन्सिफ ज़मानत लेने से पहले ज़ामिन की हैसियत की तस्दीक माँगता है।”

सरपंच ने सिर हिलाकर कहा, “वकील साहब, आप इस बात की चिन्ता न करें। हमारे पास तहसील की तस्दीकशुदा हैसियत दस-दस हज़ार की मौजूद है।”

वकील साहब को सन्तोष हुआ। उन्होंने कहा, “यह आपने अच्छा किया, क्योंकि मुन्सिफ साहब एक-दो रोज़ इसी में टाल देते हैं।”

अभी ये लोग बातें कर ही रहे थे कि दरोगाजी ने रिमाण्ड बढ़ाने के लिए मुन्सिफ साहब के सामने चालान पेश किया और मुन्सिफ साहब ने पी. आई. साहब को आवाज़ दिलवाई। इधर वकील साहब ज़मानत की दरख्वास्त लेकर मुन्सिफ साहब के सामने पेश हुए।

मुन्सिफ साहब ने माथे पर त्यौरियाँ डालते हुए कहा, “वकील साहब, आपने ज़ामिन की दरख्वास्त तो पेश की है, लेकिन आपको पता है कि इसमें ज़ामिन की दस-दस हज़ार की हैसियत भी है?”

वकील साहब ने जवाब दिया, “हुजूर, यह सब कुछ ठीक है। ये सरकार की भेज वसूल करने वाले नम्बरदार हैं। अगर इनकी हैसियत ही नहीं होती तो ये नम्बरदार ही कैसे बना दिए जाते?”

मुन्सिफ साहब ने कहा, “वकील साहब, ये नम्बरदार भी हैं, ज़मीदार भी हैं, इनके पास काश्त में जमीन भी है। लेकिन बहुत-से गाँवों में दो-दो सौ रुपये ज़रभरत पर नम्बरदार होते हैं, बहुत से गाँवों में पाँच-पाँच सौ, एक-एक हज़ार रुपये के नम्बरदार होते हैं, लेकिन दस हज़ार के जरभरत क नम्बरदार नहीं होते। एक गाँव में पाँच-छः नम्बरदार होते हैं, इसलिए यह कैसे मान लिया जाए कि इनकी दस-दस हज़ार की हैसियत होगी?”

वकील साहब ने अदालत के सामने तहसीलदार साहब की तस्दीकशुदा मय नकल खाता खेवट मालगुज़ारी की दो दरख्वास्तें हैसियत की पेश कर दीं।

मुन्सिफ साहब ने उनको पढ़ा और कहा, “हाँ, हम इस तस्दीक को मानते हैं।”

पी. आई. ने टोका, “मैं अदालत से एक प्रार्थना करना चाहता हूँ।”

मुन्सिफ साहब ने कहा, “कहिए! आप कह सकते हैं।”

पी. आई. बोला, “हुजूर, अभी हमारी मुकम्मिल इन्क्वायरी नहीं हुई है। अगर इनको ज़मानत पर छोड़ दिया जाएगा तो पूरी इन्क्वायरी नहीं होगी।”

वकील साहब ने कहा, “हुजूर, एक बात मैं भी निवेदन करना चाहता हूँ कि पुलिस ने इन पर झूठा केस लगाया है। पुलिस के पास कोई भी सबूत नहीं है। आप इनसे यह पूछ सकते हैं कि तुमने इनको किस कानून से बन्द किया है और ये नहीं बता पाएँगे।”

पी. आई. ने उत्तर दिया, “यह कभी नहीं हो सकता। हमारे पास सबूत हैं, लेकिन इनकी अभी ज़मानत न ली जाए तो अच्छा है।”

वकील साहब ने टोका, “हुजूर, पुलिस इन्हें बेकार तंग करती है। इस केस में ज़मानत हो सकती है। ज़मानतनामा, हुजूर के सामने मय हैसियत तस्दीकशुदा के पेश कर दिया गया है, फिर क्या वजह है कि ज़मानत न ली जाए?”

पी. आई. ने काटा, “हुजूर अगर ज़मानत ही ली जाती है, तो कम-से-कम दस-दस हज़ार के मुचलके और दस-दस हज़ार की ज़मानत ली जाए।”

वकील साहब ने उत्तर दिया, “हुजूर ऐसा कोई कानून नहीं है। यह अदालत का अख्तियार है, वह दो-दो हज़ार के मुचलके ले सकती है, पाँच हज़ार के मुचलके ले सकती है।”

और दोनों ने मुन्सिफ साहब की ओर देखा। मुन्सिफ साहब ने धीमे स्वर से कहा, “हमने हर दो पार्टियों की बहस सुनी। हरएक मुलज़िम की पाँच हज़ार की ज़मानत और

पाँच हज़ार के मुचलके पेश किए जाएँ।"

वकील साहब ने अपनी दरख्वास्त वापस लेकर अलग-अलग से पाँच-पाँच हज़ार के मुचलके ज़मानत लिखकर फौरन मुन्सिफ साहब के सामने पेश कर दिए और मुन्सिफ साहब ने उसको मंजूर कर लिया और मुलजिमों को अदालत में ही छोड़ दिया। मुकदमे की एक हफ्ते बाद की तारीख दे दी और सुना दिया कि एक हफ्ते के बाद की तारीख पर सबूत पुलिस की तरफ से पेश होंगे। अगर पुलिस तलविदा गवाह करना चाहती है तो उसकी लिस्ट पेश करे, वरना अगर वह उस दिन लाना चाहती है तो उस दिन पेश करे। हुक्म सुना दिया गया। वकील साहब अदालत से बाहर निकल गए। अदालत खत्म हो गई।

जब सरपंच और वार्ड पंच वकील से इजाज़त लेकर अपने गाँव की ओर जाने लगे, वकील साहब ने गर्व से कहा, "सरपंच साहब, आप तीन-चार रोज़ बाद मुझसे मिल जाना। मुकदमे में बहस की तैयारी करनी है।"

लेकिन सरपंच का मन भारी था। उसने कहा, "जो हुक्म!"

सरपंच और वार्ड पंच के साथ इस वक्त मंगू और श्यौपाल नम्बरदार थे। सरपंच के मुख पर उदासी थी। कजौरीसिंह समझ नहीं पा रहा था। इसी समय सरपंच ने कहा, "आप मंगू और श्यौपालजी को खाना खिलाकर बस के अड्डे पर ले आना।"

कजौरीसिंह मन-ही-मन फूला नहीं समा रहा था। उसने कहा, "और आप? आप कब खाना खाएँगे? आप भी साथ चलो। दोनों लड़कों को भी खाना खिला लावें।"

सरपंच ने भारी स्वर में कहा, "मैं बाज़ार में खाना नहीं खाता। बस के पास जो होटल है, अड्डे के पास, उसमें खाना खाऊँगा। लड़कों की बाबत आप जाँच कर लेना कि उन्होंने बोर्डिंग हाउस में खाना खाया है या नहीं। अगर खाना नहीं खाया है तो उनको भी खिला देना।"

इस बड़े कस्बे में आकर सरपंच जैसे बदल गया था। यहाँ से रेल जाती थी, यहाँ का बाजार भी बड़ा था। कजौरीसिंह की समझ में नहीं आ रहा था कि ज़मानत पर छुड़ाने के लिए सरपंच ने जमीन-आसमान एक कर दिए थे ज़मानत हो चुकी थी, लेकिन सरपंच पर जैसे कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।

कजौरीसिंह ने कहा, "लड़कों से नहीं मिलिएगा?"

सरपंच मुस्कराया। उसके मुख पर अथाह व्यंग्य साँप की तरह फुफकार उठा। "किसका लड़का?" सरपंच ने कहा। फिर जैसे उसे याद आ गया कि मंगू और श्यौपाल साथ थे। उसने कहा, "इस वक्त मैं ज़रा ज़रूरी काम में हूँ, मिलना-जुलना तो ज़िन्दगी-भर का है"

वह चला गया और कजौरीसिंह उसे आश्चर्य से देखता रहा।

अब श्यौपाल ने कहा, "अरे भय्या मंगू, चल तो, कुछ खा-पी लें।"

"हाँ, हाँ।" कजौरीसिंह ने कहा, "चलो, खाना खा लें।"

तीनों एक हलवाई की दुकान पर पहुँचे। हलवाई ने कहा, “आओ पटेल, आओ।”

मंगू ने कहा, “वार्ड पंच साहब, आप भी भोजन कर लें।”

लेकिन कजौरीसिंह को अपने पुत्र से मिलने की जल्दी हो रही थी। उसने कहा, “मैं ज़रा स्कूल तक बच्चों की जाँच कर लँ। अभी आता हूँ। आप तब तक भोजन कर लें।

वार्ड पंच के जाने पर हलवाई ने नम्बरदारों की इच्छा के मुताबिक सामान देना शुरू किया।

मंगू ने कहा, “तो लाओ, पहले हमें सेर-सेर-भर कलाकन्द तौल दो और पाव-पाव-भर दही दे दो।”

हलवाई की तराजू काम में लगी। दोनों बेदर्दी से खाने लगे। आज वे लोग दूसरे के काम से आए थे और इसलिए उसका मुआवज़ा पूरा कर रहे थे।

श्यौपाल ने कहा, “पूड़ी खाओगे?”

मंगू ने कहा, “आधा-आधा सेर तौल दो।”

इसके बाद मोतीचूर के लड्डू खाए। हलवाई ने कहा, “नम्बरदारजी, कचौरी और समोसे दे दूँ?”

मंगू ने कहा, “नही भई, हमको तेल की चीजें अच्छी लगतीं।”

“अजी पटेलजी!” हलवाईगर ने कहा, “मैंने अभी जलेबी व गुलाबजामन ताजी बनाई हैं। अगर चाहो तो इनमें से तौल दूँ।”

श्यौपाल ने कहा, “भय्या, देखने पर हमको तेरे ये ऊँट के से मेंगने पसन्द नहीं। हम लोग इन चीजों को नहीं खाते। अगर तुम नहीं मानते तो ताजी जलेबियों में से और तोल दो।”

जिस समय कजौरीसिंह लौटा, दोनों नम्बरदार हाथ धो रहे थे। वार्ड पंच ने पूछा, “नम्बरदारजी, भोजन कर लिया?”

मंगू ने कहा, “हाँ साहब! हमने अच्छी तरह भोजन कर लिया। आप भी कर लो। और यह बताओ कि आपके लड़कों ने खाना-वाना खाया या नहीं?”

कजौरीसिंह ने कहा, “वे तो बोर्डिंग हाउस में ही भोजन कर चुके हैं।”

अब वार्ड पंच खाने बैठा। उसने डेढ़ पाव पूड़ी और पाव-भर कलाकन्द खाया। और फिर हलवाई से कहा, “अच्छा, अब अपने पैसे बताओ।”

हलवाई कलाकन्द, जलेबी, लड्डू पूड़ी इत्यादि का हिसाब जोड़कर बोला, “बारह रुपये, पन्द्रह आने।”

कजौरीसिंह ने एक बार छिपी नज़र से दोनों की ओर देखा। मंगू और श्यौपाल चक बैठे थे। उसके मन में से अचानक किसी ने कहा, ‘अगर मैंने तुम्हारी यह खुराक वसूल न कर ली तो मेरा भी नाम कजौरीसिंह नहीं।’ लेकिन बाहर उसने केवल यह कहा, “नम्बरदारजी, कुछ मीठा और ले लेते।”

"अजी नहीं साहब।" श्यौपाल ने कहा।

मंगू बोला, "अरे वार्ड पंच साहब बुरा मान जाएँगे। ले लो कुछ।"

वार्ड पंच ने मन-ही-मन जलते हुए कहा, "तो ले लूँ सेर-सेर-भर कलाकन्द?"

"अजी नहीं।" श्यौपाल ने कहा, "अब इतना नहीं चलेगा।"

मंगू ने कहा, "नहीं, अब नहीं। अब तो कुछ थोड़ी-बहुत गुलाबजामन चले तो चल जाए।"

श्यौपाल ने कहा, "तो अच्छी बात है, आध-आध सेर और तौल दे।"

वार्ड पंच मन-ही-मन कुड़क होता रहा। जब वे लोग खा चुके, वार्ड पंच ने सारे पैसे चुकाए। पान की दुकान पर पहुँचने पर मंगू ने कहा, "आओ भाई श्यौपाल, अरे कुछ बीड़ी-पान का डौल लगाएँ।"

कजौरीसिंह ने दो बीड़ी के बंडल, दो माचिस, दो पान खरीदे, और मुस्कराते हुए उनके सामने पेश कर दिए। और फिर मन-ही-मन इनकी रकम को पहली रकम में जोड़ लिया, मानो वह भविष्य के लिए उस हिसाब को याद रखना चाहता था। मंगू और श्यौपाल ने प्रेम से धुँआ उड़ाया और दोनों बड़े नवाबी लटके से पान चबाने लगे। जब वे लोग बस के अड्डे पर पहुँचे, चंचलसिंह खाना खाकर आ चुके थे।

"आप लोग खाना खा आए?" उन्होंने गम्भीरता से पूछा।

"जी हाँ।"

सरपंच चुप हो गए। कजौरीसिंह कहने लगा, "मैंने बच्चों से जाकर पूछा। मैं खुद स्कूल गया था। मैंने लड़कों से बातें की। लड़कों ने बीस रुपये और माँगे थे। मैं उनको अलग-अलग दस-दस रुपये दे आया हूँ। मैंने उनसे घर आने को बहुत कहा था; लेकिन लड़के शरमाए हुए हैं। उन्होंने कहा, "हम छुट्टियों में आएँगे, और छुट्टियों के आने में अभी पाँच-छह दिन की देरी है।"

लेकिन जैसे सरपंच सुन नहीं रहे थे। उन्होंने कहा, "बस के टिकट ले लीजिए।" मोटर चल पड़ी।

एकदम गाँव में चारों तरफ यह शोहरत फैल गई कि लड़कों की ज़मानत हो गई और एक हफ्ते बाद की तारीख मुकर्रर हुई है। चम्पो ने सुना तो लगा, जैसे छाती पर से बोझ उतर गया हो। बूढ़ी माँ ने सुना तो दोनों हाथ उठाकर हनुमानजी की वन्दना करने लगी। लेकिन चमेली बैठी चर्खा कातती रही। चंचलसिंह उसके समीप जा खड़े हुए। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"तुम्हारा बेटा छूट गया है।" सरपंच ने कहा, "उसकी ज़मानत हो गई है।"

“हो गई!” चमेली ने चर्खा सामने से सरकाते हुए धैर्य से कहा। और उसने कुछ भी नहीं कहा।

सरपंच ने कहा, “तुम्हें इस बात की खुशी नहीं हुई?”

चमेली ने इस बात का उत्तर न देते हुए पूछा, “तुमसे मिला था?”

“नहीं।”

“कचहरी में तो तुम्हारे सामने आया होगा?”

“हाँ-हाँ, आया था।”

“तो कुछ बातचीत हुई?”

“मेरे पास इतना वक्त नहीं था। मैं वकील के पास था। अलबत्ता कजौरीसिंह मिले थे उन दोनों से।”

चमेली की आँखें नीचे हो गईं। उसने कहा, “सचमुच क्या तुम्हारा दिल इतना पत्थर है?”

“कितना पत्थर?” सरपंच ने कहा, “पत्थर कोई अलग चीज़ नहीं होता। आग की पर्तों के दबाब से भीतर की माटी जब पक जाती है, ठोस हो जाती है, तो वही पत्थर बन जाती है। पत्थर के भी एक दिल होता है, जहाँ चोट देने से वह मक्खन की तरह नरमाई से कट जाता है। गर्भ का पत्थर मक्खन से भी मुलायम होता है। उसमें शक्ति तब आती है जब उसे बाहर की हवा छू लेती है। मैं पत्थर नहीं हूँ। मुझे पत्थर मत कहो, क्योंकि पत्थर का न अपना दर्द होता है, न उसे किसी चीज की चोट होती है, टक्कर मारकर कोई उसकी बेइज्ज़ती नहीं कर सकता, क्योंकि जो उसे टक्कर मारने की कोशिश करता है, उसके पांव का अँगूठा फट जाया करता है। मैं एक बहुत छोटा आदमी हूँ, लेकिन मैंने कभी अपनी जिन्दगी में इस तरह का कमीना काम नही किया है कि मुझे अपने पर शर्मिन्दा होने की ज़रूरत पड़े। मैं हुकूमत करता हूँ। हुकूमत के लिए हज़ार चालबाजियाँ करनी पड़ती हैं, लेकिन पाप नहीं। मैंने धर्म के विरुद्ध कुछ नहीं किया। मेरी आन का सवाल था कि मैं उस लड़के को छुड़ा दूँ। मैंने उसे ज़मानत पर छुड़ा लिया है, क्योंकि मेरी साख खतम हो जाती। मेरी इज़्ज़त ठहर गई हैं। अब अगर मुकदमे में उसको फांसी भी हो जाती है तो मेरा अपमान नहीं है। वह अदालत की बात है। अब बहुत गुंजाइश है। ये कचहरी वाले हमारे खिलाफ कुछ कहते हैं तो हम हाईकोर्ट में जाएँगे। हाईकोर्टवाले हमारे खिलाफ हो जाते हैं तो हम सुप्रीम कोर्ट में जाएँगे। बहुत लम्बा केस है। हज़ारों रुपयों का खर्चा अभी बाकी है। लेकिन मैं जीत गया हूँ और मुझे इससे ज़्यादा कुछ भी नहीं चाहिए।”

“और फिर भी तुम अपने बेटे से नहीं मिले! उसकी जब तुम्हें सूरत देखना मंजूर नहीं, तो उसे छुड़ाने के लिए इतने हज़ार रुपये खर्च करने की ज़रूरत क्या है?”

“वह मैंने उसके लिए नहीं किए, वह मैंने अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए किए। क्योंकि वह मेरा अकेला बेटा नहीं, आस-औलाद मेरे पास और भी है। मैं तो यह समझ

सकता हूँ कि मेरे लिए वह मर चुका है।”

माँ के होंठों से एक चीख निकल गई। उसने कहा, “ऐसा तो न कहो। बेटा तो आखिर तुम्हारा ही है।”

सरपंच ने कहा, “ममता से बुरी कोई चीज नहीं है, क्योंकि वह इन्सान को मजबूर कर देती है कि वह बेईमान बन जाए, क्योंकि वह इन्सान को प्रेम के अभाव से नफरत सिखाती है, इसलिए मुझे इस ममता से नफरत है। वह आदमी को आदमी नहीं रहने देती। यह छूट गया है ज़मानत पर लेकिन मुझको ऐसा लगता है जैसे मैंने हत्यारे को आज़ाद कर दिया हो। मैंने अपने बेटे को आज़ाद नहीं किया, क्योंकि मेरा बेटा तो वह तभी नहीं रहा जिस वक्त उसने ऐसा भयंकर काम किया। उससे मैं नफरत भी नहीं कर सकता, क्योंकि नफरत भी एक कायदे के आदमी के साथ की जाती है। वह शायद समझ रहा होगा कि मैं उसके पास जाऊँगा; क्योंकि वह इतना पिट चुका है पुलिस से, इसलिए उसके ज़ख्मों पर हाथ फेरूँगा। नहीं, मैं यह सब-कुछ नहीं करूँगा। मैंने उसे जब इतना बड़ा था, तब पाला था। मैंने गोद में खिलाया तो कितनी-कितनी कल्पनाएँ की थीं! और उसने क्या नतीजा दिया है? चमेली तुम्हारा बेटा है, तुम प्रेम करो, ममता दिखाओ! लेकिन मैं, मैं यह सब कुछ नहीं कर पाऊँगा। घर है, जायदाद है, पैसा है, हुकूमत है—सब कुछ है, लेकिन मेरे घर में फांसी पर चढ़ने वाला लड़का है, इसलिए मैं उसे छुड़ा लाया हूँ। अब इस मुकदमे में कुछ नहीं होने वाला है, चमेली, इस मुकदमे में कुछ नहीं होने वाला है। खूनी छूट गया है। मैंने उसकी सूरत देखी। मैं तुमसे कह दूँ कि वह खूनी है। माधोसिंह ने उसे नहीं बिगाड़ा उसने माधोसिंह को बिगाड़ा है। नरायन!...इसका कारण जानती हो, क्या है? मैं तकलीफ में था। उसके बाद मैं बाहर चला गया; लेकिन वह लड़का अपनी सोहबत को ठीक नहीं रख सका और उसी का नतीजा तुमने देख लिया है।”

फिर जैसे सरपंच को अचानक होश आ गया हो। उसने कहा, “बाकी बातें तुम कजौरीसिंहजी से दरयाफ्त करना। अब मैं थक गया हूँ और मैं खूब सोना चाहता हूँ।”

“खाना भी खाया या नहीं?”

“हाँ, खाया तो नहीं। रास्ते-भर कहता आया हूँ कि खाया है। चमेली, मुझे खाना अच्छा नहीं लगता। इस खाने में मुझे बू आती है। इस खाने को देखता हूँ तो कलेजा भर आने लगता है।”

सरपंच बाहर आ गए। चमेली बैठी-की-बैठी रह गई। सरपंच ने फिर लौटकर कहा, “मैंने सब लोगों से कह दिया है कि मैं होटल में खा आया हूँ। अगर तुमसे पूछें तो तुम भी कह देना। यह मत कहना कि मैं भूखा हूँ, मैंने कुछ खाया भी नहीं है। सच कहता हूँ, चमेली, मैं भूखा नहीं हूँ; मेरी भूख मर चुकी है, क्योंकि मुझे अब कुछ खाने की इच्छा नहीं होती।”

चमेली उत्तर नहीं दे सकी।

बाहर गाँव में लोगों में तरह-तरह की बातें हो रही थीं।

“अजी छूट गया, अब क्या रखा है!”

“मुकदमा आधा रह गया। अब क्या होना है!”

“लेकिन भय्या, इस सरपंच की ही हिम्मत थी जो निकाल लाया मगर के मुँह से!”

“अरे! उसके पास पैसा था जो इतनी टक्कर ले गया, वरना और कोई होता तो जेल में सड़-सड़कर मर जाता। गरीबों की कौन सुनता है!”

रात को लोग अपने-अपने अलावों पर बातें कर रहे थे, “देखो भय्या, राज में सूखा भी जलता है और गीला भी। पहले तो चालीस आदमी परेशान हुए। अब फिर देख लो, छूट आया है।”

व्यंग्य और आवेश दोनों ने ही गाँव को पराभूत कर लिया।

नोटिस चौपाल आम पर चस्पां हो गया। गाँव-गाँव में खबर बिजली की तरह फैल गई। गाँववालों में एक नए तरह का उत्साह आ गया। उन्हें लगा, भगवान ने ही अब दिन फेर दिए थे। और कौन-सा राज था जो ऐसा कर सकता था! हुसैनपुर के पटवारी हरदयाल ने जब गाँव में जाकर खबर सुनाई तो बड़ी खुशी की लहर फैल गई और उन किसानों की औरतें, जिनके पति परदेश में रोजगार करने चले गए थे, उन्होंने उनको चिट्ठी डलवाना शुरू किया। वे लोग खबर पाकर परदेशों से अपने गाँव लौटने लगे।

यह इन्सान अपनी ज़िन्दगी में, जहाँ पैदा होता है, अपने आप उसी जगह से मोहब्बत करने लगता है। लोग दूर-दूर तक परदेशों तक नौकरी करते हैं लेकिन पैंशनयाफ्ता होने पर, बुढ़ापे में अपने घर लौट आते हैं और मरना वहीं चाहते हैं, पसन्द करते हैं, जहाँ उनके अपने लोग रहते हैं, इस खण्ड-खण्ड धरती ने जब से मनुष्य को बाँधा है तब से मनुष्य की आत्मा और हृदय में एक लोहे की सी सांकल जकड़ गई है।

नई अदालत ने हर गाँव के नक्शे तहसील से मँगवाकर अपने पास रख लिए और एक प्रोग्राम बनाकर अलग-अलग तारीखों की सूचना तहसील को भेज दी। तहसीलदार ने फौरन इत्तलानवीस, जो बक्शी भी कहलाता है, उसको बुलाया और वे परवाने, जो इन्फिकाक रेहन की अदालत से आए थे, बक्शी को दे दिए और आदेश दिया कि अपने तहसील के चपरासियान को लेकर जमादार तहसील की सलाह से ड्यूटी बोल दो और इनको पाबन्द कर दो कि वह तारीख से पहले ज़मींदारान को सूचित कर दें। अगर इत्तला होने में किसी किस्म की गड़बड़ हो गई तो उसमें तुम्हारी जिम्मेदारी होगी। इत्तलानवीस ने मुताबिक हुक्म तहसीलदार साहब के वैसा ही किया। तहसीलदार साहब ने कानूनगो को बुलाया और उसको आदेश दिया कि मुताबिक प्रोग्राम, जो तुमको दिया जाता है, तुम गिरदावर हल्का को, पटवारियान को इन्फिकाक रेहन की अदालत में भेज दो ताकि वो तमाम रेकार्ड साथ ले जाएँ। तामील में गड़बड़ न हो। कानूनगो मुंशी भगवानप्रसाद तजुर्बेकार आदमी था क्योंकि उसे इस पोस्ट पर काम करते हुए करीब पन्द्रह साल हो चुके

थे। पहले वह पटवारी था, पर कुछ दिन बाद गिरदावर हो गया और अब आफिस कानूनगो का काम कर रहा था। उसने तहसीलदार की आज्ञा के मुताबिक सब गिरदावरान व पटवारियान को बुलाकर आदेश दिए और कहा कि इन्फिकाक रेहन की अदालत से रेहनफक करने की तारीख हर गाँव की अलग-अलग मुकर्रिर कर दी गई है। उसी प्रोग्राम के मुताबिक आप लोग रेकार्ड को साथ लेकर पहुँच जाएँ। इसमें कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिए। यह एक नया महकमा है। इसमें किसी ने भी ज़रा लापरवाही दिखाई तो उसी को नुकसान उठाना पड़ेगा।

पटवारी हरदयाल ने कहा, "श्रीमानजी! आप पुराने आदमी हैं, यह बतला दीजिए कि कौन-कौन से कागज साथ ले जाने चाहिए!" कानूनगो यह खुद नहीं जानता था। वह जानता था कि पटवारी ने यह सवाल उसकी जानकारी की गहराई नापने के लिए किया था।

और पटवारी की कलम की ताकत इतनी होती है; इतनी सुदृढ़ होती है कि उसको राष्ट्रपति भी नहीं मिटा सकते। अपने क्रम में एक बार अगर उस पर अफसर के दस्तखत हो जाते हैं, लोहे ठुक जाते हैं और उसके बाद बड़ी से बड़ी ताकत भी अपने ज़ोर से पटवारी के लिखे हिसाब से चलती है, उसे मिटा नहीं सकती। हुकूमत की असली कुंजी पटवारी के हाथ में होती है वहीं प्रारम्भ है। पटवारी वह बुनियाद है जिस पर कि सारे राज का टंडोला खड़ा रहता हैं। पटवारी एक पहाड़ है जिसके ऊपर कानून बर्फ की तरह गिरते हैं और वह उन्हें रूई के गालों-सा अपने सिर पर इकट्ठा कर लेता है, लेकिन कानून अपनी रफ्तार से जब तक मैदान में पहुँचता है, तब तक वह बर्फ बना सा नहीं रहता। पटवारी उसे पानी कर चुकता है।

पटवारी का दिमाग एक छलनी है, जिसमें सैकड़ों ही छोटे-छोटे छेद होते हैं। बड़ी से बड़ी धार को भी वह छेदों के कारण खंड-खंड कर देने की सामर्थ्य रखता है। यह अदना और गरीब-सा दीखने वाला आदमी, जूते की उस कील की पैनी नोक की तरह है, जो अगर चुभना शुरू कर दे तो पांव में ऐसी जलन, ऐसी ठेक डालती है, जिसका कोई इलाज नहीं होता। यह एक सत्य है कि ठेक उस मुर्दा खाल को कहते हैं जो दर्द करती है, सख्त होती है। जो कट सकती है, लेकिन मिट नहीं सकती।

कानूनगो क्योंकि अपने वर्तमान स्वरूप के पहले उसी अवस्था और रूप को धारण करता था, इसलिए वह ज़ानता था कि पंखवाली पूरी तितली बनने के पहले वह खुद पहले इसी तरह रेशम के लच्छे, उगला करता था। लेकिन क्योंकि अब उसके पंख निकलकर बाहर उल्लास पर आ गए थे वह रेशम उगलने में मजबूर था। छोटेपन में मनुष्य अपनी नगण्यता में बहुत-कुछ कर जाता है, लेकिन पद और अधिकार की अपने हाथ में मात्रा बढ़ने के साथ उसे एक आडम्बर की भी रक्षा करनी पड़ती है, कृत्रिमता रखनी पड़ती है और एक ओर उसके अधिकार बढ़ते हैं तो दूसरी ओर दैनंदिन जीवन के उसके बहुत-से

हथकंडे भी कम हो जाते हैं। उसका एक ओर तो दायरा बढ़ जाता है, उसकी पकड़ बढ़ जाती है, लेकिन इसके फलस्वरूप उसे अपने नीचेवालों पर आश्रित रहना प्रारम्भ करना पड़ता है, दबना पड़ता है।

हरदयाल अब भी उसकी तरफ बड़ी विनम्र दृष्टि से देख रहा था। मुंशी भगवतप्रसाद ने कहा, "आपने जिन कागज़ों से नक्शे तैयार किए हैं, वो कागज़ ले जाइए।"

हरदयाल ने कहा, "यह तो ठीक है कानूनगो साहब! लेकिन आप कुछ और बता देते।"

कानूनगो ने कहा, "देखिए, सबसे पहले मौजूदा साल के खाते, जिनमें हरएक खेवट के अन्दर राहिन और मुरतहन दर्ज हैं, वो ले लीजिए। अलावा इसके अगर किसी ज़मींदार ने अपनी खेवट रहन नहीं की हो और सिर्फ काश्त ही रेहन की हो, तो उसका भी सारा रेकर्ड मिल जाएगा और चौसाला जमाबन्दी जिसकी एक प्रति पटवार आपके पास मौजूद है वह ले लीजिए। फिर वो लीजिए रजिस्टर-दाखिल-खारिज, जिसमें आपको खेवट और रकबे का सही पता लग जाएगा। अलावा इसके वो भी लीजिए ज़ेर रेहन, जिसका इन्द्राज रजिस्टर-दाखिल-खारिज में दर्ज है। यह रजिस्टर-बन्दोबस्त जो है इसमें एक बन्दोबस्त से दूसरे बन्दोबस्त तक का इन्द्राज होता है। चौथे मिसल हकियत जो पुरानी साठसाला या और बन्दोबस्त के टाइम में हुई, वह भी आपके पास मौजूद है और फिर वह रोज़नामचा देही ले लीजिए, जिसमें आपने सदर से पाए हुक्मों को देखा है और इसमें से नकल करके ज़मींदारान को इत्तिला कराई है। इसलिए मेरी राय में आप इन पाँच कागज़ों को ज़रूर ले जाना। ये कागज़ हर वक्त हरएक नक्शा छांटने व जो नक्शे आपने भेजे हैं, उनकी ताईद करने के लिए काम आवेंगे।" और यह कहकर मुंशी भगवतप्रसाद ने पैनी निगाहों से पटवारी हरदयाल की ओर देखा।

पटवारी हरदयाल को महसूस हुआ कि वह जिस जमात में अभी आया था, उसको मुंशीजी पहले ही पास कर चुके थे। तब उसे यह भी ज्ञात हुआ कि उसने अपने से एक बड़ी हस्ती को छेड़ दिया था। उसने तुरन्त कहा, "अब सब बात साफ हो गई।"

मुंशीजी ने सिर हिलाया जैसे आँखों से कहा हो—'बच्चा!'

पटवारियों ने तारीख मुकर्रिर से पहले अपने-अपने गाँव में चक्कर लगाने शुरू किए और ज़मींदारों को अपनी-अपनी ज़मीन का हिसाब बताने लगे। किसानों का यह हाल कि पटवारी की खुशामद होने लगी। पटवारी के लिए जगह-जगह से दूध आने लगा। किसान लोग अब पटवारियों के लिए रोज पेटिए डलवाने लगे। जब पटवारी गाँव में ठहरते तो ज़मींदार लोग अपने पास से खाने का इन्तज़ाम करते और इसका हिसाब वो शामलात देह की हिसाब से करते।

एक दिन कजौरीसिंह ने सन्तोष से देखा कि पटवारी हरदयाल हुसैनपुर के नक्शे रेहननामा को छांटकर गाँव में पहुँच गया। कजौरीसिंह की आँखें चमकने लगीं, क्योंकि हुसैनपुर की तीन-चौथाई ज़मीन रेहन रखी थी। सिर्फ एक-चौथाई ज़मीन किसानों के पास थी जिसमें से वो लोग अपनी गुज़र किया करते थे।

श्यौपाल का रिश्तेदार किशनपाल हुसैनपुर में एक जमीन जोत रहा था। वह ज़मीन किसी समय हिरदेराम के बाप की थी। जिस समय धनीराम मरा था और ज़मीन की देख-रेख करनेवाला कोई नही था, किशनपाल को हिरदेराम की माँ ने उस ज़मीन पर लगा दिया था और वह पैदा में से आधा इन लोगों को दे जाया करता था। हिरदेराम जब बड़ा हुआ तब भी वही परम्परा मुरव्वत के कारण चलती रही, क्योंकि उसकी माँ ने कहा कि बेटा जो अपनी मुसीबत में काम आया उसे काम निकल जाने के बाद इस तरह निकाल देना ठीक नहीं है। उन दिनों समाज के दूसरे मूल्य चलते थे, धर्म की बात होती थी, और हिरदेराम ने स्वीकार कर लिया था। माँ काफी दिन तक बनी रही और जब वह मरी तब दूसरा कानून बन गया कि जिसकी कई वर्षों से टीप हो उसको बेदखल नहीं किया जा सकेगा, इसलिए वह इस ज़मीन का मालिक बना हुआ था। असल में श्यौपाल का बाप पहले इस ज़मीन का मालिक था, लेकिन किसी मुसीबत में पड़कर उसने वह ज़मीन धनीराम के पास रेहन रख दी थी। लेकिन उसकी काश्त रेहन नहीं की। धनीराम ने ही अपने पराक्रम से उसको किसी तरीके से हटवाकर किशनपाल को वहाँ घुसवा दिया था। अब किशनपाल बूढ़ा था, उसके तीन जवान लड़के थे, पट्ठे—हरपाल, धनपाल और जीवनपाल। तीनों की बहुएँ थीं और बहुओं ने शाखा-पर-शाखा फैलाकर परिवार को विशाल कर दिया था। इसलिए और अधिक-से-अधिक धरती की आवश्यकता पड़ने लगी थी। किसी समय का सन्तोषी किशनपाल बुढ़ापे की सफेदी से रँगने पर पुत्रों की नई नैतिकता के चक्कर में पड़कर अब स्वार्थी हो गया था। बेटे नहीं मानते थे कि धरम के नाम पर ज़मीन छोड़ दी जाए। उनका दृष्टिकोण था कि ज़मीन मत छोड़ो। ज़मीन किसी की नहीं है, ज़मीन उसकी है जो उस पर मेहनत करता है।

कजौरीसिंह ने श्यौपाल की पटवारी हरदयाल से मुलाकात करा दी थी और श्यौपाल के मन में यह उत्कट चाहना पैदा हो गई थी कि किसी तरह वह ज़मीन मुफ्त हाथ में आ

जाए और किशनपाल को वह उसमें से हटा दे, क्योंकि हिरदेराम का रेहननामा पुराना पड़ चुका था। पर वह जानता था कि उसे साठ साल पूरे नहीं हुए थे और दूसरी ओर हिरदेराम के मन में यह तृष्णा जाग उठी थी कि किसी तरह वह ज़मीन मेरे हाथ में आ जाए ताकि उसकी भी कुछ हैसियत बन सके। हिरदेराम में यह तृष्णा जगाई थी राजाराम ने, गोविन्द के उपदेशों के कारण। राजाराम ने कहा तो उसे पहले विश्वास नहीं हुआ था, उसने मास्टर रामस्वरूप से जाकर पूछा। रामस्वरूप उसे पटवारी जैराम के पास ले गया और जैराम ने भी राजाराम को यह बात सुझाई थी क्योंकि कजौरीसिंह ने जैराम से कहा था, "पटवारीजी, अब तो चाँदी ही चाँदी है।"

"कहाँ वार्ड पंच साहब!"

"क्यों, हिरदेराम है तो सही। उसके पास पैसा भी है और इधर श्यौपाल भी तैयार है।"

जैराम इशारे को समझ गया था।

हिरदेराम के हृदय में आग भड़क रही थी। वह गोविंद के चक्कर में नहीं पड़ा था। उसने जब दामी को ले जाकर अस्पताल के डाक्टर को दिखाकर रिपार्ट ले ली थी और थानेदार गजराजसिंह के पास गया था, तो उसे देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ था कि चम्पो के डाक्टरी मुआइने की रिपार्ट गजराजसिंह के पास पहले से मौजूद थी। गजराजसिंह ने कहा था, "अच्छा, तेरी औरत को चोट लगी है, खून निकला है। लेकिन दूसरी औरत बेहोश पड़ी हुई है। इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब यह हुआ कि तूने डाक्टर को कुछ रिश्वत दी है या डाक्टर को पता नहीं है कि उसने दोनों पार्टियों को चिट्ठियाँ दे दी हैं।"

हिरदेराम अवाक् रह गया था। गजराजसिंह ने डाँटकर कहा था, "अपना केस बिगाड़ना चाहता है? सरकार तेरी तरफ से लड़ रही है। पैसे क्यों बिगाड़ना चाहता है? बहुत हो गए हैं? झूठे मुकदमें में चक्कर लगाता है? किसने सिखाया है तुझे?" दामी रोने लगी थी।

लेकिन औरत का रोना अपने मर्द पर असर डालता है, मुसीबतें डालता है। उसकी ज़िन्दगी को परेशान करके चक्कर लगवा सकता है। बाहर के लोग उसे तिरियाचरित्र-मात्र ही कहते हैं। इसलिए उसका असर नहीं होता। और हिरदेराम दामी को लेकर पराजित-सा लौट आया था, घर आने के तीन दिन बाद उसको यह ज्ञात हुआ था कि सम्मन जारी हो गए थे और हिरदेराम, राजाराम तथा उसके अन्य साथियों के ऊपर मुसम्मात चम्पो जौजे सियाराम नाई ने दफा 107 के तहत यह कहा था कि इन लोगों, यानी हिरदेराम, दामी, रामधन, रामकरन, मटरू, राजाराम, मास्टर रामस्वरूप आदि से उसे जान का खतरा था और अदालत ने इन लोगों को बुलवाया था। ज़मानत मुचलके इन लोगों के हो गए थे, वकील ने खर्चा भी ले लिया था और अपमान की एक लहर इस दल में व्याप्त हो गई थी, और हालांकि इन लोगों ने काफी बदनामी करने की कोशिश की कि चम्पो को राधे

भड़काकर ले गया था, जिससे उसका नाजायज़ ताल्लुक था, और मनोहर गूजर पुरानी दुश्मनी निबाह रहा था। बात यही तय थी कि चम्पो ज़बर्दस्त थी, क्योंकि उसपर सरपंच जैसे धींग का साया था। लोग कहते थे कि सरपंच से बैर लेना अपनी मुसीबत मोल लेना था। अपमान के इस घूँट को पीकर और दामी के वाग्बाणों से व्याकुल होकर हिरेदराम का दिल छलनी हो गया था और वह कहीं से बदला लेना चाहता था। जिस ज़मीन से उसे अब किशनपाल की नीयत बदल जाने से कुछ भी नहीं मिलता था, उस धरती के प्रति श्यौपाल के प्रयत्नों की बात सुनकर हिरदेराम का सारा विक्षोभ जैसे उधर ही केन्द्रित हो गया और उसने पटवारी जैराम को जाकर सिर झुकाया।

जैराम ने उसकी ओर देखा और कहा, “भई पटेल, मैं इसमें क्या कर सकता हूँ? तू तो हल्का पटवारी के पास जा।”

“अजी पटवारी जी, मुझे कुछ सलाह तो दे दो। पटवारी और परमात्मा की एक रासि होती है।”

जैराम ने उत्तर दिया, “रासिवाले दिन गए पटेल! देख, रावण को राम ने मारा, कंस को कृष्ण ने मारा, और गाँधी को गोडसे ने मारा। क्यों मारा? क्योंकि रासि से रासि कटती है और लोग कहते थे कि परमात्मा को पटवारी ने मारा। लेकिन नये ज़माने में पटेलों ने पटवारी को मारा, क्योंकि इनकी भी राशि एक-सी है। अब पटवारी के हाथ में क्या है? नौकर है। पहले की तरह धौंस से नहीं माँग सकता। अब तो बेदाम का चाकर है। जो हुकुम दोगे सो करना पड़ेगा।”

“कैसी बात करते हो पटवारीजी!” हिरदेराम ने पाँच रुपये का नोट उसके सामने रखते हुए कहा, “पटवारी अब भी मालिक है। मुझे यह बताओ कि क्या करना पड़ेगा?”

पटवारी ने कहा, “अरे, तू यह क्या करता है पटेल! एक गाँव में रहना और ऐसी बात?”

हिरदेराम ने कहा, “भैया भैया को नहीं देता पटवारी जी? योंही मेरी तरफ से भेंट समझ लो।”

“अच्छी बात है”, जैराम ने कहा, “तू मेरे पास रात को आइयो अकेले में। हुसैनपुर का पटवारी हरदयाल है, सरपंच का आदमी। मैं तुझे कोई तरकीब बता दूँगा।”

हिरदेराम जब घर लौट कर आया, दामी उत्सुकता से बैठी थी। उसने कहा, “क्या हुई जी?”

हिरदेराम ने सोचते हुए उत्तर दिया, “बिलैया की अम्माँ! रुपये की ज़रूरत पड़ेगी। सोच रहा हूँ कहाँ से आएँगे!”

दामी ने कहा, “जायदाद बनाने के लिए और आस-औलाद को बढ़ाने के लिए दुनिया करज लेती है, हमें क्या किसी से कुछ नहीं मिलेगा?”

हिरदेराम की आँखें चमकने लगीं। उसने कहा, "तो मैं मास्टर रामस्वरूप से पूछूँगा। बड़ा काबिल आदमी है। वह ज़रूर कोई न कोई राह निकालेगा।"

दामी ने कहा, "एक बात सुनकर आई हूँ।"

"क्या?" हिरदेराम ने पूछा।

"कैसे कहूँ, समझ में नहीं आता।"

"बता तो सही।"

"आज राधे आया था चम्पो के यहाँ। वह समझ रहा था कि मैं घर पर नहीं हूँ। चम्पो से कह रहा था कि कजौरीसिंह का दोस्त है बौहरा रूपदास।"

"कौन रूपदास? वह कंजूस, मक्खीचूस, हड्डी-निचोड़ा!"

"अरे, तुम्हें क्या करना है? जो अपने बखत पर काम आए, सो अपना भला।"

"तो कजौरीसिंह का दोस्त हमारे किस काम का?"

"यही तो तुम्हें नहीं मालूम! राधे कह रहा था चम्पो से कि कजौरीसिंह और चंचलसिंह में आपस ही आपस में मन-मुटाव हो गया है। वह समझता है कि उसके बेटे ने उसके बेटे को फंसवाया और और वह समझता है कि दूसरे के बेटे के कारण ऐसा हुआ। उस वक्त दोनों की पूंछ दब रही थी इसलिए ऊपर से मिले हुए थे, बाहर से। ज़मानत हो गई तो आधी दोस्ती तो खत्म हो गई। ऐसा भी सुना है कि माधोसिंह राज-गवाह बनने वाला है।"

हिरदेराम ने पुरुष-बुद्धि से सोचते हुए कहा, "अगर ऐसा होता तो माधोसिंह छूटता, नरायन क्यों छूटता?"

अक्ल के मैदान में हथियार डालते हुए दामी ने कहा, "अब यह तो मुझे नहीं खबर। ऐसा कुछ राधे कह रहा था।"

बात खत्म हो गई लेकिन हिरदे के मन में एक आशा-सी जगी और उस अँधेरे में रूपदास उजाले की किरण की झलक-सा दिखाई देने लगा। उसने एक बार मन-ही-मन अपनी सम्पत्ति को कूता। इस समय उसके पास साढ़े चार बीघा ज़मीन अपनी थी, दो बैल थे और दो भैंसें थीं। तीन गाएँ थीं जिनके अपने जेंगरे थे उठान। पत्नी के पास कुछ ज़ेवर भी थे। उसे हठात् ध्यान आया कि वह अपने को जितना गरीब समझता था, वह उतना नहीं था। और अगर यह ज़मीन हाथ आ गई तो फिर बात ही क्या है। वह यही सोचते-सोचते सोने लगा, "कजौरीसिंह और सरपंच में आपस में चल सकती है?"

उसने कहा, "सो गई?"

"नहीं।"

"राधे ने कैसे कहा चम्पो से कि चल गई है दोनों में?"

"सायद उससे गोविन्द ने कहा था।"

"अरे, वो बदमास है।"

"पर उसने कहा था हमसे कि रपट मत करो। हम न माने। क्या नतीजा निकला? वह तो हमारे ही भले की कह रहा था।"

"पर उसे क्या मतलब था?"

"वह तो कहता था कि सबका भला करना उसका काम है। गरीबों की मदद करता था, तभी तो उसे पुलिस की नौकरी से निकाल दिया गया।"

हुसैनपुर के पटवारी हरदयाल ने नक्शे रेहननामा को छांटकर गाँव में प्रवेश किया। हुसैनपुर की तीन-चौथाई ज़मीन रेहन रखी थी जिसमें से एक-चौथाई ज़मीन किसानों के पास थी, जिससे वो लोग अपनी गुज़र किया करते थे। किसान चौपाल पर पटवारी के पास आने लगे और अपनी ज़मीनों का हिसाब देखने लगे। हरदयाल ने माथा खुजलाते हुए कहा, "भाई, आप लोग बेकार टाइम खराब कर रहे हो।"

किसानों ने कहा, "नहीं पटवारीजी! हम आपको बिमुख न रहने देंगे। आपको तो मालूम है कि हमारा क्या हाल है! रोजगार बिना हम परदेश चले। वहाँ जाकर हमने कुछ पैदा करके बच्चों की गुजर की। आपको तो मालूम है कि जब हम गाँव में रहते थे तो नाज में और हमारे दाँतों में बैर पड़ गया था। आपने हमारा सारा हाल देखा है। लेकिन फिर भी आपकी सेवा में हम हर तरह से हाजिर हैं।" और उन किसानों ने दस-दस रुपये के हिसाब से उनको पाँच सौ बीस रुपये दिए, क्योंकि बावन आदमियों की ज़मीन रेहन रखी थी।

पटवारी ने कहा, "भाई! मैं पुराने ढंग का आदमी हूँ। मेरा तो सिद्धान्त यह है कि सन्तोष होना चाहिए, संतोषी सदा सुखी और तुम देखना कि मैं तुम्हारी कितनी सेवा करता हूँ।"

तारीख का समय निकट आ चुका था। हरदयाल अपने हल्के से चल दिया और किसानों को सूचना देता गया कि कल सुबह ही इन्फिकाक रेहन के दफ्तर में आना मत भूलना।

दूसरे दिन जब वह दफ्तर में गया, चेयरमैन साहब व मेम्बरान बोर्ड दफ्तर में आ चुके थे। सबसे पहले चपरासी ने हुसैनपुर गाँव के पटवारी को आवाज़ दी। पटवारी आवाज़ सुनकर अपने कागज़ात लेकर अदालत में हाज़िर हुआ। चेयरमैन बोर्ड ने नक्शा निकालकर अपने सामने रखा और पटवारी के कागज़ात से मुकाबला किया। उन्होंने हर एक रेहन का हिसाब लगाकर जितने रुपयों में फक करनी थी, रुपयों को इन्द्राज खाने कैफियत में दर्ज किया और मुरतहनान व राहनान को आवाज दिलवाना शुरू कर दिया। मुरहतनान ने अपने दस्तावेज रहननामा अदालत के सामने पेश किए। चेयरमैन साहब बोर्ड ने उनको देखकर पटवारी की छांट के हिसाब से मुकाबला करके रकम देना शुरू किया। इस तरह गाँव की अनेक रेहनों को फक करा दिया। ज़मीन में से तीन-चौथाई ज़मीन जो तीस साल से ज़्यादा

थी वह बिला पैसे दिए छूट गई। कुछ पैसे से छूटी और जो रकम जिस आसामी की, ज़मीन के बारे में मुरतहनान को दी गई, वह राहिन के नाम दर्ज करके किश्त कायम करके, तहसील में, वास्ते वसूली, लिस्ट भेज दी गई। अब सिर्फ एक बाकी रह गया था। उसमें यह तनाज़ा हो गया कि मुरतहनान ने अपने स्टाम्प जो अदालत में पेश किए, उनसे वह ज़मीन साठ साल से ज़्यादा हो जाती थी। गवर्नमेण्ट के आदेश थे कि जिस ज़मीन का साठ साल से जायद रेहन रखना साबित हो गया हो वह रेहन फक नहीं की जाएगी बल्कि उस मुरतहन की मिल्कियत कायम कर दी जाएगी। चेयरमैन साहब बोर्ड ने आदेश दिया—हम सब रेहन को फक नहीं करते। अभी और कागज़ देखेंगे। मुरतहनान आगे आया, वह हिरदेराम था। उसने फौरन पटवारी हरदयाल से नकल लेने की तैयारी कर दी। राहिन, जिसकी ज़मीन गिरवी रखी थी, उसका नाम था श्यौपाल।

पटवारी हरदयाल को सारी बातें याद आ गईं। कजौरीसिंह, सरपंच साहब और गोविंद उसके नेत्रों के सामने घूम गए। जैराम की कानों में पड़ी सलाह उसके मानस में फिर से जाग उठी।

हिरेदराम विनीत था, किंत हरदयाल को उसके व्यवहार में एक औद्धत्य-सा दिखाई दिया। उसने मन-ही-मन कहा, “कल का भुक्कड़ आज साह हो गया।”

किन्तु उसने अपना भाव प्रकट नहीं किया। हिरदेराम ने उसकी ओर जिज्ञासा से देखा। उसके मन में सन्देह भी था और अविश्वास भी।

“पटवारीजी!”

“कहो पटेल!”

उसके स्वर को सुनकर हिरदेराम समझ नहीं पाया कि उस स्वर से क्या अर्थ लगाए। पटवारी हरदयाल ने हिरदे की ओर देखा।

हिरदे ने कहा, “पटवारीजी, आप मेरी नकल तैयार कर दीजिए और अपनी भेंट को ले लीजिए। लेकिन आपके पास मेरी विनती है कि आप किसी तरह से नकल में रहन को जायद साठ साल बतला दो तो अच्छा है, क्योंकि आपको यह पता है कि जिन ज़मीनों के पट्टेददार, जिनको हम काश्त करने के लिए ज़मीन उठाते थे, वे लोग पट्टों को छप्पर छान में रख जाते थे। बखत पर भेज भी पैदा नही होती थी। इस ज़मीन में हमारे बाल-बच्चे बिक गए। आज राज ने ऐसा कानून बना दिया है कि बिना किसी दावे के जमीन छुड़वा रही है।”

पटवारी ने उसकी ओर घूरकर देखा और कहा, “हिरदे पटेल, सुरगवासी पटेल धनीराम मिल्कियतदार थे, ऐसा मैने भी सुना है। श्यौपाल के बाप ने यह ज़मीन धनीराम के पास रहन रखी थी। धनीराम के गुज़र जाने के बाद धनीराम की बेवा ने, यानी की तुम्हारी माँ ने, “जो धन जाता देखिए सो आधा दीजे बाँट, के उसूल से श्यौपाल के खानदान का एक दुश्मन ढूँढ़कर इस किशनपाल को अधबटाई पर खेत दिया था। बूढ़े किशनपाल ने न जाने किस सिलसिले में, हो सकता है किसी पटवारी को घूस दी हो, टीप अपने नाम करा

ली। अब तुम देख लो। अगर यह ज़मीन छूट भी गई तो तुमको मिल जाएगी। और अगर श्यौपाल को मिल गई तो भी किशनपाल खेत नहीं छोड़ेगा। ऐसी सूरत में तुम दोनों क्यों लड़ना चाहते हो? लोग कहते है कि पटवारी बुरा आदमी होता है। लेकिन मैं तुमको नेक सलाह देता हूँ। तुम जानते हो, किशनपाल से तुम टक्कर नहीं ले सकते। उसके पास तुमसे ज्यादा माल है।"

हिरदे को उसकी वह नेक सलाह दिल में बर्छी की तरह लगी। पटवारी ने उसको बड़ी सफलता से मुकदमा लड़ने लिए मज़बूर बना दिया था। हिरदे ने कहा, "पटवारी जी महाराज, मसल मशहूर है कि एक डिप्टी साहब के घर के पास रोज रात को जमींदार-किसान बैठकर गाना गाया करते थे, सो डिप्टिनजी की नींद उचाट हो जाती थी। डिप्टी साहब ने चपरासी भेजा तो कोई न हटा। तहसीलदार से कहा तो तहसीलदार साहब के दबदबे से कोई न हटा। जब किसी से भी कुछ न हो सका तो पटवारीजी आए और तहसीलदार साहब ने उनसे कहा कि पटवारीजी महाराज, कैसे करें? डिप्टी साहब रोज गुस्सा होते हैं, मगर ये गाँव वाले जाते ही नहीं।" यह कह कर हिरदे ने एक साँस ली और सुनाने लगा, "तो पटवारीजी ने कहा—हुजूर, यह क्या बात है! यह भी कोई मुश्किल है! कल ही से लेओ। ऊधम-दंगा बन्द हो जाएगा।

"सवेरे के बखत पटवारीजी बस्ता बगल में दबाए जो खेत की मेंड़ से निकले तो बस्ता खोलके कुछ नक्शा निकाला और इधर देखा, उधर देखा कुछ नाप-तौल सी कर ली एक फीते से और वहाँ हल चलाते एक किसान को बुलाकर बोले—यह खेत किसका है?

"उसने कहा—श्यामलाल का है।

"पटवारीजी बोले—अच्छा, तेरा नाम श्यामलाल है?

"किसान बोला—नहीं, मेरा नाम तो रामलाल है। वो खेत श्यामलाल का है, डौर के इधर का मेरा है।

"पटवारीजी मुस्कराए और बोले—अरे नादान, यह तेरी डौर यहाँ कैसे पड़ी है? यह होनी चाहिए थी एक हाथ इधर। तुझे मालूम भी नहीं। श्यामलाल ने अपना खेत कब बढ़ा लिया। बड़ा चालाक मालूम देता है यह श्यामलाल, जिसने तुझे उल्लू बना दिया है।"

"सो महाराज रामलाल को आग लग गई और बोला—तो पटवारी, अब कैसे करूँ?

"पटवारीजी ने बस्ता उठाते हुए कहा—अब मैं बता दूँ तो तू कहेगा सबसे कि पटवारीजी ने ऐसा बताया।

"रामलाल बोला—महाराज, बता दो, बाल-बच्चा गुनगाएँगे। मैं किसी से नहीं कहूँगा।"

"पटवारीजी ने बस्ता बगल में दबाकर चलते हुए कहा—खोदके पटक दे डौर और दरखास्त दे दे कि खेत की फिर से नपाई होनी चाहिए। सारा मामला साफ हो जाएगा।

"सांझ के बखत श्यामलाल तो हल लेकर घर गया, रामलाल ने डौर खोद दी। दोनों तरफ की थोक के लोग आ गए। जहाँ रात को गाने-बजाने होते थे वहाँ लाठी चली और उस दिन से गाना-बजाना बन्द हो गया, मुकदमे चलने लगे और तहसीलदार साहब और डिप्टी साहब ने कहा—भई पटवारी, तेरी ताकत के बराबर दुनिया में कोई ताकत नहीं। सो महाराज, मैं तो तुम्हारी सरन आया हूँ। बुरा तो मानना मत, आप चाहें तो सब काम हो सकता है। अब यह साल दो साल से ही कुछ पैदा होने लगी है और अबकी साल यह ज़मीन निकल गई तो फिर क्या बचा? सिर्फ ये ही इकतीस बीघा दो बिस्वे मेरे पास रह जाएगी। बाकी वह साढ़े चार बीघा है वहाँ गाँव में डूंमरपुर में। किसी तरह यह मेरे हाथ में आ जाए तो जनम-जनम तक तुम्हारा गुलाम बना रहूँ। पटवारीजी! पटवारीजी महाराज! एक बार यह जमीन मेरे हाथ में आ जाए तो आपकी कृपा रहते किशनलाल के भी पैर उखड़ जाएँगे। और आप न मानो तो मेरे पास साठ साल का सबूत मौजूद है। मुझे चिन्ता यह है कि इस बखत राज कर्जदारों का पच्छ कर रहा है।"

पटवारी ने उसकी ओर देखा और मन-ही-मन कहा—अच्छा, चालाक भी बनता है और हमारे सामने! लेकिन उसने ऊपर से मुलायमियत से कहा, "हिरदे पटेल तुम जो कह रहे हो ठीक है, बिलकुल ठीक है; लेकिन तुम यह बतलाओ, मैं कागज़ के खिलाफ कैसे जा सकता हूँ? मेरे कागज़ में साठ साल से कम है। मैं तो अपने कागज के मुताबिक ही नकल दे सकता हूँ। वैसे तुम्हारे पास माकूल सबूत हैं, तुम्हारी रहन साठ साल से ज्यादा साबित हो जाएगी तो श्यौपाल छुड़ा नहीं सकेगा। चिंता करने की जरूरत नहीं है, मैं तुम्हें नकल तैयार करके दे दूगा। और वैसे जो तुम कहते हो कि सरकार इस वक्त ज़मींदार और किसानों का पच्छ कर रही है, सो ठीक बात है। सरकार हमेशा गरीबों का पच्छ करती है। देख लो, हुसैनपुर की सालिम ज़मीन रहन रखी हुई थी, क्योंकि उन लोगों को वक्त पर भेज भी पैदा नहीं होती थी। भौतेरे जमींदार रहन रख-रखकर परदेस भाग गए थे आज उनकी फिर ईश्वर ने सुनी है।"

हिरदे ने बहुत ही आत्मीयता दिखाते हुए कहा, "अच्छा पटवारीजी! आप ही बता दो, मैं कब आ जाऊँ?"

पटवारीजी ने बहुत उड़ती हुई नज़र से देखते हुए कहा, ये ही तीन-चार दिन बाद।"

हिरदे के जाने के बाद श्यौपाल पटवारीजी के पास आकर पैरों पर सिर रखकर बैठ गया।

"अरे भई उठ-उठ ऐसा क्यों करता है नम्बरदार!"

श्यौपाल ने कहा, "पटवारीजी, आप ही मेरे माता-पिता हो, आपको मालूम है जैसी मेरी दसा है।"

पटवारी हरदयाल ने मुस्कराकर कहा, "तुम्हीं वो श्ययौपाल हो ना, जिसकी दस हज़ार रुपये की हैसियत तस्दीक की गई है?"

श्यौपाल ने कुछ लज्जित होकर कहा, "अजी महाराज, इन बातों का क्या लेनादेना! ये तो सरपंच साहब के खेल हैं। जिस पर उनकी नज़र पड़ जाए उधर दौलत। वरना मेरी क्या आपसे छिपी है! मैं तो आपसे यह पूछने आया हूँ कि मेरी यह इकतीस बीघा दो बिस्वा ज़मीन छूट जाएगी या नहीं? अगर नहीं छूटती है तो मेरा मुकदमा लड़ना फिजूल है, क्योंकि मेरे पास पैसा भी नहीं है। वैसे पटवारीजी! अबकी साल पैदावार अच्छी है। किसनपाल ने तीन बीघा में बाजरा बो दिया है, चार बीघा में ज्वार और पाँच बीघा में तिल कर दिए हैं और एक बीगा दो बिस्वा में मवेशियों की चरी की है।"

उसने और निकट सरककर कहा, "पटवारीजी, आप बताओ, मैं क्या करूँ? कल हिरदे ने कहा था कि भाई श्यौपाल, तेरा मुकदमा लड़ना बेकार है, ज़मीन तेरे हाथ नहीं रह सकती, क्योंकि साठ साल हो चुके हैं, लेकिन मैं तुझे यह बतला देता हूँ कि राज के आदमी जरूर मुकदमा लड़वाएँगे और खास तौर पर...अब मैं क्या कहूँ पटवारीजी, उसने ऐसे अलफाज कहे।"

"क्या कहा? क्या कहा?" पटवारीजी ने उत्सुकता से पूछा

"अब और तो क्यों सुनते हो, बस इतना ही सुन लो। उसने यह कहा कि पटवारी को तो मुकदमा लड़वाने में मजा आता है।"

पटवारी ने कुछ नहीं कहा। सोचता रहा, फिर बोला, "अरे, यह अपनी-अपनी समझ है। वह ऐसा समझता है तो वह यह समझे। तुम जानते हो, भूखा है, नंगा है, हमको खबर है। बौहरे रूपदास से कुछ ले आया है तो मलक रहा है। गुंसाईंजी कह गए हैं—'छुद्र नदी भरि चलि उतराई।' अब उसे अपने बाप की जायदाद याद आ रही है। कर लेने दो उसे अपनी कोशिश।"

श्यौपाल ने कहा, "मैंने तो महाराज, उससे कह दिया है, भई, मैं मुकदमा क्यों लड़ूँगा? मुझे तो मुकदमा लड़ने से डर लगता है। मैंने आज तक मुकदमे नहीं लड़े हैं। मैंने तो किसी जबरदस्त के पीछे खड़े होकर गवाही भले ही दे ली हो, किसी के दबाव में। मेरे पास खाने को अच्छी तरह नाज भी नहीं है। मुकदमा तो वही आदमी लड़ सकता है जिसके पास पैसा हो। और मैंने यह भी पूछा पटवारीजी, कि पटवारी को क्या मिलेगा जो वे मुकदमा लड़वाएँगे? तो वह बोला, 'अरे, वो हरदयाल बड़ा घाघ है। उसे उस गाँव में पटवारी का काम करते करीब ग्यारह साल हो चुके हैं। गाँव की नस-नस से वाकिफ है और किसनलाल उसका यार है। इन दोनों ने मिलकर ही गाँव में से खूब पैसा खाया है।' अब तो वह यों कहने लगा है, पटवारीजी, कि किसी जमाने में उसके बाबा के पास सालिम हुसैनपुर गिरवी रखा हुआ था। पटवारी मेरे बाप से सौ-डेढ़ सौ रुपइया साल खाया करता था। और उसने मुझसे यह कहा कि जो तेरे पास ज़मीन कम है, तो इस जमीन में से पाँच बीघा जमीन दे दूँगा। तू चिन्ता मत कर। पटवारी महाराज! वह ऐसा कह रहा था।"

हरदयाल ने अविचलित रहकर कहा, “श्यौपाल, यह सब ठीक है। हिरदे पटेल बहुत पहुँचा हुआ आदमी है। उसकी दम में आने की ज़रूरत नहीं है। हम सब सोच लेंगे। उसको दावा करने दो। तुझको एक काम करना है, वह यह कि रामबकस नम्बरदार का अपना दोस्त बनाए रखना वह आदमी तेरे काम आएगा।”

श्यौपाल ने कहा, “मुझे तो महाराज, आपकी और भगवान की दया चाहिए। मुझे तो फिर कोई चिन्ता नहीं है। गाँव को तो मैं अपने माफिक कर लूँगा। रही रामबकस नम्बरदार की बात, सो उसकी मेरे ऊपर पूरी मेहरबानी है। उस बेचारे ने तो मुझको बैसाख के लिए सरसों करने के लिए दस बीघा खेत दे दिया है। बिलकुल यह डूंमरपुर या हुसैनपुर की मेंड़ पर समझो, बीच में लगता-लगता।”

हरदयाल ने बीड़ी सुलगाते हुए कहा, “तुम ऐसा करना श्यौपाल, कि हिरदे पटेल के पास चले जाना और कहना कि जमींदारजी, मेरे पास रकबा कम है, आप मुझे पाँच बीघा ज़मीन दे देंगे तो मेरी गुजर अच्छी तरह हो जाएगी। और उससे इधर-उधर की खुशामद की दो-चार बात करना। अगर वह तैयार हो जाएँ...” लेकिन फिर पटवारी ने सोचते हुए कहा, “किशनपाल के रहते तुम रकबे पर कब्ज़ा कैसे करोगे? तुम तो उससे यों कहो, “पटवारी ने पलटकर कहा, “कि भाई हिरदेराम, वह ज़मीन तो तू ले ले, मुझे तू इस साढ़े चार बीघा में से दो बीघा दे दे। बस, मेरी तो छाती इसमें ठण्डी हो जाएगी। और पटवारी हल्का जैराम से मिलो और टीप चढ़ने का बखत आ रहा है। सरपंच साहब से जोर डलवाओ और उसे खुश करो। और यहाँ का काम तो मैं तुम्हारा समझ लूँगा। इसकी पटेलाई की ठसक निकाल दो, दो बीघा गाँव के गाँव में दे जाएगा। कैसी रही? हाँ, एक बात है, अगर वह कुछ लिखवाना चाहे तो लिख मत देना।”

श्यौपाल ने कहा, “वाह पटवारीजी महाराज, क्या बात बतलाई है! जैसा आपने कहा है, मैं वैसा ही करूंगा।”

रात का वक्त था। हिरदे ने एक बार बौहरे रूपदास से लाए रुपये फिर गिने। बच्चे सो रहे थे। दामी लेटी थी। उसने लेटे-लेटे कहा, “मेरे पीहर में एक कोरी था, सण्ड-मुसण्ड—न माँ, न बाप। कोई उसका ब्याह नहीं करता था। यहाँ तक कि भूखों मरने की नौबत आ गई और गाँव से भाग गया। चार-छह महीने पीछे लौटकर आया तो रात को पत्थर पै बजा-बजाके रुपइया गिनता। आधी रात को जब रोज ही गिने इस तरह उसने रुपइये, तो तुम जानो, कोरी की जात बड़ी सीधी होए। सीधी इत्ती कि एक बेर कोरियों ने नाज पैदा किया। पंडत ने कह दी कि कहतसाली पड़ेगी। तो पंच इकट्ठे हुए और बोले कि भय्या, पंचों का हुक्म है कि सब नाज इकट्ठा कर लो। सब कोरियोँ ने नाज इकट्ठा कर लिया। तब जन-बच्चे का हिसाब लगाया गया और देखा कि नाज ग्यारह महीने के लिए पूरा था। तो फिर

बड़े-बूढ़े बैठ गए और बोले कि पंचो, अब कैसे होए? अकाल पड़ेगा पूरे साल-भर और नाज है ग्यारह है महीने का। तो पंचो ने यह फैसला किया कि पहले महीने सब लोग भूखे रह लें, आगे के ग्यारह महीने चैन से खाएँगे। सो नतीजा यह निकला कि एक महीने कोरी भूखे रहे और सब के-सब मर गए।" दामी ने साँस ली और कहती रही, "सो ऐसी सूधरी जात। फौरन पड़ोस में कनबतियाँ चलीं कि भई, इन्दर का छोरा तो भौत धन कमा लाया है। जब बात चली तो अड़ोस-पड़ोस में फैली और लड़कीवाले मंडराने लगे। एक लड़कीवाला घर पर पहुँचा और उससे बोला—भय्या! मेरी छोरी से ब्याह कर ले।

वह बोला—भैय्या, मेरे पास ब्याह करने को क्या है! मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। बहुत जोर लगाऊँगा तो एक रुपइया निकलेगा घर में। मैं किस बिरते पै ब्याह कर लूँ?

अड़ोसी-पड़ोसी बोले—ऐ! बनै मत। सो हम सब कर दिंगे। चल! "वह वाला कह रहा है। बड़ा-बूढ़ा है। कही मान जा।

वह बोला—भैय्या, मैं तो एक भी पैसा खर्च नहीं करूँगा ब्याह में। मुझे तो ब्याह ही नहीं रहा।

सो लड़कीवाला ठहरा गरजमन्द। सारे पैसे उसने लगाए और ब्याह हो गया। ब्याह की रात के बाद जब वह घर लौट आया तो बहू माल ले आई, थोड़ा-बहुत जो कोरियों में चलता है सो। अब के से जमाने के कोरियों की बात नहीं कह रही हूँ। तब की कह रही हूँ जब कोरिनिया ऊंटकटेर का तेल लगाकर दिया जलाती थीं और मालियों में आज की सी पंचमेल मिठाई नहीं, चावल-बूरा चलता था ज्योनार में। तो चोरों ने हमला किया रात को और बहू को और उसको बाँध दिया। छाती पर कटार रख कर बोले—ला, निकार रुपइया। तो वो घबरा गया और उसने रुपइया निकार के दे दिया। चोरों ने चपत दी और कही—बदमास, झूठ बोलता है। बाकी के कहाँ गए जो रात भर ठनाठन गिनता था? सो वो अपनी बहू से बोला—दे-दे री यह पत्थर और उठाकर बाँध दे इसे इनके संग। और चोरों से बोला—पत्थर पे बजाते जाओ तो एक रुपइया हजार बन जाता है। समझे?"

हिरदे अपने ध्यान में तन्मय था। उसने कुछ सुना, कुछ नहीं सुना। बोला, "हाँ, तो कैसे कही है ये बात?"

"कैसे क्या कही, गिन रहे हो तो रात में अपना एक रुपइया पै बार-बार। इसी से कहती हूँ।"

हिरदे हँसा और बोला, "एक रुपइया है ये। पूरे ले आया हूँ, जित्ते मैंने कहे थे।"

दामी ने हँसकर उत्तर दिया, "अब ऐसे मत करना कि खरे-खरे ऱख लो और खोटे-खोटे फेंक दो कि सड़ गए। तुमने सुनी है कि नहीं सुनी है?"

हिरदे मुस्कराया और बोला, "जे कौन-सी बात है? तुझे बात करने का बड़ा सौक है।"

दामी ने कहा, “एक कोरी था। उसके पास हो गए पैसे इकट्ठे। बगल में रहै एक जाट। एक दिन जाटनी बोली कि जा, कोरी के पास बहुत रुपइया हैं।

“जाट ने नहाते हुए कहा—अरी, तू क्यों घबराए, पखवारे के पीछे सब अपने ही समझ।

“जाटनी बोली—वो कैसे?

“जाट बोला—देख लीजो।

“सो उजीता पाख आया तो कुएँ के गौन पै खड़ा हो गया जाट, और ले हाथ में सूप, जा में धरे सौ रुपइया और फटकारने लगा। बीस-बाईस रुपइया गौन में गिरे नीचे, बाकी गिर आए पास और घर चला आया। पास के रुपइया उठाकर गौन के गौन में छोड़े। कोरिनिया गई कुएँ पै पानी भरने, तो गौन में चंदा की उज्यारी में रुपइया ऐसे चमके दिखे जैसे चंदा के छोटे-छोटे टूक उतर आए हों। झट कोरी को बुला लाई और बोली—ओ मेरे कमेरे, देखियो तो सही, जे क्या है?

“कोरी ने आके देखा तो उसे भी बड़ा अचरज हुआ। उसने सोचा, हो न हो यह जाट का ही काम हैं। तो उससे जाकर बोला—फौजदार साहब, जे रुपइया क्यों छोड़ दिए?

“तो जाट ने पड़े-पड़े भीतर से कही—अरे, तू उनकी कहता है जो मैं गौन में छोड़ आया। वो तो सड़ गए।

“कोरी ने कहा—रुपइया कैसे सड़ैं?

“जाट ने किरिया बताई। और कोरी ने भी यही किया। बेचारे कोरी ने रुपया बरसाए तो भौत-से लुढ़कके गौन में चले गए।

“कोरिनिया बोली—ये तो भौत लुढ़क गए।

“कोरी बोला—लोभ मत कर। अच्छे-अच्छे बटोर ले।

“सो तीन-चौथाई तो गौन में पड़े रहे और बाकी के रुपये वे घर ले गए। उधर जाटनी घर से निकली और वह वहाँ से सब रुपइये उठाकर घर ले आई।

“तो मैं ये पूंछू कि तुम तो खरे-खरे लाए होगे, खोटे तो नहीं लाए होगे?”

हिरदे अपनी पत्नी के इस स्वभाव से सदैव मुग्ध रहता था।

दामी फिर बोली, “बौहरे ने फिर लिखा-पढ़ी नहीं कराई?”

“सो क्या छोड़ देता?” हिरदे बोला।

“पक्की रसीद लिखाई होगी?” दामी ने फिर पूछा, “ठाकुर साहब वाली रसीद लिखवाई है?”

हिरदे ने कहा, “सो कैसे?”

दामी ने फिर कहना शुरू किया, “एक ठाकुर साहब थे। सो एक दिन कुम्हार उनके घर आया। तभी ठाकुर साहब का बच्चा रोने लगा। ठाकुर साहब ने कहा—भई परजापत, तू हमारे कुंवर को पाँच सौ माटी के रुपइया बना दीजो।

"कुम्हार बोला—जरूर महाराज, जरूर बना दूँगा।

"अब अगले दिन से जो ठाकुर साहब खेत पै चले घोड़े पै, तो कुम्हार के घर के पास पहुँचकर हाँक लगाई—क्यों भाई, परजापत, रुपइया नहीं पहुँचे अभी तक।

"और परजापत टालमटोल करके कहता—बस पहुँचवा दूँगा, पहुँचवा दूँगा, आज पहुँच जाएँगे, नहीं तो कल पहुँच जाएँगे।

"उसे आलकस लगै, माटी के रूपइया बनाने में। यों महीना-डेढ़ महीना निकल गया। पास-पड़ोस के लोग रोज सुनते। एक दिन ठाकुर साहब निकले तो बोले—अरे, तू अजीब आदमी है। हम तुझसे कब से रुपइया माँगते हैं, रुपइया नहीं पहुँचे। तूने आज तक रुपइया नहीं पहुँचवाए!

"कुम्हार ने दिल्लगी समझी और कहा—महाराज ठाकुर साहब, पाँच सौ रुपइया का इन्तजाम का एक दिन में होय?

"ठाकुर साहब चले गए। पास-पड़ोस के लोगों ने यह बात भी सुन ली। महीना-भर बाद कारिन्दा आ गए ठाकुर साहब के। वो बोले—ला भाई, ठाकुर साहब ने रुपइया मँगवाए हैं।

"कुम्हार बोला—अभी तो बने नहीं हैं।

"कारिन्दा बोला—अबे, तेरे बाप ने रुपइया बनाए थे?

"तू-तू मैं-मैं हुई, तो सारे पड़ोसी इकट्ठे हो गए और सब कहने लगे—भई परजापत, काहे को दिल्लगी करै? इस जनम में न देगा, अगले जनम में चुकाने पड़ेंगे।

"कुम्हार बोला—भय्या, मैं तो माटी के रुपयों की बात कर रहा था।

"लोग बोले—अरे, अरे! क्यों दिल्लगी करै? इतने बड़े ठाकुर तुझसे माटी के रुपइया की बात करते होंगे डेढ़ महीने से?

"सो तुम सोच लो, कहीं ऐसा ही तो मामला नहीं। कुम्हार को सारे रुपइया चुकाने पड़े। सारा गाँव उसके खिलाफ हो गया।"

हिरदे हँसा। आज कई दिन बाद हँसी घर में लौटकर आई थी, क्योंकि उनको ज़मीन मिलने की आशा थी। आज बौहरे ने रुपये उधार दिए थे। दो सौ उसे देकर तीन सौ पर दस्तखत करवाए थे, यह बात हिरदे पटेल नहीं जानता था। और बौहरे रूपदास के चक्रब्याज से छूट जाना पीढ़ियों का काम था। इस समय उसकी इधर-उधर के रेहन रखी हुई ज़मीन मुफ्त में चली जा रही थी, इसलिए उसे आक्रोश भी था। यह एक मनोवैज्ञानिक कारण था। उसके साथ उसने हिरदे को रुपये इसलिए दिए थे कि हिरदे इस घटना मैं बौहरे का प्रतिरूप था, किसान नहीं था।

सुबह हो गई। हिरदे पटवारी हरदयाल के सामने आ बैठा।

"पटवारीजी, राम-राम!"

राम-राम पटेल जी। आओ, गाँव के क्या हाल हैं?"

हरदयाल का प्रेम देखकर हिरदे के मन में शंका उत्पन्न हो गई। बोला, “हरदयाल महाराज, नकल तैयार हो गई हो तो मुझे दे दो, क्योंकि मुझे कल दावा करना है।”

पटवारीजी ने उदास स्वर से कहा, “पटेलजी, नकल अभी पूरी तैयार नहीं हुई, क्योंकि मेरे पास कागज़ात अभी अधूरे हैं। मेरी मिसल हकीयत मय रजिस्टर-दाखिल खारिज तहसीलदार साहब ने देखने को मँगाए थे। आज उसको तीन दिन हो गए हैं, उन्हीं के पास हैं और मेरे पास ज़्यादा काम होने की वजह से मैं उनके पास नहीं जा सका। अब आप चिन्ता मत कीजिए, मैं आपको बहुत जल्द बनाकर दे दूंगा।”

हिरदेराम के चेहरे पर गुस्सा छलक आया। बोला, “पटवारीजी, आप मुझे क्यों बहकाते हो? नकल आपको जरूर देनी पड़ेगी। लेकिन मैं यह अच्छा नहीं समझता कि पटवारियों को नाराज करके नकल ले जाऊँ, वरना आप मेरी नकल तो एक मिनट में तैयार करके दे दोगे।”

पटवारी ने शांत स्वर से कहा, “पटेलजी, आप क्या खरैरी खाट पर सोकर आए हो या किसी दूसरे का गुस्सा मेरे ऊपर निकाल रहे हो? सोचो तो सही, मैं एक छोटा-सा नौकर और आप बड़े ज़मींदार। भला मैं आपका मुकाबला कर सकता हूँ?”

हिरदेराम के मन में अहंकार ने तृप्ति पाई और चिरन्तन का दरिद्र इन शब्दों की मार को नहीं सह पाया। अतः गर्व से कह उठा, “पटवारीजी, यह सब कुछ ठीक है, लेकिन मैं आपसे फिर विनती करता हूँ कि अगर आपको नकल देनी है तो मुझे आज दे दीजिए और अगर मुझे नहीं देनी है तो इन्कार कर दो।”

पटवारी ने कहा, “नहीं, नहीं, पटेलजी, मैं नकल आपको ज़रूर दूँगा। आप चिन्ता न करो। लेकिन आप देखिए तो सही, मेरे पास कितना काम है! मुझे मरने तक की फुरसत नहीं मिलती।”

हिरदेराम ने ऐंठकर कहा, “यह सब कुछ ठीक है पटवारीजी, लेकिन बहाना बनाने से क्या मतलब? इस वक्त सब पटवारियों के पास काम है, आपके अकेले के पास थोड़े ही है, और सब लोग भी तो अपना काम कर ही रहे हैं। और जो ज़मींदार का काम आता है, उसको भी संग-संग पूरा कर ही रहे हैं।”

हरदयाल ने मीठी चुटकी लेते हुए कहा, “पटेलजी, आप बहुत गुस्सा हो गए हैं। मैं अभी तहसीलदार साहब के मकान पर जाता हूँ और कागज़ात को लाकर नकल तैयार करता हूँ।”

हरदयाल पटवारी ने बस्ता बाँधा और तहसीलदार साहब के मकान पर पहुँच गया। वहाँ जाकर मालूम हुआ कि तहसीलदार साहब दौरे पर तशरीफ ले गए हैं और जिस कमरे में तहसीलदार साहब रहते हैं, उसी कमरे में कागज़ात रखे हैं और जो चपरासी तहसीलदार साहब के मकान पर मौजूद था, उसने कहा कि उस कमरे का ताला बन्द करके ताली खुद तहसीलदार साहब अपने साथ ले गए हैं।

पटवारी वापस आ गया। उसको खाली हाथ देखकर हिरदेराम ने कहा, "पटवारीजी! आप तो खाली हाथ आ गए। कागजात की बाबत आप कह रहे थे सो कहाँ हैं?"

पटवारी ने शान्ति से उत्तर दिया, "पटेलजी, तहसीलदार साहब दौरे पर तशरीफ ले गए हैं। उनके कमरे का ताला बन्द है, इस वजह से कागज़ नहीं मिल सके और मुझे खाली हाथ वापस आना पड़ा।"

हिरदेराम ने कहा, "पटेलजी, आप मुझे नकल देने में टालमटूल कर रहे हो। अगर आपको देना हो तो मैं आज ठहर जाऊँ। शायद तहसीलदार साहब आज ही वापस आ जाएँ।"

पटवारी ने कहा, "आप ठहर जाओ।"

कचहरी का टाइम होनेवाला था। हिरदेराम पटवारी के यहाँ से चला गया। पटवारी अपने नित्य-नेम से फारिग होकर तहसील चला गया। अभी वह अपनी सीट पर बैठकर काम शुरू करनेवाला था कि थोड़ी देर बाद गिरदावर कानूनगो के यहाँ से चपरासी आ गया और बोला, "आपको गिरदावर साहब बुला रहे हैं।"

पटवारी तुरन्त गिरदावर के पास पहुँचा। गिरदावर ने आदेश दिया, "पटवारीजी, आप अपने हल्के में फौरन जाइए और गाँववालों को सूचना दे दीजिए कि सरकार से बैल की तकावी व कुएँ की तकावी का बजट आ गया है। इसलिए जिस काश्तकार को तकावी लेनी हो वह तहसील में आकर दरख्वास्त पेश करे, वरना फिर बजट खतम हो जाएगा।"

पटवारी हरदयाल ने आदेश की कापी ली और इत्तला करके अपने हल्के को जाने की तैयारी करने लगा और तहसील से चला गया। घर जाकर उसने थैला लिया और हल्के का रास्ता नापा। हिरदे तहसील में बैठा रहा। उसका भाग्य अच्छा था, ग्यारह बच्चों के बाप तहसीलदार कटारा उसी वक्त आ पहुँचे। उनको देखकर हिरदेराम तुरन्त पटवारी को खोजता हुआ पहुँचा; लेकिन पटवारी उसको अपनी सीट पर नहीं मिला। हिरदेराम ने इधर-उधर पूछा, लेकिन पटवारी का कोई पता नहीं चला। अन्त में उसने साहस किया और गिरदावर से जाकर पूछा।

गिरदावर काम में व्यस्त था, फिर भी उसने कहा, "पटवारी से क्या काम है?"

हिरदेराम ने कहा, "गिरदावर साहब, मुझे कुछ खेतों की नकल लेनी है इसलिए मैं उनकी तलाश में हूँ।"

गिरदावर साहब ने दिलचस्पी ली और बोले, "वह अभी आध घण्टे पहले अपने हल्के को गया है। कई ज़रूरी सरकारी काम थे।"

हिरदेराम का दिल टूट गया। तहसील के दरवाजे पर चुपचाप बैठकर वह सोचने लगा—क्या करूँ, क्या न करूँ! चार-पाँच रोज डोलते-डोलते हो गए, न कोई घर का काम पाता हूँ, न खेत का। इस तरह से तो मेरी नकल कभी नहीं मिलेगी। पटवारी रोज परेशान

कर रहा है। और यह सोच-सोचकर उसे क्रोध आने लगा। कल तक वह अपनी सारी मजबूरियों को पी जाया करता था, लेकिन रूपदास के पैसे ने उसमें एक अजीब किस्म का दुस्साहस भर दिया था। उसे यह लग रहा था कि उसके पास एक ऐसी ताकत थी, जिससे वह सब कुछ कर सकता था। लेकिन वह यह नहीं जानता था कि दो सौ रुपये की रकम एक बहुत ही नगण्य पस्तु थी। उसने जीवन में पहली बार इकट्ठे दो सौ रुपये देखे थे और इसलिए उसके पांव डगमगा गए थे। अभी वह सोच ही रहा था कि एक व्यक्ति उसके पास आ गया। पतला-दुबला, अरायज़नवीस भानालाल। जैसे वह बड़ी देर से लालसा लगाए घूम रहा था कि कोई नया शिकार आकर फंसे।

हिरदेराम ने उससे उठकर कहा, “मुंशीजी, एक मेरी दरख्वास्त लिख दो।”

भानालाल ने कहा, “पटेलजी, किस बात की दरख्वास्त लिखाना चाहते हो?”

हिरदेराम ने कहा, “मुझे एक नकल की जरूरत है, लेकिन पटवारी ने मुझे नकल नहीं दी है। इसलिए नकल की दरख्वास्त लिखवानी है।”

भानालाल ने कहा, “नकल की दरखास्त देने की ज़रूरत नहीं है। नकल तो वैसे ही पटवारी के पास से मिल जाएगी।”

“अजी अरजीनवीसजी, “हिरदेराम ने कहा, “मैंने पाँच-चार रोज पटवारी के पास चक्कर लगाए, लेकिन वह टालमटूल करता है और नकल नहीं देता।”

“कौन-सा पटवारी है?”

“हुसैनपुर का पटवारी है, हरदयाल।”

भानालाल ने कहा, “अरे पटेल, वह तो बड़ा भला आदमी है। वह तो ऐसी गलती कभी नहीं कर सकता।”

हिरदेराम ने कहा, “यह बात तो मैं भी जानता हूँ। लेकिन अरजीनवीसजी, यह पटवारी की जात कभी भली नहीं होती है। इनके साथ तो आप कितना ही भला कर लो। इन्होंने जब हड़ताल की थी तो सारी दुनिया इनकी दिल्लगी करती थी, पर मैंने तब भी जहाँ तक बन सका, अपनी जान-पहचानवालों की मदद ही की। पर ये कभी अहसान नहीं मानेंगे। ये तो बबूल के बीज हैं। इनमें से गन्ना थोड़े ही पैदा हो सकता है।”

भानालाल ने कहा, “सो तो बात ठीक कहते हो पटेलजी! जब से यह इन्फिकाक रहन का मामला चला है, पटवारियों के दिमाग तो आसमान पर चढ़ गए हैं और एक-एक पटवारी ने एक-एक हजार रुपइया पैदा किया है। कोई-कोई पटवारी तो और भी ऊपर निकल गया है। लेकिन हिरदेरामजी, फिर भी पत्थर बीच ईंट मुलायम है। हरदयाल पटवारी इतना बदमाश नहीं है। वैसे बेचारा गरीब आदमी है। अकेला कमानेवाला है और पाँच खानेवाले हैं, कोई पढ़ रहा है और कोई शादी के लायक हो रहा है। आपकी लेन-देन में तो उससे कहीं नहीं बिगड़ गई?”

हिरदेराम ने कहा, “लेन-देन का सवाल ही नहीं उठता। उसने न मुझसे कुछ माँगा है और न मैंने उससे कुछ कहा है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि श्यौपाल नम्बरदार ने उसको भड़का दिया है, इसलिए वह नकल नहीं दे रहा है।”

भानालाल ने कहा, “अच्छा, पटवारी को आने दीजिए, मैं कह दूँगा।”

हिरदेराम ने कहा, “आप एक दरख्वास्त तो लिख ही दीजिए। कोई बात नहीं है, सिरफ एक रुपइया ही तो खराब होगा। फिर आप उससे बात कर लेना भले ही।”

भानालाल ने फौरन हिरदेराम के कहने से नकल के लिए दरख्वास्त लिख दी और हिरदेराम को दे दी। दरख्वास्त लिखने की एवज में टिकट के चार आने व लिखाई के आठ आने पैसे लेकर उसने उसके दिए रुपये में से चार आने वापस कर दिए।

हिरदेराम में जैसे स्फूर्ति आ गई। फौरन दरख्वास्त लेकर तहसीलदार साहब के इजलास में पहुँच गया। तहसीलदार साहब का चपरासी कालूसिंह कद्दावर आदमी था। उसने हाथ बढ़ाकर कहा, “ए जानेवाले, ठहर, कहाँ जाता है?”

हिरदेराम मन-ही-मन आहत हुआ। बोला, “मुझे दरख्वास्त पेश करनी है। भीतर जा रहा हूँ।”

कालूसिंह ने कहा, “आप बिना इजाजत अन्दर नहीं जा सकते। जिस वक्त दरखास्त की आवाज पड़े, उस वक्त पेश करना।”

हिरदेराम ने कहा, “कचहरी उठने का टाइम हो रहा है और मेरा गाँव दूर है। आवाज़ पहले पड़ चुकी है। आप मुझे मत रोको।”

चपरासी ने कहा, “देखिए, दरखास्त की आवाज दो दफे पड़ती है—एक बार तो तब जब तहसीलदार साहब आकर बैठते हैं और दूसरी दफे करीब चार बजे शाम। इसलिए आप बैठ जाइए, वरना हुजूर मुझपर खफा हो जाएँगे।”

हिरदेराम चुप होकर इजलास के बाहर बैठ गया। कुछ देर बाद उसने चपरासी से कहा, “आपकी बड़ी दया होय जो आप मेरी अरजी ले जाकर भीतर दे दो और अपने पैसे ले लो।”

चपरासी ने कहा, “भय्या, आजकल पैसों से क्या काम चलता है! अगर आपको जल्दी पेश करनी है तो आप एक रुपए का नोट निकालकर मेरे हवाले करिए। मैं किसी तरह से पेश कराता हूँ।”

हिरदेराम ने सोचा—न जाने कितनी देर लग जाए बैठे-बैठे। इससे तो अच्छा ये है कि सिपाही को एक रुपया निकालकर दे दो, क्योंकि इसके जरिए इससे जान-पहचान भी हो जाएगी। और उसने अपनी जेब से एक रुपए का नोट निकालते हुए चपरासी के हाथ में देते हुए बिना कुछ कहे अपनी दरख्वास्त दे दो।

कालूसिंह ने कहा, “यह क्या है?”

“दरखास्त है!”

"यह तुम अपने संग लाए थे?"

"नहीं, मैंने यहीं लिखाई है।"

"तो किससे लिखाई तुमने यह अर्जी?"

"वह अरजीनवीस बैठता है...

"अरे भय्या पटेल, अर्जीनवीस तो यहाँ कई बेठते हैं। मैं तो एक खास वजह से पूछता हूँ।"

"वह क्या?"

"अरे अभी अर्जी गई थोड़े ही है। न हो किसी से बंचवा लेते, ठीक भी लिखी है या नहीं। अब यह नये अर्जीनवीस तो ऐसे ही हैं। परसों तहसीलदार साहब बड़े नाराज हो रहे थे"

"अच्छा! मैंने तो भानालाल से लिखवाई है।"

"हाँ चलो, वह चोखा है।"

"अच्छी लिख दी होगी न?"

"हाँ, अच्छी लिख देता है।" फिर बात बढ़ाने के लिए उसने फिर कहा, "तुम अपने कस्बे के तो नहीं हो?"

"अजी, मैं तो देहात का हूँ।"

"कौन-से देहात के हो तुम? पहले तो कचहरी नही आते थे?"

"पहले मुझे क्या काम पड़ता था?"

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"मेरा नाम हिरदेराम?"

"अच्छा चलो, एक जान-पहचान तो बढ़ी। मैं तो भय्या जिसका एक बखत खा लेता हूँ नमक उसको जनम—जिन्दगी याद रखता हूँ। क्या बताऊँ, पटेल, मैं नौकर, तुम्हारी तरह आजाद थोड़ी ही हूँ कि न गए खेत पर तो नहीं गए और जो आए वह कहे—पटेल, कहो भाई पटेल। और एक हम हैं, जो जाता है वह कहता है—ए चपरासी, यहाँ आओ। मेरा तो जी करता है कि नौकरी छोड़ दूँ। लेकिन भय्या! बाल—बच्चों का मुँह देखता हूँ तो हिम्मत नहीं पड़ती। पटेल! बाल—बच्चे तुम्हारे भी तो होंगे?" और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हुए कहता रहा, "सारा रोग इन बाल—बच्चों का है। हम तो पटेल, जब हमारी शादी नहीं हुई थी, तब खूब मलीदा खाया करते थे, मलीदा। चक रहे थे। हर दूसरे-चौथे रोज घुटती थी शाम को और मावस के दिन दोनों बेला छनती थी। हम तो यह समझते हैं कि मर्द-मानस का खाना-पीना तब तक का है जब तक लुगाई घर न आ जाए। लुगाई घर में अकेली नहीं आती। आने के बाद जो पलटन तैयार करती है, उससे कमर तोड़ देती है, अच्छे—खासे कमेरे की। क्यों पटेल, है न यह बात?"

हिरदेराम ने मूर्खता से दाँत निकाले, जैसे उसकी बात की ताईद की और बड़ा बुद्धिमान बनकर माथे पर बल डालकर उसने दो—तीन बार सिर ऐसे हिलाया जैसे वह पूरी तरह से समझ रहा था। चपरासी का प्रयत्न यह था कि बातों में कुछ समय तो सरका दे, इसलिए उसने फिर कहा, “पटेल पानी-वानी तो पी लिया है? न हो तो वहाँ प्याऊ पर पी आओ। बात यह है कि तहसीलदार साहब के सामने बड़े-बड़ों के गले सूख जाते है।”

अन्दर से घंटी की आवाज़ आई और आवाज़ के साथ चपरासी अन्दर खिंचा चला गया।

तहसीलदार साहब ने कहा, “कालूसिंह! कोई दरख्वास्त-अरख्वास्त है? आवाज दे दो”

कालूसिंह ने बाहर आकर हिरदेराम से कहा, “बस, अभी कराता हूँ,”और अर्ज़ी ले जाकर पेश कर दी।

हिरदेराम को आवाज लगी तो वह फौरन भीतर चला गया। तहसीलदार साहब ने हिरदेराम की दरख्वास्त पर हुकम लगाकर उसे उसी के हाथ में दे दिया और कहा, “तुम इसको पटवारी के पास ले जाओ। वह तुमको नकल दे देगा।”

हिरदेराम ने भक्ति से नमस्कार किया और बाहर निकल आया और सीधा पटवारी की तलाश करता हुआ मौजा हुसैनपुर चल दिया।

क्षुद्र नदी यों भरकर चली। इस समय पटवारी उसको बहुत छोटा आदमी दिखाई देने लगा। उसने मन ही मन विचार किया : ज़रूर हम लोग आगे नहीं बढ़ते, तभी तो पटवारी इतना सिर चढ़ कर बोलता है। वह हमारा ही तो नौकर है। हर बात का एक कानून है। हम झिझक के मारे उसको काम नहीं लाते। वह सिर पर चढ़ता है। हिरदेराम को पहली बार अनुभव हुआ कि बात को न जानना ही बुरी चीज थी। जो जानता है वह डरता नहीं है। हर आदमी की एक रोजी है। वह चाहता है कि अपनी आमदनी बढ़ाए। इसी से अर्जीनवीस और चपरासी ने एक-एक रुपया ले लिया। उसे गर्व हुआ। उसने दो रुपए ऐसे दे दिए थे जैसे दो रुपए बहुत ही मामूली चीज थे। वह आज कितना बड़ा हो गया था!

हिरदेराम के पांव में वेग आ गया था। उसका हृदय भीतर-ही-भीतर गर्व से उछल रहा था। उसकी यह मजाल पटवारी की! उसने समझ क्या रखा है! अरे, वो दिन फिर गए। और हिरदेराम को विचार आया, बहुत उड़ रही है इधर-उधर कि सरपंच ने पुलिस को घूस दी है। क्यों न सौ-पचास रुपए दे देऊं थानेदार को! लेकिन फिर उसे विचार आया, कि अब क्या रखा है, अब तो ज़मानत भी हो गई। पटवारी हरदयाल हुसैनपुर में टहरा हुआ था। हिरदेराम ने उसके पास व्यग्यं से जाकर कहा, “पटवारीजी, राम-राम।”

“राम-राम भइया, आओ पटेल!” हरदयाल ने अपनी उसी शांति से पूछा, “कैसे आए?”

“आपसे आया। गरज है। पटवारीजी, गरज बहुत सताती है।”

"सो कैसे?"

"बड़े आदमियों की सब जगह पूछ होती है, गरीब को कोई नहीं पूछता पटवारीजी। पर उसके राज में देर है, अन्धेर नहीं। अब तो नकल आप दे दो।" यह कहकर उसने गर्व से एक बार फिर उसकी ओर देखा और दरख्वास्त पटवारी के सामने रख दी।

पटवारी ने पैनी आँखों से उसको पढ़ा और सोचा—शिकायत! इस दो कौड़ी के किसान की यह मजाल कि पटवारी की शिकायत करे तहसीलदार के पास! क्रोध ने उसे जैसे पराभूत कर लिया, किन्तु वह क्रोध भीतर-ही-भीतर रहा जैसे धरती बिजली को पी जाती है। माथे पर एक शिकन भी न आई। मुस्कराकर बोला, "अरे पटेल, इसकी क्या जरूरत थी। इतनी परेशानी क्यों उठाई? डूंमरपुर से तहसील गए होंगे, बैठे रहे होंगे। अर्जीनवीस को पैसे दिए होंगे, कुछ भेंट-पूजा चपरासी को भी चढ़ाई होगी! हूँ, यह सब खर्चा किया ना?" और वह हँसा और फिर बोला, "लेकिन तुम ठहरे बड़े आदमी। पटेल भइया, हम तो गरीब आदमी हैं। पहले सरकार के अदना नौकर थे, अब तो हम तुम्हारे भी अदना नौकर हैं, क्योंकि हमारा काम जनता की सेवा करना है।" फिर उसने हँसकर कहा, "तुम जानो, जो सेवा करेगा सो मेवा खाएगा ही।"

हिरदेराम की बांछें खिल गईं। सोचा—गया! दब गया जूते से। कहाँ जाएगा! बोला, "मैंने तो पहले ही कही थी, दे दो, नकल तो देनी ही पड़ेगी।"

पटवारी ने सिर हिलाकर कहा, "मैंने कब इन्कार किया था! नकल मैं जरूर दे दूँगा। तुम एक हफ़्ता बाद मेरे पास आ जाना।"

हिरदेराम ने कहा, "एक हफ़्ता बाद आ जाना? मैंने इसीलिए दरख्वास्त पेश की है? मैं नकल कल लूँगा। यह कैसे हो सकता है आप मुझे इतने दिन को टाल दें?"

पटवारी लहजा बदलकर बोला, "जनाब हिरदेरामजी, नकल का ऐसा ही कायदा है। यह इतनी जल्दी नहीं मिला करती। अगर आपको इसमें कुछ एतराज हो तो आप तहसीलदार साहब के पास चले जाइए और कह देना कि पटवारी ने कहा है कि नकल एक हफ्ता बाद मिलेगी।"

और हिरदेराम की छाती में घुमड़-सी उठने लगी। उसने झपाटे से दरख्वास्त उठा ली। वह चला गया। उस समय पटवारी के पास सालिम गाँव के किसान बैठ थे। रामबकस नम्बरदार भी था। यह सारा किस्सा उसने भी सुना। बोला, "पटवारीजी! क्या चिन्ता है! पुकारने दो कि हिरदेराम अब बौहरा बनने चला है।"

जनमत पटवारी के साथ था। उसने कहा, "देखो भाइयो! सरकार के ऐसे आदेश आए हैं कि जिस किसी ज़मीदार को, सुन रहे हो, बैलों की तकावी लेनी हो, अरे बैलों की तकावी लेनी हो, या कुओं की तकावी लेनी हो, सुन लो अच्छी तरह, कुओं की तकावी लेनी हो, तो वह तहसील में जाकर दरख्वास्त पेश करे!"

किसानों में खुशी की लहर दौड़ गई। बातें होने लगीं :

“पटवारी जी। आप बड़े दयालु है।”

“अरे, कौन देहात की परवाह करता है!”

“जब वोट लेने मोटर में बैठकर आते हैं, तब तो लोगों की याद रहती है कि गाँव भी कोई है, वहाँ भी मानुस बसते हैं!”

“अरे, वोट के बाद वो गाँव में रह जाते हैं खोट ही खोट और पुलिस की पड़ती रहती है सिर पर चोट।”

एक और आदमी ने तुक भिड़ाई, “क्योंकि देहाती होता है ठोठ।”

वे लोग हँस पड़े।

पटवारी ने कहा, “क्यों भाई, अबके कुछ लीला-फीला, रास-वास का डौल नहीं जमाया?”

“अब सब जमेगा पटवारीजी!”

“आप तो ऐसा करो कि तकावी मिल जाए जिससे हमारे गाँव में चाही रकबा हो जाए, बैल भी अच्छे-अच्छे मिल जाएँ।”

किसी और ने कहा, “अरे तो क्या है! पटवारी की मेहर बनी रहे। इनके हाथ में क्या नहीं! कलट्टर, डिप्टी, तहसीलदार सब दौरे में आते हैं तो पहले कहेंगे पटवारी को लाओ। अरे, पटवारी ही इस राज की बैसाखी है।”

“पटवारी कौन-से राज की बैसाखी नहीं होता?”

“पटवारी ने रेहन छुड़वाई।”

“अब आप ही अपने सामने गाँव में चाही रकबा बनवाओ तो हमारा रकबा चमन हो जावेगा और हमारी गुजर अच्छी तरह होने लग जावेगी।”

हरदयाल ने कहा, “भाई, तुम लोग चिन्ता मत करो। सब भगवान अच्छा करेगा। देखो, अब की साल आपकी फसल भी अच्छी है। अब आपके दिन अच्छे हो गए हैं, चिन्ता मत करो।”

दूसरे दिन हिरदेराम तहसील की ओर चल दिया और तहसील के दरवाज़े पर बैठ गया। पटवारी भी अपने घर से तहसील को चला और अपनी सीट पर जाकर काम करने लगा। काम करते-करते पटवारी उठा और तहसीलदार साहब के मकान पर पहुँच गया और सिपाही को आवाज देकर तहसीलदार के कमरे में रखे अपने कागजों को लेकर वापस तहसील को लौटा।

हिरदेराम ने देखा और मन-ही-मन कहा, आज यह नकल ज़रूर दे देगा, क्योंकि कागज़ों को यह ले आया है। उसको मन ही मन यह भी तो डर है कि आज तहसीलदार साहब के पास पेशी होगी। वह सोच ही रहा था कि तहसीलदार साहब कचहरी आ गए और इजलास में जाकर बैठ गए। हिरदेराम आतुरता से अपनी उसी दरख्वास्त को लेकर पेश हुआ। तहसीलदार साहब ने निगाह उठाई। ग्यारह बच्चों के बाप थे, लेकिन कटारा

साहब के चेहरे पर अभी तक चिकनाई बनी हुई थी। चिन्ता जैसे उनके पास नहीं फटकती थी। बात मस्ती की करते थे और ऐसा भी कहा जाता था कि एक ड्राइवर की औरत से उनका याराना था। गाँव में लोग उस ड्राइवर को दूसरा तहसीलदार समझते थे। उस ड्राइवर की औरत घर पर भी पन्द्रह-सोलह रुपये वाली साड़ी पहनती थी और उसकी लड़की जब कुएँ पर पानी भरने जाती तो हाथ में रूमाल ले जाती और रस्सी से पानी खींचने के बाद बीच-बीच में अपने हाथ पोंछती जाती थी। हिरदेराम ने तहसीलदार साहब को अपनी ओर देखते देखा तो फौरन दरख्वास्त पेश कर दी

“यह क्या है?”

“हुजूर! पटवारीजी के पास इस दरखास्त को लेकर हुसैनपुर गाँव में कल शाम को ही पहुँचा, लेकिन इन्होंने दरखास्त को पढ़कर फेंक दिया और कहा—मैं इस दरखास्त को नहीं लूँगा। तेरे लिए तहसीलदार साहब ही नकल देंगे। मेरे पास कोई काम नहीं है, चले जाओ मेरे सामने से; और हजूर! उन्होंने मुझे बुरी तरह फटकार दिया।”

तहसीलदार साहब पर कोई जाहिर असर नहीं पड़ा। उन्होंने घंटी बजाई और कालूसिंह ने प्रवेश किया।

तहसीलदार साहब ने कहा, “देखो! हुसैनपुर के पटवारी को तो आवाज दो।” कालूसिंह ने आवाज दी, “पटवारी हल्का हुसैनपुर हाजिर है?” पटवारी जैसे तैयार था। आवाज़ सुनकर नीचे आया और तहसीलदार साहब के इजलास में उसने प्रवेश किया और कहा, “राम-राम साहब।”

तहसीलदार साहब ने कहा, “तुमने इसकी दरख्वास्त को फेंक दिया! नकल क्यों नहीं दी? यह क्या मामला है?”

पटवारी ने कहा, “तहसीलदार साहब! मेरे पास श्री हिरदेरामजी पहुँचे। मैंने इनसे विनती की कि आप दरखास्त को मुझे दे दें, मैं आपको एक हफ्ते बाद नकल दे दूँगा। इन्होंने जवाब दिया कि नहीं, मुझे इसी वक्त नकल दे दो। मैंने कहा, श्रीमानजी गाँव में नकल नहीं मिलती। मेरे पास यहाँ पर कोई कागज़ात नहीं हैं, मैं नकल देने से मजबूर हूँ। इस पर इन्होंने, हुजूर जवाब दिया कि नहीं, मैं आज ही नकल लूँगा। मैं तुम्हारी इन चालबाजियों से वाकिफ हूँ। मैंने कहा कि श्रीमानजी, नकल आज तो नहीं मिल सकती। तो हुजूर, ये दरख्वास्त लेकर अपने गाँव चलने लगे और बोले—मैं कल तहसीलदार साहब से कहूँगा और देख लेना, तुम्हारी क्या गत बनवाता हूँ और हुजूर, कुसूर माफ हो, मुझसे इतनी गलती ज़रूर हुई थी कि मैंने कहा था कि तहसीलदार साहब इन्साफपसन्द हैं। मैं भी कल तहसील चल रहा हूँ। आप कह देना, वे बिना दुतरफा बात सुने फैसला नहीं देंगे। अब हुजूर, मेरे यह कहने में कोई गलती हो गई हो तो मैं माफी चाहता हूँ।”

तहसीलदार साहब ने हिरदेराम की ओर देखकर कहा, “पटवारी ने तुमसे एक हफ्ते बाद नकल देने को कहा था?”

हिरदेराम के मुँह से निकला, "जी हाँ।"

तहसीलदार साहब ने कहा, "पटवारीजी, आप हस्ब-कायदा नकल अन्दर एक हफ्ता दे दें और वह भी नकल मेरे सामने दी जावे।"

तहसीलदार साहब के इस फैसले से दोनों ही मन-ही-मन कुढ़े, पर बाहर चल दिए। लेकिन हिरदेराम के बारे में पटवारी अधिक सोच नहीं सका, क्योंकि उस समय हुसैनपुर के ज़मींदार आ चुके थे। पटवारी जी ने फौरन भानालाल अर्जीनवीस को आवाज़ दी। भानालाल तुरन्त उसके पास आ गया। पटवारी ने कहा, "आप इन जमींदारों की तकावी बैल व कुओं की दरख्वास्त लिख दें। कुओं की दरख्वास्त में दो-दो हज़ार रुपया तकावी के लिख दें और बैलों की तकावी के लिए पचास-पचास रुपया लिख दें।" भानालाल बोला, "पटवारीजी! पचास-पचास रुपया तो कम रहेंगें।"

पटवारी जी ने कहा, "यह आप बिलकुल ठीक कह रहे हो, लेकिन पचास-पचास का अख्तियार ही तहसीलदार साहब को है। यहीं मंजूर कर देंगे। इसलिए यह रुपया इनको यहीं मिल जाएगा। बाकी कुओं की तकावी सदर से मंजूर होगी।"

अर्ज़ीनवीस पटवारी की बात समझकर नीचे चल दिया और जमींदारों को लेकर अपनी जगह पर बैठ गया। उसने दरख्वास्त लिखना शुरू किया। उसने करीब चालीस दरख्वास्तें लिखीं और करीब पन्द्रह दरख्वास्तें दो-दो हजार की कुओं की तकावी के लिए लिख दीं। आवाज़ पड़ने पर ज़मींदार उन दरख्वास्तों को लेकर तहसीलदार साहब के पास पहुँचे। तहसीलदार साहब ने फौरन हुक्म लिखकर दिया कि पटवारी-हल्का रिपोर्ट करे। जमींदार लोग दरख्वास्तों को लेकर हरदयाल के पास पहुँचे। पटवारी ने हर एक दरख्वास्त पर फौरन रजिस्टर-मालशुमारी को देखकर रिपोर्ट कर दी और चाह की तकावी की दरख्वास्तों को अपने पास रख लिया और उन किसानों से कहा, "भाई, असल में देखो, यह कुएँवाली जो दरख्वास्तें हैं, इनपर रिपोर्ट करने में कुछ देर लगेगी, क्योंकि उनमें ज़मीन की नकल शामिल की जावेगी। इसलिए इन बैलों की दरख्वास्तों को आप वासिलबाकीनवीस के पास ले जाओ।" लेकिन किसानों में इतनी हिम्मत नहीं जगी।"

एक ने कहा, "हम लोग उनको क्या जानें! आप साथ चलिए।"

पटवारी ने कहा, "मैं अभी चलता हूँ। आप ज़रा ठहर जाइए।" कुछ देर बाद पटवारी चालीसों दरख्वास्तों को लेकर वासिलबाकीनवीस के पास पहंचा।

"अजी, बात यह है कि बेचारे गरीब आदमी हैं। जैसे आपके दिल में रहम है, भगवान ने मुझे उतना तो नहीं दिया, लेकिन अपनी जान से जहाँ तक होता है दूसरों का भला ही करता हूँ। मगर पर छोटे हैं, पंख छोटे हैं। उड़ूँ तो कितना! असली ताकत तो आपके हाथ में है।

किसान सुन रहे थे। पटवारी ने फिर कहा, "इनको जल्दी-से-जल्दी आज ही तकावी मिल जानी चाहिए।"

वासिलबाकीनवीस मुस्कराया और बोला, "पटवारीजी, आप चिन्ता न करिए मैं अभी इन दरख्वास्तों की तकमील करता हूँ। आप पचास-पचास रुपये की ज़मानत की दरख्वास्त और पेश करा दो। ज़ामिन में आप रामबकस नम्बरदार के नाम से दरख्वास्तें पेश करा देना। क्योंकि वह नम्बरदार है, आप उसकी हैसियत तस्दीक कर देना।"

पटवारी ने कहा, "अभी लीजिए।"

पटवारीजी ने तुरन्त इस काम को पूरा कर दिया और वासिलबाकीनवीस ने दरख्वास्तें तहसीलदार साहब के पास मंजूरी के लिए पेश कर दीं।

जामिन की दरख्वास्त शामिल कराकर कुल तकाबी चालीस आदमियों को मंजूर करवा के चिट्ठी जारी करवा दी और पोद्दार के यहाँ से ज़मींदारों ने रुपया लेना शुरू कर दिया। तीन घंटे के अन्दर कुल तकाबी पेमेंट हो गई। पटवारी ने हरएक ज़मींदार से पचास-पचास रुपये पर, दो रुपये वासिलबाकीनवीस के, एक रुपया स्याहीनवीस, एक रुपया पोद्दार, दो रुपया पटवारी, एक रुपया गिरदावर व चार आने चपरासी के हिसाब से कुल दो सौ नब्बे रुपये लिए और वासिलबाकीनवीस को अस्सी रुपये व स्याहीनवीस को चालीस रुपये, गिरदावर साहब को चालीस रुपये, पोद्दार साहब को चालीस रुपये व चपरासी को दस-दस रुपये तकसीम करके अस्सी रुपये खुद अपने पास रख लिए। इस तरीके से हर जमींदार के पचास रुपयों में से सात रुपये खर्च हो गए और हरएक के पास बयालीस रुपये बारह आने बचे। उन्होंने पटवारी से कहा, "पटवारीजी, आपकी दया है।"..."सचमुच हमें कोई न पूछता, अगर आप नहीं होते।"..."धन्न हैं!" पीछे से आवाज़ें सुनाई देने लगीं। हरदयाल ने तृप्ति से सुना, "पटवारी बड़ा अच्छा आदमी है!"

"लो! आज देखो! आज ही काम करा दिया।"

फिर एक बार स्वर आया, "सवा सात रुपये जरूर खर्च हो गए और एक-एक रुपया अर्जीनवीस ने भी ले लिया, लेकिन काम बड़ी जल्दी हो गया।" इस समय वे सब लोग बड़े प्रसन्न थे। उन्हें यह लग रहा था कि यह रुपया मुफ्त में मिल गया। वे यह भूल गए थे कि सरकार इन रुपयों को वसूल करेगी और उस समय सवा आठ रुपये काटकर वसूल नहीं करेगी बल्कि ब्याज और जोड़ेगी। गाँव में पटवारी का नाम इस समय फैल चुका था। उसकी रहमदिली लोगों में आम चर्चा का विषय बन चुकी थी।

चार-पाँच दिन बीत गए। हिरदेराम को देखकर पटवारी ने स्वयं ही कहा, "राम-राम पटेल आओ। तहसीलदार साहब से मिलने आए हो?"

हिरदेराम ने झेंपते हुए कहा, "अजी नहीं पटवारीजी! मैं तो आप ही के दर्सन करने आया था। नकल तैयार हो गई क्या?"

"भाई, नकल तैयार करने में क्या देरी है!"

"हो गई?"

"बस, अब तीन दिन और लग जावेंगे।"

लेकिन हिरदेराम आज क्रुद्ध नहीं हुआ। उसने कहा, "पटवारीजी! आप तो नाराज हो गए।"

"पटेल, इसमें नाराजी की क्या बात है! हरएक आदमी अपने-अपने काम की कोशिश करता है। मुझे आपसे कोई नाराज़ी नहीं।"

"पटवारीजी! जो मुझसे कसूर हो गया, उसकी मैं आपसे माफी माँगता हूँ। मेरी तरफ से आपकी जो नाराजी है उसे आप दूर कर दो।"

"अरे पटेल, यह तुम्हें क्या गलत ख्याल हो गया है? मेरी तुमसे कैसी नाराजी? किसको अपने काम की जल्दी नहीं होती? ऐसा करो, अगर जल्दी है तो मैं तो दो दिन बाद तीसरे दिन जल्दी-से-जल्दी दे दूँगा।"

"यह तो वही तीन दिन रहे?"

"भाई पटेल! तुम तो हो आज़ाद आदमी और मैं हूँ सरकारी नौकर। मेरे पास तुम्हारी तरह ज़मीन-जायदाद होती तो मैं भी बेफिकर होता। अब तुम सोचकर देखो, आज दे दूँ तो तहसीलदार साहब नाराज़ होंगे और सोचेंगे कि "शायद पटवारी ने इससे कुछ रिश्वत ले ली है। क्योंकि जब मैंने एक हफ्ते का हुक्म दिया था, तो फिर क्या वजह है कि चार दिन के अन्दर ही नकल दी जा रही है? यह तो तुम्हारे ही बोए कांटे हैं। मैं क्या करूँ? और वैसे यह नकल तहसीलदार साहब के सामने दी जावेगी। इसलिए भी तुम्हारे पीछे मैं अपनी नौकरी छोड़ नहीं सकता पटेल! और कहो तो छोड़ दूँ। तुम हल्के में चलकर पूछ लो, मैंने किसी को सताया हो तो। अभी तकावियाँ दिलवाई हैं लोगों को।"

हिरदेराम ने पचास रुपये के नोट निकाल कर पटवारीजीके सामने रख दिए और कहा, "मैं तीसरे दिन आपसे नकल ले लूँगा।"

"भाई! ये रुपये मैं नहीं लेता; इसकी क्या ज़रूरत है?"

"देखो पटवारीजी! मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम मुझसे नाराज नहीं हो?"

"यार! मैं कह तो रहा हूँ।"

"मेरी दिलजमई नहीं हुई।"

हिरदेराम ने रुपये ज़बरदस्ती पटवारी की जेब में रख दिए और चल दिया। लेकिन पटवारी जी को खतरा था कि कहीं नोटों पर निशान न लगे हों। कहीं ये रुपये देकर पकड़वा न दे। फौरन रुपयों को लेकर घर रख आया और फिर वापस कचहरी आकर सीट पर बैठकर काम करने लगा। काम करते-करते अचानक एक विचार पटवारी के दिमाग में आया। ऐसा क्यों न किया जाए कि श्यौपाल से इसी अदालत इन्फिकाक रेहन में फक का दावा करा दिया जाए जिससे यह हिरदेराम मुकदमा लड़ता जाएगा। अगर दावा नहीं कराया जायगा तो इसकी जायद साठसाला रेहन साबित हो जाएगी और मिल्कियत कायम

हो जाएगी तब किशनपाल भी कही दब न जाए और इस तरह तरह श्यौपाल को अड़ा देने से सरपंच भी खुश बने रहेंगे।

पटवारी बैठा-बैठा सोच ही रहा था कि एक तहसील का चपरासी कुछ परवाने लेकर इत्तला कराने बाहर जा रहा था। पटवारी ने चपरासी को अपने पास बुलाकर कहा, “भाई, एक काम हमारा भी कर दो।”

चपरासी ने कहा, “हुकुम दो आप।”

“भाई, श्यौपाल के पास जाकर उसको हमारे पास भेजो। अब तो वह खेत पर गया होगा। तो उसे यह इत्तला दो कि शाम तक मुझसे मिल ले। घर आ जाए।”

चपरासी चला गया।

श्यौपाल सवेरे ही आ पहुँचा। पटवारी का मकान कच्चा, छप्पर-फूंस का था। लेकिन मकान के दरवाजे के सामने छप्पर-फूंस का एक अच्छा-सा बंगला बना रखा था। लिपा-पुता रहता। आने-जानेवालों को वह वहीं ठहराता था। उस बंगले में हर वक्त दो चपरासी और चार मूढ़े पड़े रहते थे। पटवारी घर में अकेला रोजगार करने वाला आदमी था और छह खानेवाले थे। तनख्वाह कम मिलती थी और गुजर-बसर करने के लिए उसे नौकरी के साथ यह व्यापार भी करना पड़ता था।

श्यौपाल ने कहा, “पटवारीजी! आपकी आज्ञा मिली। हुकुम मुताबिक हाजिर हैं।”

पटवारी ने कहा, “आओ बैठो।”

“क्या हुकुम है?”

“भाई! बात यह है कि तुमको इसलिए बुलाया है कि हिरदेराम नकल लेने के लिए घूम रहा है, लेकिन मैंने उसे अभी नकल नहीं दी। इसलिए तुमको आज बोर्ड में इन्फिकाक का दावा कर देना चाहिए, क्योंकि चेयरमेन बोर्ड ने अभी तुम्हारी जमीन का कोई फैसला नहीं किया है। मामले को ज़ेर-गौर रख लिया है, इसलिए मेरी राय यह है कि तुम दावा कर दो अगर तुमने यह दावा नहीं किया तो हिरदेराम को अदालत में यह मौका मिल जाएगा कि वह यह कह सके कि मेरे पास ज़मीन को गहने रखे हुए जायद साठ साल हो गए हैं इसलिए डेट कंसेशन बोर्ड ने यह ज़मीन फक नहीं की है और मेरी मिल्कियत का हक है। इसलिए आज ही दावा कर दो, मैं नकल में जायद साठ साल नहीं बताऊँगा।”

श्यौपाल ने कहा, “पटवारीजी! आप मालिक है।” और यह कहते हुए उसने पचास रुपये के नोट पटवारी की ओर सरकाए।

“अरे, यह क्या करता है भाई?”

“पटवारीजी! देखो, इन्कार मत करो। मिठाई समझ लो मिठाई, बच्चों की मिठाई।”

पटवारी ने नोट जेब में रखकर कहा, “रामबकस नम्बरदार को बुला लेना।”

“मौजूद है, मेरे घर पर ही है। मुझसे कल जब चपरासी ने कही, तो मैं समझ गया था कि हो न हो, कुछ बात जरूर है। मैंने बुलवा लिया है।”

पटवारीजी ने फौरन बस्ता खोला और हिरदेराम के तैयार की हुई नकल निकालकर उसको दिखाई।

श्यौपाल ने कहा, “पटवारी जी! आप किसी वकील के पास चल कर दावा लिखवा दीजिए, ताकि उसे हम आज ही पेश करवा दें।”

पटवारीजी ने कहा, “चलता हूँ, चलो, अभी लिखवा देता हूँ। खाना खा लूँ।”

जब श्यौपाल और रामबकस नम्बरदार वकील के घर पर पहुँचे, वकील साहब अपनी बैठक में विराजमान थे और अपने फरीकैन से बात कर रहे थे।

बत्तूलाल वकील अच्छी शकल-सूरत के आदमी थे। अचनक और चूड़ीदार पजामा पहनते थे। जब वे कालेज में थे तो कविताएँ लिखा करते थे। उन दिनों उन्हें अपना काम बहुत बुरा लगता था। एक बार वे कालेज के चुनाव में इसीलिए हार गए थे कि उनके प्रतिद्वन्द्वी का नाम अच्छा था। और बत्तूलाल नाम सुनकर लोगों ने उनको वोट नहीं दिए थे, हालांकि उनके प्रतिद्वन्द्वी के नाम बड़े और दर्शन थोड़े थे।

बत्तूलालजीने अपना नाम बदलने की चेष्टा की और कुछ दिन बी. एल. का भी प्रयोग किया। बी. एल. जैन के नाम से अपने लैटर पैड भी छपवाए, लेकिन कालेज के लड़कों की दुष्टप्रवृत्ति होती है कि अन्त तक उन्होंने उनके नाम का संक्षिप्त रूप स्वीकार नहीं किया और प्रेम से उन्हें पूरे नाम से पुकारते रहे। लेकिन जब वे वकालत करने आए तो देहातियों के लिए बी. एम. ज़रा कठिन पड़ा, तब उन्होंने अपने बत्तूलाल का अधिक प्रचार किया।

पटवारीजी के आते ही वकील साहब बोले, “आइए पटवारीजी, क्या हाल हैं?”

पटवारीजी ने कहा, “वकील साहब! कृपा है आपकी। आपको आज हमारे फरीकैन का दावा लिखवाना है और वह दावा है इन्फिकाक रेहन का।”

वकील साहब ने पूछा, “क्या कोई नकल वगैरा लाए हो?”

पटवारीजी ने कहा, “जी हाँ।”

वकील साहब को फौरन नकल दी। उन्होंने नकल देखी और बोले, “ठीक है, दावा लिख जाएगा।” फिर कहा, “लेकिन इसके मुतल्लिक आप कुछ और हालात बताओ।”

पटवारीजी ने कहा, “वकील साहब! आपने नकल को देख लिया?”

“जी।”

पटवारी ने कहा, “खसरा नम्बर 333,34,36 कुल रकबा इकतीस बीघा से ऊपर है। तीन सौ पचास रुपये में श्री धनीराम ज़मींदार डूंमरपुर के यहाँ रहन था। रहन की मुद्दत इक्यावन साल हो चुके हैं। इस रहन को श्यौपाल के बाप ने रखा था। लेकिन हिरदेराम के पास, जो कि धनीराम का बेटा है, एक आर्ड रेहन का कागज और है।”

वकील साहब ने कहा, “कहाँ है, क्या है?”

पटवारी ने कहा, “सन् 1904 में यह ज़मीन इकतीस बीघा जिसके नम्बर बतलाए हैं, रहन रखी गई। 1955 में इसको इक्यावन साल हो गए, लेकिन 1894 में यही नम्बर एक कच्चे कागज़ पर आर्ड रेहन दो सौ रुपये में रखे गए थे और 1900 में इनकी दाखिल रजिस्ट्री करवा ली गई। रजिस्ट्री होने पर कागज़ात पटवार में असल बरामद हो गए। कागज़ात के हिसाब से इक्यावन साल होते हैं, लेकिन उस कागज के हिसाब से इकसठ साल हो जाते हैं और साठ साल होने पर हक मिल्कियत हो जाता है। इसलिए वकील साहब, उस कागज को झूठा साबित करना है और कागज़ात पटवार में जो अमल हो रखा है, उसको सच साबित करना है।”

वकील साहब ने कहा, “पटवारीजी! मामला कमज़ोर है।”

श्यौपाल की साँस जैसे छाती में अटक गई, लेकिन उस समय उसकी डूबती धरती को अपने दाँत पर रखकर विष्णु भगवान की तरह पटवारी जी फिर निकल लाए। बोले, “वकील साहब! आप चिन्ता न करें, मैं आपको कागज़ी पाइंट और बताऊँगा। आप अपना मेहनताना बताइए।”

“पटवारीजी! आप ही कह दीजिए।”

“नहीं, वकील साहब! आपको ही बताना पड़ेगा, क्योंकि आप दोनों ही मेरे आदमी हैं। आप भी अपने हैं और इधर श्यौपाल भी बेचारा गरीब आदमी है। आप ही कह दीजिए।”

“तीन सौ दस रुपये दिलवा देना।”

रामबकस नम्बरदार ने कहा, “वकील साहब! तीन सौ पचास रुपये में तो ज़मीन रेहन है। तीन सौ दो रुपये आप माँग रहे हैं, तो चालीस और देकर ज़मीन ही क्यों न छुड़वा ली जावे?”

वकील साहब ने कहा, “छुड़वा कैसे लोगे? कागज हिरदेराम का पक्का है। एक तो वह नहीं छोड़ेगा। और मुकदमा यहीं खत्म थोड़े ही होगा। किशनपाल का कैसे निकालोगे?”

पटवारी ने कहा, “वकील साहब! आप ही सच-सच बात बतला दो। आप तो इस बात को जानते हैं कि मेरे हल्के के कुल ज़मींदार आपके ही पास आते हैं और आप ही पर ज्यादा भरोसा करते हैं।”

“ठीक है पटवारीजी! लेकिन अब मैं क्या कहूँ! आप ही कह दीजिए।”

“तो देखिए वकील साहब! अगर श्यौपाल मुकदमा जीत गया तो श्यौपाल आपको अलावा मेहनताने के पचास रुपये और इनाम दे देगा और मेहनताना आपको दो सौ रुपये देगा, जिसमें सौ रुपया आज दे देगा, पचास रुपये बीच में और पचास रुपये फैसला होने पर।”

वकील साहब ने थोड़ा-सा संकोच किया, लेकिन पटवारी की बात को टाल न सके। उन्हें मंजूर कर लेनी पड़ी, क्योंकि वे धीरेन्द्र कुमार जौहरी की तरह अभी पूरी तरह से जमे नहीं थे। उन्होंने अपने मुंशी से दावा लिखवाना शुरू कर दिया।

श्यौपाल बोला, “लेकिन पटवारीजी, इस बखत तो मेरे पास कुल चालीस रुपये हैं।”

पटवारीजी ने कहा, “रामबकस नम्बरदार से और पूछ लो, उसके पास कुछ हे या नहीं?”

श्यौपाल ने पूछा। रामबकस ने कहा, “मेरे पास इस वक्त पच्चीस रुपये हैं, लेकिन मैं बाजार से चाहे जित्ते रुपये ला सकता हूँ क्योंकि मेरा माल आढ़तिये के पास पड़ा है।”

श्यौपाल और रामबकस दोनों ने पटवारी को इशारा किया और वकील साहब की बैठक के बाहर आए और पटवारीजी से श्यौपाल ने कहा, “इस वक्त मेरे पास चालीस हैं और इनके पास पच्चीस हैं। लेकिन बाकी रुपये का अभी इन्तजाम हो जाएगा। आप यह बतलाइए कि कितने रुपये और चाहिए!”

पटवारीजी बोले, “देखो, वकील साहब को सौ रुपये, दावा लिखवाई और स्टाम्प वगैरा के पच्चीस व कुछ दफ्तर में दस रुपये, बाकी मेरी नकल की उजरत।”

रामबकस ने पूछा “पटवारीजी, आपकी उजरत क्या होगी?”

पटवारीजी, “जो चाहो वो दे दो।”

“पटवारीजी, आप खुद बतला दीजिए।”

“तुम जो दे दोगे, सो ले लूँगा।”

श्यौपाल रामबकस को अलग ले गया और बोला, “क्या देना चाहिए इसको?”

रामबकस ने सोचते हुए कहा, “मुझसे क्या पूछते हो, तुम खुद समझदार हो। वैसे पटवारी घर का सा आदमी है और बेचारा कौम का ब्राह्मण है। धरम का धरम और करम का करम।”

श्यौपाल ने कहा, “तो इस बखत पचास रुपया दे दें। बाद में फिर दे देंगे?”

दोनों सलाह करके पटवारीजी के पास आ गए और बोले, “इस वक्त आप पचास रुपये ले लें।”

पटवारी ने कहा, “मैं क्या बहस करता हूँ! कम दोगे तो कम ले लूँगा। इस वक्त जो तुमने तय कर दिया सो ठीक है।”

श्यौपाल बोला, “तो हमको एक सौ पिच्चासी रुपये की जरूरत है। पैंसठ रुपये हमारे पास मौजूद हैं। एक सौ बीस का और इन्तजाम करना पड़ेगा।”

रामबकस आढ़तिया के पास पहुँचा। आढ़तिया ने उसी वक्त एक सौ पच्चीस रुपये निकालकर उसके हवाले किए और उसने लौटकर पटवारी के मार्फत सौ रुपये वकील साहब के पास पहुँचा दिए। वकील साहब ने देखा। दावा लिखाकर तैयार करवा लिया और

बोले, “लिखाई और स्टाम्प वगैरा के बीस रुपये और दे दो।” पटवारी ने बीस रुपये और दे दिए और वकील की इजाजत लेकर अपने घर को रवाना हुआ।

श्यौपाल और रामबकस से वकील साहब ने कहा, “दफ्तर आ जाना।”

वे दोनों खाना खाने चल दिए और खाना खाकर वकील साहब के बैठने के स्थान के निकट बैठ गए। वकील साहब का तख्त उस समय खाली पड़ा था। थोड़ी देर बाद वकील साहब तशरीफ ले आए और आवाज पड़ने पर वकील साहब ने दावा पेश करवा दिया।

दफ्तर में वकील साहब ने पेशकार को पाँच रुपये व अहलकार के लिए पाँच रुपये श्यौपाल से दिलवा दिए। अहलकार साहब ने दावे को देखकर रिपोर्ट पेश कर दी और पेशकर साहब को दे दी। पेशकर साहब ने चेयरमैन साहब के सामने पेश करके तारीख कायम करवा दी। फरीकैन के नाम सम्मन जारी कर दिए गए और सायल को इत्तला दे दी गई। मुकदमे का उनवान था श्यौपाल वल्द हरपाल कौम ब्राह्मण, साकिन डूंमरपुर राहिन बनाम हिरदेराम वल्द धनीराम, कौम धाकर साकिन डूंमरपुर। दावा इन्फिकाक रेहन आराज़ी इकतीस बीघा दो बिस्वा ज़ेर-रहन तीन सौ पचास रुपये।

पटवारी हरदयाल ने वकील के यहाँ प्रवेश किया। वकील साहब ने देखा और कहा, “आइए पटवारीजी!”

“नमस्कार वकील साहब! क्या हाल है?”

“ठीक है। आज हमने आपका दावा दायर कर दिया है और तारीख भी कायम करा दी है।”

“वकील साहब! मेहनताना पूरा आ गया?”

“हाँ पटवारीजी, वायदे के मुताबिक पूरा आ गया। आप अपनी दलाली ले लो।”

“सब ले लूँगा वकील साहब!”

वकील साहब ने पाकिट से निकालकर पटवारीजी को पच्चीस रुपये के नोट दे दिए और कहा, “बाकी रुपया जिस वक्त सायल से आएगा, आपको भुगतान कर दिया जाएगा।”

हरदयाल ने कहा, “अरे वकील साहब, सब आ जाएगा, चिन्ता क्या है?”

“सो तो ठीक है, पटवारीजी, लेकिन हिसाब अगर साथ-का-साथ होता चला जाए, तो वह ज्यादा अच्छा है।”

पटवारीजी ने पच्चीस के नोट जेब में रखे और आपस में बातें करने लगे। इसी समय कुछ किसान लोग वकील साहब के पास आ गए। पटवारीजी ने वकील साहब से इजाजत ली और घर की तरफ चले। रास्ते में याद आया, तहसील की ओर मुड़ लिये। वहाँ पहुँचकर सबसे पहले हिरदेराम की नकल को तैयार किया। अभी नकल पूरी नहीं कर पाए थे कि सामने से हिरदेराम आता नज़र पड़ा। पटवारी हरदयाल ने फौरन अपने एक साथी पटवारी से मुकाबला कराया और नकल पर लिख दिया कि मुकाबला किया गया। श्रोता-वक्ता और

ऊपर एक नोट भी लगाया कि नकल उजरत में हस्ब कायदा वसूल पाई और रजिस्टर नकल उजरत में उस दरख्वास्त को तैयार करके दर्ज कर लिया। अब बस गिरदावर साहब के दस्तखत कराने बाकी थे, सो वह हिरदेराम के आने के लिए तकमील छोड़ दी।

हिरदेराम ने आकर कहा, "पटवारीजी राम-राम।"

"आओ जी पटेल हिरदेराम, आओ।"

"पटवारीजी, आप तो मुझे इतना शर्मिन्दा मत किया करो।"

"अरे पटेलजी, कैसी बातें करते हो! हैं तो हम आपके नौकर।"

"अरे साहब पटवारीजी, आप हमारे नौकर कैसे बनते हैं! आप तो हमारे माँ बाप हो। हमारी नैया आपके हाथ में है; आप चाहे बिगाड़ दो, चाहे बना दो। आप तो दूसरे परमात्मा हो। मैं तो फिर कहता हूँ, परमात्मा और पटवारी की एक रासि है। इसलिए महाराज! आपकी तो हमेशा सेवा करनी चाहिए। वे गधे हैं जो पटवारी से बिगाड़ करते हैं। देखो, मुझको देखो, मैंने आपसे ज़रा-सी-रूखी बात की थी, जिसका नतीजा भी देख लिया। आज सात दिन हो गए हैं, परेशानी में पड़ा हुआ हूँ।"

"अरे वाह पटेल, ऐसी बात क्यों करते हो? मैं क्या कोई तुमसे नाराज़ हूँ? मैने क्या आपको नकल देने से इन्कार कर दिया था? फिर क्या बात है?"

"नहीं, यह बात नहीं, पटवारीजी। मुझे डर लग गया कि मैंने आपके खिलाफ तहसीलदार के यहाँ दरख्वास्त पेश कर दी। यह मैंने बड़ी गलती की थी। मैंने आपसे पहले भी माफी माँग ली थी और आज भी माँगता हूँ।"

"आप भी कैसी बात करते हैं, पटेलजी! मैं आपसे कभी नाराज़ हो सकता हूँ? सोचके देखो, कभी नाराज हुआ हूँ। मेरी इतनी हैसियत है कि मैं आपसे नाराज हो जाऊँ? अच्छा बात बताओ, कि मैं आपसे नाराज होकर क्या कर सकता हूँ? अरे, आपको मालूम होना चाहिए कि मैं आपके बल पर पलता हूँ। अरे, गाँव में पड़ा हूँ, रहने दो, चाहे भगा दो। एक अर्ज़ी दे दोगे मेरे खिलाफ तो तबादला हो जाएगा। पटवारी की अब हैसियत ही क्या है?"

यह कहकर हरदयाल ने फौरन बस्ते से तैयारशुदा नकल को निकाला और वह हिरदेराम को दिखाई। हिरदेराम खुश हो गया और बोला, "पटवारीजी!" यह कहते-कहते उसके स्वर में बड़ी आत्मीयता आ गई, "यह तो बताओ, इसमें कितने साल की रहन दर्ज है?"

हरदयाल ने कहा, "इसमें इक्यावन साल हैं।"

हिरदेराम ने चौंककर कहा, "तो यह साठसाला कैसे साबित हुई?"

हरदयाल ने हँसकर कहा, अरे आपको क्या चिन्ता है? आप उन कागज़ों को हिफाजत से रखना। उनमें साठसाला साबित हो जाएगी। चेयरमैन बोर्ड ने तो आपकी उज्रदारी मान ही ली है। चिन्ता की बात नहीं, पटेलजी, अब आप एक काम करिए..."

“वो क्या?” हिरदेराम ने भौंहें उठाकर पूछा।

पटवारीजी ने कहा, “आप इस नकल को गिरदावर साहब के पास ले जाओ। वे इस पर तस्दीक कर देंगे। लेकिन देखो, तुम अपने आदमी हो। तुम्हें एक बात बता देता हूँ, काम जल्दी कराने के लिए।” पटवारी ने स्वर धीमा करके कहा, “उसको एक पाँच रुपये का नोट भी देना।”

हिरदेराम गिरदावर के पास पहुँचा। साँवलदास ले उसकी ओर आँखें उठाईं। उसे याद आया, यह आदमी एक दिन पटवारी को पूछता हुआ आया था।

“कहो।” गिरदावर ने पूछा।

हिरदेराम ने नकल सामने रख दी और एक पाँच रुपये का नोट संग में रख दिया। गिरदावर साहब ने बिना कुछ कहे चुपचाप पाँच रुपये का नोट जेब में रखा और बिना मुकाबला किए नकल पर दस्तखत कर दिए।

हिरदेराम नकल लेकर वापस पटवारीजी की सीट पर आया और बोला, “पटवारीजी, गिरदावर साहब ने तो तस्दीक कर दी।” और उसने नकल पटवारीजी के हवाले कर दी और तब हिरदेराम ने जेब से पच्चीस रुपये के नोट निकालकर पटवारीजी को दिए।

“अरे रहने दो, पटेलजी, इनको अपने पास रखो। हमें तो जो भगवान ने रूखा-सूखा दिया है, उसीमें मगन रहते हैं।”

हिरदेराम ने कहा, “कैसी बात कर रहे हो, पटवारीजी! मुझे कैसे भरोसा होगा कि आप मुझसे नाराज नहीं? यह तो आपकी मेहनत का है।”

“अरे भई तुमने पहले ही पचास रुपये दे दिए हैं। अब क्या ज़रूरत है? वे ही बहुत हैं।”

लेकिन हिरदेराम ने एक भी बात नहीं मानी और ज़बर्दस्ती पटवारीजी की जेब में पच्चीस रुपये रख दिए। पटवारी ने उसके कान में धीरे से कहा, “तुम तहसीलदार साहब के पास चलो, मैं आता हूँ।”

हिरदेराम को विश्वास हुआ कि पटवारी उसे अब अपना अंतरंग मानने लगा था। वह प्रसन्न मन हो तहसीलदार के इजलास की ओर चला।

पटवारीजी ने अपनी जेब से पच्चीस रुपये के नोट निकालकर एक रजिस्टर में रख दिए और उस रजिस्टर को एक सन्दूक में कागज़ों के नीचे रख दिया और वे कागज थे कोरे फार्म, ताकि अगर कोई ढूंढने की भी कोशिश करता तो ऊपर से कोरे फार्म देखकर नीचे देखने की कोशिश भी नहीं करता। साथ में रजिस्टर नकल उजरत लेकर तहसीलदार साहब की इजलास के आगे आकर पटवारीजी ने उनके चपरासी कालूसिंह से कहा, “तहसीलदार साहब को सूचना दे दो।”

चपरासी ने भीतर जाकर कहा, “हुजूर, हुसैनपुर के पटवारीजी बाहर खड़े हैं। कुछ कागज़ पेश करना चाहते हैं।”

घंटी बजी और चपरासी ने पटवारीजी को भीतर भेज दिया।

हरदयाल ने नकल उनके सामने पेश कर दी। उन्होंने घंटी बजाकर चपरासी से हिरदेराम को बुलवाया। आवाज़ सुनकर हिरदेराम भीतर गया। तहसीलदार साहब ने पटवारी से नकल लेकर हिरदेराम को दे दी। पटवारी ने रजिस्टर पर दस्तखत कराए और तहसीलदार साहब से तस्दीक कराई।”

तहसीलदार साहब ने हिरदेराम से पूछा, “पटवारी ने तुमसे क्या लिया है?”

हिरदेराम ने कहा, “सिरफ उजरत के कुछ पैसे लिये हैं और कुछ नहीं लिया।”

तहसीलदार साहब मुस्कराए और उन्होंने मन ही मन कहा, ‘ये कांग्रेसवाले भी कितने बेवकूफ हैं! ये भ्रष्टाचार-विरोधी आन्दोलन चलाते हैं, इन्हें क्या मालूम कि देहात में अफसर रिश्वत नहीं लेते, न अमला लेते हैं। रिश्वत इसलिए ली जाती है कि रिश्वत देनेवाले मौजूद हैं, जो पैसे के बल पर गैरकानूनी काम कराना चाहते हैं; या फिर कानून नहीं जानते।’ और वे उस दिन की कल्पना करके सिहर उठे जब लोग कानून जान जाएँगे; क्योंकि उस दिन जबकि सारी दुनिया वकीलों की तरह चालाक हो जाएगी, तब दिनदहाड़े लोगों के कत्ल होंगे और लोमड़ियों की जगह भेड़ियों का राज्य हो जाएगा।

हिरदेराम पटवारीजी के पास आकर बैठ गया था।

इन्फिकाक रहन की अदालत से इस समय सम्मन वास्ते-इत्तला तहसील में आ चुके थे। इत्तलानवीस ने चपरासी को बुलाकर उसे सम्मन दे दिए और कहा, “तारीख से पहले ही सम्मन आ जाना चाहिए।”

चपरासी आज्ञा पाकर अपनी ड्यूटी दर्ज कराकर चल दिया। वह पटवारी हल्का हुसैनपुर के पास सम्मन लेकर पहुँचा। हिरदेराम को देखकर उसने कहा, “पटेलजी, आपका एक सम्मन है।”

हिरदेराम ने चौंककर कहा, “सम्मन?”

“जी हाँ, सम्मन।” चपरासी ने कठोर स्वर से उत्तर दिया।

“मैंने कौन-सा जुरम किया है, जिसके लिए तुम सम्मन लाए हो?” हिरदेराम ने सूखे मुँह से पूछा।

चपरासी ने व्यंग्य से कहा, “पटेलजी, जुरम करने का तो वारण्ट होता है।”

“तो यह क्या है?” कुछ झेंपते हुए हिरदेराम ने पूछा, यद्यपि उसे खेद था कि उसका अज्ञान प्रकट हो रहा था; मगर इस समय मूर्ख बनने में अधिक कल्याण था, क्योंकि सचाई उसे साफ-साफ मालूम हो सकती थी।

चपरासी ने जवाब दिया, “यह है किसी माल के मुकदमे की इत्तला।”

“माल का मुकदमा कैसा?”

“पटेलजी, सम्मन देख लीजिए।”

हिरदेराम ने पटवारी से कहा, देखना, यह किसका सम्मन है?”

पटवारीजी ने कागज देखकर कहा, “यह डेट कन्सेशन बोर्ड का सम्मन है।”

हिरदेराम की उत्सुकता बढ़ी। पूछा, “किस बात का?”

पटवारी ने कहा, श्यौपाल ने ज़मीन का दावा कर दिया है। इसमें तारीख 14-9-55 है। इसकी सूचना है।”

पटवारी ने निरासक्त स्वर में उत्तर दिया, “दावा है ज़मीन छुड़ाने का।”
“अब क्या किया जाए?” हिरदेराम ने पूछा।
पटवारी ने कहा, “आप पहले इस पर सूचना कर दीजिए।”
हिरदेराम ने चपरासी के सम्मन पर सूचना कर दी और चपरासी चला गया। चपरासी को तामील करने के लिए दो दिन मिले थे, इसलिए वह तहसील न जाकर वापस अपने घर चल दिया। अब वह मज़े से दो दिन घर पर आराम कर सकता था और उसके बाद सम्मन तामील इत्तलानवीस को वापस कर देना बाकी रह गया था।
हिरदेराम ने आतंकित स्वर से कहा, “पटवारीजी, यह क्या हुआ?”
पटवारीजी ने कहा, “अरे पटेल जी, चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं। हर एक आदमी अपनी कोशिश करता है। ऐसी घबराहट की क्या बात है?”
“घबराहट? पटवारीजी, घबराहट की बात करते हो। मुझे तो इत्तला करते ही घबराहट हो गई।”
“मगर घबराहट से क्या काम चलेगा! भई, हिम्मत करो। हिम्मत से काम चलता है।”
“हिम्मत! पटवारीजी, हिम्मत!”
“हाँ, हिम्मत। पटेल, हिम्मत।”
“कैसी हिम्मत, पटवारीजी? मेरे पास माकूल सबूत है नहीं। कागज़ देखने से रहन फक हो जावेगी।”
“हिरदेराम, तुम्हारे पास सबूत है। तुम्हारे पास आर्ड रेहन का एक कागज़ है।”
“तो पटवारीजी, यह भी एक सबूत है?”
“अरे हिरदेराम, तुम वकील से जाकर मिलो। एक वकील से मिलो। मुकदमा जीतने के लिए पैसा खर्च करना पड़ेगा। बीमारी और मुकदमा एक ही चीज होती है। बीमारी इसलिए नहीं आती कि बीमार की खातिर आती हो। अरे, वह तो ग्रहों का दोष होता है। जब ग्रह बिगड़ जाते हैं तो तंग करते है। तंग करने के लिए पैसा खर्च करवाते हैं। मैं तो कहता हूँ, बीमारी आए तो जब तक उसका पैसा खर्च नहीं हो जाता, तब तक वह नहीं जाती। सोई मुकदमे के सवाल हैं। यह जो तुम कचहरियाँ देखते हो, ये पुराने जनम के बहुत सताए हुए लोग यहाँ बैठते हैं। जो जितना ज्यादा सताया हुआ होता है, वह यहाँ उतना ही बड़ा अफसर बनकर आता है। समझे पटेल! इन लोगों को बहुत लोगों से लेना होता है। इसलिए परमात्मा ने कचहरी बनाई ताकि लोग यहाँ बैठ सकें और पहले जनम में जो-जो जिस-जिसको दे रखा है, उस सबको ये यहाँ बैठकर वसूल करें। वरना सब क्यों नहीं तहसीलदार हो जाते? सब क्यों नहीं डिप्टी बन जाते? पटवारी एक अदना-सा आदमी होता है, सब पटवारी भी तो नहीं बन जाते। देखो, हैसियत की बात करते हो—मदरसे का मास्टर कम हैसियत का आदमी होता है। मगर किसी को देके नहीं आता, इसलिए जिन्दगी-भर लड़कों को पीटता है, दिनभर भोंकता है और पैसे उसे ज्यादा नहीं मिलते। यह तो भाग्य

की बात है।" यह कहकर हरदयाल ने धीमे से कहा, "सुनो पटेल! पहले अपने वकील के पास जाओ, वकील करो। कानून किसी की मदद नहीं करता। कानून की कई टांगें होती हैं। वकील उन टांगों को बाँधने का हुनर सीख आता है। वह आपकी मदद करेगा। लेकिन मशीन तब चलेगी जब उसमें तेल डालोगे। आजकल का ज़माना, पटेलजी, ऐसा है कि ठंडी चाँदी आजकल गर्म लोहे को पिघला देती है।"

"तो मैं किस वकील के पास जाऊँ? पटवारीजी, मुझे तो कुछ सूझता नहीं।"

"अरे भय्या, जब बच्चा होने को आता है तो कोई यह बहस करता है, कौन-सी दाई लाऊँ? जो सामने पड़ जाए वह दाई। कचहरी जाने पर जो सामने पड़ जाए सो वकील। और एक बात कहे देता हूँ।" पटवारी ने बड़ा विश्वास जताने के स्वर में कहा, "वकील की एक परख है। देखो, पुराने ज़माने में घोड़े बहुत चलते थे, तो घोड़ों का पूरा एक सास्तर तैयार हो गया था, सालोतर। घोड़ों की पहचान उसमें लिखी रहती थी। आजकल के जमाने में वकीलों की भी पहचान की ज़रूरत है। वकील वह अच्छा होता है जो बढ़-चढ़कर बोलता है। वकील करो तो बोलनेवाला। समझे? अफसर के ऊपर चढ़ जाए।"

हिरदेराम जब चलने लगा तो उसे विचार आने लगे—'वकील करूँ तो अच्छा-सा करूँ। रामकुमार अच्छा रहेगा। जात का भी बामन है। बोलता ऐसा है, जैसे घड़ा बज रहा हो। उसकी चलती भी खूब है, तभी तो उसने हवेलियाँ ठुकवा ली हैं। लोग कहते हैं, वह ऐसी जिरह करता है कि लोग उसके सामने छूट नहीं पाते। उसको तो जान से मारने को दुश्मन घूमते हैं। लेकिन वह किसी के हाथ थोड़े ही आता है।' फिर उसे ख्याल आया —'लेकिन रामकुमार अभी लड़का है, और वकील तो बड़ा-बूढ़ा अच्छा रहता है, तजरबेकार। जब लोग हजामत कराने के लिए पुराना नाई टटोलते हैं, तो मुकदमे की बहस क्या किसी हजामत से कम है, जिसमें बाल सब उतर जाएँ मगर ठोड़ी न कटे।' और वह चौधरी हरज्ञानसिंह वकील के यहाँ जा पहुँचा।

वकील साहब ने दूर से ही देखा तो पुकारा, "आइए पटेलजी!"

"राम-राम वकील साहब!"

"आओ बैठो, आओ।" वकील साहब ने मूँढ़े की ओर इशारा किया।

हिरदेराम बड़ी ठसक के साथ मूँढ़े पर बैठा।

"कहो, कैसे आए पटेल? मैंने तुम्हें कहीं देखा है।"

"मैं ड़ूंमरपुर का हूँ—हिरदेराम वल्द धनीराम।"

"ओह हो! तुम हो! अरे, तुम्हारा तो मैंने बड़ा चर्चा सुना है!"

"कौन कहता था?"

"तुम्हारी लड़की का ही तो कत्ल हो गया है ना? ये लड़ रहे हैं, ये वकील महेन्द्रकुमार जौहरी सरपंच की तरफ से मुकदमा, वही वाला न? सच्चा किस्सा क्या था? कत्ल तो हुआ है ना?"

"वकील साहब, मैं तो मर गया!"

"अरे तो यार, पटेल, यह भी समय का फेर है। जब हवा बहती है तो ऐसा लगता है कि इसका अन्त न होगा। लेकिन जब जाती है तो ऐसी नज़र आती है जैसे गधे के सिर से सींग। तो तुम चिन्ता मत करो। करनेवाला सब अच्छा ही करता है। तुम्हारी तरफ से तो सरकार लड़ रही है?"

मेरी तरफ से तो कोई नहीं लड़ रहा, वकील साहब!"

"क्यों? क्या बात हुई?"

"वकील साहब, अब मैं आपसे क्या कहूँ?"

"अरे, तुम मुझसे क्या कहोगे, पटेल, वकालत का पेशा ऐसा है जो दूसरे अनजान भोले-भाले आदमियों की मदद करने के लिए है। मैं जानता हूँ महेन्द्रकुमार को। तुम मुझे क्या बता रहे हो। समझ गया। मैं समझ गया। पर वक्त की बात है पटेल। आंधी-पानी में तो तुम जानो, बड़े से बड़ा पेड़ भीगकर हिल जाता है। पर घबराने से काम नही चलेगा। सारा जमाना बीमार है।"

हिरदेराम ने कहा, "वकील साहब, मेरा भी इलाज करो।"

"इलाज? किस बात का?"

"मैं बीमार हो गया हूँ।"

"तुम्हें क्या बीमारी है?"

"वकील साहब, मेरे खिलाफ एक श्यौपाल ज़मीदार डूंमरपुर के ने दावा कर दिया है।"

"किस बात का दावा है?"

"रहन छुड़ाने का।"

"रहन रखे कितने दिन हो गए हैं?"

"वकील साहब, साठ साल।"

"कोई चिन्ता नहीं। रहन नहीं छूट सकती। मैं तुमको मुकदमे में जितवा दूँगा। मेहनताना तय करो।"

"मेहनताना आप इच्छा के मुताबिक ले लेना, लेकिन..."

"लेकिन क्या?"

"मुझे यह भरोसा दिलाइए कि मैं जीत जाऊँगा।"

"देखो भई, हम तो वकील हैं। हमारा काम तो कोशिश करने का होता है। फैसला होता है अफसर के हाथ में। जिस तरह डाक्टर किसी मरीज का इलाज करता है और फल होता है ईश्वर के हाथ में।"

बात हिरदेराम की समझ में आ गई। वकील साहब ने नकल लेकर देखी और चौंककर बोले, "हिरदेराम! यह क्या है?"

“क्या? हिरदेराम ने पूछा, “क्या बात हो गई? आप चौंके कैसे?”

“चौंकने की बात तो है ही।” वकील साहब ने कहा, “तुमने और कुछ कहा था और इसमें कुछ और है।”

“कैसे वकील साहब? इसमें क्या है?”

“इसमें लिखा है कि रहन रखे हुए इक्वायन साल हुए हैं। यह तो बिना पैसे छूट जावेगी। इसमें मैं क्या करूँगा?”

“नहीं, वकील साहब, मेरे पास एक सबूत और है।”

“वह क्या है?”

“वह आर्ड रहन का कागज है।”

“है तुम्हारे पास?”

हिरदेराम ने कागज निकालकर उनके हाथ पर रख दिया।

वकील साहब ने कागज को पढ़कर हिरदेराम से पूछा, “क्या जमीन धनीराम के पास आर्ड रहन थी?”

“जी हाँ।”

“फिर क्या हुआ? बाद में क्या हुआ?”

“बाद में सरकार से ऐसा हुक्म आया कि जिन लोगों के पास ज़मीन आर्ड रखी है वे लोग रकम दाखिला कराकर रजिस्ट्री तस्दीक करा लें, वरना वह रहन काबिल कमात नहीं होगी। और बाद में इसकी रजिस्ट्री कराई गई और कागज़ात पटवार में अमल हुए।”

“अच्छा, ठीक है। कोई बात नहीं है, हिरदेराम, अब आप मेहनताना निकालो।”

“कितना मेहनताना, वकील साहब?”

“मेहनताना, चार सौ रुपया।”

“वाह, वकील साहब, वाह! खूब बताया चार सौ!”

“तो चार सौ रुपये ज्यादा हैं क्या?”

“बहुत ज्यादा हैं, हुजूर।”

“तुम्हें कितना देना है?”

“वकील साहब, आपने कागजात देख लिए। तीन सौ पचास रुपये में रहन है और वह भी इक्यावनसाला हुआ है। अगर यह कागज अदालत न माने तो बिला पैसे छूट जाएगी। और आप मेहनताना बता रहे हैं चार सौ रुपये। अच्छी लूट मचा रखी है!”

वकील साहब ने रुष्ट होकर कहा, “क्या इस ज़मीन की हैसियत यह नहीं है? इस वक्त की बात करो।”

“इस वक्त तो ज़मीन की इतनी हैसियत है।” हिरदेराम ने कहा, “यह तो आप ठीक कहते हो, मगर आप रकम ठीक नहीं बोलते।”

वकील साहब ने कहा, "भई, मैं ज्यादा बहस कचहरियों में करने का शौकीन हूँ। मैं इस केस में तीन सौ रुपये से कम हर्गिज नहीं लूँगा। अगर आप करना चाहें तो कर लीजिए, वरना किसी और को कर लेना।"

हिरदेराम ने देखा और कहा, "अच्छा, वकील साहब, मंजूर है, लेकिन आज मैं किसी और काम से आया था। मेरे पास पैसे कम हैं। इस बखत मैं आपको सिरफ पचास रुपइये दिए जाता हूँ। बाकी कल ले आऊँगा और मुकदमे की सारी बातें करूँगा।"

"अच्छी बात है।" वकील साहब ने कहा।

उनको किसी मुकदमे की आवाज़ पड़ गई और वे चल दिए। हिरदेराम भी सोचता हुआ चलने लगा।

आकाश में घनी घटा छा रही थी। ठंडी हवा चलने लगी थी। गाँव खामोश था। दूर तालों में गिरते पानी की हरहराहट का निर्घोष अनवरत नाद हवा में भरता हुआ सुनाई देता था। पास के नाद में छप्परों से चुचाती पानी की बूँदें टप-टप गिरती सुनाई देतीं और थोड़ी-सी भी आहट अधिक लगने लगती। द्वार बन्द था। राधे चारपाई पर बैठा था। मद्धिम दिया बड़ा सहमा हुआ-सा एक कोने में जल रहा था लालिम, जैसे उसे डर था कि कहीं बाहर की हवा आकर उससे न टकरा जाए।

चम्पो ज़मीन पर बैठी थी। उसके मुख पर आतंक की झलक थी। उसने कहा, "मुचलका हो गए, फिर भी नहीं मानते!"

राधे ने बीड़ी सुलगाई और गम्भीरता से कहा, "तू नहीं जानती, बौहरा रूपदास हिरदे को उकसा रहा है। तुझे तो पता ही है कि श्यौपाल से उसकी मुकदमेबाजी है।"

"सो तो है। लेकिन अब क्या करने को कहते हो?"

"कुछ नहीं करना है। ऊधम मचाएँगे, बन्द करवा दिए जाएँगे।"

"बन्द हो जाएँगे ना?"

"क्यों नहीं! मैं तो तेरे लिए हाजिर हूँ।"

"बस, एक तुम्हारा ही सहारा है। निहाल का बाप मुझे कैसे बखत छोड़कर चला गया?"

"अरी वो किस काम का आदमी है!" राधे ने धुआँ छोड़ते हुए कहा।

"ठीक कहते हो।" चम्पो ने स्वीकार किया।

"तुझे आज सरपंच के घर बुलाया गया था, मैंने सुना?"

"हाँ, माँजी ने बुलाया था।"

"क्या कहती थी?"

“मुझे फटकारने लगी कि मैंने बिना गौने के लड़की भेज दी। तुम तो जानते हो, मैं और क्या करती?”

“फिर तूने क्या कहा?”

“मैंने कह दी कि बड़े-बड़े आदमियों के रहते जब मेरी ओर कोई न बोला, तब मैं करती भी क्या?”

“ठीक कहा। क्या बोली?”

“बोलती क्या! वार्ड पंचन वह है ना वह उम्मेदी, मुझसे बोली—ठहर जा, ज़रा फैसला और हो जाने दे। निहालकौर को ले आइयो तब गौना कराइयो ठाठ से गाँव में। अरे, संकट में धरम नहीं देखा जाता।”

“अच्छा उन्होंने ऐसा कहा! तू घबरावे मत। देख, अब मैं घर जाता हूँ।”

“दगरे में पानी बह रहा है, कहाँ जाओगे इस बखत? कीड़ा-कांटा होगा।”

“अरी, कीड़े-कांटे को कौन देखता है!” यह कहकर उसने चम्पो की ओर देखा।

चम्पो ने कृतज्ञता से सिर झुका लिया और फिर कहा, “रोटी रक्खी हैं, खा लो।”

बाहर वेग से पानी बरसने लगा था।

राधे ने कहा, “अरे, पानी बरसने लग गया!”

“तो रुक जाओ न। मैं रोटी ले आती हूँ।” वह भीतर चली गई और राधे आखिरी कश छोड़कर अपनी बीड़ी को खाट की पाटी पर रगड़कर बुझाने लगा। चम्पो लौटकर आई। उसके हाथ में लोटा और थाली थी। राधे ने कहा, “तू खा चुकी?”

“मेरे पास रोटियाँ हैं।”

राधे खाने लगा। चम्पो फिर सामने बैठ गई। उसने कहा, “एक बात तुम्हें बताना भूल गई हूँ।”

कौर चबाते हुए राधे ने आँखों से इशारा करके पूछा। बोली, “श्यौपाल और मंगू के पास गोविन्द आया था।”

“कौन गोविन्द!”

“जो नेताओं के संग डोलता है।”

राधे के कान खड़े हुए।

“तो?”

“वही तो कहती हूँ। यों कह रहा था कि हिरदेराम की थोक ने यह पक्का कर लिया है कि निहाल को थाने में वापस बुलाया जाए।”

“ऐं, वो कैसे बुलवा सकते हैं! वह तो सब कथा दब गई।”

“आगे मुझे नहीं मालूम।”

“कुछ नही,” राधे ने सिर हिलाते हुए कहा, “बकवास है। ऐसी बातें तो सब उड़ाया ही करते हैं।”

चम्पो आश्वस्त होकर उसकी ओर देखने लगी। लेकिन राधे का विचार गलत था।

जिस प्रकार वह अवैध रूप से इस समय चम्पो के पास बैठा हुआ था, इसी शाम को महू गाँव में निहालकौर के घर पर गोविन्द उपस्थित था। उस दिन गोविन्द ने सारी घटनाएँ सुनने के बाद यह पता चलाया कि यह मुकदमा कहाँ कमजोर है। उसको मन ही मन किसी की भी उन्नति पसन्द नहीं आती थी। जब निहालकौर की घटना सुनी तो उसे लगा कि ऐसे में कुछ पैसे उसके हाथ पड़ सकते थे। बरसात हो रही थी। मौका पाकर वह महू गाँव पहुँचा। मार्ग में उसे पन्ना मिला जो कस्बे की ओर जा रहा था। मार्ग साफ देखकर वह सीधा निहालकौर के घर पहुँच गया। किसना बाहर बैठा था। गोविन्द को देखकर वह खाट से उठ खड़ा हुआ और बोला, “कहो साहब! कौन गाँव के हो?”

गोविन्द ने कहा, “मैं तुम्हारे समधाने की तरफ से आया हूँ।”

किसना के कान खड़े हुए। द्वार के पीछे चूड़ी बजीं। गोविन्द समझ गया कि निहाल वहाँ उपस्थित थी।

किसना ने कहा, “बैठो साहब, बैठो। हुक्का लाऊँ?”

“नहीं, नहीं, मैं बीड़ी पीता हूँ।”

“रोटी-वोटी?”

“नहीं, नहीं। तकलीफ मत करो। मैं तो बस खबर देने आया था; जल्दी ही चला जाऊँगा।”

किसना का कौतूहल जाग उठा। बोला, “वाह साहब! आप हमारे समधाने से आए हैं और हमारे ही काम से आए हो, फिर क्या वैसे ही चले जाओगे?”

इसी समय मुँह पर लम्बा घूंघट खींचें सिर पर घड़ा और बगल में कलसा लिए निहाल भीतर से निकली और कुएँ की ओर चल दी। गोविन्द ने देखा। किसना ने चिलम भरनी शुरू की, लेकिन गोविन्द ने कहा, “रहने दो, रहने दो।” और अपनी सिगरेट सुलगाई। बीड़ी की जगह सिगरेट देखकर किसना दब गया।

किसना बोला, “ए महाराज, ठाकुर हो?”

“हाँ।”

लेकिन उसको गोविन्द की यह बेफिक्री अब सताने लगी थी। बूढ़ा वैसे हो चला था। बातूनी भी था। बोला, “सुस्ता लो, सुस्ता लो। कोई खास बात न हो तो तब आराम से बताना।”

गोविन्द ने कहा, “बात तो खवास, बहुत खास है, इसीलिए आया हूँ। घर में कोई और तो नहीं है? कोई सुननेवाला तो नहीं है हमारी बातें?”

किसना ने चिलम हुक्के पर रख दी और बोला, “भीतर आ जाओ।” बाहर अब बूँदें भी पड़ने लगी थीं। छप्पर में ठंडी हवा चल रही थी। इसलिए वे लोग भीतर आ गए। अब किसना ने पूछा, “हाँ, तो अब बताओ, क्या बात है?”

गोविन्द ने कहा, "देखो, मुझे किसी ने यहाँ भेजा नहीं है। पहली बात तो तुम्हें यह बता दूँ। तुम तो जानते हो, तुम्हारा समधी सियाराम परदेस चला गया।"

"हाँ, कमाई करने गया है।"

"अरे खवास, ये तो कहने की बातें हैं। बुरा मत मानना, तुम्हारी समधन से नाराज होकर चला गया है।"

किसना के माथे पर त्यौरियाँ पड़ गईं, लेकिन हृदय में कौतूहल जागने लगा।

"बुरा मानते हो तो न कहूँ!"

"नहीं, नहीं, जरूर कहो।"

"देखो, अगर समधन छोरी को बुलाने की कोशिश करे तो भेज मत देना इस बखत। गांठ बाँध लो, मैं कहता हूँ।"

"सो कैसे?"

गोविन्द ने सिगरेट जल्दी से फूंककर खत्म की और बोला, "यहाँ कोई है तो नहीं। छोरी तो बाहर गई है?"

"हाँ, पानी लेने गई है?"

"तो जल्दी से सुन लो इस बात को, क्योंकि यह मैं उसके सामने नहीं कहूँगा।"

अब किसना को आतुरता ने घेर लिया। उसके हाथ में हुक्का ठंडा हो रहा था।

"चिलम पीते चलो।" गोविन्द ने कहा।

किसना को जैसे याद आया और वह इस बात से कुछ लज्जित भी हुआ कि वह बहुत अधिक उत्सुकता दिखा रहा था। उसने दो एक-कश लगाए, खांसा-मठारा और फिर बोला, "तो अब कह दो।"

"देखो," गोविन्द ने कहा, इस वक्त हमारे गाँव में पड़ी हुई है दांव-पेंच। हिरदेराम की थोक ने तुम्हारी समधिन को थाने में बन्द कराने की कोशिश की थी। उनकी इच्छा यह है कि किसी तरह निहालकौर पुलिस के जरिए पकड़वा मंगाई जावे ताकि थाने में बन्द रहे। खैर, अब तो जमानत हो गई है। दोनों लड़कों पर केस मजबूती से चलाया जाएगा। उधर सरपंच टनकेवाला आदमी है। उसकी तरफ से यह बात चल रही है कि निहालकौर को गाँव में वापस बुलाया जाए और उसका गौना करा दिया जाए, क्योंकि उनका विचार है कि ऐसा न होने से उनकी नाक कटती है। उन्होंने क्या किया चम्पो कि हिमायत ली और हिरदेराम की थोक के मुचलके करा दिए। चम्पो ने बयान दिया कि मुझे जान का खतरा है। ऐसे में गाँव में फूट पड़ी हुई है। तुम तो जानते हो, सरपंच और वार्ड पंच पुराने जालिम हैं। उनके ज़माने में ही उनके इशारे से राधे तुम्हारी समधिन के पास आया-जाया करता था और अब वह फिर आने-जाने लगा है। ऐसे में तुम ऐसी गलती मत करना कि कहीं इसे वहाँ भेज दो। मैं जानता हूँ कि मैं बदनामी की बात कर रहा हूँ, लेकिन दो बातें मेरे विचार में आती हैं। एक तो यह कि तुम गरीब आदमी हो। यह झगड़ा असल में चम्पो का नहीं, न हिरदेराम का

है; यह तो सरपंच चंचलसिंह और बौहरे रूपदास का है जो हिरदेराम को भड़का रहा है; क्योंकि चंचलसिंह की सरपंची में अव्वल तो बौहरे की नाक पहले ही नीची हो गई थी, लेकिन इधर इन्फिकाक रहन के चक्कर में सरपंच ने कई लोगों को उभाड़कर बौहरे की बहुत-सी जमीन रहन फक करा ली है। तुम कहीं छोरी को भेज न देना।"

किसना की आँखें चमकने लगीं। उसने कहा, "और दूसरी बात क्या कह रहे थे।"

"दूसरी बात ज़रा बुरी है।"

किसना आतंकित हुआ, "वो कैसे?"

"वो यों," और कहते-कहते उसने रुककर कहा, "पन्ना कहाँ है?"

"पन्ना तो कस्बे गया है।"

"अरे, यह भी बात बुरी रही।"

"कैसे! कैसे! कुछ समझाकर कहो?"

"अब तुम जा भी नहीं सकते।"

"कहाँ जाना है।"

"जाना कहाँ है, दरोगा से मिलना था। खैर, तुम न जाओगे तो मैं मिल लूँगा। यहाँ तुम छोरी को अकेला छोड़कर जाओगे भी कहाँ!"

किसना प्रभावित हुआ। उसने कहा, "दरोगा से कैसे मिलना है? क्या काम है?"

"अरे, मैंने यह सुना है कि हिरदेराम की थोक ने जो हिरदेराम की औरत दामी और चम्पो का झगड़ा लिखायी, उसमें निहाल का भी नाम लिखा दिया है और लिखवाया है कि वह आई थीं और रातों-रात फिर महू भाग गई। तुम जानो, उनकी तो तबियत यह है कि यह किसी तरह वहाँ पहुँच जाए तो कतल के केस में इसको घींस लिया जाए। बुरा न मानों तो एक बात कह दूँ।" गाँव में निहाल की बदनामी है। मैं जानता हूँ कि यह उड़ाई गई है और छोरी ऐसी नहीं है। पर तुम किस-किसका मुँह बन्द करोगे! यह तो पारटीबाजी पड़ गई है। इसमें तो ऐसी ही बदनामियाँ उड़ाई जाती हैं, एक-दूसरे के खिलाफ।"

किसना ने हुक्का एक ओर रख दिया और कहा, "मैं तो पहले ही सोचता था कि यह सम्बन्ध ठीक नहीं हुआ।" वह बड़बड़ाया, "अरे, हमें ब्याज से मतलब कि दुनिया-भर की रेजगारियों से मतलब! यह तो जान को मुसीबत हो गई। अब यह आंधी-पानी। मैं बूढ़ा हो चला। लड़के को भी आज ही जाना था। तो भय्या, दरोगा से क्या कहना पड़ेगा?"

"कहना क्या पड़ेगा! यही कि किसी भी हालत में लड़की का नाम बीच में न आए। इसके लिए उसे नरम करना पड़ेगा। और तुम जानो, ठंडा लोहा आग से नरम होता है, चाहे जिधर मोड़ लो। माटी पानी से नरम होती है और पुलिस चाँदी से नरम होती है। लेकिन एक बात और याद रखो। एक बार अगर उसका नाम कागज पर चढ़ गया, तो वह फिर किसी से भी नरम नहीं हो सकता; क्योंकि काठ जल सकता है कट सकता है, लेकिन उसमें लोच नहीं आती। तुम दो सौ रुपये का इन्तजाम करो।"

“दो सौ!” किसना के पांव के नीचे से जमीन खिसक गई। उसे याद आया, क्यों न वह एम. एल. ए. साहब से जाकर मिले! लेकिन उसको ध्यान आया, एम. एल. ए. साहब आज सबेरे से ही कहीं मोटर लेकर चले गए थे अभी तक लौटे भी नहीं थे। उसने मन-ही-मन हिसाब लगाया, दो सौ रुपये। दो सौ रुपये उसके लिए पहाड़ बन गए।

गोविन्द ने कहा, “रुपये लो और चलो। रातों-रात दरोगा से जाकर कहना कि भाई, हम तो गरीब आदमी हैं, हमें इन बातों से कुछ नहीं लेना-देना। वैसे दरोगा मैंने सुना है रहमदिल है।”

इसी समय बिछिया बजने की आवाज़ आने लगी। भरे घड़े सिर पर रखे निहाल कुएँ से लौट आई थी। किसना अब स्पस्ट कहना चाहकर भी नहीं कह सका।

निहाल भीतर रोटी बनाने लगी। अंधेरी झुकने लगी थी। किसना चिन्तामग्न था। तरह-तरह की कल्पनाएँ उसके दिमाग में आ रही थीं। कभी उसे चम्पो पर क्रोध आता, कभी वह सोचता, इसकी बहू को छोड़ क्यों न दिया जाए जो वहाँ से बदनाम आई है और बिना गौने के आने के कारण इस गाँव में भी जिसने बदनामी पैदा की है। यहाँ भी बिरादरी के लोग नाक-भौं सिकोड़ते हैं। लेकिन फिर उसे ध्यान आया, नाइन को सभी बदनाम करते हैं। दुश्मनों का क्या? झूठा ही नाम लगा दिया हो तो! वह तो खैर पुलिस की बात थी। सबकी ज़िन्दगी में उतार-चढ़ाव आता है। अकेली औरत है समधन। कोई सहारा नहीं। हो सकता है, उसने मजबूरी में राधे का सहारा लिया हो और लोग उसे ही बदनाम करते हों। और फिर निहालकौर उसके बेटे की बहू है। दुनियाँ तो यों ही कहेगी कि अजी छोरी वैसे ही छोड़ दी। और जब सरपंच इनके साथ है तो पन्ना का दूसरा ब्याह भी आसानी से न होने देगा। एम. एल. ए. साहब अपने जरूर हैं, मगर सरपंच से उनकी यारी है। इस कल्पना ने उसको और भी कमजोर बना दिया। अन्त में उसने निश्चय किया कि दो सौ रुपये का प्रबन्ध करना ही ठीक रहेगा और किसी तरह प्राण बचाने चाहिए। उसने उठते हुए कहा, “अच्छा, तो तुम बैठो भय्या! रोटी हो रही है। मैं आता हूँ।”

किसना उठ खड़ा हुआ। वह सोचने लगा, रुपये के लिए कहाँ जाऊँ? उसे याद आया, मास्टर हीरालाल लेन-देन करता था। वह मास्टरी भी करता था और घर पर टूसन भी पढ़ाता था, इलाज भी करता था। यहाँ तक कि सुइयाँ भी लगा लेता था। ब्याज जरूर ज्यादा लेता था। यह वह आदमी था जो इस संकट में उसकी सहायता कर सकता था। उसी की ओर वह चल दिया।

सन्नाटा देखकर निहाल की चूड़ियाँ फिर खनकीं और वह द्वार पर खड़ी हो गई। गाँव का आदमी आया था, इसलिए उसे उससे घूंघट की आवश्यकता नहीं थी। गोविन्द को वह पहचानती थी। उसने कहा, “भैया, कैसे आए?”

गोविन्द ने कहा, “तेरे ही पीछे आया।”

“कैसे?”

"थाने में, सुना है, तेरा नाम लिखा दिया है हिरदे ने।"

वह काँप उठी। "क्यों?" उसका मुँह सूख गया।

"यों कि हिरदे की बहू और तेरी अम्माँ में लड़ाई हो गई और उन्होंने लिखवा दिया तेरा नाम भी संग में कि तू भी मारपीट में शामिल थी और रातों-रात ही ससुराल भाग गई।"

निहाल को चक्कर-सा आ गया। वह डगमगा गई।

गोविन्द ने झपटकर उसे सँभाला और कहा, "अरी, तू घबराई क्यों जाती है?"

लेकिन निहाल फटी आँखों से देखती रही और उसने कहा, "क्या मुझे फिर थाने जाना पड़ेगा?"

"अब देखो, कोशिश तो यही है कि तू न जाए; पर निहाल, तैने भी अच्छी नहीं की। तेरे वो दोनों छूट आए। नरायण और माधो ज़माने-भर में कहते फिरते हैं कि हमारा तो कोई कसूर नहीं है। हम उस नाइन के बहकावे में आ गए, वरना हम काहे को ऐसा काम करते!"

निहाल ने आक्रोश से कहा, "आग लगे उनके मुँह में। मैंने क्या उनसे यह कही थी कि खून कर दो?"

"तो तूने क्या कही थी उनसे?" गोविन्द ने चतुरता से पूछा।

निहाल ने कहा, "मुझसे छेड़खानी कर रहे थे। मैं अकेली थी। मैंने तो यों कहा था कि ऐसा मत करो, कहीं हिरदे की लड़की ने देख लिया तो मैं बर्बाद हो जाऊँगी। वो बोले कि अरी, उसे तो हम योंही अपनी बना लेंगे। मुझे क्या मालूम था कि हत्यारे उसे काट डालेंगे।"

गोविन्द ने कहा, "पर तेरी बात मानेगा कौन! वो तो यों कहते हैं कि हमें बुलाया करती थी रोज। बोली कि हिरदे की लड़की देखती है, इसे भी शामिल कर लो।"

निहाल इस कठोर सत्य को सुनकर डर गई। उसको लगा कि गोविन्द भी तेरी बात जानता था। हालाँकि गोविन्द ने कल्पना से ही ताने में बाना डालने की कोशिश की थी।

वह बोली, "अब यों तो कोई कुछ कहा करे, मैं क्या कर सकती हूँ!" दुःख आवेग और आतंक के कारण वह रोने लगी।

गोविन्द ने अपनी बाँह उसके कंधे पर रखते हुए कहा, "अरी, रोती क्यों है पागल? ऐसे डर की क्या बात है? मैं तो हूँ।"

उसने आँसू पोंछते हुए कहा, "मुझे ये लोग कहीं का नहीं रखेंगे। पीहर में बदनाम हुई, सुसराल में भी बदनाम करके छोड़ेंगे, और जो कहीं इस बार मुझे थाने जाना पड़ गया तो ससुरालवाले भी अब मुझे नहीं बुलाएँगे।" इस कल्पना-मात्र से निहालकौर का हृदय विदीर्ण होने लगा। अब उसे लगा कि उसका वह पाप अब अपने रंग दिखाने लगा था।

गोविन्द ने उसका कंधा थपथपाकर कहा, "अरे, अगर तू हिम्मत न रखेगी तो तुझे कौन बचा सकता है? एक बात तो बता। तू मुझे यह बता दे कि तू पीहर जाना वाहती है?

माधो और नरायन यह कहते फिरते हैं कि एक बार निहाल फिर आ जाए तो सारे झंझट कट जाएँ।

"सो कैसे?" उसने चौंककर पूछा।

"अरी, उनकी तो दूसरी चाल है। वो तो तेरे सिर पर खून मढ़ना चाहते हैं।"

निहाल की आँखों में अंगारे भड़कने लगे। उसने कहा, "अच्छा! मेरी ही गलती थी जो मैंने उन्हें अपने पास बुलाया। मैंने अपना धरम भी बिगाड़ा और अब उन लोगों की यह चाल चल रही है!" हठात् उसे ध्यान आया कि वह अपने मुँह से क्या कह गई थी।

लेकिन गोविन्द ने उसे सोचने का समय नहीं दिया। उसने कहा, "दरोगा से उन्होंने साठ-गांठ कर रखी है। मैंने तेरे ससुर को रुपये लाने भेजा है, वह दो सौ रुपये लेने गया है। लेकिन तू जानती है, ये दो सौ रुपये का काम नहीं है। कम-से-कम तीन सौ रुपये चाहिए जिससे नरायन और माधो की चाल काटी जाए। चम्पो के केस में हिरदे ने तेरा नाम लिखाया है तो वह मामला इतना संगीन नहीं, जितना यह। लड़के तो बयान देने को तैयार हैं कि दोनों का तेरे से याराना था और दरोगाजी से उन्होंने कहा है, एक दिन हिरदे की लड़की ने देख लिया, उस बखत निहाल दोनों यारों से गुलछर्रे उड़ा रही थी, तो उस बखत अपनी बेशर्मी से घबराकर वो बोली, 'या तो तुम इसको कतल करो कि मैं करती हूँ।' और निहाल ने बढ़कर हिरदे की लड़की को पकड़ लिया और उसकी गरदन पर बांक चलाया।"

निहाल के रोंगटे खड़े हो गए। उसे लगा कि उसका अन्त आ गया था। उसने विह्वलता से गोविन्द का कंधा पकड़कर कहा, "अब मैं क्या करूँ?"

"कुछ नहीं दरोगा को रुपये देने पड़ेंगे, सब मामला दब जाएगा। पहले भी तो ऐसे ही छूटकर आई है। कौन नहीं जानता, सारे गाँव में खबर फैली हुई है।" वह सुनती रही। तब गोविन्द ने कहा, "मैं तेरे ससुर को यह बात तो नहीं बता सकता था। मुझे चिन्ता सता रही थी कि मैं क्या करूँ। चलो, भगवान ने ऐसा मौका तो दिया कि मैं तुझे सारी बात बता सका। तू तो जानती है कि तेरी माँ के पास फिर से राधे आने लगा है। उसको नहीं तेरी फिकर।" लेकिन निहाल अपने ध्यान में इतनी डूबी हुई थी कि वह यह नहीं पूछ सकी कि तुम्हें इतनी फिकर क्यों है। उसके दिमाग में केवल यह आया कि गोविन्द ठीक कहता है। उसकी माँ तो अपने स्वार्थ में मगन है। इस समय उसे अपने बचने के लिए स्वयं कोई राह निकालनी पड़ेगी।

गोविन्द ने फिर कहा, "हिरदेवाला मामला दबाने के लिए दो सौ रुपये दे देगा; लेंकिन यह नरायन और माधो को कैसे रोकेगा जो दरोगा के पास खुल गया है? तेरे पास रुपये हैं?"

"मेरे पास रुपए कहाँ हैं! कुछ गहने ज़रूर हैं।"

"इनकी खबर है यहाँ सबको?"

"नहीं, मैंने अभी बताया नहीं।"

"तो ऐसे मौके पर उन्हीं को काम में ले।"

निहाल उठ खड़ी हुई। उसने कहा, "लाती हूँ।" और वह भीतर की ओर चली।

गोविन्द उसके पीछे चलने लगा। निहाल ने भीतर के कोठे में जाकर बक्स खोला और चांदी के कुछ गहने निकाले।

गोविन्द ने कहा, "देख, तेरे ससुर को और आदमी को यह पता न चल जाए। फिर यह बात नहीं रहेगी।"

उसने गहने अपनी अंटी में बाँध लिये और कहा, "किसी से कह न देना।"

निहाल ने उसकी ओर आँखें उठाकर पूछा, "कम हो जाएगा?"

"अब तू बेफिकर रह।" गोविन्द ने हँसकर कहा, "लेकिन मुझे लगता है तेरा ससुर आनेवाला है। खैर, बाहर निकल।" फिर उसने स्वर बदलकर कहा, "इस आंधी-पानी में जाऊँगा कैसे?"

"सवेरे चले जाना।" निहाल ने कहा और उसने दिलजमाई करने के लिए कहा, "अब मेरी बदनामी की बात फैलेगी तो नहीं?"

गोविन्द ने कहा, "दरोगा तो मान जाएगा, लेकिन एक बात पूछ लूँ?"

"क्या?"

"तेरा तो ब्याह हो चुका था, तुझे ऐसी जरूरत क्या थी, और दो दिन ठहर जाती?"

ग्लानि, अपमान, लज्जा और कलंक की भावना से उसका हृदय क्षण-भर के लिए प्रकम्पित हो उठा। वह उत्तर न दे सकी। उसने सिर झुका लिया।

गोविन्द ने उसका हाथ पकड़कर कहा, "देख, जब कभी ऐसा करे तो ध्यान रखा कर।"

उस समय हवा तेज चलने लगी थी। आकाश में मेघों का गर्जन हुआ। धारा सार वर्षा होने लगी। हवा के तेज झोंके से कोठे का दीपक बुझ गया। गोविन्द ने निहाल का हाथ दबाकर कहा, "डर मत मैं तेरे पास हूँ।"

जब वर्षा थम गई, थोड़ी बाद देर बाद किसना रुपये ले आया। उसने देखा, गोविन्द खाट पर लेटा था। बूढ़े ने क्षण-भर सांस ली और कहा, "कीचखच्चा हो रहा है। बड़ी मुस्किल से इन्तजाम करके लाया हूँ।" इस समय उसे मास्टर हीरालाल के दिन-दूने रात-चौगुने बढ़ते ब्याज की कल्पना सताने लगी।

"ले आए?" गोविन्द ने कहा, "अब चले जाओ दरोगा के यहाँ।"

बूढ़े ने बाहर झांका। घोर अन्धकार छा रहा था। उसने कहा, "तुम्हें भी तो गाँव लौटना है?"

"हाँ-हाँ"

"तो तुम्हीं क्यों नहीं दरोगा से यह काम करा देते?"

“मैं तो करा दूँगा, पर तुम्हारी दिलजमई कैसे होगी? तुम न कहते फिरोगे इधर-उधर कि गोविन्द तुमसे रुपये ले गया?”

मैं तो किसी से कुछ नहीं कहूँगा, कोई मुझे कुछ कहेगा तो नहीं बोलूँगा। बस, मेरे यहाँ पुलिस की खबर नहीं आनी चाहिए।”

गोविन्द ने कहा, “एक बात सुन लो। कतल के केस में अगर तुम्हारी बहू बुलाई गई तो मैं उसके लिए जिम्मेदार नहीं हूँ। हाँ, इस मामले में पुलिस अगर कुछ कह जाए तो मेरी जिम्मेदारी।”

किसना ने कहा, “भगवान तुम्हारा भला करे।” और बहू को आवाज़ दी, “अरी, रोटी तो दे जा।”

निहाल ने उत्तर नहीं दिया। लेकिन आहट से यह प्रतीत हुआ कि वह खाना लगा चुकी थी। बाहर ठंडी हवा चल रही थी और बूढ़ा अब बैठकर झपकने लगा था। अगले दिन गोविन्द डूंमरपुर पहुँचा, उसके पास लगभग पाँच सौ रुपये का सामान था। इस सारे मुकदमे की खोज और जाँच रखने का मुनाफा उसने कमा लिया था। वह सीधा ठाकुर जवाहरसिंह के पास पहुँचा जो कांग्रेस के नेता थे। उसने उनके सामने घी का कनस्तर रखा।

ठाकुर साहब ने कहा, “कहाँ से लाया?”

“हजूर, देहात चला गया था। अच्छा घी था, मैंने सोचा, लेता चलूँ।”

“कितने का है?”

“अब हजूर, दाम फिर आ जाएँगे। ऐसी क्या बात है! मैं तो परेशान हो गया।”

“क्यों, क्या बात हो गई?” ठाकुर साहब ने कहा।

“हजूर, जमाने को कोई नहीं रोक सकता।” उसने स्वर बदला, “मैंने सुना है कि झोलेटोले गाँव के सरपंच रामसिंह तिवाड़ी जो हैं, वे आजकल आपके कुछ खिलाफ हो गए हैं?”

“अच्छा, अब वह फिर अपना सिर उठाने लगा! मैं उसे कितनी ही बार मात दे चुका हूँ, लेकिन उसकी हविस नहीं मिटी। क्या वह तुम्हें भी तंग करने की सोच रहा है, क्योंकि तुम मेरे आदमी हो?”

“हाँ हजूर। सुना है उसका सरपंच चंचलसिंह से कुछ याराना हो गया है। पक्की बात नहीं है वैसे।”

“अजी, तुम बेफिक्र रहो, मैं देख लूँगा।”

“हजूर यह दरोगा बड़ा बदमाश है।”

“अजी, मजाल है जो तुमसे कुछ कह जाए।” ठाकुर साहब ने कहा, “मैं भी कोई नया कांग्रेसी नहीं हूँ। जिलाध्यक्ष बहादुरसिंह की शान बनी रहे। कोई उनके बल पर ऐंठता है, मेरी भी मिनिस्टर तक पहुँच है।

"बस हजूर वरना गाँव से भागने की नौबत आ जाएगी। बस, मेरा तो आप ही एक सहारा हो।"

"तुम जाओ, घोड़े बेचकर सोओ। कोई चिन्ता की बात नहीं है।"

"बस हजूर, मैं तो इसीलिए आया था कि बड़े आदमियों के कान में एकाध बात पड़ जाए तो वे भूलते नहीं है। हजूर, ओछों में और बड़ों में यही फर्क होता है। बड़े आदमी इस कान से सुनते हैं तो दिल में उतार लेते हैं और छोटे आदमी सुनते हैं तो इस कान से सुन कर उस कान से निकाल देते है। घी भीतर पहुँचा दूँ?"

"हाँ, भीतर रख आओ।" और फिर जैसे ठाकुर साहब को याद आया, उन्होंने कहा, "घबड़ाने की कोई बात नहीं, सब देख लूँगा।"

"बस हजूर ऊपर आपका हाथ बना रहे, तो मैं किसी से नहीं डरता।"

अपना इतना इन्तजाम करने के बाद गोविन्द हिरदेराम के पास गया और उसने कहा, "पटेल, यह सब क्या चक्कर में पड़ रहे हो? इसमें तो बड़े-बड़े नेता आ गए।"

"वह कैसे?" हिरदेराम ने चौंककर पूछा। दामी भीत के पीछे से सुनने लगी।

गोविन्द ने कहा, "देखो, ये मुचलके हो गए और अब आगे क्या हो रहा है, यह भी पता है? एक तो तुम्हारी नाक कट गई कि एक मामूली औरत ने तुम्हारे मुचलके करवा लिए और तुम थाने में उसकी रपट भी नहीं करवा सके, और समझते तुम कुछ हो नहीं। एक मुकदमा छोड़कर दूसरे में जा फँसे। अब आगे की भी कुछ खबर है?"

हिरदे हत-बुद्धि सा बैठा रहा। दीवार के पीछे सटी खड़ी दामी ने द्वार की ओर हाथ हिलाया तो चूड़ी बजी। गोविन्द का ध्यान उधर गया। हिरदेराम ने देखा और कहा, "क्या बात है?"

दामी ने भीतर के स्वर दबाकर कहा, "एजी, क्या बात है?"

गोविन्द ने कहा, "बात क्या है भाभी! अब मैंने सुना है कि वो लोग पुलिस में रपट करने वाले हैं। दो गवाही दिलवाकर सबके-सबको बन्द करवा दिया जाएगा कि मुचलके हो जाने के बाद भी उन लोगों ने फौजदारी करने की कोशिश की।" हिरदे और दामी का दिल धड़क उठा। गोविन्द ने सिर हिलाकर कहा, "काम के आदमियों की बात तो तुम मानते नहीं हो। इधर-उधर भटकते रहते हो। लेकिन भाई, हमसे नहीं देखा जाता इतना जुल्म। अरे, जब तुमको मालूम है कि जिन्हें तुम अपने थोक का आदमी समझते हो वे सब भीतर ही भीतर सरपंच से मिले हुए हैं, तो तुमको यह उम्मीद क्यों रखनी चाहिए कि वे तुम्हारा भला करेंगे? तुम हरदयाल के पटवारी के पास गए थे। तुमने उसे रुपये भी दिए; लेकिन नकल उसने साठ साल की दे दी?"

अड्डे पर बैठकर सारे गाँव की एक-एक खबर रखने वाले गोविन्द के इस वाक्य ने हिरदेराम के हृदय को हिला दिया। दामी ने कहा, "अरे, ये बड़े भोले हैं। मैंने पहले ही कही थी कि दरोगा को पटाओ, लेकिन इन्होंने कुछ नहीं किया।"

“भाभी! दरोगा ऐसे ही नहीं पटता, कुछ रकम चाहता है। तुम्हारी लड़की का कतल हुआ, कौन नहीं जानता था कि निहाल का याराना था माधो और नरायन से! छिनाल की बेटी छिनाल; और उसका नतीजा क्या निकला? कुछ नहीं; क्योंकि तुमने केस कायदे से लड़ाया ही नहीं। सरपंच बाजी मार गया और अब दरोगा फिर तुम्हारे खिलाफ आनेवाला है।”

“तो देवर!” दामी ने कहा, “कैसे करें?”

“करें क्या? दरोगा को कुछ देना पड़ेगा।”

हिरदे ने कहा, “लेकिन मेरे पास तो कुछ नहीं है।”

गोविन्द हँसा और बोला, “क्या यार तुम आदमी हो। अरे, बेइज्जती कराकर बाद में दबकर दिए तो क्या दिए! दो गवाहों में मारे जाओगे। एक चम्पो का गवाह राधे है ही और दूसरा आदमी तैयार करने में सरपंच को देर नहीं लगती। मेरे साथ चलो और दरोगा को कम से कम सौ रुपया तो दे आओ।” उसने धीरे से कहा, “उसके बाद होगी सो देखी जाएगी, लेकिन वह तुम्हारा लिहाज हर बात में करेगा।”

हिरदे बोला, “अच्छी बात है, मैं आता हूँ।”

क्षण-भर गोविन्द को लगा कि कहीं उसकी चाल खाली न चली जाए। उसे पूरा विश्वास था कि उसके महू में जाने की खबर बिलकुल बाहर नहीं होगी। उस विषय में उसका फंदा ठीक बैठ गया था। वह मन ही मन मुस्कराया। कैसे-कैसे बेवकूफ हैं इस संसार में! उसे अपनी प्रतापी बुद्धि पर आश्चर्य हुआ। इतनी सरलता से काम पूरा हो जाएगा, इसकी उसे आशा नहीं थी। उसे पता चला था कि रामसिंह तिवाड़ी की निहाल पर नज़र पड़ी थी। इससे उसके मन में एक कौतूहल जाग उठा था। निहाल में ऐसी क्या बात थी! और रामसिंह तिवाड़ी की एक पोल का हाथ में आना भी लाभदायक था। वह उसके अनेक फायदे उठा सकता था। विशेषकर ज़िलाध्यक्ष बहादुरसिंह की दृष्टि में उसका महत्त्व कहीं अधिक हो सकता था। उसने कहा, मन ही मन, निहाल है इस सबके लायक।

आशंकाग्रस्त-सा हिरदे भीतर चला गया। उसने देखा—दामी त्रस्त-सी खड़ी थी।

दामी ने धीरे से कहा, “क्या कह रहे हैं?”

हिरदे ने कहा, “करम फूट गए। पता नहीं कैसा चक्कर है! अपने तो भाग ही फूट गए।”

दामी ने उत्तर दिया, “हिम्मत से काम लो। अरे, मैं खड़ी हूँ तुम्हारे सामने जिसकी कोख की जाई को काट डाला गया, लेकिन न रोई। अभी और भी तो बच्चे हैं, उनके लिए तो जीना ही है।”

“लेकिन वो तो दरोगा के पास जाने को कहता है। अब तू नहीं समझती, दरोगा के पास जाने का मतलब है सौ रुपये कम से कम।”

दामी के मुँह से फूट निकला, “सौ रुपइये!” और उसने फिर दोहराया, “सौ रुपइये!”

“कहाँ से लाऊँ मैं सौ रुपइये?” हिरदे ने कहा।

“बचे नहीं हैं?” दामी ने पूछा।

हिरदे ने उत्तर दिया, “लेकिन मुकदमे में क्या होगा? तारीख सिर पर है।”

दामी ने उसकी ओर अपनी खंगवारी बढ़ा दी।

हिरदे ने देखा और मुँह फिरा लिया।

“मैं कहती हूँ, ले लो। ऐसे ही बखत के लिए लोग घर में गहने गढ़ाकर रखते हैं।”

“लेकिन यह तो तेरी है।”

वह जैसे आहत हुई। बोली, “मेरी तुमसे कुछ अलग है? मैं कहती हूँ, बच्चों का मुँह देखो। जिसकी इज्जत लुट गई उसका सब कुछ लुट गया। दिन सदा एक-से नहीं रहते। यह हवा भी बदलेगी।” दामी ने कहा। उसने खंगवारी उसके हाथ में पकड़ा दी और कहा, “जिन्होंने तुम्हारी लड़की का खून किया है और जो इतने जालिम हैं, उनसे बदला लेने के लिए अगर मेरी तन की खाल भी बिक जाए, तो भी देख लेना, दामी के मुँह से आह नहीं निकलेगी। तुम मरद होके रोते हो और मुझे देखो, जो कहीं मैं मरद होती तो तुम्हें बताती। मैं इनका खून कर देती।”

हिरदे ने कहा, “तू औरत है, नासमझ है। अरी, खून करना क्या मैं नहीं जानता! लेकिन जब मैं निरोती की सूरत देखता हूँ, जब मैं सम्भू को देखता हूँ, जब मुझे याद आती है कि बिलैया का ब्याह करना है, तब मुझे लगता है, हिरदे, सब कुछ तुझे सहना पड़ेगा, क्योंकि अगर तू मर जाएगा तो तेरे बच्चे और तेरी औरत दर-दर के भिखारी हो जाएँगे। मजबूरी ने मुझे कमजोर बना दिया है दामी। नहीं तो मैं इस दरोगा की खुशामद करता!”

देर हो रही थी। गोविन्द ने कहा, “यार, तुम तो भीतर ही बैठ गए।”

हिरदे बाहर आया। गोविन्द खड़ा था। गोविन्द को देखकर उसे लगा कि उसका साहस झूठा था और अब वह फिर अनुभव करने लगा कि वह एक ऐसी इमारत था जिसकी बुनियाद नहीं थी।

गोविन्द ने कहा, “तो चलो भाई पटेल, मैं तो कहता हूँ कि सीधे दरोगाजी के पास चलें।”

हिरदे घर के बाहर आ गया। गोविन्द उसके पीछे निकल आया। हिरदे ने कहा, “सीधे तो नहीं चल सकते।”

“क्यों?”

“मैं अभी आता हूँ। ज़रा बाजार तक हो आता हूँ।”

गोविन्द ने कहा, “अच्छी बात है। मैं अड्डे पर चलता हूँ। आ जाओ तुम जल्दी से।”

हिरदे जब बौहरे रूपदास के यहाँ दो सौ रुपये की चीज रखकर सौ रुपये लेकर लौटा, उसके पांव डगमगाने लगे थे। गोविन्द ने देखा तो लपककर पास आ गया। वह उसे लेकर सीधा दरोगा गजराजसिंह के पास गया। हिरदेराम नीचे बैठ गया और गोविन्द दरोगाजी के पास ऊपर चला गया। उस समय दोपहर ढल चुकी थी।

गजराजसिंह ने गोविन्द की ओर देखा और कहा, “कहो! बहुत दिन बाद आए।” और दरोगाजी ने मन ही मन दोहराया—‘बचा रह पट्ठे! नेताओं की आड़ में। किसी न किसी दिन तुझ जैसे गुण्डे को हवालात में ज़रूर बन्द करूँगा। लेकिन मौका मिलने की देर है’। वे उससे डरते थे, क्योंकि गोंविन्द के लिए दरोगाजी के खिलाफ महजरनामा भिजवाना बाएँ हाथ का खेल था।

और गोविन्द ने मन-ही-मन कहा—‘खाए जा पट्ठे रिश्वत, लेकिन तेरी आड़ में मैंने न खाया तो खाया किसने।’ उसने कहा, “दरोगाजी, मैं तो चक्कर में पड़ गया, इसलिए नहीं आया।”

“कैसा चक्कर?”

“वह है ना, वह रामसिंह तिवाड़ी, झोलेटोले गाँव का सरपंच?”

“हाँ, हाँ।” दरोगाजी ने कहा, “क्या हुआ?”

“वह मुझसे बोला...क्या बताऊं दरोगाजी, कैसे कहूँ...”

“क्यों, क्यों? कहो, रुकते क्यों हो?”

“आप नाराज हो जाएँगे। आपके सुनने लायक बात नहीं है।”

“क्या? क्या?”

“अब आप क्या किसकी ज़बान रोक लोगे, दरोगाजी! पहले का जमाना तो है नहीं कि चाहे जिसको बन्द कर दिया। वह भी तो सरपंच कहता है अपने को।”

“बहुत देखें हैं ऐसे सरपंच। किसी न किसी दिन ऊँट भी पहाड़ के नीचे आ ही जाएगा।” दरोगा ने तैश में आकर कहा, हालांकि अभी गोविन्द ने कोई बात खोली नहीं थी।

गोविन्द मन ही मन संतुष्ट हुआ।

“क्या कहते थे?” दरोगाजी ने पूछा।

“अजी!” गोविन्द ने स्वर खींचकर कहा, “मुझसे बोला—सूप छरे तो छरे अब चलनी भी छरने लगी।”

“क्या मतलब! दरोगा ने पूछा।”

“अब हुजूर! नहीं मानते हैं तो मैं कहे ही देता हूँ खोलकर, फिर मुझसे मत कहिएगा कि मैंने ऐसा क्यों कहा। बात यह है कि मैं पेट में रखने वाला आदमी नहीं। मुझे सचाई पसन्द है और ईमानदारी से जिन्दगी बिताता हूँ। झूठ से मुझे नफरत है। आप तो जानते ही

हैं। बस इत्ती-सी बात थी, कहने लगा—मेरे पास बड़ी शिकायतें इकट्ठी हो गई हैं कि तू दरोगा गजराजसिंह की नाक का बाल हो गया है और वह तेरे ज़रिए से रिश्वत लेता है।"

"क्या कहा उस सुअर के बच्चे ने? मैं रिश्वत लेता हूँ?" दरोगाजी ने तैश में आकर पूछा।

"अब हुजूर, आजकल के जमाने में तो न लेने वाला भी बदनाम। बल्कि लेनेवालों का नाम कोई नहीं लेता। और हुजूर, मैंने ऐसे क्या ले लिया और आपने कौन-सी हवेली ठुकवा ली। मगर कहनेवाले कहने से बाज नहीं आते। कहता था—अरे मैं भी कांग्रेस का आदमी हूँ, देख लूँगा।"

"लेकिन," दरोगाजी ने पूछा, "उसको मुझसे इतनी दुश्मनी क्यों पैदा हो गई?"

"अजी, दुश्मनी क्या है, सब ठाकुर जवाहरसिंह की करामात है। वह जानता है कि ठाकुर जवाहरसिंह आपकी तरफ हैं और वह उनका दुश्मन है। बस।"

"अरे, तो मेरा क्या कर लेगा! ज्यादा से ज्यादा तबादला ही करा देगा। मुअत्तिल तो नहीं करा सकता। मैं तो कहता हूँ कि साली नौकरी भी चली जाए तो अपनी बला से। अरे, जिसको भगवान रखता हो, उसका कोई नहीं बिगाड़ सकता। गोविन्द, वह बाल-बच्चेदार है तो मैं भी बाल-बच्चेदार हूँ और जिसने मेरे बच्चों को मुँह दिया है उसी ने उसके बच्चों को मुँह दिया है। सब अपने-अपने भाग का खाते हैं। लेकिन दरोगा गजराजसिंह किसी की धौंस में रहनेवाला नहीं है। समझ गया? ज्यादा चीं-चपड़ की उस साले सरपंच ने तो किसी दिन थाने में बन्द करवा दूँगा। आने दे किसी दिन।" और दरोगाजी ने दो फौलादी गालियाँ उसी समय अपने मुखारविन्द से निकालीं, जिनको सुनकर गोविन्द की आत्मा जैसे तृप्त हो गई और उसने कहा, "मुझसे तो ठाकुर जवाहरसिंह ने भी कहा था।"

"क्या कहा था? कुछ मेरा जिक्र करते थे?"

"आप ही की तो बात हो रही थी।"

"तुमने कुछ कहा होगा?"

"मैं क्यों कहने लगा सरकार! चुनाव पास आ रहे हैं, ठाकुर साहब कहने लगे कि भई गजराजसिंह तो अपना आदमी है। उससे तो हमको फायदा ही होगा।"

"अच्छा! ऐसे कहते थे! क्यों भई गोविन्द, मैं समझता हूँ, इस इलाके में कांग्रेसियों में अगर सबसे कोई नेकनीयत और ईमानदार है, तो ठाकुर जवाहरसिंह ही समझो!"

"अजी दरोगाजी, क्या बात कही है आपने! आपके मुँह में घी शक्कर। वे आदमी नहीं, देवता हैं। अजी, मेरी तो उनके सामने हिम्मत भी नहीं पड़ती बात करने की। एक देवता और है इस इलाके में—चौधरी बहादुरसिंह।"

"वह तो बड़ी हस्ती है!" दरोगा ने कहा।

"आपकी दया से घर के से ताल्लुकात हैं, क्योंकि हुजूर, भगवान सबका रखवाला है।"

दरोगाजी को अब जैसे याद आया, “कैसे आए आज?”

“हुजूर, वह हिरदे बैठा है बाहर। रहम चाहता है।”

दरोगाजी को याद नहीं आया कि वह रहम क्योँ चाहता है, पर वे इस बात को खोलना भी नहीं चाहते थे। उन्होंने कहा, “तुम्हारे साथ आया है? तुम लाए होगे साथ?”

“अब मैं ही न लाऊँगा, तो गरीबों का साथी कौन है? वह डर रहा था आपसे कि आप उसे पकड़ोगे। सुना, नाइन ने मुचलके करा लिए हैं इन लोगों के। दफा 107 में कोई दावा भी दायर किया है, सुनते हैं। मैंने तो कह दिया है उससे कि दरोगाजी इस इलाके में ऐसे हैं जैसे कोई दरोगा काहे को होगा। मुझसे बोला—तो भय्या! तुम मेरे साथ चले चलो। आना पड़ा मुझे भी। देख लेना आप। बेचारे पर कोई आंच न आ जाए।” और गोविन्द ने अपना वाक्य समाप्त करके पचास रुपये के नोट उनके सामने बढ़ा दिए।

दरोगाजी ने उन नोटों को जेब के हवाले किया और कहा, “बुला ले उसे।”

सिपाही ने जाकर हिरदे को भीतर बुलाया। हिरदे ने अदब से सलाम किया और सामने बैठ गया, नीचे।

“कहो हिरदे, कैसे आए?”

हिरदे ने गोविन्द की ओर देखा। गोविन्द ने कहा, “समझ गया? दरोगाजी बड़े रहमदिल हैँ। फिकर मत कर।”

दरोगाजी ने कहा, “हिरदेराम हमने, सारी बात सुन ली है। जाओ! आराम की नींद सोओ। बस, जाओ!

हिरदे कुछ नहीं कह पाया।

गोविन्द ने कहा, “बस, अब तू चला जा। हो गया तेरा काम।”

हिरदे संतुष्ट-सा चला गया।

“अब मैं चलूँ?” गोविन्द ने कहा।

“घर जा रहे हो?”

“नहीं, ज़रा ठाकुर साहब के यहाँ जा रहा हूँ, जवाहर सिंह के यहाँ।”

“अरे भाई जरूर, हमारी भी नमस्ते कह देना।”

“यह भी कोई कहने की बात है, दरोगाजी! मैंने इत्ते दिन जो नमस्ते कही हैं, सो आपने क्या मुझसे कहलाई थीं?”

जब गोविन्द चला, तो दरोगाजी ने उससे हाथ मिलाया। गोविन्द थाने से उतरकर चल दिया। उसने पचास रुपये बचा लिए थे। किसना और निहाल से लिए हुए रुपयों की बात उसने दरोगाजी से नहीं कही, क्योंकि वह सब उसकी अपनी कारस्तानी थी। उस तरह का केस ही नहीं था। वह तो, जो इतनी अधिक जानकारी रखता था, उसकी फीस थी। जब वह डूंमरपुर पहुँचा, रात हो चुकी थी। सरपंच चंचलसिंह अकेले लेटे हुए थे। गोविन्द ने दरवाज़े पर खड़े होकर कहा, “ठाकुर साहब हैं?”

सरपंच ने कहा, “कौन?”

“मैं हूँ, ठाकुर साहब, गोविन्द।”

ठाकुर चौकन्ने हुए, “आ जाओ।”

गोविन्द बैठा।

“कहो, कैसे आना हुआ?”

गोविन्द ने कहा, “यहाँ कोई है तो नहीं?”

“कोई नहीं है। क्यों?”

“एक बात कहने आया था। मगर आप इजाजत दो तो कहूँ।”

“कहो, कहो।”

“झोलेटोले गाँव के सरपंच रामसिंह तिवाड़ी आपसे कुछ दुश्मनी रखते हैं क्या?”

सरपंच आकाश से गिरे। उन्हें रामसिंह की मित्रता पर संदेह भी था। उन्होंने कहा, “नहीं तो। तुमसे किसने कहा?”

“तो ठीक है।” गोविन्द ने कहा, “तो कोई बात नहीं है।”

लेकिन चंचलसिंह के मन में उत्सुकता जाग उठी थी, “क्यों? क्या बात है?”

“कुछ नहीं। ऐसे ही लोगों ने उड़ा दी होगी।”

“लेकिन हम भी सुनें, क्या बात थी?”

“लेकिन बेबुनियाद खबर है, ठाकुर साहब, बेबुनियाद।”

अब ठाकुर को और भी अधिक जिज्ञासा हुई, कहा, “लेकिन बात क्या है गोविन्द? तुम तो अपने ही आदमी हो घर के से।”

“अब ठाकुर साहब, आप पूछते हो तो सुन ही लो। सच-सच पूछ लूँ? आपका हुकम हमेशा मानता हूँ। हिरदे को रोक दिया, कजौरीसिंह ने कहा था, आपका हुकम था। पर आपने मुझपर दया न की।”

“पहले अपनी बात कहो।”

“कहूँ?”

“हाँ-हाँ। क्यों नहीं! हाँ-हाँ।”

“तो ठाकुर साहब, यह जो रामसिंह तिवाड़ी है, यह कैसा आदमी है? इसका चलन अच्छा है?”

सरपंच एकदम स्पष्ट नहीं कह सका, क्योंकि वह जानता था कि रामसिंह चलन का ढीला था।

गोविन्द ने कहा, “हजूर, पहनते तो खद्दर हैं, लेकिन काम इनका बड़ा लद्दर है। इनको पता चल गया है कि निहालकौर बड़ी खूबसूरत है। मैंने ऐसा सुना है कि एक-दो बार उसकी ससुराल के गाँव के चक्कर भी लगा आए हैं। सुनते हैं, महू में उनकी कोई रिश्तेदारी है। और मैंने यह भी सुना है कि निहाल पर उन्होंने कोई डोरा भी डाल दिया है। आप तो

जानते हैं, जात की नाइन है। उसके पांव ही कितने हैं। बदनाम वैसे है। और उसने उनसे कह दिया है कि नरायन और माधो की उससे मोहब्बत थी। ठाकुर साहब! बुरा मत मानना, माफ करना। और यह बात उसने एक ऐसे आदमी से कही है कि वो एस. पी. तक पहुँचा दे, जो एस. पी. के मुँह लगा है, बल्कि उससे मन ही मन वह रंजिश मानते हैं कि दुश्मन से दोस्ती की है उन्होंने। लेकिन मैं उनके दुश्मन का खास आदमी हूँ और अगर मैं न रोकता तो शायद वे चले भी जाते, क्योंकि वो मुझसे कह रहे थे कि न ठाकुर चंचलसिंह तिवाड़ी की तरफ होते, न आज तिवाड़ी इतना मजबूत होता। दोनों की फूट पड़ी है तो मैं क्यों न फायदा उठाऊँ?"

चंचलसिंह ने सोचते हुए कहा, "तिवाड़ी ऐसा निकला! हमें तो आशा नहीं थी। अब किसका भरोसा किया जाए? लेकिन तुमसे किसने कहा? ठाकुर जवाहरसिंह ने कहा होगा?"

"अरे, ठाकुर साहब, मेरा है ही कौन! मैं जो उन्हीं का गुलाम हूँ। लेकिन मैं आपसे यही कहूँगा कि गाँव की बात है। आप एक इज़्ज़तदार आदमी हैं। ठाकुर साहब से दोस्ती कर लें। तिवाड़ी किस दिन काम आएगा? वो हार जाएगा अगले चुनाव में, यों अगर आप उसके साथ न हों।" यह कहकर गोविन्द ने चुटकी मसल दी, "और इसके लिए ठाकुर साहब से दोस्ती करें आप। और मैं आपका यह काम करूँगा। लेकिन ठाकुर साहब, मैं आजकल बहुत परेशान हूँ। मेरे घर की टीन टूट गई है। गरीबी ने मुझे ऐसा पीस रखा है कि मैं न कहीं जा सकता हूँ, न आ सकता हूँ।"

ठाकुर चंचलसिंह ने उठकर भीतर प्रवेश किया और थोड़ी देर बाद लौटकर बोले, "तुम टीन क्यों नहीं डलवा लेते?"

"हुजूर पैसा कहाँ है?"

"ये लो।" ठाकुर ने सौ रुपये उसे देते हुए कहा, "टीन डलवा लो। और ज़रूरत हो और ले जाना। लेकिन देखो, ठाकुर जवाहरसिंह इस मामले में न बोलें और उन्हें कह देना मेरी तरफ से बयान देकर कि ज़रा मुकदमा तय हो जाए फिर यह तिवाड़ी नहीं रहेगा, चंचलसिंह और जवाहरसिंह एक होकर रहेंगे। समझे?"

गोविन्द ने उनके घुटनों पर हाथ रखकर कहा, "ठाकुर साहब! बस, बस मेरे मन की मुराद पूरी हो गई। अरे, आप और ठाकुर साहब मिल गए तो यों समझो, धनुष पर डोरी चढ़ गई। हुजूर, मैं तीर की तरह दनदनाता डोलूँगा।"

रात अब घहरा चली थी और आकाश की स्याही गहरी होती चली जा रही थी। दूर कहीं गाँववालों के गाने की आवाज़ आ रही थी। शायद गूजर गा रहे थे। गीत उठता था,

चढ़ता जाता था और हठात् बन्द हो जाता था। और फिर क्षण-भर के लिए निस्तब्धता छा जाती और फिर वही मोटा उघड़ा-सा स्वर ऊपर की ओर घुमड़ने लगता।

जिस समय गोविन्द खाट पर लेटा, उसके पास एक दिन में छ: सौ पचास रुपये आ गए थे, दरोगा मित्र हो गया था और उसने ठाकुर जवाहरसिंह पर एक नया एहसान किया था कि सरपंच को उसकी ओर फोड़ लिया था। इस सबसे बड़ी सुखद कल्पना थी कि अन्धकार में निहाल का वह मधुर स्पर्श उसके रोम-रोम में भीनी-भीनी सुगन्ध-सी भरे दे रहा था। अब गोविन्द को चैन से सोने के अतिरिक्त कुछ बाकी नहीं रहा था किन्तु इतने पर भी अब उसके सामने एक और समस्या थी। चुनाव आ रहे थे। चौधरी बहादुर सिंह किधर जाएँगे? एक बार उनके दर्शन ज़रूर करने चाहिए। वह तो रामसिंह तिवाड़ी के खिलाफ ही थे। अगर उन्हें मालूम होगा कि वह जवाहरसिंह और चंचलसिंह को उनकी ओर कर चुका है, तो कितने प्रसन्न होंगे! लेकिन तिवाड़ी का दल भी कम नहीं था। कहीं वह जीत गया और बहादुरसिंह ही नहीं रहे तो? वह इस विचारमात्र से ही कांप उठा।

हिरदेराम की तारीख आ गई। सुबह के करीब आठ बजे वकील साहब के द्वार पर पहुँचकर उसने कहा, “राम-राम वकील साहब!”

“आओ जी हिरदेरामजी! आप आ गए।”

हिरदेराम सब जगह नीचे बैठता था। अगर उसे कहीं भी समाज में मूँढ़ा मिलता था तो वह केवल वकील के घर पर।

वकील ने हिरदेराम की फाइल निकाली और जवाबदावा जो आया था उसका जवाब लिखने लगे। बीच-बीच में कुछ सवाल करके उन्होंने हिरदेराम से भी मदद ली और जवाबदावा लिखकर तैयार कर लिया और पूछा, “आप बाकी के पैसे ले आए हैं?”

“जी हाँ, ले आया हूँ।”

“लाइए, हिरदेरामजी!”

हिरदेराम ने फौरन पचास रुपये निकालकर वकील साहब को दे दिए और कहा, “अब आपके सौ रुपये रह गए हैं।”

वकील साहब बोले, “अच्छा, ठीक है। लेकिन आप एक काम करिए, इस अर्जीदावे का जवाब लिखने के लिए मोहर्रिर को दो रुपये दे दीजिए।”

हिरदेराम ने मोहर्रिर को दो रुपये दिए।

वकील साहब ने कहा, “चलिए दफ्तर, हम आते हैं।”

हिरदेराम कचहरी की तरफ चल दिया।

उधर श्यौपाल भी सुबह आठ बजे पटवारीजी के मकान पर पहुँचा। आवाज़ सुनकर पटवारीजी अन्दर से निकलकर आए।

“राम-राम पटवारीजी!”

“आओ भाई श्यौपाल। कहो भाई, क्या हाल है?”

“पटवारीजी आज की तारीख है।”

“अच्छा श्यौपाल, तुम वकील साहब के पास मिल आओ। आज तुम्हारे बयान होने हैं। वो बतला देंगे।”

“अच्छा साहब,” कहकर श्यौपाल वकील की ओर चल दिया। वकील साहब उस समय बैठक में थे। श्यौपाल फर्श पर बैठ गया। वकील किसी दूसरे मुकदमे में लगे हुए थे, इसलिए उन्होंने ध्यान नहीं दिया। थोड़ी देर बाद गरदन ऊँची करके बोले, “कहिए, आपका रहना कहाँ है?”

श्यौपाल ने कहा, “वकील साहब, मेरा नाम श्यौपाल है। मैं उस दिन पटवारी जी हरदयालजी के साथ आया था।”

“अच्छा, तुम आ गए श्यौपाल। कैसे आए?”

“हुजूर, आज मेरी तारीख है।”

“अच्छा, तो तुम्हारी तारीख है। ठीक है। और हाँ, आज तुम्हारा बयान होना है।” और फिर जैसे सोचते-सोचते उन्हें सब याद आ गया। उन्होंने कहा, “तुम अपने बयान में यही बताना कि मेरी ज़मीन हिरदेराम के यहाँ रहन रखी थी जिसको इक्यावन साल हो गए हैं, लेकिन इस कानून के तहत फक नहीं हुई है इसलिए फक किया जाए।”

श्यौपाल ने कहा, “बस इतना ही बयान देना है, और कुछ नहीं? अगर कोई पूछे कि पहले यह रहन नहीं थी?”

“हाँ।” वकील साहब ने कहा, “कह देना, पहले यह रहन नहीं थी, पट्टे पर थी।” और वकील उसे समझाने लगे। और अन्त में कहा, “तुम कचहरी चलो। हम आ रहे हैं।”

कचहरी के दरवाज़े पर पहुँचकर श्यौपाल ने देखा कि हिरदेराम आ पहुँचा था। श्यौपाल हिरदेराम के पास ही जाकर बैठ गया और बोला, “राम-राम पटेल!”

हिरदेराम ने कहा, “भय्या श्यौपाल, राम-राम। कहो, आज कैसे आए?”

“अरे पटेल, कौन कैसे आता है कौन नहीं जानता। इन अदालतों में वही आदमी आ सकता है, जिसके दिन खराब होते हैं। अच्छा आदमी कोई नहीं आता।”

“तो क्या तुम बुरे आदमी हो?” हिरदेराम ने टोका।

“और क्या, बुरा तो हूँ ही।”

“तो फिर तुम क्यों आ गए?”

“भाग्य ले आया।”

“भाग्य हमको तो नहीं लाया!”

“तुम्हें कौन लाया है?”

“तुम लाए, श्यौपाल।”

“नहीं, यह तुम्हारा कहना गलत है।”

“कैसे गलत है?”

"बतला दूँ? हरएक आदमी अपना-अपना फायदा नहीं चाहता?"

"कैसा फायदा?"

"तुम्हीं बता दो। आज से दस दिन पहले नकल लेने नहीं घूम रहे थे। मैंने

सोचा तुम दावा करोगे, इसलिए तुमसे पहले मैं क्यों नहीं कर दूँ! मैंने दावा कर दिया।"

"अरे, तो दावा करके तू क्या कर लेगा?" हिरदेराम ने कहा, "मैं तेरे बाप को भी ज़मीन नहीं दे सकता।"

"अबे, कैसे बोलता है बे!" श्यौपाल ने कहा "यह चौपाल नहीं, अदालत है।"

"इसमें अदालत क्या करेगी?"

"क्या मैं तुझे अभी बताऊँ कि अदालत क्या करती है।"

इसी समय वकील हरज्ञानसिंह कचहरी आ गए और उन्होंने आवाज़ दिलवाकर हिरदेराम को बुलवा लिया और पूछा, "क्या बात है?"

"अजी वकील साहब, बात कुछ नहीं। श्यौपाल से बात कर रहा था, सो वो टेड़ी-मेड़ी बात करता था।"

"वकील साहब ने कहा, "तुम झगड़ा करने आए हो या मुकदमा लड़ने?"

"अजी मैं कोई झगड़ा करना नहीं चाहता।" हिरदेराम ने कहा। इसी समय श्यौपाल का भी वकील आ आ गया, और श्यौपाल अपने वकील के पास जाकर बैठ गया।

आवाज़ की तैयारी हो रही थी कि रामबकस नम्बरदार भी कचहरी में आ पहुँचा। उसको देखकर हिरदेराम एकदम चिढ़ गया और चेहरे पर रुखाई-सी आ गई। रामबकस की हिरदेराम पर नज़र पड़ी तो उसने कहा, "राम-राम पटेल!"

हिरदेराम ने मुँह मोड़ लिया, उत्तर नहीं दिया। रामबकस सीधा श्यौपाल के पास चला गया। श्यौपाल ने रामबकस को थोड़ी देर पहले की तनातनी की बात सुनाई। रामबकस ने कहा, "साला पिटोकरा है। आने दे कल मौके पर, साले के हाथ-पैर तुड़वा दूँगा। कितना बदमाश बनता है!"

हिरदेराम ने सुना और चीख उठा, बोला, "नम्बरदारजी किससे कह रहे हो?"

"तुझसे।"

"मेरे हाथ-पैर तुड़वाओगे?"

"तुड़वा दूँगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि तेरे अन्दर गरमाई बहुत आ गई है।"

"सो कैसे?"

"मैंने तुझसे कचहरी में घुसते-घुसते राम-राम की और तूने मुँह मोड़ लिया। राम-राम लेनी चाहिए थी।"

"अरे, कौन तुझसे राम-राम लेता है और कौन करता है। तुझ जैसे नम्बरदार पच्चीसों डोलते हैं।"

"हाँ, नम्बरदार ही डोलते हैं, तू तो बड़ा साहूकार है।"

"हाँ, हाँ, नम्बरदारजी, जोर लगा लो; और आप ही नहीं, सालिम गाँव ताकत लगा लेना, लेकिन मैं इस जमीन को नहीं छोड़ सकता, चाहे सब-कुछ बरबाद हो जाए।"

रामबकस ने उत्तर दिया, "यह या तो परमात्मा के हाथ में है या अदालत के। लेकिन हिरदेराम, सालिम गाँव को क्यों चुनौती देता है? तेरे लिए अकेला श्यौपाल ही बहुत है।"

मुकदमें की आवाज़ पड़ी। दोनों पार्टियाँ अदालत में पहुँची और दोनों वकील भी। हिरदेराम के वकील ने वकालतनामा भरकर अदालत में पेश करा दिया। मुकदमे में सबसे पहले श्यौपाल राहिन के बयान हुए।

उसने बयान दिया, "मेरी ज़मीन श्री हिरदेराम के यहाँ रहन थी जिसको रहन रखे हुए इक्यावन साल का अरसा हो गया है। अब गवर्नमेंट के ऐसे आदेश हो चुके हैं कि रहन जितनी भी रखी हुई हैं, छुड़वा दी जावे। इसलिए मैंने अपनी रहन को छुड़वाने का दावा किया है।"

वकील ने जिरह शुरू की, "उस वक्त किसने गिरवी रखी थी?"

"इस ज़मीन को मेरे पिता ने गिरवी रखा था जिसके कागज़ात पटवार में मौजूद हैं।"

"तुमको पता है, यह रकबा कितने बीघा है?"

"इकतीस बीघे दो बिस्वा को रहन रखा था।"

"तुम यह बतला सकते हो, यह रकबा कब गिरवी रखा गया था?"

"यह तो मुझे याद नहीं, कब रखा गया; लेकिन कागज़ात पटवार से यह साबित है कि इसको इक्यावन साल हो चुके हैं।"

"इक्यावन साल से पहले रकबे को कौन बोता था?"

"मुझे कोई पता नहीं है कि कौन बोता था, लेकिन मैं नहीं बोता था।"

"क्या यह आर्ड रहन तुम्हारे पिता के हाथ की नहीं है?"

"मेरे पिता के हाथ की कोई लिखा-पढ़ी नहीं है।"

"क्या यह कागज़ झूठा है?"

"जी, यह झूठा है। अगर सच्चा है तो आप साबित कीजिए। मैं और कुछ नहीं कहना चाहता।"

मुरतहन हिरदेराम का बयान हुआ, "यह ज़मीन मेरे पिता के यहाँ श्यौपाल के बाप ने गिरवी रखी थी जिसको करीब इकसठ साल का अरसा हो चुका है। सरकार से ऐसे आदेश हुए थे कि जिन्होंने ज़मीन को आर्ड रहन रख रखा है वे लोग रकम भरकर रजिस्ट्री करा लें वरना कोई हक नहीं होगा। उस बखत मेरे पिता के नाम रजिस्ट्री हुई थी जिसको इक्यावन साल हो गए है। दस साल पहले का मेरे पास आर्ड रहन का कागज़ है जिसको मैं अपने

सबूत में पेश करूँगा। मेरा इस मिल्कियत का हक जायद साठ साल होने की वजह से हो गया है।”

वकील ने जिरह शुरू की, “तुम्हारा इस ज़मीन पर कब्ज़ा है?”

“अब नहीं है।”

“क्यों?”

“मेरे पिता के सुरगवासी होने के समय मैं बच्चा था, इसलिए मेरी माँ ने यह ज़मीन अधबटाई पर दी थी और क्योंकि किरनपाल ने मुसीबत के दिनों में हमारी मदद की थी। मेरी माँ ने उसको हटाकर उसकी रोजी छीनने से इन्कार कर दिया। हालांकि मैं बड़ा हो चला था; लेकिन बाद उसके मुझे पता चला कि किसनपाल अपनी टीप भी चढ़वाता रहा था। लेकिन वह एक अलग चीज़ है।”

“अच्छा! क्या यह जमीन तुम्हारे सामने गिरवी रखी गई थी? और गिरवी रखी गई थी तो कितने रुपये में?”

“यह ज़मीन मेरे सामने गिरवी नहीं रखी गई थी और इस बात का पता भी नहीं है। लेकिन यह ज़रूर मालूम है कि इस ज़मीन को तीन सौ पचास रुपये में रखा गया था।”

“देखो, यह कागज़ आर्ड रहन, जिसको तुम कहते हो। क्या यह स्टाम्प पर है या सादा कागज़ पर?”

“यह सादा कागज़ पर नहीं है। पहले आम तौर पर स्टाम्प के कागज़ पर लिखे जाते थे।”

“सादा कागज़ नहीं है। क्या तुमने कोई मिल्कियत का दावा किया है?”

“नहीं, अभी तो नहीं किया है लेकिन दावा करने की तैयारी में हूँ। मैं और कुछ नहीं कहना चाहता।”

चेयरमैन बोर्ड ने दोनों की बातों को सुना और उनके बयानों को पढ़ा भी और उन्होंने पेशकार को आदेश दिया कि फरीकेन को बाहर बैठा दिया जाए और इसमें तनकीह कायम की जाए।

फरीकेन को बाहर बैठा दिया। तनकीह कायम की गई—

(1) इस ज़मीन को रखे हुए इक्यावन साल हो चुके हैं, ज़ेर-रहन तीन सौ पचास रुपये हैं—सबूत ज़िम्मे राहिन,

(2) ज़मीन इकसठ साल रहन रखना, मुरतहन और ज़ाहिर करता है और सबूत भी अपने पास बतलाता है—सबूत ज़िम्मे मुरतहन,

(3) यह ज़मीन पहले दस साल आर्ड रहन रखी गई और बाद में रज़िस्ट्री कराई गई—सबूत ज़िम्मे मुरतहन।

चेयरमैन बोर्ड ने दोनों पार्टियों को बुलाकर कायम की हुई तनकीह सुना दी। दोनों वकीलों ने नोट कर ली। एक हफ्ते की तारीख दे दी गई और कहा, “अपने-अपने सबूत

पेश करो।”

फरीकेन अदालत से बाहर चले गए और चेयरमैन साहब ने दूसरा मुकदमा शुरू कर दिया।

जब हिरदे कचहरी के बाहर आया, उसको लगा कि वह एक भयंकर भंवर में फंस गया था और अब उसके पास फिर सम्बल खत्म हो गया था। अब उसे फिर से रुपये का इन्तज़ाम करना था। दामी ने सुना तो कहा, “आग लगे पानी से बुझे। एक न एक निकलती रहे।” किन्तु हिरदेराम ने कुछ नहीं कहा।

पी. आई. सक्सेना ने दरोगाजी को बुलाने के लिए एक पत्र भेजा। दरोगाजी ने आदेश देखकर दफा 302 के मुकदमे की तैयारी कर दी और उसके पास फाइल ले गए। पी. आई. ने फाइल को पढ़ा और गवाहान के नाम तजवीज़ किए। कैफियत लिखकर उसके साथ लिस्ट-गवाहान शामिल करके श्री मुंसिफ साहब की अदालत को रवाना कर दिए। लिस्ट यों थीः

श्रीमान दरोगा साहब गजराजसिंह, पुलिस थाना, कस्बा जहाँगीरपुर

श्री विजयसिंह, कांस्टेबल नं.325, थाना जहाँगीरपुर

श्री रामऔतार, कांस्टेबल नं.211, थाना जहाँगीरपुर

श्री बनैसिंह काश्तकार, मौजा डूंमरपुर

श्री हिरदेराम काश्तकार, डूंमरपुर

मुसम्मात निहालकौर, पुत्री सियाराम नाई, डूंमरपुर

श्री पैमसिंह नम्बरदार, डूंमरपुर

डा. साहब, अस्पताल जहाँगीरपुर

श्री सरपंच साहब चंचलसिंह जी, डूंमरपुर

श्री सेक्रेटरी, पंचायत समिति, डूंमरपुर

श्री भवानी चौकीदार, डूंमरपुर

श्री जैरामपटवारी, डूंमरपुर

कैफियत मय लिस्ट-गवाहान अदालत में पहुँचने पर श्री मुंनिफ साहब ने सम्मन जारी करने के आदेश करा दिए। अहलकार मुतअल्लिका ने फौरन सम्मन जारी करके श्रीमुंसिफ साहब से दस्तखत कराकर मोहर लगाकर तामील करने को थाना जहांगीरपुर भेज दिए। थानेदार ने फौरन ज़रिये सिपाहियान इत्तला करने को रवाना कर दिए। दरोगाजी ने ग्यारह आदमियों को इत्तला करा दी। सिर्फ मुसम्मात निहालकौर अपनी सुसराल चली गई थी, उसपर दो गवाह कराके सिपाही यह लिखा लाया कि मु.निहालकौर महू गाँव में रहती है और थाने में लाकर कुल सम्मन बाद तामील वापस कर दिए। सिर्फ एक-सम्मन पर

तामील नहीं हुई थी। महू गाँव भी जहाँगीरपुर थाने से लगा था। दरोगाजी ने फौरन एक सिपाही को भेजकर महू में इत्तला करा दी और वापस थाने पर दे दी। मुंशी ने तारीख से पहले, सम्मन बाद तामील, अदालत मुंसिफ को भेज दिए। मुंसिफी में पहुंचकर अहलकार मुतअल्लिका ने फाइल में शमिल कर दिए। सरपंच चंचलसिंह वकील महेन्द्रकुमार के पास पहुँचे। वकील साहब ने उनसे पाँच रुपये का नोट लेकर मुंशीजी के हवाले किया और मिसिल को पढ़कर लिस्टगवाहान देखी ओर उसकी नकल अपनी फाइल में शामिल कर ली और कहा, “देखिए सरपंच साहब, आप अपने गाँववालों में से बनैसिंह मुसम्मात निहालकौर व पैमसिंह नम्बरदार से बात कर लेना। वे ज़रा गवाही ठीक से दें, और लोगों को मैं देख लूँगा।”

सरपंच चंचलसिंह वकील महेन्द्रकुमार के पास पहुँचे। वकील साहब ने उनसे पाँच रुपये का नोट लेकर मुंशीजी के हवाले किया और मिसिल को पड़कर लिस्ट-गवाहान देखी और उसकी नकल अपनी फाइल में शामिल कर ली और कहा, “देखिए सरपंच साहब, आप अपने गाँववालों में से बनैसिंह, मुसम्मात निहालकौर व पैमसिंह नम्बरदार से बात कर लेना। वे ज़रा गवाही ठीक से दें, और लोगों को मैं देख लूँगा।”

चंचलसिंह के मन में धुकधुकी-सी थी; जैसे-जैसे समय पास आता जाता था, वैसे-वैसे उनकी आशंका बढ़ती जा रही थी। जैसे लॉटरी लगाते वक्त मनुष्य को यह लगता है कि यह लॉटरी उसी को मिलेगी, लेकिन ज्यों-ज्यों लॉटरी खुलने का वक्त आता है, उसे लगता है कि उसके रुपये व्यर्थ जाएँगे। सब-कुछ कर देने के बाद भी उनको यह लग रहा था कि अभी उनके हाथ में कुछ नहीं था। अपने गाँव पहुँचकर उन्होंने लोगों को बुलाया। बनैसिंह खुद गड़बड़ा रहा था, वैसे अब वह सरपंच की थोक का आदमी था। लेकिन सरपंच ने इसके बावजूद पैमसिंह और बनैसिंह को पचास-पचास रुपये के नोट दिए। दोनों ने ही लेने से इन्कार किया। “अजी महाराज, हमें क्या ज़रूरत है!”

सरपंच ने कहा, “भाई! तुमको आने-जाने में काम का हर्जा होगा, इसलिए ये रुपये खर्च के काम आएँगे।” इसके बाद सरपंच महू गाँव चले। मन ही मन सरपंच रामसिंह तिवाड़ी की चालाकियाँ उनकी कल्पना में जागने लगीं। एम. एल. ए. साहब के यहाँ पहुंचकर चंचलसिंह ने निहालकौर को बुलवाने की योजना बनाई। एम. एल. ए. साहब बोले, “आंप क्यां चिंता करते हैं, मैं ठींक संमझा दूंगा।”

सरपंच ने कहा, “आप उससे ठीक से बातें नहीं कर सकते। आप उसकी ससुराल के आदमी हैं। आप तो उसके घरवालों को समझा देना, लेकिन उससे तो मैं खुद ही बातें करूँगा।”

जिस समय निहालकौर सामने आई, सरपंच ने देखा, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। तीक्ष्ण दृष्टि से देखा, लड़की सुन्दर थी। यही वह लड़की थी जिसने उसके लड़के को खराब किया था। उनके मन में आया कि इस लड़की को किसी तरह जेल करा दें, लेकिन

इस समय मौका नहीं था। बोले, "बेटी! तू चिन्ता मत कर। सिर्फ जब तेरे बयान हों तो यह कहना कि मैंने दोनों लड़कों को अपने खेत पर जाते हुए देखा था। ये लोग अपने खेत पर गए थे और थोड़ी देर बाद अपने घर को चले गए। एक बात मैं तुमको बता देना चाहता हूँ, थाने के बयानों को कोई नहीं मानता कचहरी में। पुलिस को कानून झूठा समझता है। लेकिन याद रखना और कुछ मत कह देना।" निहालकौर ने हिचकियाँ लेते हुए कहा, "जो आप कहोगे, वही करूँगी। बाकी सबकी मना कर दूँगी।"

चंचलसिंह ने कहा, "अच्छा अब मैं जा रहा हूँ।" और सौ रुपये का नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ाया।

निहालकौर सकपका गई। बोली, "मैं इसका क्या करूँगी?" और उसे गोविन्द की याद आई जो उसके गहने ले गया था। यह बात सच थी कि उसकी ससुरालवालों को गहनों का पता नहीं था, लेकिन माँ को तो ज्ञात था। सरपंच ने कहा, "बेटी! वह तो मैं तुझे अपनी लड़की समझकर दे रहा हूँ, कोई रिश्वत नहीं है।" और यह कहते-कहते मन घृणा से भरने लगा। जिसे वे बेटी कह रहे थे, क्या वह सचमुच उनकी बेटी होने के योग्य थी—घृणित, फाहिशा! लेकिन इस समय इसी की आवश्यकता थी।

निहालकौर ने कहा, "यदि आप नहीं मानते तो मैं एक रुपया ले सकती हूँ।"

चंचलसिंह ने उसे पैनी आँखों से देखा और कहा, "रख ले लड़की! निन्यानवे और रख ले। बेटों में एक बेटा और रुपये में सौ रुपये आजकल कोई कीमत नहीं रखते।" उन आँखों में ऐसा एक विचित्र भाव था कि निहाल मन ही मन लज्जित हो गई और सरपंच ने कहा, "गोविन्द की बात का ध्यान रखना। तू उसे जानती है न?"

उसने सिर झुका लिया। चंचलसिंह टोह ले रहे थे कि क्या निहाल के बारे में रामसिंह तिवाड़ी का नाम उलझाकर गोविन्द ने ठीक कहा था! उन्हें लगा कि वह सत्य था।

निहाल कांप गई और अपने घर की ओर चली गई। उसके जाने के बाद सरपंच साहब थोड़ी देर और बैठे रहे। फिर एम. एल. ए. साहब के आने पर उन्होंने कहा, "लड़की तो ठीक बोल जाएगी, लेकिन आप तारीख से पहले मुंसिफ साहब से और मिल लेना।"

"अंभी मिंलने कीं क्यां ज़ंरूरत हैं! सबूंत होंने कें बाद मिलूँगां। मैं तों सफांई पेशं होनें पंर मिलूँगां।"

"आप जाने, यह आप की ज़िम्मेदारी है। जैसे लड़का मेरा है वैसे आपका है।"

"इंसमें भी कोंई कंहने कीं बांत हैं!" चंचलसिंह उठ खड़े हुए।

तारीख पास आ चुकी थी। चंचलसिंह और वार्ड पंच कजौरीसिंह तारीख के दिन अदालत पहुँचे। वकील महेन्द्रकुमार जौहरी ने मुकदमे की पूरी तैयारी कर रखी थी। श्री मुंसिफ साहब अदालत में आकर विराजमान हो गए थे। पेशकार ने फाइलों को लाकर मुंसिफ साहब के सामने रख दिया। सबसे ऊपर कत्ल के केस की फाइल थी। मुंसिफ साहब ने घंटी बजाई। चपरासी दरवाजे से इजलास के अन्दर गया। मुंसिफ साहब ने

आवाज़ दिलवाई। पुलिस ने दोनों मुलजिमों को पेश किया। फिर पैरोकार पुलिस और वकील साहब को आवाज दिलवाई गई। पी. आई. और वकील अदालत में पहुँच गए।

सरपंच ने देखा, पी. आई. के सामने कुछ सामान रखे थे जिन पर कुछ लिखा पढ़ी-सी हो रही थी। उसने दरोगा गजराजसिंह की ओर देखा। गजराजसिंह ने आँखें फिरा लीं। वह एक रूमाल था मैला, किसी समय सफेद रहा होगा, उस पर कोई दाग नहीं था। एक बांक था, पत्ती काँटने का, उस पर खून के दाग नहीं थे, न किसी अँगुली का निशान बाकी था, क्योंकि जिस दिन यह घटना हुई थी उस दिन पानी बरसा था, इसलिए उसपर कीचड़ लग गई थी। एक फोटो था जिसमें कटा सिर दीख रहा था! दूसरा फोटो था उस कच्ची गीली जमीन का जहाँ से लाश निकाली गई थी। कीचड़ में लिपटी हुई लाश भयानक दिखाई देती थी। एक फोटो था जिसमें शायद पांव का निशान ले लेने की कोशिश की गई थी, लेकिन पानी बरस जाने की वजह से वे निशान एक हल्की रेखा-से दिखाई देते थे और कीचड़ ने उनको प्रायः मिटा-सा दिया था। इसके अतिरिक्त और कोई सबूत नहीं था। अदालत ने उन चीजों को देखा और मुन्सिफ ने कहा, “और कुछ है?”

पी. आई. ने कहा, “नहीं हुजूर, और कुछ नहीं है। बस, यही एक्जिबिट्स हैं।”

“आप देखना चाहेंगे वकील साहब, इन चीज़ों को?”

महेन्द्रकुमार जौहरी ने उन वस्तुओं को देखा और कहा, “ठीक है, हुजूर, मैंने देख लिया।”

अब पी. आई. ने अभियोग लगाना प्रारम्भ किया। उसने सारा केस बयान किया कि किस कारण से उन दोनों लड़कों को पकड़ा गया था।

उन शब्दों को सुन-सुनकर चंचलसिंह का मन भीतर ही भीतर जैसे विदीर्ण होता चला जा रहा था। कजौरीसिंह की आँखों में भय की एक छाया-सी डोल रही थी।

माधो का चेहरा फक सा दिखाई देता था, जैसे उसे डर-सा लग रहा था। किन्तु नरायन गम्भीर था। उसका चेहरा देखकर ऐसा लगता था, जैसे उसे पत्थर में तराश कर बनाया गया था। नरायन के नयन सामने लगे थे। माधो उपस्थित लोगों की ओर देखता था। उसके साथ के होस्टल के लड़के—कक्कड़, बधौतिया और संग्राम—भी कचहरी में मौजूद थे। गवाह एक ओर चुप थे।

ऐसा लगता था कि बहुत दिनों से बूंद-बूंद पानी रिस रहा था। आज वह सब इकट्ठा हो गया था। लोग यह जानना चाह रहे थे कि अब वह किधर बहेगा! मुन्सिफ की मुद्रा गम्भीर थी, जैसे उसपर कोई बड़ा-सा उत्तरदायित्व आ गया था।

मुलज़िमों से धर्म उठवाया गया। माधो ने लपककर कसम खा ली। लेकिन नरायन के हाथ में जब गीता दी गई, तो वह उसे एकटक देखता रहा। फिर उसकी आँखें सरपंच से मिलीं। सरपंच इस क्षण उसे घूरकर देख रहे थे। नरायन का होंठ कुछ मुड़ गया। उसने एक बार गीता को देखा, एक बार आकाश के लिए आँखें ऊपर उठाईं, जो छत से टकराकर रह

गईं, और फिर उसने पिता की ओर देखा। फिर जैसे उसे क्षण-भर सोचने में लगा और अन्त में उसने कहा, "मैं अपने...धर्म...से कहता हूँ कि...जो कुछ कहूँगा वह सच-सच कहूँगा।"

सरपंच ने देखा। उसको ऐसा लगा, जैसे नरायन कहते-कहते रो पड़ेगा।

अब अदालत के सामने के लकड़ी के कटघरे में सरपंच के लड़के नरायन को खड़ा किया गया, दूसरे मुलज़िम माधोसिंह को लेकर एक सिपाही बाहर बैठ गया।

बयान शुरू हो गए।

नरायन ने कहा, "जिस दिन यह केस हुआ था, उससे एक दिन पहले मैं स्कूल से वार्ड पंच के लड़के के साथ बस में बैठकर अपने गाँव को गया था। दूसरे दिन करीब एक बजे दोपहर को हम दोनों अपने खेत की तरफ घूमने गए थे। रास्ते में से अपने-अपने खेतों की तरफ चल दिए। एक घंटे बाद हम दोनों साथ-साथ वापस अपने घर को चले आए। शाम को जब हमारे घर पर एक आदमी मेरे पिताजी को बुलाने आया, तब यह मालूम हुआ कि गाँव में हिरदेराम किसान की लड़की को कत्ल कर दिया गया है। पिताजी उस आदमी के साथ घटनास्थल पर चल दिए। मैं अपने घर पर रहा। सुबह ही दरोगाजी तहकीकात करने आए थे। मैं वार्ड पंच के लड़के माधो सिंह के साथ स्कूल चला आया। चार-पाँच रोज़ बाद हमको दरोगाजी ने स्कूल से पकड़वाकर बुलवाया और हवालात में बन्द कर दिया और हमको बुरी तरह पीटा। हमने उनकी काफी खुशामद की, लेकिन उन्होंने हमारी एक भी बात न मानी। हम दरोगाजी के पराधीन थे, कुछ नहीं कह सके; और मुझे कुछ पता नहीं है।"

पी. आई. ने पूछा, "नरायन! तुम यह बतलाओ कि खेत पर तुम्हारे साथ कौन-कौन गया था?"

"मैं और मेरा साथी माधोसिंह—दो थे।"

"तुम बनैसिंह के खेत पर होकर गए थे और बाद में निहालकौर के खेत के पास भी गए थे?" काले रंग के सक्सेना ने पूछा और उसी स्वर में कहा, "उसके बाद खेत पर गए थे? लेकिन वापसी में कौन-से रास्ते से आए थे?"

नरायन ने इधर-उधर देखा औ कहा, "मैं और मेरा साथी माधोसिंह दोनों करीब एक बजे खेत पर गए थे। रास्ते में बनैसिंह का खेत मिला। बनैसिंह ने हमको बुलाया। हमने उससे कहा—भाई, कहो क्या हालचाल है, बनैसिंह अपने मचान से उतरकर हमारे पास आया और थोड़ी देर बात करके हम लोग निहालकौर के खेत के पास होते हुए अपने खेत पर चले गए और वापसी में दूसरे रास्ते होकर घर आ गए।"

पी. आई. ने कहा, "तुम निहालकौर के पास नहीं गए?"

नरायन ने उद्दंड स्वर से कहा, "नहीं।"

पी. आई. ने झटके के साथ कहा, "क्या तुमने उस गरीब किसान की लड़की को नहीं मारा? तो बताओ, किसने मारा?"

नरायन ने छत की ओर देखते हुए कहा, “न मैंने लड़की को मारा, न मुझको कुछ पता है कि किसने मारा।” उसका स्वर दृढ़ था।

पी. आई. ने एक बार वकील महेन्द्रकुमार की ओर देखा। उसकी आँखों में प्रशंसा थी कि बयान अच्छे रटाए हैं। लेकिन उसे मन ही मन यह प्रसन्नता हो रही थी कि केस को कमज़ोर करने में उसको अधिक कठिनाई नहीं हो रही थी। उसने कहा, “तुमने जो थाने में बयान दिए थे और दस्तखत किए थे कि कत्ल हमने किया है, उस वक्त तुमने क्यों मंजूर किया था?”

नरायन ने कहा, “मैंने पुलिस में कोई बयान नहीं दिया। हो सकता है कि दरोगा जी ने खुद लिख लिया हो। हाँ, उन्होंने दस्तखत मुझसे जबरदस्ती ज़रूर कराए थे। अगर मैं दस्तखत नहीं करता तो वे मेरी खाल उधेड़कर फेंक देते। मजबूर होकर मुझे दस्तखत करने पड़े।”

वकील महेन्द्रकुमार ने पूछा, “नरायन! क्या तुमको दरोगाजी ने स्कूल से बुलाया था?”

नरायन ने कहा, “जी।”

वकील ने फिर पूछा, “तुमको दरोगाजी ने थाने में मारा था?”

नरायन ने उत्तर दिया, “जी, मुझको तीन दिन तक बदस्तूर पीटा गया।” पी. आई. ने कुछ मुँह बिगाड़कर कहा, “तुम स्कूल छोड़कर भाग गए थे न?

नरायन ने कहा, “नहीं, हम पास के गाँव में मेला देखने चले गए थे। महू में मेला लगा था। दूसरे दिन हम वापस आ गए।” मुज़रिम को कटघरे से हटा लिया गया और उस जगह माधोसिंह खड़ा किया गया।

माधोसिंह का बयान शुरू हुआ, “मुझे दरोगाजी ने स्कूल से बुलाया और बुलाकर हवालात में बन्द करवा दिया। मैंने पूछा कि आप मुझे क्यों बन्द करते हैं? इसपर दरोगाजी ने कहा कि तुमने एक गरीब किसान की लड़की को कत्ल किया है। मैंने कहा कि मैं एक विद्यार्थी हूँ, मुझे ऐसे कामों से क्या मतलब! लेकिन मुझे उन्होंने बुरी तरह मारा और मेरी एक न सुनी। मेरे साथ नरायन को बन्द कर दिया गया था और उसकी भी बुरी तरह पिटाई हुई थी। मैंने कोई कत्ल नहीं किया है।”

पी. आई. ने आवेश दिखाते हुए कहा, “क्या छुट्टी में तुम अपने गाँव आए थे? फिर अपने गाँव में कितने दिन रहे?”

माधो ने उत्तर दिया, “मैं एक दिन की छुट्टी में अपने गाँव गया था। मेरे साथ नरायन था। एक दिन गाँव में रहकर हम दूसरे दिन स्कूल चले आए।”

पी. आई. ने कहा, “तुम गाँव में रहकर अपने खेत पर भी गए थे? क्या रास्ते में बनैसिंह का खेत भी मिला था? निहालकौर से भी बातें की थीं? खेत से वापस खुद आए थे?”

"जल्दी-जल्दी किए गए इन सवालों से माधो नहीं घबराया और उसने कहा, "मैं अपने खेत पर नरायन के साथ गया था। टाइम करीब एक बजे का था। रास्ते में बनैसिंह का खेत मिला था। उससे थोड़ी देर बात करके निहालकौर के खेत के पास होते हुए हम अपने खेतों पर चले गए। हमने निहालकौर से कोई बात नहीं की।"

पी. आई. ने टोका, "क्या तुमने कोई पुलिस में बयान दिया था?"

माधोसिंह का शब्द गूंज उठा, "नहीं।"

पी. आई. ने पूछा, "उसने दरोगाजी से यह नहीं कहा कि यह कत्ल हमने किया है, और तुमने अपने बयान पर अपने दस्तखत नहीं किए थे?"

माधो ने कहा, "पी. आई. साहब! मार के आगे देवता भी घबराते हैं। उस वक्त दरोगाजी जो-जो लिखवाते, वही हमें लिखना पड़ता। वैसे हमने कुछ नहीं लिखा है। उन्होंने खुद ही लिख लिया है। उन्होंने तो हमसे दस्तखत कराए। रात के बारह बजे थे उस वक्त। मैंने पहले इन्कार किया था, लेकिन उन्होंने मुझे बुरी तरह मारा और फिर मुझसे दस्तखत कराने लगे, लेकिन मैंने कुछ कबूल नहीं किया।"

पी. आई. ने स्वर का लहजा बदलकर कहा, "क्या तुम स्कूल छोड़कर भाग गये थे?"

माधो ने कहा, "नहीं। हम महू में मेला देखने गए थे। बाद में वापस आ गए। हम कहीं नहीं भागे।" और उसने स्वर उठाकर कहा, "चोर भागता है साहब! मैंने कोई जुर्म नहीं किया है कि मैं भाग जाता।"

उसकी आखिरी बात ने लोगों को प्रभावित कर दिया।

दोनों बयान हो चुके थे। इजलास के सामने कटघरे में दोनों को खड़ा कर दिया गया। अब पुलिस ने अपने सबूत पेश करना शुरू किया।

पी. आई. ने दो घंटे से गवाहान को अपनी पट्टी पढ़ाई थी। आवाज़ पड़ना शुरू हुआ। सबसे पहले पटवारी को बुलाया गया।

पी. आई. ने कहा, "पटवारीजी, यह नक्शा आपने तैयार किया है?"

"जी हाँ! यह नक्शा मेरे हाथ का है। मैंने यह नक्शा घटनास्थल पर पहुँचकर श्री दरोगाजी व श्री सरपंच साहब के सामने खींचा था।"

"पटवारीजी, आपने इस कत्ल के केस में कुछ सुना है?"

"नहीं, मैंने कुछ नहीं सुना; न मैं इस मामले में कुछ जानता हूँ। मेरी हाज़िरी तो उस वक्त तहसील में थी।"

इसके बाद डाक्टर साहब बुलाए गए। पी. आई. ने पूछा, "डाक्टर साहब, यह जो रिपोर्ट है, आपके हाथ की है?"

"जी, यह रिपोर्ट मेरे हाथ की है।"

"डाक्टर साहब! आपने पोस्टमार्टम में लिखा है कि लोहे की चीज से गरदन काटी गई। लोहे की वह क्या चीज हो सकती है?"

डाक्टर ने सोचते हुए कहा, "कोई दरांती हो या पत्ती काटने का बांक।"

वकील महेन्द्रकुमार ने कहा, "क्या तलवार से कटा हुआ मालूम नहीं होता?"

डाक्टर साहब ने कहा, "नहीं, तलवार से गरदन कटी मालूम नहीं होती।"

अब सेक्रेटरी पंचायत का बयान हुआ, "सरपंच साहब ने आदेश दिया था कि तुम फौरन पुलिस में रिपार्ट कर दो, क्योंकि उस किसान की रिपोर्ट हमारे पास आ चुकी है। यह दस्तन्दाजी पुलिस केस है। मैंने फौरन कैफियत लिखकर सरपंच साहब से दस्तखत कराकर चौकीदार व चपरासी पंचायत को देकर पुलिस को भिजवा दिया। यह जो रिपोर्ट शामिल है, यह मेरे हाथ की है; और मैं कुछ नहीं जानता।"

इसके बाद चौकीदार का बयान हुआ कि जिस दिन यह केस हुआ था, मैंने गाँव में सुना कि जंगल में एक लड़की को कत्ल कर दिया गया है। मैं फौरन वहाँ पहुँचा। इर्द-गिर्द के किसान, गरीब किसान की लड़की की लाश को लेकर गाँव के पास श्मशान में ले आए। फिर मैंने गरीब किसान से रिपार्ट कराकर सरपंच साहब को दे दी। सरपंच साहब ने मुझे और अपने चपरासी को पुलिस थाने पर भेजा। हमने थाने में जाकर रिपोर्ट कर दी।

पी. आई. ने प्रश्न किया, "तुम्हारा क्या फर्ज है?"

चौकीदार ने कहा, "हुजूर! मेरा काम यह है कि कोई भी सरकारी आदमी गाँव में आए तो उसके पास जाकर उसका हुकुम पूछूँ, उसकी तामील करूँ; और अगर गाँव में कोई घटना हो तो उसकी पटवारी के पास सूचना दूँ।"

"तुमने इस कत्ल के केस में क्या सुना था?"

"महाराज! मैंने तो कुछ नहीं सुना। इतना ज़रूर सुना था कि जंगल में हिरदेराम काश्तकार के खेत पर उसकी लड़की का किसी ने कत्ल कर दिया है।"

"तुमने यह भी सुना था कि इस कत्ल को सरपंच और वार्ड पंच के लड़कों ने किया है?"

"नहीं हुजूर! ऐसा गाँव का आदमी कभी नहीं कर सकता! कुछ ऐसी भी आवाज थी कि आजकल के लड़के शहरों में पढ़ते हैं, आपस में हिल-खुल जाते हैं। यह नहीं सुना कि इन्होंने कत्ल किया था।"

"तुमने यह नहीं सुना कि यह कत्ल इन्होंने ही किया था?"

"नहीं हुजूर।"

"चौकीदार! तुमने लड़कों को खेत पर जाते देखा था?"

"मैंने नहीं देखा। मैं तो अपने खेत पर गया हुआ था।"

"इन दोनों लड़कों को कत्ल करते देखा था?"

“मैंने नहीं देखा। हुजूर, ये बेचारे लड़के तो स्कूल में पढ़ते हैं, इनका ऐसे कामों से क्या मतलब?”

अब सरपंच साहब का बयान हुआ, “मेरे पास हिरदेराम काश्तकार की रिपोर्ट आई और मैंने उसे पुलिस में भेज दिया। दूसरे दिन दरोगाजी मौके पर तहकीकात करने आए। मैं उनके पास घटनास्थल पर पहुँचा और जो भी अफसर आए, उन्हीं के साथ गया। लेकिन यह पता नहीं चल सका कि यह केस किसने किया।”

इसके बाद हिरदेराम काश्तकार बयान के लिए उपस्थित किया गया। उसके चेहरे पर एक विचित्र भाव था, जैसे वह सारी बाजी हार चुका था, लेकिन अब भी उसे डूबते-डूबते किसी अज्ञात तिनके का सहारा हो रहा था कि वह आएगा और उसको किनारे पर पहुँचा देगा। इस समय उसकी लड़की की सूरत उसके सामने आ रही थी। इस समय उसके सामने दामी की प्रतिहिंसा-भरी आँखें चमक रही थीं। इस समय उसका अहंकार कुचले साँप की तरह फन उठाने की चेष्टा कर रहा था। उसने चारों ओर देखा। वकील महेन्द्रकुमार के मुख की ओर देखते हुए उसे घृणा आने लगी।

पी. आई. की ओर देखकर उसको अविश्वास हुआ और फिर उसने बड़ी लालसा-भरी आँखों से मुंसिफ की ओर देखा। उसने कहा, “मेरी लड़की खेत पर रखवाली करने जाया करती थी। सवेरे मैं जाता था और सूरज निकलने पर मेरी लड़की आ जाया करती थी। शाम को वह अपने घर वापस आ जाती थी। उस दिन मैं अपना हल लेकर किराए पर गया था। शाम को जब खेत पर आया तो मुझे लड़की की आवाज़ नहीं सुनाई दी। मैं अन्दर घुसा। लड़की मुझे नहीं मिली; लेकिन खून के छींटे और ताज़ी खुदी जमीन देखकर मुझे शक हुआ। मैंने उसे खोदा तो मुझे लड़की की गरदन कटी मिली। उसके मुँह में रूमाल भरा था। मैंने एकदम शोर मचाया। आसपास के काश्तकार इकट्ठे हो गए। तब सब लोगों ने लड़की की लाश को निकाला और गाँव के नजदीक मरघट पर ले आए। हमने सरपंच साहब को रिपोर्ट दे दी, उन्होंने पुलिस में भेज दी। फिर हम लड़की को लेकर अस्पताल में पहुँचे। डाक्टर साहब ने लड़की की लाश की जाँच की। फिर हम उसे घर ले आए और दाग लगा दिया।”

पी. आई. ने पूछा, “तुम्हारी सरपंच और वार्ड पंच से कोई रंजिश तो नहीं थी?”

हिरदेराम ने कहा, “नहीं महाराज, मैं तो अपने रस्ते आता हूँ और अपने रस्ते जाता हूँ। मेरी कोई रंजिश नहीं है और न थी। लेकिन महाराज! एक बात जरूर है। आजकल के लड़कों का पता नहीं; क्योंकि ये शहरों में जाकर बिगड़ जाते हैं और यह जरूर हो सकता है कि वे लड़के मेरी लड़की के पास पहुँचे हों और उन्होंने उससे बदमाशी की बात की हो, क्योंकि ये लड़के स्कूल छोड़कर भाग गए थे। दूसरे सारे गाँव में यह शोहरत है कि यह केस इन लड़कों ने किया है। मैं गरीब आदमी हूँ, मेरी ओर से कोई भी नहीं बोलता।”

वकील महेन्द्रकुमार ने कहा, "हिरदेराम! क्या तुमने इन लड़कों को अपने खेत पर जाते देखा था?"

"इनके जूतों के खोज बन रहे थे, उस दिन बूंदाबांदी हुई थी, जूते के निसान बने थे।"

वकील ने कहा, "हिरदेराम, क्या गाँव में इन लड़कों के सिवा कोई जूता नहीं पहनता?"

"क्यों नहीं पहनता! लेकिन उस दिन कोई जूतेवाला उधर नहीं गया। सिर्फ दो आदमियों के जूतों के निशान थे।"

"हिरदेराम! तुमने इनको लड़की के पास देखा था?"

"नहीं, मैंने नहीं देखा।"

"हिरदेराम! क्या तुमने जूते के निशानों की माप की थी?"

हिरदेराम सकपकाया, बोला, "नहीं हुजूर।"

"तो फिर तुम कैसे कह सकते हो कि वे इनके जूतों के निशान थे? और तुमको यह कैसे मालूम पड़ा कि वे देहाती जूतों के निशान थे या बूटों के निशान थे? क्या तुम यह देखकर बता सकते हो कि ये बूटों के निशान हैं और यह चमरौधे का निशान है?"

हिरदेराम ने वकील की आशा के विपरीत उत्तर दिया, "हुजूर वकील साहब! बूटों के निशान में एड़ी साफ दिखती है, चमरौधे में नहीं दिखती। इतना मैं जानता हूँ कि एड़ियों के निशान मौजूद थे।"

वकील ने तीक्ष्ण बुद्धि से काम लेते हुए कहा, "तुम जानते हो हिरदेराम! जब जमीन गीली हो जाती है तो आदमी की एड़ी का वज़न ज्यादा पड़ता है। उस वक्त एड़ी का निशान बन जाना कोई ताज्जुब की बात नहीं है। क्या ऐसा हो सकता है?"

"हुजूर, मैं क्या जानूँ!"

वकील ने कहा, "लेकिन तुमने उनको देखा तो नहीं था?"

"गंगा की सौगन्ध, झूठ नहीं बोलूँगा महाराज! मैंने इन्हें देखा नहीं था।"

उसके बाद पैमसिंह नम्बरदार डूंमरपुर का बयान हुआ।

पी. आई. ने पूछा, "तुमने इस कत्ल के बारे में क्या सुना था?"

पैमसिंह ने सोचते हुए कहा, "उस दिन शाम को भवानी चौकीदार ने गाँव में आकर यह कहा था कि आज हिरदेराम की लड़की की किसी ने खेत पर हत्या कर दी और आपको खेत पर बुला रहे हैं। मैं फौरन खेत पर पहुँचा। वहाँ इर्द-गिर्द के कास्तकार इकट्ठे हो रहे थे। आसपास के लोगों से मैंने बातचीत की। दूसरे दिन पुलिस आ गई और उसने जाँच की। बाद में हम लोगों को पुलिस थाने पर बुलाया। अगले दिन सरपंच साहब की ज़मानत पर हम लोगों को छोड़ दिया गया। हमने उसी दिन अपने गाँव में जाकर पंचायत की और यह जाँच की कि यह हत्या किसने की है। आसपास के खेतवालों को भी बुलाया।

बनैंसिंह कास्तकार से पूछा तो उसने जवाब दिया कि उस दिन सरपंच साहब व वार्ड पंच साहब के लड़के अपने खेत पर आए थे और वो उसी रास्ते से गए थे। वापसी में वे लोग इस रास्ते होकर नहीं आए। दूसरे दिन यह सुनने में आया कि वो लड़के स्कूल छोड़कर भाग गए थे। हम लोगों को यह बिस्वास हो गया कि शायद यह केस इन लड़कों ने ही किया होगा। पुलिस ने हम लोगों को छोड़ दिया और बाद में इन लड़कों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मुझे और कुछ पता नहीं।"

महेन्द्रकुमार वकील ने कहा, "नम्बरदारजी, आप यह बताएँ कि जिस दिन कत्ल हुआ था, आप कहाँ थे?"

"मैं अपने खेत पर काम कर रहा था।"

"तुम्हारा खेत हिरदेराम के खेत से कितनी दूर था?"

उसने सोचते हुए उत्तर दिया, "यही कोई पौन मील।"

"जिस वक्त हिरदेराम की लड़की का कत्ल किया गया था, तुम उस वक्त मौजूद थे?"

"मैं उस वक्त मौके पर मौजूद नहीं था, और न मुझे यह पता है कि कत्ल किसने किया था।"

वकील ने संतोष से देखा। अब बनैसिंह काश्तकार के बयान शुरू हुए:

"मैं अपने खेत पर रखवाली करने गया था। हिरदेराम कास्तकार का खेत भी मेरे नजदीक है। आम रास्ते से जो रास्ता हिरदेराम के खेत पर निकलता है, उसके कोने पर मेरा खेत है। शाम को हिरदेराम काश्तकार अपने खेत पर गया था। उस वक्त इसने बड़े जोर से हल्ला मचाया कि दुहाई है महाराज की, मुझे बचाओ। मेरे साथ बड़ा बुरा हुआ है। हम लोग अपने खेत से घर वापस जा रहे थे। बजाय घर के हम हिरदेराम कास्तकार के खेत में पहुँचे। वहाँ देखा, हिरदेराम की लड़की की गरदन कटी पड़ी हुई थी और उसके मुँह में रूमाल भरा हुआ था। थोड़ी देर में दस-बीस लोग इकट्ठे हो गए और लाश निकालकर गाँव के नज़दीक मरघट पर ले आए।"

पी. आई. ने कहा, "तुमने इस कतल के बारे में क्या सुना था?" बनैसिंह ने उत्तर दिया, "मैं अपने खेत पर रहता था। जिस दिन यह कत्ल का केस हुआ था, उस दिन भी मैंने कुछ नहीं सुना था। दूसरे दिन पुलिस हमको पकड़ ले गई और हमको बन्द कर दिया। सरपंच साहब की ज़मानत पर हम वापस आए। गाँववालों ने एक पंचायत जोड़ी थी। रात को बारह बजे मुझे नम्बरदार व और लोगों ने चौकीदार के ज़रिए बुलाया था। मैं पंचायत में आया तो मुझसे यह पूछा गया कि क्या तुमने किसी आदमी को इधर आते हुए देखा था। मैंने जवाब दिया कि मैंने किसी आदमी को नहीं देखा। बस, दोपहर को श्री सरपंच साहब व श्री वार्ड पंच साहब के लड़के जरूर आए थे। मैंने दोनों को बुलाया। वे लोग थोड़ी देर ठहरकर अपने खेत की तरफ चले गए। दो-तीन दिन बाद गाँव में यह अफवाह हो गई कि

सरपंच साहब व वार्ड पंच साहब के लड़के स्कूल छोड़कर भाग गए हैं और केस उन्हीं लोगों ने किया है, क्योंकि शहर में जाकर लोग बिगड़ जाते हैं। दूसरी बात ये भी कह रहे थे कि सियाराम नाई की लड़की निहालकौर से उनकी मोहब्बत थी, इसलिए ये उसके पास गए थे। और मुझे कुछ पता नहीं।"

वकील साहब ने कहा, "तुमने कत्ल करते हुए इन लड़कों को देखा था?"

"नहीं। मैंने कत्ल करते हुए इन लड़कों को नहीं देखा।"

"क्या ये लड़के तुम्हारे सामने निहालकौर के खेत पर मचान पर उसके पास गए थे?"

"मैंने तो, "बनैसिंह ने उत्तर दिया, "उन्हें निहालकौर के खेत की तरफ जाते नहीं देखा। रास्ते-रास्ते चले गए थे। मुझसे तो ये लोग कह रहे थे कि हम अपने खेत पर जा रहे हैं।"

पी. आई. ने सवाल किया, "क्या रास्ते में निहालकौर का खेत मिलता था?"

बनैसिंह ने कहा, "जी, खेत ज़रूर मिलता है। रास्ते के सहारे निहालकौर का खेत है। मैंने निहालकौर के खेत के अन्दर जाते हुए इन लड़कों को नहीं देखा।"

वकील साहब ने पूछा, "तुमको यह पता है कि कत्ल किसने किया?"

बनैसिंह ने कहा, "नहीं, मुझे इस कत्ल के मामले में मालूम नहीं।"

इसके बाद निहालकौर बुलाई गई। उसकी आँखों में काजल लगा हुआ था। उसके गालों पर सुर्खी दिखाई दे रही थी। आज वह एक साफ धोती पहने थी और उसकी जवानी उसके अंगों से झलक रही थी। लेकिन उसके मुख पर एक ऐसी गम्भीरता थी, जिसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि यह लड़की किसी प्रकार से चंचल कही जा सकती है। उसने माथे तक घूंघट कर रखा था। उसने कहा, "मैं अपने खेत पर रखवाली कर रही थी। मुझे यह पता नहीं चला कि यह कत्ल का केस कब हुआ और किसने किया। शाम को काका हिरदेराम ने शोर मचाया। उस वक्त मैं खेत पर पहुँची तो वहाँ मेरी सहेली की गरदन कटी पड़ी थी, वह मर गई थी।"

पी. आई. ने कहा, "क्या तुम्हारे पिता उनके नाई हैं?"

निहालकौर ने उत्तर दिया, "मेरे पिता इनके नाई हैं। और भी हमारे गाँव में बहुत-से जिजमान हैं, लेकिन हम अब किसी का काम नहीं करते।"

"अच्छा! जिस दिन यह कत्ल का केस हुआ था, उस वक्त तुम कहाँ थीं और तुमने कोई शोरगुल सुना था?"

"मैं अपने खेत पर रखवाली कर रही थी। मैंने कोई शोरगुल नहीं सुना।"

"तुम्हारा खेत हिरदेराम से कितनी दूर था?"

"मेरा खेत भी उनके खेत से लगा हुआ है।"

"तो तुमको कब मालूम हुआ था?"

"शाम को जब ये खेत पर आए, उस वक़्त मुझे ऐसा मालूम हुआ कि खेत पर आकर बड़ी ज़ोर-से पुकारे थे कि दुहाई है महाराज की, मुझे बचाओ।"

पी. आई ने फिर पूछा, "तुम्हारे खेत पर नरायन और माधो आए थे?"

"मेरे खेत पर ये लोग नहीं आए। मैंने इनको जाते हुए ज़रूर देखा था। पता नहीं, ये लोग कहाँ जा रहे थे।"

"पहले भी ये लोग कभी आते-जाते थे?"

"ये लोग अपने खेत पर ज़रूर आते थे। पहले भी आते थे।"

"क्या ये लड़के तुम्हारे खेत पर आए थे?"

"नहीं, ये मेरे खेत पर नहीं आए।"

"पहले कभी आए थे?"

"नहीं।"

"तुमने कत्ल होते वक़्त कोई शोर सुना था?"

"न मैंने शोर सुना और न किसी को कतल करते देखा।" उसके मुख पर एक विचित्र दृढ़ता थी।

रामऔतार कांस्टेबल नं. 211 ने बयान दिया, "हम दरोगा साहब के साथ घटनास्थल पर पहुँचे। बाद में लाश का पोस्टमार्टम करने के लिए मुझे डाक्टर साहब के अस्पताल में भेज दिया गया। अस्पताल, लाश को लेकर गया। मुलज़िम नरायन व माधो ने थाना पुलिस पर यह इकबाल किया कि यह कत्ल हमने किया है। मैं और विजयसिंह कान्स्टेबल इनको स्कूल से पकड़कर लाए थे। ये लोग दो-चार दिन से स्कूल से भाग गए थे।"

विजयसिंह कांस्टेबल नं 325 ने बयान दिया, "सब-इंस्पेक्टर साहब के साथ मैं मौज़ा डूंमरपुर गया। वहाँ जंगल में कत्ल का केस हुआ था। श्री सब-इंस्पेक्टर साहब का आदेश पाकर मैं लाश का पोस्टमार्टम कराने उसे अस्पताल ले गया।"

पी. आई. ने पूछा, "क्या इन लड़कों को पकड़ कर तुम लाए थे?"

"जी, स्कूल से पकड़कर मैं व रामऔतार दोनों लाए थे।"

"इस मामले में तुम क्या जानते हो?"

"हमने इनसे थाने में पूछा था। इन्होंने कहा था कि यह कत्ल हमने किया। हम उसके खेत पर गए थे। उसने हमसे गाली-गलौच किया और हमने उसको कत्ल कर दिया। और गाँव में भी यह शोहरत थी कि यह कत्ल इन लोगों ने ही किया है।"

अब थाना जहाँगीरपुर के दरोगा गजराजसिंह का बयान हुआः

"इस कत्ल की इत्तला ज़रिये सरपंच डूंमरपुर मेरे पास आई और मैं फौरन दो कांस्टेबल लेकर मौके पर पहुँचा। मैंने डूंमरपुर से सरपंच व नम्बरदार को साथ लिया और मौके पर जाँच की। लाश को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल रवाना करा दिया और गाँव के

लोगों के जरिए भी जाँच की और इर्द-गिर्द के काश्तकारों को इकट्ठा किया।" और गजराजसिंह ने फिर कहा, "मालूम हुआ कि सरपंच और वार्ड पंच के लड़के वहाँ ज़रूर आए थे। अब स्कूल चले गए थे। मैंने और जाँच की। वे वाकई भाग गए थे। दो दिन बाद मैंने उनको पकड़ लिया। थाने पर उनसे पूछा गया। मैंने राज के नये आदेशों के अनुसार उनसे कोई मारपीट नहीं की। मैंने उनसे पूछा—श्रीमानजी, आपने कतल किया है? तो उन्होंने कहा—किया है। तुम हमारा क्या कर सकते हो? हम सरपंच के लड़के हैं। मैंने उनकी मंज़ूरी लेकर चालान पेश करा दिया।"

मुन्सिफ ने मुँह पर रूमाल रखकर अपनी मुस्कराहट को रोका और फिर उन्होंने पी. आई. से पूछा, "क्या तुम और सबूत पेश करना चाहते हो?"

पी. आई. ने जवाब दिया, "अब हमारे पास कोई सबूत नहीं है।"

मुन्सिफ ने एक हफ्ते बाद की तारीख दी कि मुलज़िमान अपनी सफाई पेश करें। सब लोग अपने-अपने घरों को लौट आए। वकील साहब ने सरपंच व वार्ड पंच को रोक लिया और कहा, "तुम सफाई में किसको पेश करना चाहते हो?"

चंचलसिंह ने कहा, "जैसा आप आदेश देंगे, उसी को पेश कर देंगे।"

वकील साहब ने कहा, "अपने खेत के पास के चार आदमी यहाँ लाएँ। और ज्यादा सफाई की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि सबूत कोई माकूल नहीं हुआ है। मुझे ताज्जुब है कि पुलिस ने इतने लचर सबूत पेश किए और वह भी कत्ल के केस में!" और यह कहकर उसने पैनी निगाहों से सरपंच की ओर देखा, लेकिन सरपंच तनिक भी नहीं मुस्कराया। कजौरीसिंह के हिलते हुए होंठ चंचलसिंह की गम्भीरता को देखकर स्थिर हो गए और उसे फिर लगने लगा कि चंचलसिंह एक महान व्यक्ति था जिसके सम्मुख वह नितान्त मूर्ख था।

वकील साहब ने लिस्ट-गवाहान तैयार की। चंचलसिंह और कजौरीसिंह अपने गाँव चले गए। सरपंच ने गाँव पहुँचकर चार गवाह तैयार किए।

किसना का बेटा पन्ना जब गाँव में निकलता, तो लोग उससे तरह-तरह के सवाल पूछते। उसके लिए अब एक समस्या हो गई थी कि वह अपनी पत्नी को गौने के पहले ही गाँव ले आया था। महू के बड़े-बूढ़े इसपर सोचते और कहते कि आखिर क्या बात हुई जो इस गाँव में आज तक न होनेवाली बात भी ऐसे हो गई जैसे वह कोई बहुत मामूली बात हो।

"भाई, इसकी समधन पर खतरा आ गया था।"

"कैसा खतरा था वह?"

"यही कि डूंमरपुर में हिरदेराम धाकर की लड़की का कतल हो गया और उसकी वजह-से बहुत से आदमियों की गिरफ्तारियाँ हुईं। यहाँ तक कि चम्पो भी गिरफ्तार कर ली गई, क्योंकि चम्पो का खेत हिरदेराम के खेत के बराबर में था, इसलिए पुलिस के लोग

क्योंकि तंग करते हैं, वे जवान लड़की निहालकौर को भी थाने में पकड़कर ले गए और अगर हमारे ऐमेले साहब इसमें जोर न लगाते तो शायद ये माँ-बेटी वहाँ से छूट भी नहीं पातीं।”

एक और आवाज़ सुनाई देती, “तो क्या यह ऐसी बहू है जो थाने में रात बिता चुकी है? इसका क्या भरोसा कि थाने में इसके साथ कैसा बर्ताव हुआ था! और फिर आखिर क्या वजह थी कि चम्पो ने वहाँ से छूट आने के बाद लड़की को इस तरह भगा दिया? कतल का केस ही तो था। लड़की को क्यों हटाया, खुद क्यों न हटी? हम तो तब जानते जब वह लड़की को लेकर अपनी किसी रिस्तेदारी में इधर-उधर चली जाती। बिना गौने के बहू घर में आ जाए तो इसमें और धरेजे में क्या फर्क हुआ?”

जो समर्थ होते हैं उनसे तर्क नहीं किए जाते। उनकी बात को स्वीकार कर लिया जाता है। लेकिन नियम और धर्म और कानून का सवाल उन लोगों के लिए बहुत अधिक होता है जो दबे हुए होते हैं। जैसे उनको नियम तोड़ने का अधिकार देना एक व्यवस्था के बने-बनाए सुव्यवस्थित रूप को बिगाड़ने के समान होता है।

किसना इन बातों का उत्तर देने की कोशिश करता, लेकिन इस बात का उसके पास कोई उत्तर नहीं था कि निहाल इस तरह चुपके से क्यों भगा दी गई थी। यह सच था कि उसने रिश्वत दी थी, लेकिन यह भी सच था कि उस रिश्वत के बाद चम्पो पकड़ी नहीं गई थी, चम्पो को कभी हिरासत में नहीं लिया गया था। चम्पो को कभी थाने पर नहीं बुलाया गया था। और अब उसके कानों में यह बात भी आ चुकी थी कि चम्पो पर सरपंच चंचलसिंह महरबान थे और चम्पो का थोक इतना बड़ा हो गया था कि उसने हिरदेराम, रामधन, रामकरन, मटरू आदि के ज़मानती मुचलके भी करवा दिए थे। ऐसी थी चम्पो सशक्त, फिर उसको किस बात का भय था! तब दूसरी बात भी उड़ते-उड़ते उसके कानों में आ पहुँची। निहाल को भगाने की दूसरी वजह थी। इसका चलन अच्छा नहीं था। इसका कत्ल में फँसे हुए लड़कों से दोस्ताना था और इस डर से कि कहीं लड़के अपने बयान में इसका नाम न लिखा दें, इसको नज़रों से दूर करके रखा गया।

उसने पन्ना से कहा, “पन्ना, बिरादरी सबसे बड़ी होती है। ज़माना बदल रहा है। जमाने के साथ हर चीज़ बदल रही है, लेकिन अब भी कुछ बातें ऐसी हैं जिनको मानना पड़ता है। पहले राज में पंचायत अपना फैसला देती थी और उसका हुक्म माना जाता था। पंचायत जात के लिए अब भी मौजूद है और पहले वह इतनी जबर नहीं थी जितनी अब है। इसलिए हमको हर बात पर ध्यान देकर काम करना चाहिए।” किसना ने अपनी बात कहकर अपने बेटे की आँखों में झांककर देखा। वह जैसे आँखों से कह रहा था कि ‘लड़के, तू अभी जवान है और जवान बहू ने आकर तुझपर जादू कर दिया है; लेकिन मेरे ऊपर उसका असर नहीं हो सकता, क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ।’

पन्ना ने कहा, "दादा, यह बात तुम मुझसे आज पूछते हो? उस दिन क्यों न पूछी? मैं क्या आप से लाया था? दरोगाजी ने कही थी कि इसको वहाँ रखना ठीक नहीं है। मैं इसको ले आया।"

"ठीक है।" किसना ने कहा, "लेकिन दरोगाजी ने यह तो तुझसे नहीं कहा था कि तू उसे अपने घर ले जाकर ऐसे रखियो जैसे तू गौना करा लाया है?"

पन्ना के मन में विद्रोह जागा। वह मन ही मन लज्जित भी हुआ, क्योंकि उसका बाप उससे यह प्रश्न कर रहा था। पन्ना ने उत्तर नहीं दिया।

किसना ने कहा, "मुझे मालूम है, तू मेरा बेटा है और मुझे ऐसी बात तुझसे नहीं कहनी चाहिए। लेकिन तू मेरा एक ही बेटा है। मैं बिरादरी को क्या जवाब दे सकता हूँ? मैं यह जानना चाहता हूँ—जब से बहू आई है, इसकी माँ ने कोई चिन्ता नहीं की। उसने यह भी तलाश नहीं किया कि लड़की कैसी है। उसने अभी तक यह तलाश नहीं कराया कि आगे लड़की का क्या करना है, क्या नहीं करना है। सारे गाँव में बदनामी हो रही है। तू नहीं सुनता?"

पन्ना की पलकें झुक गईं। वह कोई उत्तर नहीं दे सका। जब से निहाल उसके जीवन में आई थी, उसको लगता था कि जीवन रस से सराबोर हो गया था। उसे लगता था कि निहाल एक सती-साध्वी थी, जो केवल उसमें ही अनुरक्ति रखती थी। निहाल के व्यवहार से उसे कभी किसी बात का सन्देह नहीं हुआ था। यह बात सुनकर उसे ग्लानि हुई और वह समझ नहीं पाया कि यह व्यर्थ का आडम्बर किसलिए खड़ा किया जा रहा था। उसके मन में आया कि कह दे कि गौने में कोई खास बात नहीं होती। जो कुछ होना था वह हो चुका। लेकिन अपने पिता के सामने ऐसा कहने का उसको साहस नहीं हुआ।

किसना ने कहा, "सोच ले, समधन ने अभी तक कोई खबर नहीं ली है।"

किसना हजामतें बनाने चला गया। निहाल दीवार की ओट से सुन रही थी। वह खड़ी रही, सोचती रही। पन्ना भीतर आया। निहाल ने आँखें उठाकर उसकी ओर देखा। उन आँखों को देखकर पन्ना के मन का ऊँट बैठे-बैठे अपनी करवट बदलने लगा।

निहाल ने कहा, "ऐ जी, फिर कैसे होगी? अम्मा ने तो कोई सुध ही नहीं ली।"

पन्ना ने कहा, "ये सब बेकार की बातें हैं। अरे, जो होना था सो हो गया। बिरादरी का नियम है, ठीक है। बिरादरी उस बखत कहाँ थी जब तुम दोनों हवालात में बन्द हो गई थीं? अब बिरादरी को खाने को चाहिए। हमारे पास कुछ नहीं।"

किन्तु निहाल जानती थी कि यह आवेग एक क्षण-भंगुर उद्वेग-मात्र था। इसके पीछे कोई बुनियाद नहीं थी। पन्ना खेत की ओर चला गया और निहाल सोचने लगी—क्या हो गया था उसके जीवन में! उसे नरायन और माधो की फिर से याद आने लगी। उसने क्या सोचा था और क्या हो गया!

दोपहर ढलने लगी थी। छप्पर के कोने से धूप की एक किरण उसके खटोले के पास आ-आकर गिर रही थी। उस धूप में छोटे-छोटे से तिनके उड़ते दिखाई दे रहे थे। वह उन्हें देखती रही, देखती रही। उसका मन धीरे-धीरे विषाक्त होने लगा। एक कालिमा उसके हृदय के अन्दर उतराने लगी। सामने पृथ्वी पर पड़ी किरण को टटोलकर देखा उसकी आँखों ने, लेकिन उसे लगा कि वह किरण केवल बाहर थी, उसके हृदय के भीतर नहीं पहुँच रही थी। न जाने उसे क्या हो गया था! और तब अकस्मात् हवा का झोंका चला। उस हवा के झोंके से आँगन के नीम की पत्तियाँ हिलने लगीं और पत्तियों के हिलने से धूप की किरण डावांडोल हो गई और ऐसे कांपने लगी जैसे उसे जूड़ी-बुखार हो आया था।

कहीं स्त्रियाँ गा रही थीं। उसको याद आया, जब वह मायके में थी तो वह कितनी स्वतन्त्र थी! चाहे किसी के गीतों में जाती, चाहे कहीं जाती। बहू होने के बाद उसकी सारी स्वतन्त्रता छूट गई थी। और उस घुटन में उसे फिर एक और चेहरा याद आया। और वह था गोविन्द का; गोविन्द—बलिष्ठ लेकिन कुरूप न होते हुए भी कितना घृणित लगता था! उसने उसको कितना गिरा दिया था। निहाल ने अपने सिर को खोर में छिपा लिया जैसे वह अपने मुँह को उजाले में किसी को दिखाना नहीं चाहती थी। पहले एक था। फिर दो हुए, माधो से नरायन और फिर गोविन्द। क्या वह स्त्री थी? उसका जीवन, उसका यौवन, उसका धर्म—ये सब कहाँ थे? किसके आसरतू थे? क्या सोचा होगा गोविन्द ने उसके बारे में? उसकी आँखों में आँसू आ गए। वासना का उद्वेग जब उतर जाता है तो नदी जैसे अपने गन्दे पानी को देखकर अपने आप में लजाने लगती है, उसी तरह निहाल का हृदय भी अपने ऊपर ग्लानि करने लगा। बरसात की नदी न जाने कितने पत्तों को समेट लाती है, लेकिन वे पत्ते उसके वेग के ठहर जाने पर किसी गड्ढे में अटक जाने पर सड़ांध फैलाने लगते हैं और तब नदी स्वयं व्याकुल होने लगती है। तब वह नदी नहीं रह जाती, क्योंकि उसका बहाव बन्द हो जाता है। छोटे-मोटे कीड़ों को बहा ले जानेवाली वेगमयी सरिता कीड़ों की खान बन जाती है और तब उसपर मच्छर भिनभिनाते हैं, जलमकड़ियाँ तैरने लगती हैं। निहाल को ऐसा लगा जैसे वह पापिन थी। और अपनी भाएली का मुँह जब उसकी आँखों के सामने खड़ा हुआ तो उसका जी किया कि वह अपने कपड़ों को फाड़ दे। इतना सब करके भी उसे क्या मिला था? मायके में वह बदनाम थी। ससुराल में उसका नाम बदनाम हो चुका था। दुनिया यह कह रही थी कि निहाल एक छिनाल थी और बिरादरी अब उसके बारे में सवाल करने लगी थी। कितना कच्चा धागा था यह पन्ना, जो आज उसकी हिमायत कर रहा है; लेकिन जब इसका बाप कर्रा पड़ जाएगा और जब बिरादरी सवाल उठा देगी, तब यह उससे अलग खड़ा हो जाएगा जैसे वह इसे जानता भी नहीं। जब से यह आई है, तब से वह बहू बनकर ही तो रही है। तू बहू बनकर रही है? उसके मन ने कहा। तुझे अपने-आपसे झूठ बोलते हुए लाज नहीं आती! उस दिन गोविन्द आया था तो वह काम बहुओं का था? तुझे ऐसा क्या डर था? अरे, तुझे उसे कुछ देना था तो दे

देती। तुझे रुपये देने थे या अपनी पत देनी थी? और ये शब्द उसके सामने विराट् बन गए। पत? पत तो वह पहले ही खो चुकी थी। एक क्षण-भर उसे अपने ऊपर और भी अधिक घृणा हुई कि वह पन्ना के प्रति सच्ची अनुरक्ति नहीं रखती थी। वह केवल उसे मूर्ख समझती थी। नरायन और माधो के सुन्दर शरीर, गोविन्द की आतंक-भरी लुटेरी प्रवृत्ति—इन सबकी तुलना में कैसा निरीह था यह पन्ना! मानो निहाल के सामने वह काजर की उस रेख के समान था जो वह अपनी आँखों में लगाती थी, उन्हें सुन्दर बनाकर दूसरों पर कटाक्ष करने के लिए, अपने सौन्दर्य को परिमार्जित करने के लिए।

अब चारों ओर कोलाहल हो रहा था। और उसके मन में आया—अगर यह शोर-गुल बढ़ता गया तो क्या उसका अब फिर से गौना कराया जाएगा? जब वह पीहर जाएगी तो वहाँ लोग इस बात को सुनकर हँसेंगे नहीं? औरतें पनघटों पर इस बात को लेकर दिल्लगियाँ नहीं करेंगी? कैसे झेल पाएगी वह सब?

निहाल के सामने से धूप की किरण अब सरकने लगी। वही धीरे-धीरे दीवार पर चढ़ने लगी थी। हवा जैसे उसे धूप से कह रही थी—अरे ठहर तो! वह हवा नहीं थी, वह निहाल का मन था। वह चाहती थी, उजाला कुछ और देर ठहरे। कुछ और देर उसे सहारा मिलता रहे। लेकिन उजाला किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। उसे बटोरनेवाला बटोर पाता है। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह एक अनन्त क्रम में आता है और एक असीम क्रम में समा जाता है। निहाल जैसी छोटी हस्तियाँ उसे पकड़ लेने का दावा नहीं करतीं।

जैसे-जैसे मन की आँखें खुलती जाती थीं, निहाल को वे सब बातें याद आती थीं, जिन्हें उसने आनन्द का साधन समझा था। और आज वे सब आनन्द के साधन उसकी कल्पना में आकर उसको लज्जित कर रहे थे। उसका मन जैसे एक पका हुआ फोड़ा था। वह दर्द कर रहा था। उसमें चपके चल रहे थे। लेकिन वह उसे दबाकर साफ करते हुए डरती थी, क्योंकि उसे मालूम था कि उसके भीतर से मवाद निकलनेवाला था। और मवाद की कल्पना करते ही उसे घृणा-सी होने लगी। देखते-देखते क्या से क्या हो गया? वह कहाँ थी और कहाँ आ गई? उसने सोचा—हे भगवान, तूने मुझे ऐसा क्यों बना दिया? लेकिन उसके संस्कार ने पूछा—तू भगवान से सवाल करने वाली कौन होती है? भगवान ने तुझसे यह सब करने को तो नहीं कहा था, जो तूने किया है। वह कांप उठी।

जब वह घूंघट काढ़कर सिर पर घड़ा रखकर, पनघट पर जाती थी, तो गाँव की औरतें उससे ठिठोलियाँ करती थीं। बहू होने के नाते वह उनका उत्तर नहीं दे पाती थी। औरतें कहतीं—अरी बहना, यह पन्ना की बहू है! उनके मुँह से बहू शब्द ऐसा व्यंग्य बनकर निकलता जैसे किसी ने कब्जा दबाकर किसी बड़े चाकू का फलक बाहर कर दिया हो और इतना पास कर दिया हो कि खुलते-खुलते उस चाकू की नोक ने पास खड़े आदमी की खाल को खरोंच दिया हो। कहाँ जाए वह? क्यों न वह भाग जाए यहाँ से? लेकिन भाग कर कहाँ पहुँचेगी? उसका सहारा कौन-सा होगा? घर से निकलेगी तो गुण्डे उसके पीछे लग

लेंगे। गुण्डों को देखकर भी कोई उसे बचाने नहीं आएगा, क्योंकि लोग उसे बदनाम कर चुके हैं, क्योंकि लोगों की भावनाएँ उसके प्रति अच्छी नहीं। और तब एक अनजान विद्रोह उसके भीतर बोला—मरद को कोई नहीं पूछता, हजारों औगुन करते हैं, हजारों पाप करते हैं, लेकिन बय्यर के लिए ब्याह से पहले तो सब यह चाहते हैं कि कुंआरी बनी रहे और ब्याह पीछे अपने खसम की होकर रहे। लेकिन मरद से कोई नहीं पूछता कि ब्याह से पहले तू कैसा था और ब्याह के पीछे तू कैसा हो गया। इस विचित्र कल्पना ने उसमें एक नया आक्रोश भरा और उसने मन ही मन कहा—सारी रुकावट बय्यर पर है, मोट्यार पर नहीं!

किन्तु यह चिन्तन लाभदायक नहीं हुआ। इससे भी बड़ी समस्या थी, किसना की। किसना आएगा, पन्ना से कहेगा। बहुत तो बहुत, खबर चम्पो के पास पहुँचेगी और वहाँ से कौन आएगा? अगर कहीं गोविन्द आ गया तो? इस 'तो' ही ने उसके अन्दर जैसे आग लगा दी। उसे डर लगने लगा। गोविन्द उसे छोड़ देगा? तो क्या वह अब हमेशा के लिए ऐसे पापियों की रखैल बन जाएगी? वह जानती थी, गोविन्द एक गुण्डा था। गाँव में थी तब भी वह उसे जानती थी, जब वह उसकी ओर ठण्डी निगाहों से देखता निकल जाता था।

और उसके सामने एक और समस्या थी। इधर वह जब से कुएँ पर पानी खींचने जाती थी, एक नेता उसको घूरा करता था। लोगों की बात से वह जान गई थी कि उस आदमी का नाम रामसिंह तिवाड़ी था। जात का बामन था। उसकी आँखों में उसे ज़हर नज़र आता था। बह अपनी मूँछें हिलाकर जब उसकी ओर देखता था, तो निहाल को लगता था जैसे वे आँखें नहीं, दो शहतीर थे जो उसको भेद जाना चाहते थे। लेकिन घूंघट की आड़ में वह उसे देखकर भी जैसे नहीं देखती थी। और कल गली के मोड़ पर एकान्त में रामसिंह तिवाड़ी ने उससे कहा था—खवासिन, अरे, हमसे क्या नाराज है? हम तो तेरे ही हैं। वह बोली नहीं थी; क्योंकि बहू थी और उसको यह अधिकार नहीं था कि वह किसी प्रकार से उसको रोक देती। निहाल को लगने लगा कि वह पहले एक पर्वत पर खड़ी हुई थी और उसके बाद धीरे-धीरे उसको नीचे गिराना शुरू किया गया और अब कहाँ से कहाँ गिर चुकी थी। पर उसे गिराया गया था या वह खुद गिर गई थी? यह विचार आते ही उसका रोम-रोम झनझना उठा।

धूप की किरण दीवार के अन्त तक पहुँच गई थी। ऐसा लगता था, क्षणभर में उड़ जाएगी, अपने उस सूरज में लीन हो जाएगी जहाँ से वह आई थी। लेकिन कहाँ जाकर लीन होगी निहाल? उसका अन्त कहाँ होगा? प्रकाश की एक किरण जैसे उसकी दीवार पर आई थी, दिन भर खेली थी, आँगन में जिसने बलय्याँ ली थीं, वह भी चली जाएगी। कितने दिन की जेल होगी उसे, कौन जानता है! नरायन और माधो क्या बच सकेंगे? नहीं। और उसे यह सोचकर एक बड़ा वैचित्र्य-सा लगा कि उसके बाद उसकी याद भी नहीं की गई थी।

किसना ने आकर कहा, "पन्ना!"

पन्ना उस समय कुट्टी काट रहा था।

“अरे, सुनता है?”

“क्या है, दादा?”

“आज मुझे गाँव में फिर कुछ लोग मिले थे।”

“हूँ।” उसने उत्तर दिया।

“तुझे मालूम है, वे क्या कहते थे?”

“मुझे क्या पता है, दादा?”

“अरे, तुझे मालूम नहीं है मूरख। ब्याह हमारा भी हुआ था, लेकिन हम ऐसी गफलत में नहीं पड़ गए थे। तू तो ऐसा हो गया कि नादीदे को मिली लुगाई, कन्धा धरूं कि संग उठाऊँ। तू हो गया है पागल। तेरी आँखें गई हैं मिच। इसलिए तू असलियत को तो भूल गया है और उसके बदले में झूठी नेतागीरी तुझे मिल रही हे।”

पन्ना ने चिढ़कर कहा, “मैं कौन-सा नेता हो जाऊँगा! अब मुझसे तो लोगों ने कहा था पंचायत में खड़े होने को। सरपंच चंचलसिंह की पार्टी अपनी तरफ है। लेकिन अपने को उससे क्या फायदा? उनका गाँव और है, हमारा गाँव और है। वे बड़े आदमी हैं, हम गरीब आदमी हैं। वे ठाकुर हैं, हम नाऊ हैं।”

“अरे बेटा! जो कुछ करना है, अभी कर ले।”

निहाल ने यह भी सुना। पन्ना जब भीतर घुसा तो उसने उसके पांव पकड़कर कहा, “एक बात बताओगे?”

“पूछ।”

“तुम मुझे भेजना चाहते हो?”

पन्ना ने कहा, “मैं क्या करूँ, जमाना खिलाफ बोल रहा है। मैं तो कुछ नहीं चाहता, निहाल, मैं कुछ नहीं चाहता। लेकिन दादा रोज एक नई बात सुनकर आता है। आखिर हम किस-किसको कहाँ-कहाँ तक जवाब देंगे?”

निहाल ने कांपते हुए स्वर से कहा, “तुम मुझे छोड़ तो नहीं दोगे?” यह कहते हुए उसकी आँखों में आँसू की बूंदें झलक आईं।

स्त्री की सारी विवशता उस क्षण अपनी समग्र कुटिलता के साथ जैसे प्रकट हो गई। आज उसे पति का महत्त्व मालूम हुआ था। इस सड़े-बूसे आदमी के अतिरिक्त कहीं भी निहाल के सम्मान को ठौर नहीं था। इस ढाल के रहते हुए वह हज़ार तीरों से खेल सकती थी, क्योंकि जो भी उसे काटने आता उसे वह इस ढाल से झेल सकती थी। लेकिन पति-रूपी ढाल के बिना स्त्री न सच्चरित्रता का ढोंग कर सकती है, न दुश्चरित्रता का आनन्द पा सकती है। वासना का प्यार अपने-आप में एकान्तिक होता है। उसके पीछे समाज नहीं होता। समाज एक ऐसा बन्धन है, जिसको मनुष्य तोड़कर भी तोड़ नहीं पाता।

निहाल ने कहा, “तुम कहोगे तो मैं चली जाऊँगी, लेकिन तुम यह याद रखना मैं बय्यर हूँ। मेरा कोई सहारा नहीं। अगर तुम मुझे यहाँ से निकाल दोगे तो मुझे लाड़ से पालने

वाली मेरी माँ भी मुझसे मुँह फेर लेगी।” निहाल यह कहते हुए रो पड़ी। आज वह कितनी हताश हो गई थी! वह मन में जानती थी कि जिस स्त्री को अपनी ससुराल में आदर नहीं मिलता, उसको अपने मैके में भी नहीं मिलता। और मायका भी कैसा? जहाँ वह बदनाम थी। अपने आनन्द के लिए उसने एक दिन दो पुरुषों को चुना था। उन दो पुरुषों की बदनामी की आड़ में एक तीसरा भयंकर व्यक्ति भीतर घुस आया था। निहाल को उसने ऐसा व्यवहार दिया था, जैसे वह कोई वैश्या थी। क्या वह इतनी गिरी हुई थी? हाँ, गिरी हुई तो थी, वरना किसी साधारण स्त्री के लिए किसी का इतना साहस नहीं होता है। पर गोविन्द पर यह सब कुछ लागू नहीं होता? और वह इतनी सस्ती टकियल बनकर उसके हाथ में खेल गई थी? किसने रोक दिया था? किसने घोट दिया था उसका गला? किसने उसके साहस को रोक दिया था? उसकी आत्मा की निर्बलता थी, इसलिए कि उसने खून कराया था। खून! निहाल ने भयभीत होकर पूछा, “तुम मुझे खूनी तो नहीं समझते?”

उसकी फटी-फटी आँखें देखकर पन्ना डर गया, “कैसा खून?”

“क्या तुम यह तो नहीं समझते कि मैंने खून कराया था हिरदेराम की लड़की का?”

पन्ना समझा नहीं। उसने कहा, “तू क्या कहती है? क्या तेरा खून से कोई सम्बन्ध था?”

“नहीं, नहीं,” निहाल ने जी कड़ा करते हुए कहा, “मेरा किसी से कोई सम्बन्ध नहीं। लोग मुझे बदनाम करते हैं। मैं पूछती हूँ, लोग मुझसे दुश्मनी क्यों निभा रहे हैं? मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है?” यह कहते-कहते उसका स्वर लरज गया।

पन्ना कुछ नहीं समझा।

नीम पर चंदा उग आया था। पन्ना सो रहा था। किसना का हुक्का बाहर गुड़गुड़ करता सुनाई दे रहा था। सब खामोश थे। केवल निहाल जाग रही थी। क्यों जाग रही थी? दिन तो किसी तरह कट भी जाता है, लेकिन रात क्यों नहीं कटती? चम्पो का चेहरा उसकी आँखों के सामने आया। उसको याद आया; और याद जब आने लगती है तब आती चली जाती है। सियाराम, उसका बाप, चला गया था परदेस। तब भी उसके यहाँ राधे आता था और अब भी आता है। बल्कि राधे और चम्पो की किलोलें देख-देखकर ही निहाल का मन झूले पर पैंग मारने लगा था। क्यों रमी थी? क्यों बह गई उनके पीछे? और उसे यह बात सोचकर भी अत्यन्त घृणा होने लगी कि उसकी माँ का एक यार था। उसकी माँ एक व्यभिचारिणी थी। और फिर हठात् मन ने पलटकर कहा—अरे तू क्या है? तू पापिन नहीं? खसम को उल्लू बनाती है। दो-दो यार हवालात में बन्द करवा दिए, तीसरा एक गुण्डा आने लगा है। चम्पो हरजाई थी, तो तू क्या रंडी से कम है? बिरादरी तुझे कैसे झेल पाएगी? दिखती मक्खी को कोई कैसे निगल पाएगा? आखिर धरम का राज पुरखापत्ती से चला

आया है। एक पीढ़ी नहीं, दो पीढ़ी नहीं, दस पीढ़ियों ने उसे माना है। दुनिया धरम से चलती है, नेम से चलती है दुनिया। पाप से नहीं चलती। ऊपर बैठनेवाला बड़े-बड़ों के पापों को देखता रहता है।

लेकिन वह आज सो नहीं पाएगी।

आकाश में चन्दा और ऊपर उठने लगा था। वह चन्दा इतना ऊपर था, इतना ऊपर था कि उसकी किरण उस समय डूंमरपुर में दिखाई दे रही थी, हुसैनपुर में दिखाई दे रही थी, जहाँगीरपुर में दिखाई दे रही थी, रमोना में झिलमिला रही थी। और नरायन उनींदी आँखों से उसे पीपल के पेड़ के पीछे खिलता देख रहा था। नटखट चंदा, परियों की कहानियों वाला चन्दा। होस्टल के लड़के इतवार की छुट्टी में आनन्द मना रहे थे। मैदान के एक कोने में कबड्डी हो रही थी। चाँदनी में चमकते हुए कांस रेशमी दिखाई देते थे। हवा बड़ी मादक थी, लेकिन नरायन के लिए जैसे यह सब कुछ नहीं था। उसको ऐसा लगता था कि वह जिस खाट पर पड़ा था, वह खाट नफरत का एक कोना था, जहाँ दुनिया का सारा अविश्वास आकर सिमट गया था। इतने दिन हो गए थे, उसके पिता ने उससे एक भी बात नहीं की थी। माधो उसे सुनाया करता था, कजौरीसिंह ने उससे यह कहा, वह कहा। जैसे कजौरीसिंह के मन में एक प्रीति उमड़ आई थी अपने बेटे से फिर मिलकर। और उसको क्या मिला था? उसके पिता को, उसकी माँ को, और घर के और लोगों को जैसे कोई ख्याल ही नहीं था। क्यों होता?

वह कितना लाड़ला था अपने घर का! और अब वह सब लाड़ कहाँ चला गया था? उसे छुड़ाने की खुशी हो रही थी, लेकिन उसे घृणित समझकर। उस दिन जब वह माधो के साथ होस्टल में लौटकर आया था, जब उसके पिता और काका कजौरीसिंह उन दोनों को वहाँ छोड़ गए थे। मास्टर पचौरी मिला था। इन लोगों ने उससे कह दिया था—मास्साब, मेला देखने गए थे। लेकिन उसके बाद जब पुलिस पकड़कर ले गई और वे दोनों लौटकर स्कूल के होस्टल में पहुँचे, तो स्कूल के लड़कों ने उसे घेर लिया था। कैसी विचित्र आँखें थीं उन लोगों की! अविश्वास से भरी हुईं, उपहास, घृणा और तिरस्कार! जैसे वे लोग इनसे दूर-दूर रहना चाहते थे। फिर भी कौतूहल से पास आ गए थे यह देखने के लिए कि हत्या करने वालों को पास से देख लिया जाए। उनमें से कोई अविश्वास नहीं करता था कि उन्होंने हत्या नहीं की। माधो न जाने कैसे अकड़-अकड़कर कह रहा था, “अरे, साले हमारा क्या कर सकते हैं? हो गई ज़मानत, देख लो। झूठा इल्ज़ाम लगाया हमारे ऊपर पुलिस ने। और देख लेना, फैसले में हम जीतेंगे! अरे, हमको क्या कोई काम नहीं था कि ऐसा काम करते!”

पचौरीजी ने सुन लिया था। एकान्त में बुलाया और कहा, “नरायन और माधो, तुम लोग होस्टल लौट आए हो?”

माधो ने कहा, "हाँ, साहब।"

"तुम जानते हो कि यह खबर अभी हेडमास्टर साहब तक नहीं पहुँची है कि हमारे यहाँ के दो लड़कों को पुलिस पकड़कर ले गई थी। लेकिन मुझे यह खबर मिल चुकी है, क्योंकि मेरा ताल्लुक जहाँगीरपुर और डूंमरपुर से भी है। लेकिन जब तुम दोनों रहोगे तो ज़रूर यह खबर उन तक पहुँचेगी। मैं तुम्हारा क्लास-टीचर हूँ। अगर उन्होंने मुझसे कोई सवाल किया कि लड़के इतने दिन तक कहाँ थे, तो मैं क्या जवाब दूंगा? अगर वे मुझसे पूछेंगे कि इतने दिन तक पुलिस की हिरासत में थे, तो मैं क्या जवाब दूँगा? अगर मैं कहूँगा कि पुलिस उनको जबरदस्ती पकड़कर ले गई थी, तब वे मुझसे पूछेंगे—तुमने मुझसे इतने दिनों तक क्यों नहीं कहा, वरना मैं पुलिस के खिलाफ डिमार्टमेंट को लिखता और लड़कों को छुड़ाने की कोशिश करता। तुम लोगों के यहाँ रहने से डिसीप्लिन बिगड़ता है। तुम लोगों के पास कोई जवाब है?"

नरायन कोई उत्तर नहीं दे सका था। माधो ने कहा था, "मास्साब, हमारी गलती यह हो गई थी कि हम मेला देखने चले गए थे। मेला देखकर लौटे थे, तब आपसे मिल लिए थे। उसके बाद हमको पुलिस पकड़ ले गई। आप कहेंगे, हमारे स्कूल की बदनामी हुई; लेकिन हम जानते हैं कि पुलिस ने हमपर कितने जुल्म किए हैं। उस वक्त न आपका डिपार्टमेंट बोला, न स्कूल बोला, न हेडमास्टर ही ने कुछ कहा। हम पिटते रहे और किसी ने कोई ऐक्शन नहीं लिया। लेकिन हम बेकसूर थे, इसलिए हम ज़मानत पर छूट गए, वरना क्या कत्ल के केस में कोई छूटता है? मास्साब, आप हमसे कह दें, हम होस्टल से चले जाएँगे, लेकिन हमारी हाज़िरी कम हो जाएगी, उसका ज़िम्मेदार कौन होगा?"

नरायन को आश्चर्य हुआ था माधो का यह उत्तर सुनकर। उसने अपने दिल को टटोलकर देखा, क्या उसमें साहस था कि वह भी यह कह सके कि मैंने कत्ल नहीं किया? लेकिन उसे लगा कि उसमें इतना साहस नहीं था। उसे लगा, उसके अन्दर एक चोर था। और नरायन ने सोचा था—शायद इसलिए कि हवालात से निकलने के बाद माधो को अपने बाप का स्नेह मिल चुका है, जिसने उसे भूल जाने को विवश किया है कि कभी उसने अपराध किया था। लेकिन नरायन को अपने पिता का स्नेह नही मिला था। उससे कौन कहने वाला था कि उसने अपराध नहीं किया था? अपने मन को झुठलाने के लिए भी किसी के सहारे की जरूरत है। हम कहीं जाना नहीं चाहते, पर जाना ज़रूरी है। उस वक्त हम यह सोचते हैं कि कोई कहे—अरे, क्या करोगे जाकर! उस बहाने बैठ जाते हैं और बाद में तसल्ली कर लेते हैं, इसने हमें रोक लिया था, इसलिए हम नहीं गए, वरना हम जाने से इन्कार कब कर रहे थे! एक बार एक बीमार की चिट्ठी आई थी उसके बाप के पास। उसने रुपया भेज दिया था। उसके बाद चंचलसिंह के पास तीन-चार और चिट्ठियाँ आई थीं बीमार की। और चंचलसिंह ने कहा था कि यह सच है कि बीमारों को रुपया देना चाहिए उनके इलाज के लिए, लेकिन मैं कहाँ तक दे सकता हूँ? मेरे पास इतना रुपया है कहाँ?

अगर मैं उधर देना शुरू कर देता हूँ तो इधर घर के सब लोग बीमार पड़ जाएँगे। इसलिए वे चुप पड़ गए थे। क्या उन्होंने पाप किया था? अपने ऊपर इतनी ज़्यादा ज़िम्मेदारी न लेना क्या पाप है? आदमी का पाप कहाँ होता है?

और माधो ने कहा था, “मास्साब, मैं किसी से नहीं डरता, क्योंकि मेरा दिल साफ है।”

नरायन ने उसकी आँखों की ओर देखा था और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ था कि माधो की आँखों में वही बल था, वही आत्मविश्वास था। नरायन से आँखें मिलाते हुए भी, जो कि उसकी आँखों में पचौरी की ओर देखते समय दिखाई देता था। माधो की आँखें जैसे उससे कह रही थीं कि कायर मत बन, इस मौके पर हार मत। दब्बू बनकर अपने को कसूरवार साबित मत कर। और नरायन ने अपने मन से पूछा था—क्या मैं इतना बेशर्म बन सकता हूँ?

पचौरी ने कहा था, “तुम लोगों ने खाना खा लिया?”

“जी हाँ” माधो ने कहा था।

“कहाँ खाया?”

“यहीं आकर होस्टल में। कक्कड़, बधौतिया और संग्राम ने हमको खाना खिलाया, मास्साब। सारे स्कूल के लड़के हमसे दहशत खाते हैं। आप सोचिए, इसमें आपके स्कूल की अगर बदनामी हुई है तो आप कहें तो हम हेडमास्साब के पास चले जाएँ। और हेडमास्साब को क्या यह मालूम नहीं होगा कि उनके स्कूल के दो लड़कों के ऊपर केस चल रहा है?”

पचौरीजी ने कहा था, “हाँ, शायद नहीं मालूम है, या हो। हेडमास्टर साहब अपनी एक अलग दुनिया में रहते हैं। उनके अलग विचार हैं। और शायद उन्हें मालूम भी हो; लेकिन वे इस बात में क्यों सिर खपाएँ? उन्होंने कभी ज़ाहिर ही नहीं किया।”

“तो मास्साब, हम चले जाएँ? हमको किस कसूर के ऊपर निकाला जाएगा स्कूल से? जिन आदमियों की सरकार ने ज़मानत मान ली, उनको आखिर किस जुर्म पर निकाला जाएगा?”

पचौरी ने कहा, “चुप रह! बहस मत कर। बेवकूफ! होगा किसी पंच का लड़का। मैं नहीं समझता तुझे। बदतमीजी का जवाब देता है मेरे सामने!”

और नरायन के आश्चर्य की सीमा नहीं रही थी, जब माधो ने झुककर पचौरी जी के पांव पकड़ लिए थे और कहा था, “मास्साब, माफ कर दीजिए। मेरा मतलब यह नहीं था कि आप नाराज़ हो जाएँ।” और वह फिर रोने लगा था। उसने कहा था, “मास्साब, पुलिस ने इतने अत्याचार किए, किसी ने कुछ नहीं पूछा। अब आप हेडमास्साब से नहीं कहते, तो मैं कह देता हूँ जाकर। हेडमास्साब हमें बचाएँगे।”

पचौरी सकते में पड़ गए थे। बोले, "हेडमास्टर साहब ने मुझे क्लास का ज़िम्मा दे रखा है, क्योंकि मैं बहुत पुराना मास्टर हूँ और मेरी यह गलती रही कि मैंने तुम लोगों के ऊपर निगाह नहीं रखी। लेकिन क्या निगाह रखूँ? यह उम्र! और डिमार्टमेंट का हुक्म यह आता है कि सात घंटे स्कूल में पढ़ाएँ। और सात घंटे दिमाग को छलनी कर देने के बाद इन्सान के पास बचता क्या है? ढेर सारी क्लास, तनख्वाह कम! कहने पर कहा जाता है कि देश के लिए त्याग करो, बलिदान करो। तुम लोग कहना मानते नहीं। डिसिप्लिन नाम को नहीं रहा। सामने बीड़ी पीती हो, सिगरेट पीते हो, गाने गाते हो। अब मैं क्या जाकर हेडमास्टर से कहूँ! अपनी गलती प्रकट करूँ? खैर, अगर कोई सवाल उठा तो मैं समझा दूँगा। लेकिन, खबरदार, होस्टल में मेरे पास कोई शिकायत न आने पाए।"

और मामला दब गया था। लेकिन वह दिन था और आज का दिन है, नरायन ने कभी माधो को अकेले में भी प्रायश्चित्त के स्वर में बातें करते नहीं सुना। कभी माधो ने यह नहीं कहा कि उसने कोई खून किया था। नरायन के लिए यह सब बड़े आश्चर्य का विषय था। किसी का खून कर दिया जाए और उसका ज़रा भी असर दिल पर न हो! अरे, परमात्मा के सामने तो जवाब देना ही पड़ेगा! तो क्या माधो सचमुच बेशर्म था या उसकी दुनियादारी की अक्ल बहुत थी?

आकाश का चन्दा अब पीपल के पीछे छिपने लगा था और ऐसा लग रहा था जैसे उस विशाल वृक्ष के पीछे कहीं आग लग गई थी जिसकी हल्की-हल्की आभा पत्तों से छन-छनकर दिखाई दे रही थी। नरायन को लगता था कि यह जीवन अब नीरस हो गया था। वह हर काम में जी लगाने की कोशिश करता था, लेकिन काम उसे बेकार मालूम देते थे। खेलों में वह जाता था, लेकिन उसे ऐसा लगता कि सबकी आँखें उसे देख रही हैं, जैसे इशारा कर रही हैं कि यह ही वह हत्यारा है। ऐसा उसे ही क्यों होता था? माधो को क्यों नहीं होता था? आखिर माधो भी खून में उसके साथ था, पाप में उसके साथ था। बल्कि माधो ही तो उसे ले गया था। उसने उसकी सुंदरता का वर्णन किया था, उसी ने उसकी रंगरेलियों का वर्णन किया था। नरायन को तो पहले मालूम ही नहीं था। कैसा फंस गया था! और तब उसे उन गहनों की याद आई जो उन्होंने मेंड़ पर गाड़ दिए थे। दरोगा को मालूम था कि उन्होंने मेंड़ पर गहने गाड़ दिए थे, लेकिन उसने उनके बारे में ज्यादा इन्क्वायरी क्यों नहीं की? क्या वे गहने वहाँ गड़े होंगे, या निकल गए? गाँव जाने का तो मौका लगा ही नहीं, फिर पता भी कैसे चलता, किससे पूछते! चाँदी के खड़ुए और हंसली ही तो थे! नरायन को लगा कि उसके दिल पर कोई अंगारा-सा लग रहा था। और मन ने कहा—नहीं नरायन, वे गहने वहाँ नहीं होंगे। वे दरोगा ने उड़वा दिए होंगे। जिस करामात ने ज़मानत दिलवाई है और छुड़वाया है, उसी करामात ने उन गहनों को भी गायब करवा

दिया होगा। दरोगा ने क्यों नहीं पूछा था? फिर दरोगा ने वे खुदवा लिए होंगे! कहीं ऐसा तो नहीं है कि सबूत बनाकर उसने गहने पास रख लिए हों! फिर नरायन को याद आया, उन गहनों का क्या मोल? उन गहनों को कौन पहचान सकता है, खड़ुआ-खड़ुआ एक-सा, हंसली-हंसली एक सी। ज्यादा से ज्यादा दामी कह सकती है कि ये उसकी बेटी के थे। लेकिन गवाह? और गवाह भी हो गए तो यह क्या सबूत कि वे किस जगह से बरामद हुए? कौन लाया? पुलिस लाई। लेकिन यह क्या पता कि पुलिस ने हमसे बरामद किए? ऐसा तो कहीं लिखा नहीं है। क्षण-भर को ऐसा लगा था नरायन को, उसका दिल एक भंवर में फंस गया था। फिर सांस लेने को बाहर निकल आया। अब उसे यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि वह अपने-आपसे घृणा करता था। लेकिन मौत से उसे डर लगता था। वह अब भी जिन्दा रहना चाहता था। इतना अविश्वास, इतनी घृणा के रहते हुए भी वह इस ज़िन्दगी से प्यार करता था। ज़िन्दगी क्या इतना प्यार करने लायक है? और जब वह इतनी ही प्यारी चीज़ है तो कौन-सी नृशंसता और निर्दयता से हिरदे की लड़की का कत्ल किया था? क्या उसे अपनी ज़िन्दगी प्यारी नहीं होगी? क्या वह परमात्मा ने इसलिए पैदा नहीं की थी कि वह भी कुछ दिन रहकर इस धरती की खुशबू को सूंघे। लेकिन चींटी को मसलने वाला पांव कब सोचता है कि मरते-मरते चींटी के दर्द की कसक ने कराह का सृजन किया होगा! छोटे के दर्द को कौन देखता है! दर्द भी उसके देखे जाते हैं जिसमें सामर्थ्य होती है। दर्द उसके रंग लाते हैं जो अपने दर्दों से दूसरों को रंगना जानता है। गरीब की आह आसमान में बादल पैदा नहीं करती। समुद्र की आह पैदा करती है बादल, क्योंकि समुद्र जब अपने क्षार से व्याकुल हो जाता है तब वह सूर्य की ओर लपकने लगता है। लेकिन नरायन यह नहीं समझ सका। उसको एक अनबूझ, व्याख्याहीन-सी पीड़ा सताने लगी। उसे अपने जीवन के प्यार पर भी नफरत होने लगी, उस पर भी ग्लानि होने लगी। इस ज़िन्दगी से वह क्यों प्यार करता है? इतनी बुरी है यह ज़िन्दगी, फिर क्यों प्यार करता है? वे माँसल आलिंगन, जिनमें विभोर करने की तन्मय शक्ति थी; वे मादक स्पर्श जिनमें रोमाँचित होते हुए पत्तों की स्फुर्ना थी; वे तिरोहित उष्ण श्वास, जिनमें मिसरी की सी घुलन मालूम देती थी—वे सब क्षण भर के आवेश से लुप्त हो गए थे और उस आवेश ने एक जघन्य हिंसा को जन्म दिया था और जिस देह का उन्होंने आलिंगन किया था, उसी देह को उन्होंने काट दिया, जैसे वह एक मरा हुआ बकरा था, जिसे कसाई काट देता है। उन्होंने उसे धरती में गाड़ दिया, कठोर धरती में, जो बरसात के कीचड़ से चिपचिप होने लगी थी। उस समय क्या वे समझे थे कि उन्हें कोई देख नहीं रहा है। क्या आकाश का पहरेदार उस समय सो गया था? वह भले ही सो गया हो, लेकिन खून धरती के भीतर गड़कर भी बोला, क्याँकि धरती खून को नहीं निगल सकती। धरती बोलने लगती हे, धरती कराहने लगती है। और धरती की कराह से सारा गाँव कांपने लगा था। आज वे छूट आए हैं। केस के लिए इन्तज़ार हो रहा है। लेकिन उसे अपने-आपसे अब भी डर लग रहा है। और नरायन ने देखा, पीपल के पीछे बिलकुल

अन्धकार छा गया था। शायद धरती उजाले को न सह सकने के कारण दूसरी ओर घूम गई थी।

और तब उसे याद आया, जिस समय मार पड़ी थी पुलिस की, तब यह ढोंगी माधो कुत्ते की तरह बिलबिलाकर चिल्लाने लगा था। उस समय भूल गया था यह अपनी हिम्मत को और इसने दरोगा के पांव पकड़कर कहा था—मैंने खून किया है, बचा लो, बचा लो। कहाँ गया था इसका साहस उस समय? देह की मार ऐसी मार थी कि उसके सामने यह सब कुछ भूल गया। अरे मन! इसके अन्दर ही भय है। साला मुर्दा! मन की मार इसे नहीं लगती। उस समय इसने नहीं सोचा था कि वह नरायन को फंसा रहा है। कैसे कच्चे पांव का है यह बैरी! अगर यह न बोलता तो यह नौबत ही क्यों आती! नरायन के मन में माधो के प्रति घोर घृणा जागने लगी। उसको लगा कि वह अत्यन्त कमीना था। लेकिन फिर सवाल उठा—क्या माधो नरायन से अच्छा आदमी नहीं है? उसमें एक इन्सानियत तो है कि किसी एक दर्द से डरकर वह सच्चाई को कबूल सकता है। लेकिन नरायन? उसके लिए शायद कोई चीज डर नहीं रखती। वह किसी दर्द से नहीं घबराता। डर है तो सिर्फ मौत का है। किसलिए? कौन आखिर यहाँ नहीं मर जाता! थोड़े दिन रहते हैं और चले जाते हैं। उसके देखते-देखते दुनिया से बहुत से लोग जा चुके हैं। कल को अगर फांसी हो गई तो? इस विचित्र विचार से ही उसे पसीने से आ गए। उसे लगा, जैसे वह एक दुःस्वप्न में से जाग उठा था।

बधौतिया, संग्राम और कक्कड़ खेलकर इधर ही आ रहे थे। माधो उनके पीछे-पीछे था। नरायन का ध्यान उचट गया और उसने मुस्कराने की चेष्टा की; किन्तु उसे लगा कि वह मुस्करा नहीं रहा था, बल्कि मुँह बना रहा था। उसके मन का आनन्द ऐसे ही चला गया था, जैसे पीपल के पीछे चन्दा। उसे बार-बार लगता कि वह डूब रहा था। और फिर वह चेष्टा करता कि बाहर आ जाए, किन्तु उसे कोई मार्ग नहीं दिखता था। वह कहता—नरायन, तू क्योँ नहीं माधो की तरह सब कुछ भूल जाता? अभी बहुत जिन्दगी पड़ी है। तू बच जाएगा। तेरा बाप एक मजबूत आदमी है, वह तुझे उबार लेगा। फिर तू क्यों अपने मन को खोए जा रहा है, लेकिन भीतर से कोई कहता—नरायन, कैसे भूल जाएगा तू? तुने जो किया है वह क्या ऐसा है जिसे तू भूल जाएगा? तूने एक अबला की हत्या की है। अगर वह उस समय नहीं बोल सकी, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह कभी नहीं बोलेगी। अरे, वह तेरे दिल के ऊपर एक रेखा खींच गई है; वह पत्थर पर खींची हुई रेख है, उसे कोई कैसे मिटा सकेगा? तेरी याद तो नहीं चली जाएगी? नरायन, तू पापी है, तूने घोर कुकर्म किया है। तेरे लिए नरक भी काफी नहीं पड़ेगा। और दादी से सुनी हुई नरक की कहानियाँ उसकी आँखों के सामने नाचने लगीं। उस ग्लानि के तीव्र दाह में उसकी आँखों के सामने नरक की भट्ठियाँ सुलगने लगीं, जिनमें यमदूत उसे पकड़कर लोहे की सीकचों के ऊपर जला रहे

थे। उसको सांत्वना-सी मिली क्योंकि नरक की वह आग भी उसके लिए भयानक नहीं थी, लेकिन वह मन की व्यथा थी।

अब उसे प्यास लगने लगी थी। गला चटकने लगा था। उसने सुना, बधौतिया ने उससे कुछ कहा। किन्तु नरायन को ऐसा लगा कि जैसे सामने के दृश्य तैर रहे थे। उसे चक्कर से आने लगे। उसने खाट पकड़ ली। उसे लेटे-लेटे भी लगा, जैसे वह गिरा जा रहा है। वह जैसे स्वप्न में से चिल्लाया—मुझे पानी पिला दो! मुझे पानी पिला दो! फिर दोस्तों की किलकारी सुनकर उसका ध्यान टूटा। बल लगाकर उठा। उसने घड़े में से पानी पिया। ठण्डे पानी ने उसको शक्ति दी। कितना मीठा था! पानी की मिठास जीवन की मिठास बन गई और तब बाढ़ के किनारे नदी के वेग से माटी-कटे विशाल वृक्ष की जड़ों को पकड़े हुए जैसे कोई भीगता हुआ बटोही बह जाने के डर से परमात्मा से पुकारकर कहता है—हे भगवान! अरे इस विशाल वृक्ष को तुझे बहा ले जाना है तो बहा ले जा, लेकिन मुझे इसकी किसी डाल पर सुरक्षित कर दे। मैं पानी के भीतर न डूब जाऊं। और पहली बार नरायन ने परमात्मा की याद में सिर झुका दिया।

गाँव में हलचल मच उठी। बयानों की खबर बिजली की तरह फैल गई। जिसके मन में जो आता वही कहता। सरपंच और वार्ड पंच जब घर आए तो मिलनेवालों की भीड़ आ गई और सब लोग तरह-तरह के सवाल पूछने लगे। कजौरीसिंह की पत्नी, दादी के पास बैठी रही। उधर जब हिरदे घर पहुँचा तो दामी उत्सुकता से उसकी बाट देख रही थी। हिरदे हाथ-मुँह धो आया तो दामी ने उसे रोटी लाकर दी और कहा, "थक गए होगे आज तो?"

हिरदे ने उसकी ओर देखा और उसकी आँखों में पानी आ गया।

दामी ने क्षण-भर उसकी ओर देखा और आँखें फिरा लीं। फिर कहा, "तो क्या कातिल को फांसी नहीं लगेगी?"

हिरदे ने रोटी नहीं उठाई। दामी ने कहा, "सबूत पक्के नहीं हुए। कोई ऐसा नहीं था जिसने कतल करते देखा हो।"

"रोटी क्यों नहीं खाते?"

"जी नहीं करता।"

"लेकिन मैं पूछती हूँ, इससे फायदा?"

हिरदे उत्तर नहीं दे सका। बच्चे सो रहे थे।

दामी ने फिर कहा, "तुम्हारे चले जाने के बाद गोविन्द आया था।"

"अच्छा! क्या कहता था?"

"वह कह रहा था कि भाभी, ज़मीन नहीं मिलेगी तुम्हें।"

"क्यों?" हिरदे ने पूछा। किन्तु जीवन की अदम्य लालसा ने उसके हाथों में घुसकर अब रोटी तोड़ना प्रारम्भ कर दिया था, क्योंकि कथा का अन्त नहीं हुआ था, कथा फिर से चल पड़ी थी।

दामी ने कहा, "इसलिए कि वह श्यौपाल और पटवारी से मिलकर आया था।"

हिरदे को लगा कि वह सब तरह से मायूस हो चला था। लड़की गई, इज्जत गई; कातिल का वह कुछ नहीं बिगाड़ सकता और ज़मीन उसको नहीं मिलेगी। लेकिन बौहरा रूपदास उसका खून अब पिएगा, क्योंकि उसका कर्जा चढ़ गया है। घर के जेवर भी बिक गए। उसकी समझ में नहीं आया कि वह करे तो क्या और न करे तो क्या। गाँव के सरपंच और वार्ड पंच से दुश्मनी बाँधी सो अलग। अगर नरायन और माधो छूट गए तो आज जो दो-चार आदमी उसकी तरफ बोलते हैं, वे उसे पहचानना भी बन्द कर देंगे और इसके अलावा ज़माने-भर की छिनाल चम्पो ने उसके मुचलके करा दिए हैं। अब वह गुण्डा साबित हो गया है। अदालत की नज़र में उसकी कोई इज़्ज़त नहीं रही, क्योंकि उससे यह आशा की गई है कि वह किसी पर बुरा हमला भी कर सकता है। कल को अगर सरपंच के थोक के लोग चाहें तो वे उसे गिरफ्तार भी करा सकते हैं। कोई झूठे ही को ज़रा-सा खून निकालकर थाने में चला जाए तो ये सब लोग, जो कि इज़्ज़तदार कहलाते हैं, उसके गवाह बन जाएँगे और तब हिरदे को बचाने वाला कोई नहीं होगा।

दामी ने कहा, "गोविन्द एक बात और कहता था।"

"सो क्या?"

"उसने कहा था कि अच्छी हो, हिरदे पटेल किसी तरह समझौता कर लें।"

"किससे?" हिरदे ने पूछा।

"श्यौपाल से।"

"कैसे?"

"ऐसे की श्यौपाल को अपनी ज़मीन साढ़े चार बीघा में से दो बीघा अधबटाई पर दे दो, तो वह मुकदमा वापस ले लेगा और शायद ज़मीन तुमको मिल जाएगी।"

"पर वह ऐसा क्यों कर रहा है?" हिरदे ने पूछा।

"इसलिए कि श्यौपाल कहता है कि ज़मीन मिल जाने के बाद भी किसनपाल को हटाना खेल नहीं है। पर ज़मीन उसे मिल जरूर जाएगी।"

हिरदे शांत रहा और फिर उसने कहा, "ठीक है, लेकिन अगर किसनपाल को हटाना इतना मुश्किल है तो जिस काम को श्यौपाल न कर सकेगा, वह मैं कैसे कर लूँगा?"

दामी ने कहा, "वो कहता था कि असली मालिक तुम हो, अदालत के ज़रिए से तुम ज़मीन ले सकते हो; लेकिन उसके पास यह जमीन रहन थी, इसलिए कानून उसका साथ नहीं देगा, तुम्हारा ज़रूर दे देगा।"

हिरदे सोचने लगा और उसने फिर कहा, "और वह जो फिर गया तो?"

“गोविन्द कह रहा था कि वह इस मामले में पड़ेगा।”

हिरदे ने कहा, “आएगा फिर वो?”

“कह रहा था कि वो बड़ा परेसान है। पटेल आएँ तो भेज देना।”

हिरदे लेट गया और सोचने लगा।

गाँव में भानालाल अरायजनवीस ने पटवारी जैराम से कहा, “पटवारी जी, क्या ख्याल है? छूट जाएँगे दोनों लड़के?”

“हाकिम के हाथ फैसला है।” पटवारी ने कहा, “कौन बता सकता है, भानालालजी!”

भानालाल ने कहा, “लेकिन सबूत तो कोई पक्के नहीं हुए और कत्ल के केस में अगर ज़रा भी शुबहा रह गया सो शुबहे का फायदा उसी को दिया जाता है जो मुल्ज़िम बनता है।”

पटवारी ने सिर हिलाते हुए कहा, “बखत-बखत की बात है।”

इसके बाद दोनों ने सतर्क दृष्टि से एक-दूसरे की ओर देखा, किन्तु कहा कुछ नहीं, क्योंकि दोनों को ही खतरा था कि जो बात कही जाएगी वह शायद सरपंच के पास न पहुँच जाए। चंचलसिंह का आतंक फिर जमने लगा था।

दुकान पर बैठे भगत बनिए ने कहा, “बिस का नाम, सुन लिया? और सुनोगे बिस का नाम कि नहीं सुनोगे बिस का नाम?”

रामसरूप मास्टर दूध पी रहा था। उसने दिल्लगी में कहा, “क्या कह रहे हो, बिस का नाम?”

बनिए ने सिर हिलाकर कहा, “बयान हो गए, बिस का नाम।”

लेकिन रामसरूप ने कोई दिलचस्पी नहीं ली और भगत बनिए की मन ही मन में रह गई।

निहाल घर लौट गई थी। चम्पो ने जब सुना तो सारी बात की जाँच करने के लिए सरपंच के घर की ओर चली और दादी के पास जा बैठी। दादी के पैर दबाए। बूढ़ी प्रसन्न हो गई। बोली, “क्या तैने सुनी? क्यों री बहू, तैने सुनी? आज लल्ला के बयान हो गए।” और हर्ष से विह्वल-सी अपनी शब्दावली में सारी घटना को दोहराने लगी।

चंचलसिंह बैठक में थे। वार्ड पंच सामने मूढ़े पर बैठा था। चंचलसिंह ने कहा, “फिर? हिरदेराम मान जाएगा, ऐसी उम्मीद है?”

कजौरीसिंह ने कहा, “गोविन्द से कहलाया है। अगर इसमें फंस गया तो कहीं का न रहेगा। एक बार टीप हो जाए अगर श्यौपाल की, तो इस गाँव से भगा दिया जाएगा। सरपंच

साहब, इसने आपकी इज़्ज़त पर हाथ डाला है, कोई मज़ाक नहीं। आपका दिल बड़ा है, आप उसे माफ कर सकते हैं, लेकिन हम लोग जो आपका नमक खाते हैं, अगर हम लोग चुप रह गए तो वह यह समझेगा कि उसने हम लोगों को तबाह कर दिया। सरपंच साहब, हज़ारों लुट गए हैं हज़ारों?" यह कहते-कहते जैसे कजौरीसिंह की आँखों में अंधेरा छा गया।

सरपंच ने कुछ नहीं कहा। विषय बदल दिया और कहा, "अच्छी बात है, तो अब आप जाइए। रात हो गई है; खाना-वाना खाइए। फैसला हो जाएगा, तब भी एक महीने तक इन्तज़ार करना पड़ेगा। इस बीच में अगर किसी ने कुछ न किया तो आप हिरदेराम को छोड़ सकते हैं। लेकिन वह गरीब है! यह तो आप मानेंगे, उसके साथ जुल्म हुआ है!"

कजौरीसिंह चौंका।

सरपंच ने कहा, "मान लीजिए, मेरी या आपकी लड़की का कत्ल हुआ होता, तो क्या मैं और आप चुप रह जाते? लेकिन, कजौरीसिंहजी, गरीब के हाथ-पांव नहीं होते। गरीब जब इन्साफ के लिए आवाज़ उठाता है तब लोग उसे कुचल देना चाहते हैं। आप अपने लड़के की मोहब्बत के लिए पागल हो रहे हैं, लेकिन मैं आपको फिर बता दूँ कि मैं अपने लड़के की मोहब्बत की लिए ऐसा नहीं कर रहा हूँ। मैं उस लड़के से नफरत करता हूँ। मैं उस निहाल से भी मिला। उसकी ज़हरीली आँखों को जब मैंने देखा था तो मेरी इच्छा यह हुई थी कि मैं उसका खून कर दूँ। लेकिन मैंने उसका कत्ल नहीं किया। मैं जानता हूँ कि उसको कत्ल करने से मैं फांसी पर चढ़ जाऊँगा। लेकिन मेरे और आपके लड़के जहन्नुम के कुत्ते हैं। इनसे ज़्यादा गलीज़ दुनिया में कोई नहीं हो सकता। अगर मैं मैं न होता, अगर मुझे इस खानदान की इज्ज़त का ख्याल न करना पड़ता, तो मैं इन दोनों की खाल उतरवा लेता। वार्ड पंच साहब, ये बहुत ही कमीने हैं। कौन-सा ऐसा पाप है जो मैंने इन लोगों के पीछे नहीं किया। और आप कहते हैं कि हिरदेराम को बरबाद भी करना होगा; तो मैं उसमें भी आपको नहीं रोकता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह हिरदेराम को बरबाद नहीं किया जा रहा है बल्कि अपने गिरोह को पक्का किया जा रहा है, जिसके बल पर हमें अगला चुनाव जीतना है। हुकूमत करने के लिए दिल की बहुत-सी मिठास को खटास में बदल देना पड़ता है, वार्ड पंच साहब! समझे आप? आप जाइए। जिस दिन मैंने कांग्रेस में अपना नाम लिखाया था, उस दिन मैं यह समझा था कि मुझे गाँधीजी के नाम पर अपनी ज़िन्दगी को ऊँचा करने का मौका मिलेगा, लेकिन जब मैं इस चकाबू के किले में फंस गया तो मुझे मालूम पड़ा कि हिरदे की लड़की का मरना गाँधीजी के मरने के बराबर है और जिस तरह कोई मकड़ा अपने मुँह से जाला उगलकर उसके बीच में बैठ जाता है, उसी तरह मैं भी बैठ गया हूँ। मैं अब जाले में फंस गया हूँ। मेरी दौड़ उसके बाहर नहीं। कजौरीसिंह, मुझमें और आपमें सिर्फ एक फर्क है—आप सब-कुछ करते हुए अपने को ठीक समझते हैं और मैं

सब-कुछ करता हुआ अपने-आपसे नफरत करने लगा हूँ, क्योंकि मेरी ज़िन्दगी एक फरेब है, झूठ है और मुझे इस ज़िन्दगी से नफरत है।"

कजौरीसिंह ने कहा, "भाई साहब, आपको रुपया खर्च हो जाने का सदमा बैठ गया है।"

सरपंच हँसे और बोले, "मुझे बहकाते हो वार्ड पंच साहब! सरपंची बनी रहे। दस ही हज़ार रुपये तो खर्च हुए हैं। क्या बिगड़ता है! आप अब जाइए, आराम करिए। मैं भी सोना चाहता हूँ।"

कजौरीसिंह ने उठते हुए कहा, "दिल को हिरास मत होने दीजिए।"

"अच्छी बात है।" सरपंच ने कहा, "दिल को खुश रखूँगा।"

वार्ड पंच के चले जाने के बाद सरपंच ने करवट बदली। द्वार पर कोई आहट सुनाई दी। सरपंच ने कहा, "चली आओ भीतर।"

चमेली ने प्रवेश किया।

"आओ," सरपंच ने कहा, "तुम भी आओ। तुम्हारा बेटा आराम से होस्टल में पड़ा है। वह इतना बेशर्म है कि उसे अपने ऊपर कोई शर्म नहीं है। लिहाजा बेशर्मी उसकी आदत हो गई है। वह इतना बेहया है कि उसे झूठ बोलते हुए झिझक नहीं होती। वह यह समझता है कि वह गुनहगार नहीं है। मैंने अभी तक उससे बातें नहीं की हैं, लेकिन मैं सोचता हूँ कि वह लड़कों के साथ बेफिक्री से होस्टल में रहता है। माधो बेहयाई में उससे टक्कर ले रहा है। दो बहुत ही खतरनाक किस्म के आदमी, जो इतने बेशर्म हैं कि एक आवारा लड़की के साथ सामिलात में मोहब्बत कर सकते थे, जिन्होंने आदमी की हया को दूर कर दिया था, वे दोनों चर-चरके मस्त हो रहे हैं क्योंकि उनके पीछे पैसा खर्च करने वाले लोग मौजूद हैं।"

हठात् चमेली ने काटकर कहा, "मैं उसके बारे में पूछने नहीं आई हूँ।"

"ऐं!" सरपंच ने चौंककर पूछा, "क्या कहती हो?"

"मैं कहती हूँ कि मैं उसके बारे में पूछने नहीं आई।"

"तुम अपने बेटे के बारे में पूछना नहीं चाहतीं?"

"वह मेरा अकेले का बेटा नहीं था, तुम्हारा भी तो था। यह कौन कह सकता है कि वह माँ पर गया है कि बाप पर गया है!"

सरपंच भर्राए स्वर से हँसा और उसने कहा, "यह बहस बेकार है, चमेली, यह बहस बेकार है। बिलकुल बेकार है। मेरे लिए इतना काफी है कि वह लड़का मेरे बाद अपने भाइयों को धोखा देगा, उनका कत्ल भी कर सकता है, क्योंकि उसका हाथ एक दफा खुल चुका है। अच्छा हो, मुकदमे के बाद वह फांसी लगाकर मर जाए। तुम क्या इसे ठीक समझती हो?"

चमेली आहत हुई। बोली, "तुमने बाप का दिल नहीं पाया।"

"बाप?" सरपंच ने हँसकर कहा, "मैंने बाप का हृदय नहीं पाया! ठीक कहती हो तुम, ठीक कहती हो। मैंने हज़ारों रुपए उसपर खर्च कर दिए, मैंने दो-दो कौड़ियों के आदमियों की खुशामद की, मैंने उसके लिए अपनी इज्ज़त को गँवा दिया, लेकिन वैसे तुम ठीक कहती हो। जब मैं दिल के अन्दर झांककर देखता हूँ तो मुझे पता लगता है, मुझे उससे नफरत है। यह मैंने उसके लिए नहीं किया बल्कि अपनी और अपने खानदान की इज़्ज़त बचाने के लिए ऐसा किया है, लेकिन तुम पर इसका कोई असर नहीं। इसलिए नहीं है कि तुम समझती हो कि तुम्हारे लड़के को खून करने का भी हक है।"

चमेली ने कहा, "और भी कुछ कहना चाहते हो?"

सरपंच ने कहा, "नहीं।"

चमेली आवेश में लौट गई, लेकिन सरपंच ने उसे नहीं रोका। और सरपंच ने सोचा—अभी चार गवाह और तैयार करने हैं।

सुबह हो गई। कजौरीसिंह ने आकर इत्तला दी, "आपके कहने से मैंने चारों से बात कर ली है और चारों तैयार हैं।"

"ठीक है।" सरपंच ने कहा, "तारीख के एक दिन पहले साथ लेकर उन्हें वकील के पास जाना पड़ेगा। वही उन्हें सबकुछ समझाएँगे।"

रात हो गई थी। चंचलसिंह और कजौरीसिंह खाटों पर वकील साहब के यहाँ लेटे थे। दो बज रहे थे, कजौरीसिंह ने उठकर पानी पिया। सरपंच साहब ने आँख खोलकर देखा और फिर आँखें मूंद लीं।

"अभी आप जाग रहे हैं?"

"हाँ, कजौरीसिंहजी!"

"अभी तक सोये नहीं?"

"नींद नहीं आती।"

"मुझे तो एक झपकी आ जाती है। कैसा भी काम हो, कुछ ऐसा नशा-सा चढ़ता है नींद का कि सरपंच साहब, मुझसे रहा ही नहीं जाता। यह ही कह लीजिए कि मैं दूसरों का इतना ख्याल नहीं रखता जितना अपना रखता हूँ। मुझसे बड़े-बड़े काम हर्ज हो जाते हैं इस बात से, लेकिन आदत से मजबूर हूँ।"

"ठीक है।" सरपंच ने कहा, "आदत से मजबूर होना ऐसी कोई बड़ी बात नहीं, वार्ड पंच साहब! अपनी जगह आदत भी एक आदत है, एक चलती का नाम गाड़ी है।"

"आपको फिक्र लग रही है, सरपंच साहब और वकील साहब तो कह रहे थे कि फैसला शायद खिलाफ नहीं जाएगा।"

सरपंच ने कहा, “यही एम. एल. ए. साहब भी आज मुझसे कह रहे थे। मैंने उनसे कहा था कि पुलिस की तरफ से सबूत हो चुके हैं। कत्ल का चश्मदीद सबूत कोई नहीं है और सफाई भी हमने अच्छी पेश कर दी है और इसलिए यह मुकदमा कमज़ोर पड़ गया है। चिन्ता की कोई बात तो नहीं है, लेकिन फिर भी हाकिम तो हाकिम ही है।”

कजौरीसिंह सुनने लगा। सरपंच ने कहा, “एम. एल. ए. साहब बोले कि मैं कल दफ्तर जाने से पहले मुन्सिफ साहब से मिल लूँगा। सारा का सारा किस्सा सुना दूँगा। ठीक फैसला करवा दूँगा। आप चिन्ता न करें। मैंने उनसे कहा था—एम. एल. ए. साहब, आप मालिक हैं। लेकिन एक बात पूछता हूँ कजौरीसिंहजी, क्या सचमुच एम. एल. ए. साहब मालिक हैं। बचपन से सुनता आ रहा हूँ कि आदमियों का मालिक राजा हुआ करता है। लेकिन राजा भी सब-कुछ नहीं होता। उसके ऊपर एक मालिक और है और वह मालिक दिखाई नहीं देता, लेकिन उसका राज अपने-आप चलता है, उसके इशारे पर; पत्ता भी खड़कता है तो उसके इशारे से; और अगर वह इशारा नहीं करता तो पानी में एक हिलोर भी नहीं उठती। वार्ड पंच साहब! क्या सही है कि एक ऐसा मालिक है? अगर ऐसा मालिक है तो फिर हम लोगों को डर क्यों नहीं लगता? लेकिन एक बात ज़रूर है, भाग्य भी तो कुछ होता है। कजौरीसिंह जी, आप जब वार्ड पंच नहीं थे, तब आपको मालूम था कि आप फलाने सन् में वार्ड पंच हो जाएँगे?”

“ही-ही,” कजौरीसिंह ने ज़रा पतले तरीके से हँसकर कहा, “और आप ही को क्या मालूम था कि आप सरपंच हो जाएँगे?”

सरपंच ने उत्तर दिया, “मुझे यह तो नहीं मालूम था कि मैं हो जाऊँगा, लेकिन मैं यह जानता था कि लड़ना शायद कारगर साबित होगा और इसलिए मैंने चुनाव लड़ लिया। आप तो जानते हैं, मेरे पाँच-सात हज़ार खर्च हुए थे चुनाव में; बाइस लारियाँ मैं लाया था कि नहीं लाया था?”

“हाँ, आप लाए तो थे।” कजौरीसिंह ने कहा, “इससे तो इन्कार नहीं किया जा सकता।”

सरपंच ने सोचते हुए कहा, “इसलिए मैं सोचता हूँ कि यह सब जो कुछ रहा है शायद मेरे-आपके प्रयत्न न करने पर भी यह सब कुछ इस तरीके से मुड़ जाता, कौन जानता है? आदमी उन मुसीबतों का तो जवाब दे सकता है जो उसके सामने जान-बूझकर आती है; लेकिन यह क्या वजह है कि मेरा बेटा कसूर करता है और उसकी वजह से मैं बदनाम होता हूँ? यह बात मेरी समझ में नहीं बैठी।”

रात्रि के नीरव अंधियारे में कजौरीसिंह ने मन ही मन में सोचा—शायद सरपंच का सिर फिर गया है। लेकिन फिर भी वह विनम्र बना रहा। उसने कहा कुछ नहीं।

सरपंच ने फिर कहा, “आपने देखा था, कजौरीसिंहजी, हिरदेराम आया था...”

“अजी, वो साला बदमाश है।” कजौरीसिंह ने टोककर कहा।

सरपंच ने कहा, “बेवकूफ कह सकते हो उसे, वार्ड पंच साहब, बदमाश कैसे कह सकते हो? बदमाश होने का मतलब यह है कि उसमें अपनी थोड़ी-बहुत अक्ल होनी चाहिए; लेकिन उसने अपनी अक्ल बेच खाई है, लिहाज़ा मैं उसको बेवकूफ कह सकता हूँ। उसकी आँखों में कैसी तड़पन थी, कैसी घुटन थी! अगर आँखें अंगारा होतीं, कजौरीसिंह जी, आज इजलास में आग लग जाती।”

कजौरीसिंह नहीं समझा। सरपंच ने बाहर निकलकर थूका और पानी पीकर फिर सो गया।

दूसरे दिन तारीख थी। अदालत से पहले सरपंच व वार्ड पंच अपने चार गवाहों को लेकर वकील साहब के पास जा पहुँचे। वकील साहब ने चारों आदमियोँ के नाम लिखकर लिस्ट-गवाहान पेश करने की तैयारी की और उसपर नरायन और माधो के दस्तखत कराए।

मुन्सिफ साहब अदालत में आ गए और सबसे पहले नरायन और माधो के मुकदमे की आवाज दिलवाई। पैरोकार-पुलिस को बुलवा लिया गया। वकील साहब अपने फरीकेन के साथ अदालत में पहुँचे। सबसे पहले वकील साहब ने लिस्ट-गवाहान मय दरख्वास्त के पेश कर दी—श्री यादराम वल्द पथिया, श्री घूरिया वल्द महाराम, श्री रामपाल वल्द सिब्बूराम, श्री बादाम वल्द पवनसिंह। मुन्सिफ साहब ने दरख्वास्त लेकर तहकीकात करना शुरू किया।

कजौरीसिंह के नयनों में विश्वास था। वह जब भी मुन्सिफ की ओर देखता तो उसके नेत्रों में ऐसी आत्मीयता का भाव झलक आता कि देखनेवाले मुन्सिफ की ओर तनिक संदेह से देखने लगते। मुन्सिफ को यह बात अच्छी नहीं लग रही थी। उनके जी में आया कि इस व्यक्ति को अदालत से बाहर निकाल दें; किन्तु वे ऐसा करने का कोई कारण नहीं खोज सके क्योंकि कजौरीसिंह के मुख पर किसी प्रकार की भी कोई अन्य चंचलता नहीं थी।

पहले यादराम का बयान हुआ, “सरपंच साहब व वार्ड पंच के लड़के मेरे सामने अपने खेत पर गए थे। मैं भी उनके साथ था। इन लड़कों ने कोई कत्ल वगैरह नहीं किया। पुलिस ने इनके ज़िम्मे झूठा मुकदमा लगाया है। ये लड़के तो अच्छे लड़के हैं।

पी. आई. ने पूछा, “क्या तुम इनके साथ बनैसिंह के खेत पर गए थे?”

यादराम ने कहा, “मैं बनैसिंह के खेत के पास ही दूसरे रास्ते से होकर गया था। ये लोग बनैसिंह के खेत पर होकर गए थे।”

“क्या तुमने इनको अपने खेत पर देखा था?”

“मैंने इनको इनके खेत पर देखा था और करीब तीन बजे अपने घर को जाते हुए ये मेरे सामने ही मेरे खेत पर होकर लौट आए थे।”

“क्या इनके खेत का रास्ता बनैसिंह के खेत पर होकर था?”

“इनके खेत का रास्ता सीधा बनैसिंह के खेत पर होकर था।”

“तुमने इनके कत्ल के बारे में कुछ सुना था?”

“मैंने कुछ नहीं सुना। ये बेचारे दूसरे दिन अपने स्कूल को चले गए।”

घूरिया ने बयान दिया, “नरायन व माधो एक दिन की छुट्टी पर स्कूल से अपने घर आए थे और ये एक दिन घर ठहरकर दूसरे दिन स्कूल वापस चले गए थे।”

पी. आई. ने पूछा, “तुमको यह मालूम है कि ये अपने खेत पर गए थे?”

उसी समय सरपंच की आँखें घूमीं। उसने देखा—घूरिया की आँखें नीची हो गईं। उसने सामने की ओर देखा, हिरदेराम खड़ा था। घूरिया हिरदेराम की आँखों से आँखें मिलाने का साहस नहीं कर सका था।

पी. आई. ने फिर दोहराया, “तुमको यह मालूम है कि ये अपने खेत पर गए थे?”

घूरिया ने कहा, “मुझे ये पता नहीं कि ये खेत पर गए या नहीं।”

वकील ने सरपंच की ओर देखा। सरपंच खाँस उठा। घूरिया की आँखें उठीं। उसने सरपंच की ओर देखा और कहा, “मैं अपने खेत से उस दिन करीब तीन बजे वापस अपने घर पर आया तो मुझे दोनों लड़के सरपंच साहब के मकान पर बैठे मिले थे।”

वकील साहब ने पूछा, “क्या तुमने इनकी बाबत कोई बात सुनी थी?”

घूरिया ने वकील साहब की ओर देखते हुए उत्तर दिया, “मैंने इनकी बाबत कुछ नहीं सुना।”

वकील साहब ने फिर पूछा, “क्या जो तुम्हारे गाँव में जो कत्ल हुआ था, उसके बारे में इन लोगों का कुछ नाम था?”

“नहीं।” घूरिया का उत्तर स्पष्ट सुनायी पड़ा।

सरपंच ने सिर हिलाकर उसे अभयदान दिया।

वकील साहब ने कहा, “इन लड़कों की बाबत तुमने सुना था कि स्कूल छोड़कर भाग गए थे?”

घूरिया ने सरपंच की ओर देखते हुए कहा, “नहीं, मैंने यह नहीं सुना, न ये स्कूल छोड़कर भागे थे।”

वह नीचे उतर आया, लेकिन उसके माथे पर पसीना चमचमा रहा था।

उसके बाद रामपाल ने बयान दिया, “नरायन व माधो की बाबत मैंने कत्ल के केस में कोई नाम नहीं सुना, न इन्होंने कत्ल किया है। पुलिस ने इनके खिलाफ झूठा केस लगाया है। ये अच्छे घर के लड़के हैं, स्कूल में पढ़ते हैं। हमने आज तक इनकी कोई बदनामी की बात नहीं सुनी।”

पी. आई. ने पूछा, “ये लड़के अपने खेत पर गए थे या नहीं, और अगर गए थे तो कब वापस आए?”

“ये अपने खेत पर करीब दो बजे पहुँचे थे और करीब तीन बजे वापस आ गए। मेरा खेत इनके खेत के पास था।”

बादाम ने बयान दिया, “मैं सरपंच साहब के खेत पर नौकर रहता हूँ। मैं खेत पर रखवाली कर रहा था। करीब दो बजे माधो और नरायन खेत की तरफ देखने आए थे। खेत पर दोनों लड़के करीब एक घण्टे ठहरे और फिर वापस चले गए।”

पी. आई. ने कहा, “क्या तुम सरपंच के यहाँ नौकरी करते हो?”

“नहीं। मैं वैसे कोई नौकरी नहीं करता। सिर्फ खेत की रखवाली के लिए जाता हूँ और बारह आने रोज़ ले लेता हूँ। सरपंच के यहाँ नौकर और लोग रहते हैं।”

वकील साहब ने पूछा, “तुमने इन लड़कों को हिरदेराम की लड़की को कत्ल करते हुए देखा था?”

“नहीं। इन्होंने कोई कत्ल नहीं किया। यह बात बिलकुल झूठी है। पुलिस ने इनके खिलाफ झूठा झगड़ा लगाया है। ये अच्छे लड़के हैं। कभी ऐसा नहीं कर सकते, न आज तक इनके घर की ऐसी बात हमने सुनी है।”

“क्या तुमने यह सुना था कि लड़के स्कूल छोड़कर भाग गए हैं?”

“हमने यह कभी नहीं सुना था। ये सब झूठी खबरें हैं। ये लोग तो आज तक स्कूल से गैरहाज़िर नहीं हुए। अगर कभी घरेलू काम आ गया तो ज़रूर छुट्टी ले लेते थे।”

हिरदेराम पत्थर-सा खड़ा था। झूठे गवाह उसके सामने आराम से झूठ बोल रहे थे। वह सुन रहा था और उसे बोलने का कोई अधिकार नहीं था। कहाँ थे ये लोग पहले? आज कहाँ से टपक पड़े थे। उसने सरपंच की ओर देखा। उसकी आँखों को देखकर क्षण-भर सरपंच चंचलसिंह की आँखें भी झुक गईं। तब हिरदेराम ने माधो और नरायन की ओर देखा। माधो बेहयाई से उसे देखता रहा, किन्तु नरायन की आँखें धरती की ओर लगी रहीं। ऐसा लगता था, जैसे वह लड़का दिन पर दिन अपनी शक्ति खोता चला जा रहा था। हिरदेराम को लगा जैसे वह बचपन में देखी हुई किसी नौटंकी को आज फिर से देख रहा था। पर भेद केवल इतना था कि उस समय उसे आश्चर्य और आनन्द दोनों ने घेरा था, और

इस समय उसे केवल घृणा घेर रही थी। उसी के गाँव के लोग! सुबह-शाम राम-राम, श्याम-श्याम करनेवाले लोग! कैसे बोल सके थे ये इतना! क्या इनको किसी दिन परमात्मा के सामने नहीं जाना था? क्यों वे इस तरह निडर होकर जो चाहे सो बोल रहे थे? हिरदेराम अपने मन को जितना ज्यादा समझाने की कोशिश करता, उतना ही उसे लगता कि उसके भीतर ही भीतर से खून-सा निकलने लगा था।

बयान जारी रहे। मुन्सिफ साहब ने पी. आई. से कहा, “आपको कुछ और पूछना है?”

पी. आई. ने कहा, “हुजूर, ये सब मुझे झूठे गवाह मालूम देते हैं।”

चंचलसिंह ने चौंककर पी. आई. की ओर देखा।

पी. आई. की आँखों से ऐसा नजर आ रहा था, जैसे वह जान-बूझकर आज कुछ शैतानी करने पर तुला हुआ था। मुन्सिफ की आँखें कुछ सिकुड़ गईं। उसे भी यह आशा नहीं थी। अब उसको लगने लगा कि शायद पुलिस इस केस में इतना मिली हुई नहीं थी जितना कि उसे संदेह था। उसके लिए इसी में फायदा था कि पुलिस मिली रहे और वह आराम से ऐसा बयान दे सके जिसमें पुलिस की निन्दा भी हो जाए और उसकी अपनी रिश्वत भी छिपी रह जाए। कजौरीसिंह की आँखें चंचल हो उठीं। पेशकार साहब की नाक पर चश्मा ज़रा और आगे खिसक आया। अदालत के चपरासी देखते रहे।

पी. आई. ने फिर कहा, “हुजूर, गवाह तैयार करना कोई मुश्किल बात नहीं है। सारी बात आकर यहाँ अटक जाती है।” यह कहकर उसका स्वर खिंच गया।

वकील महेन्द्रकुमार ने अपनी भौंहें उठाईं। उपस्थित लोग एक बार एक-दूसरे की ओर देख उठे। अब पी. आई. ने गजराजसिंह की ओर देखा और कहा, “थानेदार साहब ने इन लड़कों को जब गिरफ्तार किया था, तब वे स्कूल में नहीं थे। मैं यह पूछता हूँ हुजूर, कि गाँव का मामूली देहाती अगर मार के डर से भाग जाता तो यह बात मानी जा सकती थी, क्योंकि वह जाहिल होता है, क्योंकि वह समझता नहीं, क्योंकि वह गंवार होता है, दहकानी होता है। लेकिन एक इज़्ज़तदार सरपंच का लड़का, एक आबरू वाले कांग्रेस के नेता का लड़का भाग जाएगा और वह भी स्कूल में पढ़ते हुए, इसकी कोई वजह नहीं मालूम पड़ती। नरायन क्यों भागा? दूसरी बात शक की यह पैदा होती है कि जिस दूसरे लड़के का नाम लिया गया है वह माधोसिंह भी साथ-साथ भाग गया और वह भी किसी ऐसे ऐरे-गैरे का लड़का नहीं, वार्ड पंच का लड़का है। हुजूर! सरपंच और वार्ड पंच शहर की नजर से मामूली आदमी हो सकते हैं, लेकिन गाँव की नजर से उनको इतना गया-बीता नहीं कहा जा सकता; और हुजूर! जो लड़के इतने बुजदिल माने गए हैं कि वे भाग सकते हैं, ज़मानत हो जाने के बाद उनकी तन्दुरुस्ती पर कोई असर नहीं पड़ा है। वे अपने दोस्तों के साथ उठते-बैठते, खेलते हैं और उनके चेहरों पर यह भी पता नहीं चलता कि उनपर एक कत्ल का केस चलाया जा रहा है।”

महेन्द्रकुमार वकील ने टोका, “हुजूर! यह बात यहाँ कोई ताल्लुक नहीं रखती। एक बार तमाम ज़मानत हो जाने के बाद जब इनको अच्छी तरह समझा दिया गया है और चूंकि इन्होंने कत्ल नहीं किया है, कोई वजह नहीं है कि वे लड़के गम में घुल-घुलकर मर जाएँ।”

मुंसिफ ने दोनों ओर देखा। पी. आई. ने फिर कहा, “मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या इस बात की कोई तफतीश की गई है कि ये लोग भागकर सचमुच महू मेले में गए थे? क्या इन्हें किसी ने देखा था और अगर मेले गए थे, तो क्या छुट्टी लेकर गए थे? हुजूर, इस बात की इसके लिए जरूरत है कि आपकी अदालत से स्कूल के हेडमास्टर साहब के नाम के सम्मन जारी किए जाएँ और उनकी गवाही तलब की जाए।”

मुंसिफ ने सोचते हुए उत्तर दिया, “हम हुक्म देते हैं कि हेडमास्टर को बुलाया जाए।”

अदालत उठ गई। महेन्द्रकुमार ने चंचलसिंह की ओर देखते हुए कहा, “कानून कानून है अब आप समझ गए सरपंच साहब! वकील मुफ्त का मेहनताना नहीं लिया करता। आप लोग यह समझते हैं कि हम दूसरों को लूट लेते हैं, लेकिन आप नहीं जानते कि हम लोगों को कितनी बाल की खाल निकालनी पड़ती है। कानून किताब पर लिखा रहता है। कानून यह नहीं होता कि उस किताब की लिखावट को माना जाए; वकील का काम यह होता है कि उस लिखावट में कितनी कमज़ोरियाँ हैं उनको पहचान ले ताकि उनके उधर या इधर अपने दांव-पेंच खेल सके।”

चंचलसिंह ने कहा, “वकील साहब! हेडमास्टर साहब को बुलाया जाएगा?”

“जरूरत बुलाया जाएगा।”

चंचलसिंह का मन इसे स्वीकार नहीं कर सका। पर बोलने का मौका नहीं था। अदालत के बाहर चंचलसिंह ने पी. आई. को पकड़ा और उसकी ओर ऐसे देखा जैसे वह अहसानफरामोश हो। लेकिन पी. आई. कई घाटों का पानी पिये हुए था।

चंचलसिंह ने कहा, “सरकार, हमसे ऐसी क्या नाराजगी?”

पी. आई. ने मुस्कराकर कहा, “ओहो सरपंच साहब हैं! आज हमारी याद तो आई।”

“मैं आपको कब भूला था?”

“क्यों, जब से आप के बच्चों की ज़मानतें हुई हैं, उस दिन से आपने तो हमसे बातें ही नहीं की। मैं तो समझता था कि आप मुझसे नाराज़ हो गए।”

उसके चुभते हुए बोल चंचलसिंह की छाती में जा गड़े। उन्होंने कहा, “अजी पी. आई. साहब, आप कैसी बातें करते हैं! यह आपकी मेहरबानी है। आपकी बदौलत बच्चों की जान बच जाएगी। आप मदद न करते तो अभी तक न जाने क्या से क्या हो चुका होता। लेकिन वह कृपा अब हमारे ऊपर से क्यों उठती जा रही है? कोई हमसे कसूर बन गया है?”

पी. आई. ने कहा, “भाई! आप लोग समझते नहीं हैं। मैं पुलिस का पैरोकार हूँ; अगर बहस नहीं करूँगा तो आप जानते हैं कि मुंसिफ क्या करेगा? वह अपने फैसले में पुलिस के लत्ते बिखेरेगा। आपका तो एक केस है, लेकिन हमारी तो रोज़ की ज़िंदगी है। एक दिन की बात तो नहीं है! हमें आज भी यही करना है और कल भी यही करना है। मैंने कोई खास बात तो नहीं की! बस, एक जगह थी शक की। कल को मान लीजिए अपील हो जाए, तो कौन फंसेगा? आप फंसेंगे? नौकरी किसी की चली जाएगी सरपंच साहब! आपने एक दस रुपल्ली मुझको दिए थे तो आप समझते हैं कि मैं आपका गुलाम बन गया? आप अपने रुपये वापस ले जाइए।”

चंचलसिंह ने पी. आई. का हाथ पकड़कर कहा, “मुझे लगता है कि आप मुझसे नाराज हो गए हैं। मुझपर तो मेहरबानी रखिए। हुजूर सताया हुआ हूँ।”

“बिलकुल,” पी. आई. ने कहा, “कुछ आप सताए हुए हैं, कुछ वो लोग सताए हुए हैं जिन्हें आपने हजारों रुपये लुटाए हैं, जिनकी खबरें मुझ तक आ चुकी हैं। आप मेहरबानी की बात करते है; कोरी मेहरबानी से क्या बनता है? आपने तो सौ रुपये देकर मुझे मोल ले लिया। सोचिए, आजकल कितनी महंगाई है!”

सरपंच ने कहा, “पी. आई. साहब! आप जो हुक्म देंगे, सेवक उसी तरह से हाजिर होगा। मैं आपसे कभी दूर नहीं हूँ और न आइन्दा रहूँगा।”

“सरपंच साहब! यह तो ठीक है, लेकिन आपको खुद समझ लेना चाहिए। मेरे कहने से क्या होता है! समझदार को इशारा ही काफी है।”

सरपंच ने फौरन अपनी जेब से पचास रुपये निकालकर पी. आई. की जेब में डाल दिए।

पी. आई. ने इधर-उधर देखकर कहा, “कितने हैं?”

सरपंच ने बड़े अहसान-भरे स्वर में कहा, “पचास हैं।”

पी. आई. ने बुरा मानते हुए कहा, “सरपंच साहब! ये तो कम हैं। आप लोगों की खातिर आखिर हम लोग इतना खतरा मोल लेते हैं तो किसलिए? बाल-बच्चों की खातिर। जैसे आपके बाल-बच्चे हैं वैसे ही हम लोगों के भी हैं।”

सरपंच ने कहा, “सरकार! इस वक्त मेरे पास हैं नहीं। मैं आपको फिर ला दूंगा। मैं आपको सौ रुपये और दे दूँगा।”

पी. आई. ने कहा, नहीं हैं तो कोई बात नहीं है। इसके लिए मैंने नहीं कहा था। नहीं हैं तो रहने दीजिए। अगर आपको जरूरत हो तो और ले जाइए। मुझको आपका पूरा भरोसा है।”

सरपंच के मन का बोझ उतर गया।

मुंसिफ की अदालत से हेडमास्टर के नाम अदालती सम्मन जारी हुआ। हेडमास्टर कालीचरण शर्मा सीधा-सादा आदमी था। जब उसे इत्तिला हुई तो उसने क्लर्क से पूछा,

"यह क्या है भाई?"

"श्रीमान को गवाही देने जाना पड़ेगा।"

हेडमास्टर ने ज़िन्दगी में कभी मुकदमा नहीं लड़ा था। बोला, "मैं कचहरी में जाऊँगा! कौन लड़के हैं ये?"

"डूंमरपुर के हैं।"

"अरे, वही हैं क्या जिन्हें पुलिस ले गई थी और जो ज़मानत पर छूट आए थे? मैंने पचौरीजी से कहा था। बोले थे कि उन्होंने सब ठीक-ठाक देख लिया है। अब बोलिए। उन्होंने क्या खाक देख लिया है! मैं तो पचौरीजी से ऐक्सप्लेनेशन डिमाण्ड करूँगा। मैं मास्टरों पर भरोसा करके उनपर जिम्मेदारी छोड़ता हूँ तो इसका मतलब यह थोड़ा ही है कि वे स्कूल को बदनाम करा दें!"

क्लर्क ने थोड़ा नमक डाला, "पचौरीजी तो साहब, मन के मालिक हैं।"

इसी वक्त चपरासी ने भीतर आकर कहा, "डूंमरपुर के सरपंच चंचलसिंह आए हैं। आपसे मिलना चाहते हैं।"

"ले आओ।"

क्लर्क चला गया।

जब चंचलसिंह बैठ गए हेडमास्टर साहब ने कहा, "कहिए, कैसे तकलीफ की?"

चंचलसिंह सरपंच ने हेडमास्टर के भव्य मुख की ओर देखते हुए कहा, "श्रीमान, मेरा लड़का नरायन आपके स्कूल में पढ़ता है।"

"अच्छा," हेडमास्टर ने कहा, "जरूर पढ़ता है। मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या यह वही लड़का है जिसके सिलसिले में मुझे सम्मन मिले हैं?"

"जी हाँ।"

"यह केस क्या है?"

"श्रीमानजी! उसपर कत्ल का झूठा मुकदमा लगा दिया गया है।"

हेडमास्टर ने तीक्ष्ण दृष्टि से चंचलसिंह की ओर देखा।

चंचलसिंह ने कहा, "श्रीमान! इस मुकदमे का दारोमदार आपके ऊपर है।"

"मेरे ऊपर?" हेडमास्टर चौंक उठा, "वह कैसे?"

"अगर आप चाहें तो इन लड़कों को बचा सकते हैं, और अगर आप चाहें
तो इनको मरवा सकते हैं।"

"भाई, मेरी समझ में नहीं आया।"

चंचलसिंह ने कहा, "श्रीमान! इस मुकदमे में मेरे व वार्ड पंच कजौरीसिंह के खिलाफ मौके का कोई सबूत नहीं हुआ है। लेकिन पुलिस हाथ धोकर इनके पीछे पड़ गई है। सिर्फ एक बात है। आप जानते हैं, मैं सरपंच हूँ, इसलिए कुछ लोग मुझसे रंजिश भी रखते हैं। इन लोगों ने यह अफवाह उड़ाई है कि लड़के स्कूल छोड़कर भाग गए थे।"

"तो क्या वे सचमुच भाग नहीं गये थे?"

"अब, श्रीमान, भागना ही कह लीजिए। जब वे मौजूद नहीं थे, तो वे भाग ही गए थे। बात दरअसल यह थी कि पुलिस ने गाँव के लोगों को पकड़कर मारना शुरू किया था, तब किसी ने इन लड़कों से यह कह दिया कि कत्ल के दिन तुम गांव में थे। तुमको भी पकड़कर मारा जा सकता है। इसलिए ये शायद स्कूल छोड़कर भाग गए हों। मैं आपसे इसलिए कहता हूँ कि आपकी जिन्दगी बुराइयों से दूर है। आप लोगों को ज्ञान देते हो, लोगों को अक्ल देते हो। आप किसी पार्टीबन्दी में नहीं पड़ते हो आप तो गुरु हो और लड़कों की जिन्दगी बनाते हो।"

हेडमास्टर को कुछ बेचैनी-सी हुई, जैसे बहुत ज्यादा तारीफ हो गई थी और वह अपने को इतना योग्य नहीं समझता था। बोला, हाँ-हाँ पर इससे क्या हुआ?"

सरपंच ने कहा, "इसी बिना पर पुलिस ने इनको बंद किया था। इसलिए यह साबित करना है कि ये लोग स्कूल छोड़कर भागे नहीं थे, सिर्फ छुट्टी पर गए थे।"

हेडमास्टर ने कहा, "ठीक है, लेकिन मुझे यह भी जाँच करानी होगी कि वे लोग छुट्टी की दरख्वास्त भी दे गए थे या वैसे ही चले गए थे। मैं अभी मास्टरजी को बुलाता हूँ।"

हेडमास्टर ने घंटी बजाई। चपरासी भीतर आया। हेडमास्टर ने कहा, "देखो, ज़रा पचौरीजी को बुलाना। दोनों लड़के एक ही क्लास में तो हैं?"

सरपंच ने कहा, "जी हाँ। आप जानते हैं!"

चपरासी चला गया।

हेडमास्टर ने कहा, "पहले की तरह अब हम हरएक लड़के को नहीं जान पाते, क्योंकि लड़के अब सैकड़ों आते हैं, कहाँ तक उनसे व्यक्तिगत संपर्क स्थापित किया जाए? फिर भी इस मामले की कुछ अफवाह भी तो है?"

मास्टर पचौरीजी ने प्रवेश किया। बूढ़े आदमी, मानो हर इंगित में जताते आ रहे हों कि मुझे तो बस अब रिटायर होने में दो साल की देर है। अपनी पुरानी कल्पनाओं में ही रहा करते थे। नए कानून पास हो गए थे कि लड़कों को मारना नहीं चाहिए, लेकिन पचौरीजी ने नये कानून को कभी नहीं माना। उनके देखते-देखते खेतों की बेदखली बंद हो गई थी, राजाओं के राज चले गए थे। सब कुछ हो गया था, लेकिन पचौरी का मन अभी तक जहाँ का तहाँ था। कहा करते थे कि लड़के ग्रामर तबतक समझ ही नहीं सकते जब तक कि उनके कान न खींचे जाएँ, क्योंकि कुदरतन हिन्दुस्तानियों के कान छोटे होते हैं इसलिए उनमें अंग्रेजी के लफ्ज समा नहीं पाते। वे इस बात से भी बड़े नाराज होते थे कि अब स्कूलों में अंग्रेजी शुरू से नहीं पढ़ाई जाती थी। उन्होंने सरपंच को नमस्कार किया।

सरपंच ने हाथ जोड़े।

हेडमास्टर ने कहा, "आप इन्हें जानते हैं, पचौरीजी?"

"जी हाँ। मेरा साला है जो छोटावाला, वह इनके गाँव में वैक्सीनेटर है।"

हेडमास्टर ने कहा, “आपके गाँव में वैक्सीनेटर रहता है?”

सरपंच ने कहा, “नहीं, रहते तो नहीं। पर जहाँगीरपुर से आते-जाते हैं। मुझपर उनकी बड़ी दया है।”

हेडमास्टर ने संदेह-भरी दृष्टि से सरपंच की ओर देखा। यह बात उसकी समझ में नहीं आई कि सरपंच पर एक वक्सीनेटर भी दया करने की हैसियत रखता है।

हेडमास्टर ने कहा, “पचौरीजी! आपने इनका केस सुना?”

“जी हाँ,” पचौरीजी ने कहा “ये मुझसे मिल चुके हैं। मैंने ही इनको आपके पास भेजा है।”

“अच्छा!” हेडमास्टर ने कहा, “तो आपको सारा केस पता है। आप जानते हैं कि यह केस क्या है?”

“मुझे केस तो नहीं मालूम हेडमास्टर साहब! पर बात हाजिरी की थी।” पचौरी ने भोला बनकर कहा।

“ठीक है,” हेडमास्टर ने कहा, “आप रजिस्टर देखकर बताइए कि क्या दोनों लड़के इन तारीखों में स्कूल में हाजिर थे?”

“नहीं, साहब! नहीं थे।”

“तो क्या आपको छुट्टी की दरख्वास्त देकर गये थे? क्या उनकी गैरहाजिरी दर्ज हुई है?”

“जी हाँ,” पचौरीजी ने कहा, “उन्होंने कोई दरख्वास्त नहीं दी।”

हेडमास्टर ने सरपंच की ओर देखकर कहा, “सुना आपने! लड़के बिना दरख्वास्त दिए स्कूल से चले गए थे। मेरी समझ में नहीं आता कि वो लोग क्यों नहीं आए मेरे पास! किस पुलिसवाले की मजाल थी कि वह स्कूल के होस्टल से लड़कों को पकड़कर ले जा सकता था! उन्होंने यों भागना क्यों ठीक समझा? अच्छा मास्टर साहब! ये कहते हैं कि इनके लड़के मारे जाएँगे। आप ज़रा इनसे बात तो कर लीजिए।”

सरपंच ने कहा, “हेडमास्टर साहब! यह कत्ल का केस है। इसका नतीजा फांसी है। अगर दो लड़कों की जान बच सकती है, तो आपको कितना बड़ा पुण्य मिलता है! पुलिस के जुल्म आप नहीं जानते। उस मार को देखकर लड़के तो क्या, कोई सख्तदिल आदमी भी भाग जाता। अगर आप किसी तरह उन दोनों की छुट्टी की दरख्वास्त मंजूर कर लें…!”

हेडमास्टर ने कहा, “पचौरीजी! अब क्या हो सकता है?”

पचौरीजी ने कहा, “हेडमास्टर साहब! सबकी जिन्दगी में कहीं न कहीं कमजोरी आती है। मजबूरी आदमी को परेशान करती है। ऐसे मौकों पर लोग एक-दूसरे का सहारा टटोलते हैं।”

सरपंच ने फिर टोका, “श्रीमानजी! यह जिन्दगी का सवाल है। दो लड़कों की जिन्दगी और मौत का सवाल है।”

“हाँ,” हेडमास्टर ने कहा, “मैं मना थोड़े ही करता हूँ। आप उनके साथ जाइए और सारी बात बता दीजिए; और पचौरीजी, आप मुझको फिर आकर रिपोर्ट दीजिए। मेरे सामने सवाल दूसरा है, सरपंच साहब! मैं सोचता हूँ, इस तरह भाग जाने वाले लड़कों को अगर बाद में दरख्वास्त देने का हक दिया गया, तो कैसे काम चल सकता है! आज हमारा विद्यार्थी-वर्ग सब जगह उच्छृङ्खल हो रहा है। मैं पूछता हूँ, क्यों? मैं जब जवान था, तब हम लोग देशप्रेम की बात किया करते थे। हम लोग अपने से बड़े-बूढ़ों की आलोचनाएँ किया करते थे। हमारी आँखों में एक स्वप्न था कि हम इस देश को सुन्दर बनाएँगे, जिसमें न्याय होगा, जिसमें सच्चरित्रता होगी, जिसमें गांधीजी के आदर्शों का पालन किया जाएगा। गांधीजी हमसे पुरानी पीढ़ी के आदमी थे। उस जमाने में बहुत-सी रूढ़ियाँ और अन्धविश्वास था। लोगों में राजनीतिक चेतना नहीं थी। आप समझते हैं इन बातों को?”

सरपंच ने कहा, “सब समझता हूँ हेडमास्टर साहब!”

“नहीं,” हेडमास्टर ने कहा, “आप नहीं समझते। वे लोग जो रूढ़िवादी कहलाते थे, जिनको हम समझते थे कि राजनीतिक लोग नहीं हैं, जिनको हम पिछड़ा हुआ मानते थे, उन लोगों में एक नैतिकता थी। उस नैतिकता में गाँधी जैसे महात्मा हुए जिनमें दया थी, और उस महात्मा की बात सुनकर जो हम लोग तैयार हुए, हम लोगों ने जीवन में किन-किन आदर्शों का प्रतिपालन किया है? हमने किस तरह से अपने सत्य को उठाया है कि हमारी संतान, आज का विद्यार्थी अपने चरित्र को ऐसा नीचे गिरा रहा है? बच्चे अपने आप नहीं सीखते; किसी को देखकर सीखते हैं। लड़के देखते हैं कि आज की जिन्दगी में ईमानदारी काम नहीं देती। वे देख रहे हैं कि आज बेइमानी का बोलबाला है। हमारी पीढ़ी, यानी हम लोग उस पुरानी पीढ़ी की तुलना में कहीं अधिक अद्‌भुत हैं; क्योंकि पुराने लोग इतना ढोंग करना नहीं जानते थे, जितना हम जानते हैं। हमने अपनी औलाद को बिगाड़ा है और अपने डिब्बे में से पैदा हुए भूत को देखकर हम लोग खुद डरने लगे हैं। मैं किसी चीज से नहीं डरता, सरपंच साहब। एक बार मैं इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स से मिलने गया था। वे विलायत से लौटकर आए थे। उन्होंने मुझसे कहलवा दिया कि इस वक्त वे मिल नहीं सकते, दफ्तर में आना। मैं उस वक्त उनके पास काम से नहीं गया था, ऐसे ही चला गया था—कट्र्सी के नाते। वे एक बार मुझे स्टेशन पर मिले और मुझसे बोले कि मैं अब ज़रा वेटिंग रूम में होकर आता हूँ। तुम मेरा सामान देखते रहना। मैंने उनसे कह दिया कि इन्स्पेक्टर साहब! मैं इस वक्त आपका सामान नहीं देख सकता। उन्होंने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे मुझे निगल जाएँगे; लेकिन मैंने उनसे कह दिया कि इन्स्पेक्टर साहब, आप ज़्यादा से ज़्यादा मेरा तबादला करा सकते हैं। पी. एस. सी. का सलेक्टेड हूँ, कन्फर्म्ड हूँ। आपकी मेहरबानी से नौकरी में नहीं रहता। समझ गए आप? यह दफ्तर नहीं कि मैं आपके सामान की देखभाल करूँ। यह काम चपरासी का है, मैं हेडमास्टर हूँ। आप समझते हैं सरपंच साहब! मैं इन बातों से नहीं डरतां।”

पचौरीजी ने कहा, “अरे, हेडमास्टर तो देवता आदमी हैं। डर-वर का यहाँक्या काम!”

हेडमास्टर ने कहा, “मेरे सामने एक चीज़ आती है। जो लड़के हमारे हाथों में हैं, क्या हम उनका चरित्र बना पाते हैं? मुझे, सरपंच साहब, यह देखकर बड़ा ताज्जुब होता है कि हम लोग अपने मास्टर और प्रोफेसर साहबान के सामने सिगरेट नहीं पीते थे, लेकिन आजकल के लड़के हम लोगों के सामने पी लेते हैं। हम लोग जितना अपने मास्टर से डरते थे, जिस इज्ज़त से उनके हाथ जोड़ लेते थे, पांव छू लेते थे, आज के विद्यार्थियों में वह चीज़ ही नहीं रही। लेकिन क्यौँ नहीं रही? यह सबसे बड़ा ताज्जुब है। खैर, आपके पास इसका जवाब हो सकता है। आप तो एक बात कहिए।”

“क्या?” सरपंच ने पूछा।

हेडमास्टर ने कहा, “देश को नये जागरण की आवश्यकता है। इस विद्यार्थी वर्ग को आज कुएँ के मेंढक की तरह बन्द कर दिया गया है। हम लोगों के ज़माने में इतनी किताबें भी नहीं थीं, न इतनी कापियाँ थीं, न इतना पढ़ना पड़ता था; और फिर इतनी महँगी पढ़ाई भी नहीं थी। आजकल के ज़माने में ये सारी चीजें नहीं मिलतीं।”

पचौरीजी ने सरपंच को इशारा किया और कहा, “चलिए।”

बाहर निकलकर पचौरीजी ने कहा, “सरपंच साहब! आप हेडमास्टर को नहीं जानते। यह दाल रात-भर उबलती रहे तब भी शाम को सीझी हुई नहीं मिलती।”

“तो मास्टर साहब! मैं क्या करूँ?”

“अरे भाई! आप तो हिम्मत ही हार बैठे। ऐसे हार जाओगे तो कैसे काम चलेगा!”

“तो फिर पचौरीजी! मैं करूँ भी क्या? इसमें किसी को खतरा तो है नहीं मास्टर साहब!”

सरपंच ने पचौरीजी की जेब में सौ रुपये का नोट सरकाया।

“अरे, यह आप क्या करते हैं?”

“मिठाई है बच्चों की।”

पचौरीजी ने कहा, “स्कूल में पहले भी मिठाई बंटा करती थी, जब कोई अंग्रेज अफसर आया करता था, और हर स्वतंत्रता-दिवस को यहाँ मिठाइयाँ बंटा करती हैं। इसे तो आप अपने ही पास ही रखिए।”

“आपको कसम है पचौरीजी! ऐसा मत करिए। आखिर गाँव का भी कोई नाता होता है।”

पचौरीजी जैसे रुपयों की बात भूल गए, बोले, “तो फिर आपने पहले मुझसे क्यों नहीं कहा? अरे, मैं तो ‘पी.’ भी ऐसी बनाता हूँ कि ‘ए.’ बनाते देर नहीं लगती और ‘ए.’ ऐसे बनाता हूँ कि ‘पी.’ बनाते देर न लगे। आप समझते हैं ‘पी.’ और ‘ए.’ का मतलब?”

सरपंच ने कहा, "मैं तो सीधा आप ही के पास चला आया था। आप ही ने मुझे हेडमास्टर के पास भेज दिया।"

पचौरीजी ने कहा, "अरे तो भाई, मुझे क्या मालूम थी कि हेडमास्टर ऐसे बन जाएँगे! मैं तो समझा था कि उनकी तरफ से कुछ इशारा हो जाएगा। लड़कों की ज़िन्दगी का सवाल है, और ज़िन्दगी और मौत के सवाल में लोग उसूलों के पीछे इतना नहीं मरते और खास तौर से जब अपने स्कूल का सवाल हो। हेडमास्टर नातजुर्बेकार है। वह यह भूल जाता है कि नाम आखिर में स्कूल का ही बदनाम होगा कि फलाने स्कूल में ऐसे लड़के पढ़ते थे," और कहा, "कत्ल किया है, सरपंच साहब! क्या वह ऐसे ही छुप जाएगा?"

"क्या कह रहे हैं आप?" सरपंच ने कहा, "कत्ल किसने किया?"

"ओ हो," पचौरीजी ने कहा, "आप मेरा मतलब नहीं समझे। लोग ऐसा कहते हैं और लोग ऐसा कहेंगे। आप 'पी.' 'ए.', का मतलब समझते हैं?"

सरपंच कुशाग्रबुद्धि था, लेकिन अंग्रेजी में उसकी गति बहुत थोड़ी थी। उसने कहा, "एक पी. ए. तो वह होता है जो मुख्यमंत्री के पास रहा करता है।"

पचौरीजी ने टोकते हुए कहा, "और दूसरा 'पी.' माने प्रेजेण्ट यानी हाजिर और 'ए.' माने एबसेण्ट यानी गैरहाजिर। आप समझ गए 'पी.' 'ए.' का मतलब?"

"मास्टर साहब, अब मैं क्या समझूँगा! अगर मैं समझ ही गया होता तो मैं सरपंच ही थोड़े बना रहता है, मैं भी कहीं का मिनिस्टर होता।" उस समय ऐसा लगा जैसे किसी बौने ने आकाश की ओर देखकर कहा हो कि इनमें से अगर एक भी सितारा मेरा साथ दे जाता तो मैं इस आसमान को धरती पर खींच लाता।

पचौरीजी ने व्यंग्य से कहा, "अजी सरपंच साहब, आपके सामने मिनिस्टर भी क्या चीज होता है! अरे, मिनिस्ट्री कांटों की सेज है। दो-दो कौड़ी के लोगों की खुशामद करनी पड़ती है, तब मिनिस्टर बन पाते हैं। हम तो जानते हैं कि मिनिस्टर बनने के लिए कितने बड़े कलेजे की जरूरत है। कितनी बेशर्मी अख्तियार करने की जरूरत है।"

सरपंच ने कहा, "मेरे बच्चों की जिन्दगी को बचा लें, इससे ज्यादा मेरे पर आपका क्या अहसान हो सकता है! यह कहते-कहते उसका सिर झुक गया।

"लेकिन हेडमास्टर मानें तब ना" पचौरीजी ने कहा, "मुझे इतने अख्तियार थोड़े ही हैं कि मैं स्याह का सफेद कर दूँ। एक बात जरूर है सरपंच साहब, यह चरित्र-वरित्र का झगड़ा बहुत परेशान करता है। पहले के लोग भगवान के भरोसे रहते थे, तो उनकी औलाद भी कायदे से रहा करती थी, और आजकल के लोग जरूरत से ज्यादा चरित्र-निर्माण का प्रयत्न करते हैं और नतीजा आप देख ही रहे हैं कि आज फलाना मास्टर पिट गया और आज फलाना हेडमास्टर पिट गया।"

पचौरीजी ने हँसकर कहा, "चरित्र का बनाना न हुआ, कोई चिड़िया का घोंसला हो गया।"

"तो फिर मैं क्या करूँ?"

"आप फिर हेडमास्टर से अकेले में शाम को घर पर मिलिए उनके।"

"अच्छी बात है।" सरपंच ने कहा।

शाम को जब सरपंच हेडमास्टर के मकान पर पहुँचा, हेडमास्टर ने बिठाकर कहा, "कहिए, कैसे तकलीफ की?"

"आप कुछ काम कर रहे थे?"

हेडमास्टर ने कहा, "नहीं, मेरे पास शिकायत आई है कि कुछ मास्टरान ट्यूशन करते हैं। नए कानून बन गए हैं कि मास्टर ट्यूशन नहीं कर सकते। मैं जानता हूँ कि मास्टर एक गरीब आदमी होता है और उसको ऊपरी आमदनी का कोई ज़रिया भी नहीं होता। इस तरह की बंदिश लगाने से नतीजा यह होता है कि वह छिपकर ट्यूशन करता है। लोगों से इम्तिहान की कापियों में नम्बर बढ़ाने के लिए चुपचाप पैसे वसूल करता है। सरपंच साहब, आज की जिन्दगी में हर जगह भ्रष्टाचार घुस गया है और देहात में मास्टरों को कोई काम भी नहीं रहता; सिवाय इसके कि वह गाँववालों को इधर-उधर लड़ाया करता है और कुछ नहीं करता। अब मैं क्या करूँ? एक साहब कल आए थे, और कह रहे थे कि साहब, जाँच करवाइए फलाना आदमी ट्यूशन कर रहा है। अब क्या जाँच करवाऊँगा मैं? अब मैं बड़ी परेशानी में आ गया हूँ सरपंच साहब! आजकल के मास्टरों में और पुराने मास्टरों में एक बड़ा फर्क यह है कि पहले के मास्टरों को कुछ इज्ज़त दी जाती थी। आजकल के मास्टरों को मामूली सरकारी नौकर की तरह से देखा जाता है। इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स और ऊपर के अधिकारी एक मास्टर को एक अदना नौकर-भर समझते हैं। उसका नतीजा यह होता है कि लड़कों के दिलों में भी मास्टरों के लिए इज्ज़त पैदा नहीं होती और न हेडमास्टर के लिए होती है। इसलिए ही तो मास्टर लोग हथकंडे अख्तियार करते हैं। लेकिन मैं किसी की परवाह नहीं करता। आप एक बात सोचिए। एक मास्टर एक स्कूल में रहता है तो उसका सीधा सम्पर्क स्थापित हो जाता है विद्यार्थी से। उसकी अपनी जिम्मेदारी हो जाती है कि उसको बनाए, उसको ठीक रास्ते पर लगाए; और तबादले उसके अन्दर से दिलचस्पी खत्म कर देते हैं। उसका नजरिया यह हो जाता है कि स्कूल में गए, थोड़ी देर कुछ किताबें खोलकर पढ़ा दीं, फिर लौट आए। अपनी बला से, जियो या मरो।"

सरपंच ने बात बदली और कहा, "आपको तारीख की तो याद है ना?"

"हाँ-हाँ, मुझे याद है। मैं ज़रूर जाऊँगा।"

सरपंच ने कहा, "हेडमास्टर साहब! मेरे ऊपर एक अहसान कर दीजिए, आप मेरे बच्चों की ज़िन्दगी को बचा लीजिए।" चंचलसिंह के होंठ कांप उठे। यह पहला मोर्चा था जहाँ वे रुपये देना चाहते थे, लेकिन उनकी हिम्मत नहीं होती थी। उन्हें स्वयं अपने ऊपर आश्चर्य हो रहा था। इतनी बड़ी-बड़ी तनख्वाह पानेवालों को उन्होंने निस्संकोच रिश्वत दी थी, लेकिन उन लोगों से बहुत कम तनख्वाह पानेवाला हेडमास्टर उनकी नज़र में इतना

बड़ा था कि उसके सामने रुपया निकालना उन्हें एक कमीनापन मालूम होता था। वे जिस भाषा को जानते थे वह भाषा यहाँ काम नहीं दे रही थी। हेडमास्टर ने अपने-आप कहा, “और सरपंच साहब! आजकल के मास्टर भी काम से जी चुराते हैं। वे भी यह सोचते हैं कि जब इतनी कम तनख्वाह मिलती है, तो इतना ज्यादा क्यों पढ़ाएँ? क्योंकि आदमी को या तो पैसा मिले या इज्ज़त मिले। जब दोनों चीजें नहीं मिलती, तो वह क्यों मरे? और सच तो यह है कि प्रजातन्त्र में आदमी अपने-आप तो काम करना ही नहीं चाहता। आपको मालूम है, प्राचीन भारत में भी गणतन्त्र हुआ करते थे?”

सरपंच ने हेडमास्टर की ओर निराशा से देखा।

“चाय पीजिएगा?” हेडमास्टर साहब ने कहा।

“नहीं,” सरपंच चंचलसिंह ने निराश स्वर से कहा, “नहीं, तकलीफ मत कीजिए। मैं तो चाय नहीं पीता।”

यह पहली जगह थी जहाँ उल्टे सरपंच को कुछ दिए जाने की बात थी।

हेडमास्टर ने कहा, “तो सरपंच साहब! अब पुराने ज़माने के विद्यार्थी तो हैं नहीं कि गुरु की गाय की सेवा करें। अरे, आप लोग तो खेतीबाड़ी करते हैं, जमीन-जायदाद वाले लोग हैं, दूध पीते होंगे आप तो। पर साहब, एक बात है, दूध बच्चों को तो फायदा करता है लेकिन बड़ों के पेट में हवा ज्यादा पैदा करता है। आपका क्या ख्याल है?”

सरपंच ने कहा, “तब फिर मैं चलूँ?”

“हाँ-हाँ, शौक से। आपको जब मालूम है कि आपके लड़कों ने कत्ल नहीं किया तो आप इतने परेशान क्यों हैं? और फिर उसके राज में देर है, अन्धेर नहीं। यह कोई दिल्लगी थोड़े ही है कि लड़कों को ऐसे ही बन्द कर दिया जाए?”

सरपंच को लगा, धरती घूम गई। उसने अन्तिम बार कहा, “आपके एक लफ़्ज़ से मेरे लड़कों की ज़िन्दगी बरबाद न हो जाए।”

“तो मैं वह लफ़्ज़ ज़रूर नहीं कहूँगा। आप बताइए, वह क्या लफ़्ज़ है?”

“यही कि लड़के स्कूल से गैरहाज़िर थे।”

“लेकिन सरपंच साहब! मैं उस रजिस्टर के लिए क्या करूँगा? मैं किसी मास्टर से कैसे कह सकता हूँ कि तुम रजिस्टर काटकर बदल दो। आप ज़रा सोचकर देखिए। यह किसी दुकान की कोई बही नहीं है कि उसकी तरह मैं इस रजिस्टर को ही बदल दूँ और अगर मैं उसे काटकर भी ठीक करूँ और कल कचहरी में रजिस्टर तलब हो जाए तो मैं उसका क्या जवाब दूँगा? क्या मैं यह कहूँगा कि मेरे यहाँ ऐसी बदइन्तजामी है कि लड़के दरख्वास्तें दे जाते हैं और उनकी गैरहाजिरियाँ लग जाया करती हैं, और अगर ऐसे दस-बीस दफा हुआ होता, तो ऐसी बात भी मिसाल नहीं बनती। लेकिन अभी अगर इन लड़कों की ज़िन्दगी बर्बाद हो रही है तो उसके बाद तो मेरी भी हो जाएगी। सरपंच साहब! यह

काम इतना आसान नहीं है जितना आप समझ रहे हैं। वैसे जो कुछ मैं कर सकूँगा वह मैं आपके लिए ज़रूर करूँगा। लेकिन कोशिश मैं यही करूँगा कि स्कूल की बदनामी न हो।"

सरपंच ने हाथ जोड़ दिए। हेडमास्टर ने कहा, "यह आप क्या करते हैं! यह ठीक नहीं है।"

सरपंच ने उठते हुए कहा, "क्या ठीक है और क्या गलत है, हेडमास्टर, मुझे यह ज़िन्दगी ने सिखा दिया है। आप नहीं जानते कि मुसीबतें क्या होती हैं, वह तो मैं जानता हूँ। आज की दुनिया में कोई किसी का नहीं होता। आप मुझे एक ही आदमी मिले हैं जिसने यह साबित कर दिया है कि दुनिया में भलमनसाहत बाकी है, लेकिन मुझे अफसोस है कि जब भलमनसाहत किसी की जिन्दगी से टकराती है तो लोग उससे भी मोर्चा लेने को तैयार हो जाते हैं; और मुझे सबसे बड़ा अफसोस इस बात का है कि आप इतने सज्जन हैं फिर भी आपके स्कूल के लड़के निहायत बेशर्म और नालायक हैं।"

"नालायक!" हेडमास्टर ने कहा, "आप कैसे कहते हैं कि स्कूल के लड़के नालायक हैं?"

"मैं खुद अपने लड़के के लिए कहता हूँ कि वह बहुत नालायक है। मिनिस्टर से लेकर अदना आदमी तक आज अपने पेट के चक्कर में घूमता है, ज़िन्दगी की ऐसी कड़ी मार है कि जैसे हम एक फिसलती हुई धरती पर खड़े हुए हैं। एक-दूसरे को पकड़कर हम अपने-आपको खड़ा रखने की कोशिश करते हैं, क्योंकि अपने-अपने पांवों पर से लोगों का भरोसा हट चुका है।" फिर जैसे सरपंच को याद आ गया, उन्होंने कहा, "अगर वह लड़का नालायक न होता, अगर आप लोगों ने उसके मन में हिम्मत भरी होती, तो पुलिस की मार के डर से भागता क्यों? मैं तो नहीं भागा था? लेकिन हम बेपढ़े लोगों में ज्यादा हिम्मत है, हेडमास्टर साहब! आज की पढ़ाई लोगों को बुज़दिल बना देती है। कानून कहता है किसी को चाँटा भी मत लगाओ, लेकिन देहात में आज भी जिसके हाथ में लाठी है उसी की भैंस होती है। जिसके घर में ज्यादा लोग हैं, उसकी मूँछें नीची रहती हैं।"

हेडमास्टर साहब सोचने लगे और कहा, "शायद आप ठीक कहते हैं, लेकिन इसमें दोष किसका है?"

सरपंच ने उनकी आँखों में झांकते हुए कहा, "समय का, जो अपने-आप में एक बहुत बड़ी मजबूरी है।" और सरपंच ने फिर कहा, "हेडमास्टर साहब! और यह समय सदा एक-सा नहीं रहता। अगर सबसे बेदर्द कोई है तो यह समय है। आप जानते हैं कि साँप ने ब्राह्मण से क्या कहा था?"

हेडमास्टर समझ नहीं सका, बोला, "साँप ने?"

"हम गंवार लोग हैं, हेडमास्टर साहब! हम ऐसे ही किस्से याद रखते हैं। एक बार एक ब्राह्मण को धन की जरूरत थी। घर से भागकर जगंल में जाकर पेड़ के नीचे बैठ गया। उस वक्त एक साँप निकलकर आया, अपनी बांबी से, और बोला—ब्राह्मण, तू क्या

चाहता है? उसने कहा—मैं धन चाहता हूँ। साँप ने कहा कि अगर मैं तुझे धन दे दूँ तो तू मुझे क्या देगा? ब्राह्मण ने कहा—धन से जो पैदा होगा उसका आधा मैं तुझे दूँगा। साँप ने उसे धन दिया और लौट गया। साल-भर बाद मिलने का वादा था। वह उसके पास गया और मन में सोचने लगा, मैं इस साँप को आधा क्यों दूँ! जब साँप आया तो उसने उसपर डंडा मारा। साँप बचकर निकल गया, लेकिन ब्राह्मण का धन कुछ दिन बाद खत्म हो गया। वह फिर वहाँ पहुँचा और साँप ने उससे फिर वही शर्त रखी और ब्राह्मण उससे फिर धन ले आया। इस बार ब्राह्मण ने साल-भर बाद साँप को तलवार से काट डालने की कोशिश की। लेकिन साँप फिर बच निकला। परन्तु धन इस बार भी खत्म हो गया और इस बार फिर साँप से वैसा ही वादा करके धन ले आया। लेकिन अब की बार, साल-भर बाद, तीनों बार का धन लेकर ब्राह्मण आया और बोला—नागदेवता! मैंने पहले गलती की थी, मुझे माफ कर दो। तुम अपना धन ले लो। पर नाग देवता ने कहा—ब्राह्मण तेरी गलती नहीं थी। पहली बार जब तू धन देने आया था, तेरे देश में कहतसाली थी इसलिए तुझे लोभ आ गया, क्योंकि लोग भूखे मर रहे थे। तूने यह सोचा कि मैं इसका जायज भी क्यों वापस करूँ? अगर दे दूँगा तो कहीं भूखा न मरना पड़े। दूसरी बार जब तू मेरे पास आया उस वक्त तेरे देश पर दूसरे राजा के हमले का खतरा था, गुंडों और डाकुओं ने मार-काट मचा रखी थी। तूने सोचा था कि जब सब एक-दूसरे का धन हड़प रहे हैं तो मैं भी क्यों न हड़प लूँ और अपने दुश्मन को खत्म कर दूँ? लेकिन इस बार खुशहाली है, खेतों में अनाज पैदा हुआ है, राज में शांति है, लोग सुख से रहते हैं, इसलिए तेरी नियत नहीं बदली। कोई बलवान नहीं होता, ब्राह्मण, समय बलवान होता है। हेडमास्टर साहब! भीलन लूटीं गोपिका, वेई अर्जुन वेई बान। लेकिन कोई आदमी पहाड़ पर चढ़ता चला जाए, चढ़ता चला जाए, ऊँची-ऊँची चोटियों को रौंद डाले, पर आखिर में एक छोटा सा पत्थर न लाँघ सके, उस छोटे-से पत्थर की वजह, उसके लिए आकाश लाँघने के बराबर बन जाए, तो आप समझ सकते हैं कि उसके दिल का क्या हाल होगा!” कहते-कहते सरपंच का गला रुंध गया। वे आगे नहीं बोल सके। उन्होंने कहा, “भगवान आपका भला करें।”

हेडमास्टर देखता रहा। सरपंच कमरे के बाहर निकल गए।

सड़क पर पचौरीजी मिले। उन्होंने कहा, कहिए सरपंच साहब! क्या हुआ?”

सरपंच ने भूले हुए स्वर से कहा, “मास्टर साहब! सारे के सारे राजा इकट्ठे हो गए थे, अन्धा राज कर रहा था। तब दुःशासन ने द्रौपदी का चीर-हरण किया था, लेकिन वह यह भूल गया था कि द्वारका का खिलाड़ी चौपड़ खेलते हुए भी न जाने कहाँ-कहाँ नजर रखता था!”

“क्या कह रहे हैं आप?”

सरपंच ने दाँत पीसते हुए कहा, “लेकिन महाभारत मचा भी उसके बाद। मेरा नाम भी चंचलसिंह है चंचलसिंह!”

पचौरी समझ नहीं सका। “हेडमास्टर ने क्या कहा?” उसने पूछा।

“कुछ नहीं कहा।” जैसे वह फिर यथार्थ के संसार में लौट आए थे। उन्होंने कहा, “मास्टर साहब! रुपये की चिन्ता मत करिए। आपका हेडमास्टर एक उल्लू का पट्ठा है।”

“यही तो मैं भी कहता हूँ,” पचौरी ने कहा, “मैं तो उससे कह नहीं सकता, क्योंकि वह मेरा अफसर है। अरे, पी. का ए. और ए. का पी. करना तो मेरे बायें हाथ का खेल है। पुरानी तारीख की दरख्वास्त पर दस्तख्त कर दो, बस। किसी साले को कानों-कान खबर न हो। लेकिन उससे कहे कौन! आप एक काम करिए, इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स से मिल लीजिए। एक बात जरूर है कि वह आदमी ज़रा चलन का ठीक नहीं है। अभी विलायत से लौटा है। खाने-पीने का शौकीन है, लेन-देन का भी शौकीन है, औरत और शराब उसकी कमजोरी है। वैसे आदमी बड़ा दबंग है, अपने बाप की भी नहीं मानता है। हेडमास्टरों को तो यों ही फटकार देता है जैसे फोर्थ क्लास सर्वेंट को फटकारते हैं। उसकी इस हेडमास्टर से चल भी रही है, आप उससे शिकायत करिए।”

सरपंच की आँखों में चमक लौट आई। पूछा, “शिकायत की जा सकती है इसकी?”

“अरे, शिकायतें पचीसों होती हैं, मैं बता दूँगा आपको। सुनिए! बस, एक झूठी शिकायत भी काम दे जाती है ऐसे मौकों पर। बस, एक बड़ा आदमी होना चाहिए शिकायत करने वाला, जो पहले खिला-पिलाकर तैयार कर दे अफसर को। और नशेबाज आदमी न्याय से थोड़े ही काम लेता है? वह इसके पीछे लग जाए, इधर मैं इसको समझाऊँगा कि ऐसे मौके पर सरपंच की मदद कीजिए। नेताओं के जमाने में आप क्यों परेशानी में रहें? इससे अगर मान जाए तो ठीक है, आपका काम बन जाएगा। मैं तो इसलिए एक तरकीब बता रहा हूँ। जैसा आपका लड़का, वैसा मेरा लड़का।”

सरपंच ने कहा, “अच्छी बात है, अगर यह काम हो गया तो मैं आपको नहीं भूलूँगा पचौरी साहब!”

“आप भी कैसी बातें करते हैं!” पचौरीजी ने कहा, “अरे, आप भूल भी जाओगे तो मैं क्या आपके दिल से निकल आऊँगा!”

सरपंच लौट आए। उन्होंने महेन्द्रकुमार वकील से जाकर कहा, “क्यों वकील साहब! अब यह हेडमास्टर साहब क्या बयान देंगे? लड़के तो गैरहाजिर थे ही।”

“हाँ भाई, मैं भी यही सोच रहा था। पर मान लो,” वकील साहब ने सोचते हुए कहा, “उसने यों कह दिया कि मेरे यहाँ दरख्वास्त देकर गए थे लड़के। उनका मास्टर कह देगा, क्लास मास्टर?”

“वो तो मुझसे यों कहता है,” सरपंच ने कहा, “मैं तो पी. की ए. बना दूँ और ए. का पी. बना दूँ और ए. का पी. बना दूँ और किसी को पता भी न चले। दरख्वास्त तो वह ले सकता है, लेकिन हेडमास्टर के रहते उसकी हिम्मत नहीं होती।”

वकील ने कहा, “ए. का पी. तो नहीं हो सकता, क्योंकि हम तो कबूल कर चुके हैं कि लड़के उस दिन गैरहाजिर थे, लेकिन उनकी दरख्वास्त वह ले सकता है। कभी-कभी ऐसे अख्तियार मास्टरों को मिल जाते हैं। वह क्लास-टीचर है, वह अपना बयान दे सकता है और यह मेरे बायें हाथ का काम है कि उस मास्टर को कचहरी में बुलवा लूँ, अगर उस मास्टर की हिम्मत पड़ जाए और हेडमास्टर का दबाव न हो। इंस्पेक्टर को जरूर देना पड़ेगा। अहलूवालिया को मैं जानता हूँ; खूब अच्छी तरह जानता हूँ। अगर साला हेडमास्टर ज्यादा उड़ने की कोशिश करेगा तो पर कटवा दूँगा। उसके बयान से कुछ ज्यादा बनता-बिगड़ता नहीं है। सरपंच साहब! बस, एक बात का ध्यान रखिए कि पी. आई. ज्यादा बहस न करे। वह एक खतरे की चीज नजर आता है।” और फिर वकील साहब ने रहस्यभरी दृष्टि से सरपंच की ओर देखकर कहा, “अगर वह मास्टर तैयार हो जाए तो मैं इसकी इन्क्वायरी बिठवा दूँगा, हेडमास्टर फिर उस मास्टर का बयान दिलवा देंगे। यह समझ लें सरपंच साहब कि वकील बनना भी बड़ा मुश्किल काम है। सोच लीजिए, मुफ्त का पैसा नहीं खाता मैं। लोग दिन-रात अपने बीवी-बच्चों की सोचते हैं और मेरी बीवी यह शिकायत करती है कि मैं उससे मोहब्बत की बात नहीं करता। लेकिन वह बेकसूर क्या जाने कि मेरे दिल में वह नहीं रहती, मेरे दिल में मुवक्किल रहते हैं। सरपंच साहब! जिस जगह मेरी बीवी को रहना चाहिए था, उस जगह आप रहते हैं। रात को मुझे सपने में आपकी सूरत नज़र आती है।” और वकील साहब हँसे।

सरपंच ने शर्मिन्दा होते हुए कहा, “अरे वकील साहब, आपसे बातों में कौन जीत सकता है बड़े-बड़े हाकिम हार जाते हैं। वकील साहब! हम तो हुकुम बजाने का खाते हैं और आप हुकुम देने का खाते हो।”

वकील साहब ने हँसते हुए कहा, “हुकुम देने वाले और होते हैं सरपंच साहब! हुकुम वही अच्छा देता है जो बेवकूफ होता है। अकल का खानेवाला वकील होता है। अच्छा वकील कभी मुंसिफ बनना पसन्द नहीं कर सकता, सरपंच साहब! मुंसिफ बन गया तो समझ लीजिए, साला वकालत नहीं जानता। सरपंच साहब! अगर इस मुल्क को आज़ाद कराया तो वकीलों ने। महात्मा गाँधी कौन थे? वकील ही तो थे न?”

“हाँ, थे तो वकील ही।”

वकील साहब ने हँसते हुए कहा, “और ये नेहरू कौन हैं, सरदार पटेल कौन थे और जिन्ना कौन थे? सब वकील थे; और फिर इतनी फुरसत का आदमी होता कौन है सरपंच साहब, जो दूसरों के लिए मरे-खपे! हम लोग अपना पेट नहीं पालते, हम लोग देश का काम करते हैं। इंसाफ का गला घुटते हुए हम लोग नहीं देख सकते।”

सरपंच ने उठते हुए कहा, “तो मैं पी. आई. साहब से और मिल लूँ, क्यों वकील साहब?”

“अरे भाई, ज़रूर मिल लो,” वकील साहब ने स्वर बदलते हुए कहा, “हम तो अपनी जगह सब काम कर ही रहे हैं, लेकिन हमेशा सलाह यही देते हैं कि मुवक्किल को ज़रा चौकस रहना चाहिए, क्याँकि अफसर का बेवकूफ होना एक बहुत ही मामूली-सी चीज़ है। बात यह है कि हुकूमत मिल जाती है, अकल इतनी होती नहीं, कच्चे कानों के होते हैं और वकीलों की तरक्की देखकर जलते हैं कि पैसे उनके पास इतने होते नहीं। ये सब बातें हैं। अब मैं आपको क्या-क्या बताऊँ!”

“तो अब मैं चलूँ?”

“हाँ, ज़रूर चलिए। अब मैं ज़रा पूजा पाठ कर लूँ।”

“वकील साहब पूजा भी करते हैं?”

आपने क्या मुझे नास्तिक समझ रखा था? अभी तक मैं दिखावा नहीं करता, इसीलिए न?” वकील साहब हँसे।

सरपंच को लगा कि पहले वह डूब गया था और न जाने कितना पानी पी गया था, लेकिन इस वक्त वकील ने उन्हें उल्टा टाँग दिया था और पानी गटगट करके उनके अन्दर से निकलता जा रहा था। लेकिन सरपंच अभी अपने पांवों के बल खड़े हुए थे।

हिरदे ने हुक्के की नाल मुँह से लगाई और गुड़गुड़ाते हुए धुआँ उगलने लगा। दामी रोटी सेंक रही थी। बिलैया शम्भू को खिला रही थी। निरोती बच्चों के साथ दगरे में खेल रहा था। हिरदे इन सबको ऐसे देख रहा था जैसे उसकी आँखों के सामने एक सपना हो और उसे अपनी लड़की की याद आ रही थी। उसने कितने दुलार और लाड़ से उसे पाला था! कितनी कल्पनाएँ की थीं कि उसका ब्याह ऐसे करेगा, वैसे करेगा! उसका दूल्हा ऐसे घोड़े पर चढ़कर आएगा! लेकिन अब सब क्या हो रहा है? सबके साथ तो ऐसा नहीं होता। उसने गाँव में किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं था। आज गाँव का एक थोक उसको अगुआ बना रहा था। लेकिन क्या उसकी इतनी हैसियत थी कि वह टक्कर ले सके? उसको यह बात और भी अधिक कचोट रही थी कि उसकी लड़की का कत्ल हुआ था, लेकिन लोगों को उससे सच्ची हमदर्दी नहीं थी। अगर लोग उसके साथ थे तो वह इसलिए कि उन्हें सरपंच से रंजिश थी या कांग्रेस का एक दल दूसरे दल के खिलाफ था, या यह कि गवैयों की एक जोट दूसरी जोट के खिलाफ थी। अगर एक दल या उसकी जोट के लोग सरपंच की ओर थे तो दूसरे लोगों के सिवाय इसके कि वे हिरदे की तरफ बोलते और कोई चारा नहीं रहा था।

दामी ने रोटी बना ली और कहा, “नहाओगे नहीं?”

“नहाँ लूँगा।” हिरदे बाल्टी और लेज लेकर कुएँ पर चला गया। कुएँ पर पंडित दामोदर स्नान कर रहे थे। बड़े भजनानन्दी थे, लेकिन गाँव की औरतें उनका नाम लेकर

हँस दिया करती थीं। बूढ़े हो गए थे, मगर उनकी रसिकता में अन्तर नहीं आया था। वे जिस प्रेम से नीति के दोहे सुनाते थे, उसी प्रेम से शृंगार के सवैये भी सुना दिया करते थे। चुनावों के ज़माने में उनकी कदर कुछ बढ़ जाया करती थी। जगह-जगह गाँवों में उनके जिजमान फैले हुए थे और एक न एक पार्टी का आदमी उनका असर अपने काम में लेने की कोशिश किया करता था। वे इधर-उधर के गाँवों में डोलते, लोगों को तैयार करते और स्वतंत्रता के बाद उनकी लगी-बँधी आमदनी इस चुनाव से या उस चुनाव से हजार पाँच सौ रुपये की थी। स्वतन्त्रता से उनको यह फायदा हुआ था। एक मिनिस्टर तो उनको हर चुनाव से पहले बुलाया करता था और अपनी जन्मपत्री दिखा देता था। उस मिनिस्टर के यहाँ तुलसीदास की रामायण रखी रहती थी। उसमें मिनिस्टर रामशलाका प्रश्नावली में इतने सवाल देखा करता था कि प्रश्नावली के अक्षर करीब-करीब ढँक चुके थे, क्योंकि पैंसिल के निशान उसे करीब-करीब काला कर चुके थे। चुनाव में जहाँ हर मिनट लोगों की राय बदलती हो, जहाँ वोटर खरीदे जाते हों, वहाँ सिवाय भगवान के आसरे के किसका भरोसा किया जा सकता था! पंडितजी ने ही मिनिस्टर साहब को रामशलाका देखने की सलाह दी थी। कुएँ पर लाला चन्दनलाल स्नान कर रहा था। बूढ़ा आदमी था, अब लड़का दुकान सँभालता था। लिहाजा चन्दनलाल को अब कोई काम नहीं रहा था। सवेरे उठता और तीन बजे से ही सारे गाँव के मंदिरों में धोक देता फिरता और दुनिया-भर की खबरें इकट्ठी करता।

चन्दनलाल ने कहा, “पंडित! कनागत तो बीत गए!”

पंडितजी ने उत्तर दिया, “लाला! तुम्हारे पुरखों के पेट भी हमने भरवा दिए, भूखे भटक रहे थे! दुअन्नी रुपये ब्याज का पाप परलोक में फल देता है।”

लाला ने हल्ला मचाया, “पंडित को साथ ले जाता है पंडित को भी।”

पंडित और जोर से चिल्लाया, “अरे, बनिये-बामन का जोड़ तो त्रिलोक में चलता है। क्यों पटेल?”

पंडित ने मुड़कर कहा, “ठीक बात है?”

हिरदे को हँसी आ गई। उसने बाल्टी ऊपर खींचते हुए कहा, “अब महाराज, तुम्हीं जानो या सेठजी जानें। बड़ों की तो बड़े ही जानें।”

लाला ने कहा, “अरे पंडितजी! अब तुम्हारी दूसरी कनागत आ रही है। कांग्रेस के चुनाव होने वाले हैं।”

पंडित को पता था पर छिपा गए, अनजाने बनकर बोले, “अच्छा, कब से है?”

लाला ने फिर छेड़ा, “अरे पंडित! दाई से पेट मत छुपाओ, हमें जमाने की खबर है। तुम नहीं गए थे वहाँ गोपाल देवता के पास?” गोपाल एक विशेष देवता माना जाता था। लाला ने कहा, “पटेल नादूली गाँव में, गोपाल देवता के भगत ने डिप्टी मिनिस्टर जैकिशन सहायक के दौरे पर गाँव की पब्लिक के सामने कहा कि मिनिस्टर साहब इस चुनाव में तुम्हारी पाल्टी की फतह हो जाएगी! एक गोपाल देवता के नाम पर तालाब यहाँ खुदवा

दो।” उसने फिर साँस लेकर कहा, “गाँववालों का दबाव था, जिलाध्यक्ष बहादुरसिंह सुधारक ठहरे, बोले—हिस्ट, इस पाप लीला में क्या रखा है! लेकिन किशनसहाय तो समझदार आदमी थे। उन्होंने कहा, देखो, हम ज़रूर यहाँ पर तालाब खुदवाएँगे।” और लाला ने हँसकर कहा, “मिनिस्टर के बाप की जेब में से रुपये निकल आवेंगे? अरे, कोई राजा का ज़माना थोड़े ही है मुँह से निकल गई तो फिर पूरी होकर ही रहेगी! मिनिस्टर आजकल होता ही कौन है! वैसे ही बेवकूफ बनाते हैं। कहाँ से खुद जाएगा तालाब! अब यों कहिए कि श्रमदान करो, श्रमदान करो। इंजीनियर यों कह देंगे—यहाँ पर तालाब नहीं खुद सकता। अब देख लो, तनाजा पड़ा हुआ है सीर की ज़मीन के पास। बाँध के पानी का मामला चल रहा है। आज चार बरस हो गए। गाँव में फूट पड़ गई, लोगों के सिर फूट गए। खून हो गया, मुकदमों में हज़ारों रुपये खर्च हो गए। यही जैकिशन सहायक तब भी आया था और देख लो क्या हुआ? कुछ नहीं! न बंदरी अच्छी बनी, न यह फैसला हुआ कि पानी किसको मिलेगा!”

पंडित ने कहा, “अरे लाला, तुम भी कब की बात कर रहे हो! तब किशनसहाय डिप्टी मिनिस्टर थे। उस वक्त राज में जाटों-राजपूतों का झगड़ा था। अब नई मिनिस्ट्री में उनका सिंचाई-विभाग से कोई नाता नहीं। अब तो वे मंत्री हैं। बड़ा अशराफ आदमी है। देवता हैं जी। ऐसा सज्जन कहीं मिल नहीं सकता।”

“हाँ पंडित, जन्मपत्री दिखाई होगी तुम्हें! तुम भी शर्मा ठहरे, वे भी शर्मा ठहरे।”

“अरे, कहो तो हम बनियों में मिल जाएँ। तुम तो बनियों की सैं बोलोगे बनियोँ की। बनिए लोगों से ही माल जमा होता था, और अब तो माल इकट्ठा हो गया है ना कांग्रेस के ज़माने में भी।”

भगत ने हँसकर कहा, “बनिए तो तब भी पंडित को माल जिमाते थे और अब भी जिमाते हैं।”

“झगड़ा बनिये-बामन का कहाँ है पंडित! झगड़ा तो चुनावों का है। अब के तुम किसके चुनाव की कोशिश कर रहे हो?”

पंडित ने बात बदलने को कहा, “अरे, चुनाव तो चलते ही रहते हैं लाला, और चलते ही रहेंगे। हमने वो राजा के ज़माने भी देखे जब हुकूमत रंडियों के हाथ में चलती थी; तब से तो ज़माना अब सुन्दर हो गया है।”

“क्यों नहीं!” लाला ने कहा, “क्यों नहीं! इसी को देख लो, हिरदे को बेचारे को। इसकी लड़की का कत्ल हो गया, क्या हुआ? कुछ नहीं हुआ।”

पंडित ने कहा, “क्यों पटेल, पता चला कातिल का?’[8]

हिरदे ने पंडित की ओर देखकर कहा, “पता तो है पंडितजी! लेकिन कहे कौन?”

"तुम्हारा किसी पर शक जाता है?"

हिरदे ने कहा, "मैं क्या कहूँ! मेरा तो शक किसी पर नहीं जाता। मुझे तो किसी से कुछ नहीं कहना है। मैं तो परमात्मा से कहता हूँ कि जब तुझे इस तरह उसे उठा लेना था तो तूने उसे जन्म ही क्यों दिया था? किसका नाम बताऊँ? किसी का नहीं बता सकता।"

"ठीक बात है," पंडित ने सिर हिलाते हुए कहा, "मुकदमा ज़ेर-अदालत है तो तू कह भी क्या सकता है! पर तेरा क्या ख्याल है? नरायन और माधो ऐसा काम कर सकते हैं?"

हिरदे ने उत्तर दिया, "मैं क्या कहूँ पंडितजी! देखने वाला सब-कुछ देख रहा है; लेकिन जिसके भाग में जितना है, उतना होगा ही। जितनी सांस बँधी हैं, उतनी सांसें पूरी होकर रहेंगी।"

"तेरे तो बयान हो चुके?"

"हो चुके।"

"चश्मदीद गवाह कोई मिला?"

"नहीं।"

लाला नहाने लग गया था। पंडित सूर्य को अर्घ्य चढ़ाने में तन्मय था और ज़ोर-ज़ोर से मंत्र बोलता जा रहा थाः

ॐभूरभुवैसुवै...

हिरदे उसके अशुद्ध उच्चारण को सुनता रहा और क्षण-भर को उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उस सूर्य में चमक नहीं थी, उसमें से अँधेरा बरस रहा था। जब वह घर पहुँचा, दामी ने खाना परोस दिया। वह चुपचाप खाना खाता रहा। खाना खाने के बाद वह लेट गया। दामी फिर हुक्का भरकर दे गई और खाना खाने लगी। उसने खाते-खाते कहा, "बौहरा रूपदास आया था, तुम्हारे जाने के बाद।"

हिरदे के मन में मरोड़ा-सा हुआ, बोला, "वह तो आएगा ही। क्या कहा तूने?"

"मैंने तो कह दिया कि अभी तो कुछ नहीं है; फसल आने पर देखी जाएगी।"

"क्या बोला?"

"बोला कि लोग तो यह समझते हैं कि बौहरे के टकसाल है। जब लेने आते हैं तब तो मीठे बन जाते हैं और जब देने का सवाल आता है तो पहचानना भी बन्द कर देते हैं। घर में गाय बँधी है, भैंस बँधी है।"

"क्या कहा, भैंस! कम्बख्त की नजर पड़ गई भैंस पर।"

दामी ने चिल्लाकर कहा, "मैं तो मरी जा रही हूँ डर के मारे।"

"अरे, सब भगवान भली करेंगे।" हिरदे ने कहा, "हम तो बुराई देखत-देखते पक गए। अब जान और है, वह और चली जाए।"

"तुमने एक बात और नहीं सुनी। मैंने पनघट पर सुनी थी।"

"वह क्या?"

"मंगू और श्यौपाल की औरतें बातें कर रही थीं। कुछ उनकी साठ-गांठ हो रही है। मैंने पूरे बोल तो नहीं सुने, पर कुछ ऐसे कह रही थी मंगू की बहू कि साँच-साँच भायली, जो कहीं दो बीघा की भी टीप हो गई, तो कहाँ का पटेल है, भुरकस निकल जाएगा।"

हिरदे ने सुना, किन्तु वह कुछ कह नहीं सका। चिन्ता ने उसे अब ग्रस लिया था।

आक जेठ में लहलहाता है। ऊपर से देखने पर उसका फूल सफेद और कुछ बैंगनी-सा बहुत ही सुन्दर दिखाई देता है, लेकिन लोग कहते हैं कि उसके दूध में एक ओर यदि सूर्यास्त के बाद लगाने से कांटे को बाहर खींच लेने की ताकत होती है, तो दूसरी ओर वह आँख में लगाते ही मनुष्य को अन्धा करने की शक्ति भी रखता है। शहरों में वैद्य लोग इस आक की दवाइयाँ बनाते हैं और ठेलों पर कभी-कभी कोई फेरीवाला यह पुकारते हुए मिल जाता है कि 'आक के पत्ते, उड़ा दें बादी के लत्ते'। एक ही वस्तु के अनेक प्रयोग होते हैं। ऐसा ही गोविन्द था। देखने में बुरा नहीं लगता था। गम्भीर हो जाता तो उसे देखकर यह भ्रम होने लगता कि शायद यह शरीफ आदमी है। ठाकुर जवाहरसिंह उसको कांटे निकालने के लिए इस्तेमाल करते थे और जिला कांग्रेस-अध्यक्ष चौधरी बहादुरसिंह, भूतपूर्व बटनबेचा, उसको दूसरों की आँख फोड़ने के लिए काम में लाते थे। और वह दरोगा-रूपी वैद्य के हाथों में पकड़कर उससे समझौता करके, लोगबागों के भीतर पैदा हुई बादी के लत्ते उड़ाया करता था। पुलिस में उसकी नौकरी थी, सिपाही था, और वहाँ उसने रिश्वत खायी और ऐसा भयंकर कांड किया कि पुलिस भी उसे न पचा सकी और उसको मुअत्तिल कर दिया गया। जैसे दुनिया भर के भयंकर जीव-जंतुओं और नमक को अपने भीतर पचाए रखने वाले समुद्र में यह शक्ति नहीं होती कि वह किनारे की लाश को अपने भीतर पचा ले, उसी तरह उस जैसे कमाल के आदमी को पचा जाना पुलिस की भी ताकत के बाहर था। इसीलिए उसको निकाल दिया गया था। उसका केस मिनिस्टर तक पहुँच चुका था। डी. आई. जी. सज्जनसिंह सोलंकी उससे बहुत नाराज़ थे और मंत्री महोदय माननीय श्री घनश्याम शर्मा उसका रिकार्ड पढ़कर मन ही मन आतंकित हो उठे थे। उन्होंने जीवन में इतने कैड़े के आदमी की रिपार्ट नहीं पढ़ी थी, लेकिन गोविन्द गाँव-भर में यही कहता फिरता था कि भाई, मुझे नौकरी से निकाल दिया गया। मुझसे नौकरशाही रवैया नहीं देखा गया। मैं जनता की सेवा करना चाहता था पुलिस में रहकर, और डी. आई. जी. सज्जनसिंह सोलंकी रिश्वती है इसलिए मुझको वहाँ से हटा दिया गया। लेकिन डी. आई. जी. श्री सोलंकी अपने डिसिप्लिन की रक्षा कर सकते थे। उनमें यह ताकत नहीं थी कि उस थाने के दरोगाओं को उससे मिलने से रोक देते। गोविन्द का नियम था कि वह चौधरी बहादुर सिंह की आड़ लेकर दरोगाओं से दोस्ती कर लेता था और उसका काम यह था कि

उनके लिए रिश्वत जुटाना और अड्डे पर बैठे-बैठे सारे गाँव की खबर रखना। बखुद वह लोगों की नज़र में न शराब पीता था और न जुआ खेलता था। देहाती लोग उसके बाह्य रूप को देखकर उसे पसन्द करते थे, क्योंकि वह विनम्रता की बात करता था। स्थानीय कांग्रेसियों को लड़ाना उसका काम था और नेताओं के सामने दुम हिलाना उसका पेशा था। गाँव के गुंडे उसके दोस्त थे, जिनके ज़रिए वह लोगों को डराया-धमकाया करता था और पुलिस के पुराने तजुर्बे के कारण लोगों को कानून की दफाएँ बताया करता था। वह जानता था कि पुलिस की कार्रवाइयाँ किस तरह चलती थीं। अपने इस विपुल ज्ञान के कारण वह लोगों को प्रभावित कर देता था और जब किसी का कोई काम पड़ता था, उससे किराया लेकर उसे जिलाकेन्द्र अमोलपुर ले जाता। कांग्रेस ज़िलाध्यक्ष चौधरी बहादुर सिंह उससे ऐसा व्यवहार करते थे जैसे वह उनका कुत्ता था। यह उनके सामने कोई शिकायत पेश करता तो वह टूटकर इसपर पड़ते और कहते, 'लुच्चे बदमाश गुंडे कहीं के! दुनिया-भर से झगड़े मेरे सामने ले आता है।' तब गोविन्द कहता, 'हुजूर आप मुझसे क्यों खफा होते हो! मैं तो आप ही के भले के लिए कह रहा था हुजूर। आप नहीं जानते कि इसमें रामसिंह तिवाड़ी की पार्टी का गठबन्धन हो रहा है।' और ज़िलाध्यक्ष सोचने लगते और गोविन्द कहता, 'हुजूर, उन्होंने गुंडों से दहशत फैला रखी है। हम तो हुजूर के खैरख्वाह हैं, चले आते हैं, अन्याय नहीं देखा जाता। आप निकाल दोगे तो चले जाएँगे। लेकिन मैं तो आपकी बात सोचकर कहता हूँ। हम लोग जो आपके खैरख्वाह हैं, हमसे यह नहीं देखा जाता कि रामसिंह तिवाड़ी आपको गाली देते फिरें और हम जीभ पर ताला लगाए बैठे रहें। उनके गुंडे लोगों को डराते और कहते हैं—अरे, कहाँ का जिलाध्यक्ष! और कहा करते हैं...आप कहें तो हम उस वक्त चुप रह जाएँ, पर हमसे देखा नहीं जाता। आप भले ही पीठ पर हाथ मत रखो, लेकिन हम कैसे चुप बैठ जाएँ! चौधरी साहब अपनी नई रियासत में बैठे सोचते; टेलीफोन पर उनकी निगाह जाती और कहते, 'अरे भाई, मेरे पास टाइम नहीं है। मुझे कलक्टर ने बुलाया है। आज वहाँ केन्द्र के मंत्री भी आने वाले हैं। तुम जल्दी कहो, तुम्हें क्या कहना है।' और वे मन ही मन हिसाब लगाते कि रामसिंह तिवाड़ी का फलाना गुंडा है, तो अपना यह गुंडा क्या बुरा रहेगा उसके मुकाबले में! अच्छा है, पड़ा रहता है। एक टुकड़ा डाल देने से पड़ा रहे तो कम से कम अपनी तरफ से भौंकनेवाला तो है ही। गोविन्द कहता, 'हुजूर, अब यह मामला मैं आपके सामने लाया हूँ। इसमें अफसर सुनाई नहीं करते। जिनके बारे में मैं आपसे कह रहा हूँ, वे कोई अपने बल पर नहीं कूद रहे हैं, उनके पीछे रामसिंह तिवाड़ी का हाथ है। वे तो कहते हैं कि अगली बार रामसिंह ही जिलाध्यक्ष बनेगा, और हुजूर, ऐसी बात करते हैं जो मुझे आपके सामने नहीं कहनी चाहिए।'

"क्या कहते हैं! क्या कहते हैं? बोलते क्यों नहीं?" चौधरी साहब चिल्लाते, "मै जानूँ तो सही कि वे क्या कहते हैं। उनकी इतनी हिम्मत हो गई है! अरे, मैं इस जिले का मालिक हूँ। कलक्टर साला मेरी जूतियाँ चाटता है। मेरी दिल्ली तक पहुँच है। मैं प्रान्त की क्या

परवाह करता हूँ! प्रान्त के मुख्यमंत्री मुझसे मीठी-मीठी बातें करते हैं मौके पर, क्योंकि उनका काम पड़ता है। सारा ज़िला मेरी मुट्ठी में है। कल का भूखा यह बामन झोलेटोले का सरपंच तिवाड़ी! इसकी है क्या हैसियत जो मेरे खिलाफ खड़ा होगा?"

'अब हुजूर,' गोविन्द कहता, "बड़े आदमियों की तो बड़े आदमी ही जानें, हमें क्या मतलब! हम तो इतना समझते हैं कि हुजूर की शान में कुछ कहते हैं तो हमको बुरा लगता है। पार्टी का सवाल है, उन्होंने एस. डी. एम. पर दबाव डाला है।"

"दे दिया होगा कुछ एस. डी. एम. को," चौधरी साहब कहते, "पर यह बात पक्की है कि इसमें रामसिंह तिवाड़ी का हाथ है या वैसे ही कोई मामूली केस है? मामूली केस में मुझको नहीं घसीटो। तुम नहीं जानते, मेरा ओहदा कितना बड़ा है। लेकिन हाँ, अगर यह राजनीतिक चाल की बात हो तो और बात है!"

"अब हुजूर को कैसे भरोसा दिलाऊँ कि आपके हाथ में कलम है, हुकूमत है। एक फोन कर देते आप ज़रा कलक्टर को तो एस. डी. एम. सीधा हो जाता।" और चौधरी साहब का हाथ टेलीफोन की ओर बढ़ जाता और इस तरह गोविंद चौधरी साहब के अहंकर, अविश्वास और भय की अग्नि में तरह-तरह की आहुतियाँ डालता हुआ गाँव में बैठा इस वक्त एक डिप्टी कलक्टर की तनख्वाह से ज्यादा कमाई कर रहा था। वह दसवें-ग्यारहवें दर्जे तक पढ़ा हुआ था, इसलिए कामचलाऊ अंग्रेजी भी जानता था। एक बार चौधरी साहब के टेलीफोन से कलक्टर को हिलाकर जब गोविन्द लौटता, तो उसके ग्राहक यानी गाँव के बेवकूफ या पार्टीबन्द झगड़ालू लोग, उसकी पहुँच से आतंकित होते। गाँव का दरोगा आतंकित होता। वह दो सौ रुपये लेता। सौ दरोगा को देता, सौ खुद खाता और चाँदी उसपर बरसा करती। किसी की ज़मीन कहीं पड़ी होती तो वह दूसरे आदमी को उस ज़मीन के लिए उकसा देता और पटवारी को घूस दिलाने में आधे रुपये खुद मार जाता, क्योंकि गाँव की कुंजी, हुकूमत उसके हाथ में थी, क्योंकि दरोगा और तहसीलदार को वह कांग्रेस ज़िलाध्यक्ष का आतंक डालकर पटाए रखता। यह बात नहीं थी कि चौधरी साहब इन सब घटनाओं को नहीं जानते थे, लेकिन दूसरे नेताओं की उठती हुई शक्ति को दबाने के लिए, जनता में अपना आतंक फैला रखने के लिए उन्हें भी शिकारी कुत्ता पालना ज़रूरी था। इसलिए वह उसके हज़ार कुसूर नज़रन्दाज करते हुए उसको पाले रखते थे। जब वे इधर आने की सूचना देते तो उनको बने-बनाए मंच मिलते, उनकी जय बोलने के लिए हज़ार-पाँच सौ की भीड़ खड़ी रहती। एक बार स्वतंत्रता-दिवस पर एक मीटिंग हुई। उसमें रामसिंह तिवाड़ी और बहादुरसिंह दोनों आए। स्वयंसेवक दल ने सलामी दी। उस समय 'भारत माता की जय, बोल महात्मा गाँधी की जय, बोल जवाहरलाल नेहरू की जय' के बाद रामसिंह तेवाड़ी के गुर्गे बांके ने शीघ्रता से नारा लगाया—बोल रामसिंह तिवाड़ी की जय! चौधरी बहादुरसिंह का दिल ऐसे हो गया जैसे खरबूजे को किसी ने चाकू से चाक कर दिया हो। भीड़ ने बिना सोचे रामसिंह तिवाड़ी की जय बोल दी थी और वे जिला अध्यक्ष

होते हुए भी बिना जय के खड़े हुए थे। उनका चेहरा स्याह हो गया था। उस समय बिजली की तरह आगे बढ़कर गोविन्द ने प्रचंड गर्जन किया था—बोल बहादुरसिंह चौधरी की जय। और बांके चिल्लाया था—अबे जा जय वाले! और गोविन्द ने कहा था—अरे भुला दूँगा, तेरी सब सिट्टी-पिट्टी गुम हो जावेगी। रामसिंह तिवाड़ी ने मुस्कराकर चौधरी साहब का हाथ पकड़ लिया था और दोनों पार्टी में साथ-साथ खाने चले गए थे, लेकिन मुर्गे पीछे लड़ते रह गए थे। ऐसा था गोविन्द। उसको चौधरी साहब कैसे भूल जाते! वह चौधरी साहब का सी. आई. डी. था जो इधर-उधर की सारी खबरें उनके पास पहुँचाता था और उसे उन्हें तनख्वाह भी नहीं देनी पड़ती थी। कभी-कभी अपने उस बेपैसे के खरीदे हुए गुलाम के लिए उन्हें केवल टेलीफोन उठाना पड़ता था और जब गोविन्द उनके यहाँ पहुँचता था, उसे चौधरी साहब दिखाई नहीं देते थे, केवल टेलीफोन का चोगा उठाए हुए वह हाथ दिखाई देता था जिसमें जादू था, जिसमें कशिश थी, जिसमें कलक्टर, डी. आई. जी. मिनिस्टरों को हिला देने की ताकत थी; और वह कल्पना करता, काश, एक ऐसा टेलीफोन उसके पास भी होता। टेलीफोन एक बहुत बड़ी चीज़ थी। दिखाई न देने वाले लोग आवाज़ के बल पर कांपा करते थे। एक बार चौधरी साहब के विरुद्ध कुछ लोगों ने अविश्वास का प्रस्ताव लाने की चेष्टा की थी, तब जिला कमेटी के दो चमार डावांडोल थे, तो चौधरी साहब ने उनसे कह दिया था—साले कम्बख्त, तुम्हारे वोट नहीं सही, फिर भी तुम्हारी छाती पर मूंग दलकर जीतकर रहूँगा। चमट्टे अब नखरा दिखाने की कोशिश कर रहे थे; लेकिन चौधरी के जूते में बल था, चौधरी के जूते में चमचमाहट थी। चौधरी के जूते में नाल ठुकी थी, चौधरी के जूते के नीचे ढेला आकर माटी बन जाता था, लेकिन चौधरी के जूते के ऊपर धूल आकर ज़मा नहीं होती थी, वह चमचमाता रहता था। चौधरी की कई भुजाएँ थीं, चौधरी मालिक था, चौधरी विष्णु था और गोविन्द उसका गरुड़। चौधरी महादेव था, गोविन्द उसका नादिया। चौधरी चतुर्मुख ब्रह्मा के समान था और गोविन्द उसका हंस। ऐसा था गोविन्द।

उसके दिल में आग-सी जला करती थी। गाँव के किसी आदमी की तरक्की उसे पसन्द नहीं थी। अगर कोई मास्टर उससे अकड़ता था, तो वह हेडमास्टर पर दबाव डालकर उसका तबादला करवा देता। ग्यारह बच्चों के बाप कटारा साहब तहसीलदार उसके मित्र थे, क्योंकि उनको भी अपनी रिश्वतों की रक्षा करने के लिए एक टेलीफोन की ज़रूरत थी और चौधरी साहब का टेलीफोन गोविन्द के हाथ में था। लोगों को मूर्ख बनाना गोविन्द का काम था। कहाँ पर, किससे किसका झगड़ा हुआ, यह वह खबर रखता था। झगड़ा होते ही वह एक पार्टी से मिलकर उसको दूसरी पार्टी के खिलाफ उभारता था, और गाँव की मामूली से मामूली घटना को राजनीतिक पार्टीबन्दी का रूप दे देना उसके लिए एक सहज कार्य था। और इसके लिए बामन, ठाकुर और बनिये तीन दल के रूप में उसने

जातीय घृणा को उभार दिया था। और यही नहीं, माली, कोरी, धाकर, जाट, गूजर इत्यादि जातियों को वह एक-दूसरे से लड़ाता रहता था। ऐसा था गोविन्द, पराक्रमी।

जिस प्रकार वेश्या अपने मित्रों को धोखा दे दिया करती है, लेकिन अपनी माँ के प्रति सच्ची तरह से वफादार रहती है, उसी तरह गोविन्द भी बहादुरसिंह के प्रति सच्चा था और बाकी मोटा मगनसिंह, दुबला दानामल, लम्बे दाँत का रामप्रसाद, रामसिंह तिवाड़ी, सरपंच चंचलसिंह, एम. एल. ए. प्यारेराम, ठाकुर जवाहरसिंह इत्यादि को एक-दूसरे से लड़ाकर, उनकी कमजोरियों का फायदा उठाकर, गोविन्द मेहनत किए बिना एक गज़ेटेड अफसर से ज़्यादा पैसे कमाता हुआ आराम से रहा करता था और लोगों के सामने आडम्बर रचता था—भैया, डी. आई. जी. ने निकाल दिया है, इस राज में किसी की पूछ नहीं। उनको पता चल गया है किसी तरह से कि मैं पुराना कांग्रेसी था। लेकिन सर्विस में कांग्रेस की तो चलती नहीं, कोई सुनवाई नहीं होती इस राज में। लोग कहते—भाई गोविन्द, तुम्हारी तो पहुँच कांग्रेस ज़िलाध्यक्ष के पास है; वे तुम्हें क्योँ नहीं फिर से नौकरी दिलवा देते? तब वह कहता—यह मेरा ज़ाती मामला है। वे इसमें कैसे बोल सकते हैं! हालांकि सत्य यह था कि चौधरी साहब पूरा ज़ोर लगा चुके थे और मिनिस्टर घनश्याम शर्मा तक से मिले थे। मिनिस्टर ने उसके सामने फाइल खोल कर रख दी थी और कहा था—अब बताइए, यह रिपोर्ट मौजूद है, तो इसको फिर से कैसे लिया जा सकता है? यही क्या कम है कि ऐसे आदमी को अभी तक जेल नहीं भिजवाया गया है! सरकारी माल का गबन कर दिया जावे, और आप चाहते हैं कि इसको फिर से रख लिया जाए? आप मुझे कोई राह दिखाइए कि इसको ले लिया जावे। आखिर मुझे डी. आई. जी. से भी कुछ कहना पड़ेगा। और चौधरी साहब दूसरी बातें करते हुए लौट आए थे। ऐसा था गोविन्द पराक्रमी।

उसका नाम लेकर सुबह उठने से लोग शाम तक अपनी जेब खाली पाया करते थे और जब वह देखता कि नेता बनना सबसे अधिक लाभदायक था, तो यही कोशिश करता कि पुलिसवाले उसे फिर से नौकरी न दें, ताकि उसकी रोज़ी आराम से चलती रहे, उसकी हुकूमत चलती रहे। गाँव की औरतें उसके खेलों की शिकार थीं। कोई ऐसा काम नहीं था जो चोरी-छिपे वह नहीं कर लेता था। मूर्ख लोग, नाई, कोरी, उसके बेपैसे के गुलाम थे। जब उसे नौकरों की ज़रूरत पड़ती, तो वह कुछ लोगों को आपस में लड़ाकर मुकदमे चलवा देता और एक पार्टी से निरन्तर सेवा लिया करता। उसने सोचकर देखा कि सब पेशों में काम करना पड़ता था। केवल यही एक पेशा था, नेतागीरी का, जिसमें अपने पास से कुछ लागत नहीं लगानी पड़ती थी। एक मामले में गोविन्द हार चुका था। वह भगवान से सच्ची प्रार्थना किया करता था कि सब कुछ हो जाए, भले ही मिनिस्ट्री बदल जाए, कुछ भी हो जाए, लेकिन चौधरी साहब का रुतबा कम न हो, क्योंकि उसकी सारी शक्ति अन्ततोगत्वा चौधरी साहब रूपी खूंटे से बँधी थी। गोविन्द सोचा करता, यह प्यारेराम हवेली बना बैठा और उसके देखते-देखते सारे नेताओं के पास पैसे आ गए। दो-दो कौड़ी

के तहसीलदार और दरोगा जैसे अदने नौकर जायदादें खड़ी करने लगे। बड़े-बड़े नेता कहा करते हैं कि रिश्वत कहीं नहीं है, भ्रष्टाचार कहीं नहीं है, यदि कोई हो तो उसका सबूत दिया जाए और रंगे-हाथों पकड़ाया जाए। गोविन्द इन बातों को सुनकर हँसा करता था। उसको ऐसा लगता था जैसे कोई कुंवारी कन्या अपनी गोद में अपना बच्चा लिए फिरे और फिर भी लोग उसके बारे में कहते हों कि नहीं, यह कुलटा नहीं है, तुम्हारे पास क्या सबूत है कि यह बच्चा इसी का है? जायदादें बच्चा थीं। लेकिन उसको पकड़ने वाला कोई नहीं था; और गोविन्द यह सोचता कि इस बहती गंगा मे वह भी क्यों न हाथ धो ले? कितना सुख था इस कल्पना में कि सवेरे उठकर ओटे पर बैठ गए, मूढ़ा डालकर दरबार लगाया, अड्डे पर बैठकर गप-शप की, चाय पी, सिगरेट पी, ज़माने की खबरें इकट्ठी की, लोगों को इधर-उधर लड़ाया और फिर नये फैसले कराने को तैयार हो गए। हुकूमत की हुकूमत, खुशामद की खुशामद, आने-जाने वाले ‘भाई साहब’ कहते, शाम को गरम-गरम पैसे जेब में गिरते, रात को एकाध पैर दबाने वाला मिल जाता, बड़े-बड़े आदमी अपनी प्रतिहिंसा-भरी वासनाओं का प्रकट करते और गोविन्द उनसे लाभ उठाता। गोविन्द इलाके का लखटकिया था। हिरदे पुलिस में रपट करने जाने वाला है। चंचलसिंह को याद आ रही है गोविन्द की, कि कजौरीसिंह जाओ, गोविन्द को कहे कि वह हिरदे को पलटने की कोशिश करे। हिरदे को श्यौपाल से लड़ाना है, कजौरीसिंह कह रहे हैं कि यार गोविन्द! तू किसी तरह से हिरदे को भड़का जो इस मुकदमे में फंस जाए। रामसिंह तिवाड़ी को निहाल की जरूरत है, तो गोविन्द से कह रहे हैं कि यार, किसी तरह इसको हाथ में ला। दानामल का ट्रक चीनी ले जाते हुए पकड़ा गया। दानामल और ड्राइवर ट्रक छोड़कर भाग गए, ट्रक पुलिस में अटका पड़ा है, तो दानामल आकर गोविन्द से कह रहे हैं—यार, दरोगाजी को किसी तरह लिवा-दिवाकर हमारा ट्रक निकलवाओ और गोविन्द के अहसानों से धरती दबी जा रही है, इलाका दबा जा रहा है। गोविन्द एक नई गवर्नमेंट है, अफसरों और नेताओं से जनता का संपर्क स्थापित करनेवाला नया विभाग है। जब अफसरों के भ्रष्टाचार की जाँच होती है, तो गोविन्द लोगों को इकट्ठा करके गवाही दिलाता है कि यह अफसर बड़ा सज्जन है, इसने कभी रिश्वत नहीं ली। जब नेताओं के बदलने का सवाल आता है तब गोविन्द लोगों को इकट्ठा करके उनकी जय बुलवाता है और उनकी नेतागीरी कायम रखवाता है। ऐसा था गोविन्द। लेकिन निहाल, जब उस गोविन्द की कल्पना करती, तो उसे घृणा से लगता कि वह डूबकर मर जाए तो अच्छा। वह उससे रुपये भी ले गया था। किसना का लुटा हुआ दिल उस गोविन्द के प्रति घृणा से भरा हुआ था, लेकिन उसमें इतना आतंक था कि वह बोल नहीं सकता था। एक हिरदे ऐसा इंसान था जो उससे घृणा करके भी, उससे डरता था और उससे बात खुलकर नहीं करता था, क्योंकि गोविन्द की पहुँच बहुत दूर तक थी। वह दूरी बहुत दूर नहीं जिला-केन्द्र तक थी; लेकिन देहात के लिए वह बहुत थी। ऐसा था गोविन्द। और, अब चुनाव जैसे-जैसे पास आ रहे थे, गोविन्द और भी आगे दिखाई दे रहा

था। वह चंचलसिंह की पोल जानता था, वह दानामल की पोल जानता था, रामसिंह तिवाड़ी उसका दुश्मन होते हुए भी किन्हीं बातों में उसका यार था। और गोविन्द इस बात पर मन ही मन हँसता था कि जिस निहाल के लिए रामसिंह तिवाड़ी मन ही मन व्याकुल था, वह निहाल गोविन्द के लिए एक साधारण वस्तु थी। लेकिन निहाल तक रामसिंह की पहुँच क्योँ नहीं थी? क्योंकि रामसिंह सफेद कपड़े पहनता था और गोविन्द साधारण। उसने अभी वह खद्दर की खाल नहीं पहनी थी, क्योंकि दुनिया भर की नज़र में वह सरकारी नौकर भी था। ऐसा था गोविन्द।

गोविन्द मौका पड़ने पर जिलाकेन्द्र अमोलपुर में जा पहुँचता था और 'जागते रहो' के सम्पादक मदनमोहन घीया से कोई भी खबर निकलवा सकता था। सम्पादक मदनमोहन घीया से उसकी मुलाकात थी। दरोगाजी का साला चन्द्रप्रकाश उसका परिचित था और चन्द्रप्रकाश कहा करता था—अरे, यह कांग्रेस भ्रष्टाचार पर ही तो पल रही है। हम कम्युनिस्टों का राज जब होगा तो यह उखाड़ कर फेंक दी जाएगी। और गोविन्द हँसकर कहता था—फेंक दो भैया, तुम्हारे हाथ में ताकत है, लेकिन हम गरीब तो तब भी पलेंगे, जैसे अब पल रहे हैं। तुम राजगद्दी पाओ, तो हमें मत भूल जाना। और वैसे गोविन्द सीधा था। किसी मामले में खुद आगे नहीं आता था। लोगों को लड़ाना उसका काम था, न कि खुद लड़ना। वह तो एक नए तरीके का वकील था, सलाह देता था और पीछे हट जाया करता था। ऐसा था वह गोविन्द।

हेडमास्टर बयान देने खड़ा हुआ। कचहरी में आने का उसका पहला मौका था। मुन्सिफ ने अपनी आँखों से उसके प्रति कुछ आदर दिखाया।

पी. आई. ने प्रश्न प्रारम्भ किए, "हेडमास्टर साहब, क्या नरायन और माधो आपके स्कूल में पढ़ते हैं?"

हेडमास्टर ने कहा, "यह आप क्या पूछ रहे हैं? यह कोई पूछने की बात है? अगर वे दोनों मेरे यहाँ न पढ़ते होते, तो मुझको यहाँ बुलाया ही क्यों गया होता? आप मुझसे यह पूछिए कि आप उनके बारे में क्या पूछना चाहते हैं।"

मुन्सिफ साहब मुस्कराए, लेकिन महेन्द्रकुमार जौहरी नहीं मुस्कराया। पी. आई. थोड़ा रुष्ट हुआ। उसने कहा, "हेडमास्टर साहब, यह स्कूल नहीं है। आप भूल जाइए कि यह स्कूल है। यह अदालत है और इसकी अपनी एक इज़्ज़त है। मैंने आपसे एक सवाल पूछा है, आपको उस सवाल का जवाब देना है, न कि मुझे यह बताना है कि मुझे क्या सवाल पूछना है। सवाल पूछने का अख्तियार हमको है, आपको नहीं। हम अपनी राय से सवाल पूछते हैं और अपने कायदे से सवाल चलते हैं।"

हेडमास्टर को इस तरह डाँट खाने का काम नहीं पड़ता था। उसने कहा, “पी. आई. साहब, मेरा काम गलत रास्ते पर चलने वालों को ठीक रास्ते पर लाना है। मेर पास अगर लड़के आते हैं तो मैं पहले उनको यह समझाता हूँ कि उनको ठीक बात करनी चाहिए। मैं नहीं जानता कि आप किस स्कूल में पढ़े हैं; लेकिन जहाँ कहीं भी आप पढ़े हों, वहाँ आपको यह नहीं बताया गया कि बेकार वक्त नहीं निकालना चाहिए। आप मुझसे यह पूछेंगे कि क्या मैं हेडमास्टर साहब हूँ? मैं इसका जवाब यह भी दे सकता हूँ कि आप मुझसे सवाल करने वाले कौन होते हैं? हालांकि मैं यह जानता हूँ कि आप पुलिस के पैरोकार हैं। इसलिए आपको यह कोशिश करनी चाहिए कि आप ठीक सवाल पूछें, ताकि मेरा वक्त ज़ाया न हो। आप याद रखिए कि हेडमास्टर हमेशा ऐसी गलतियों का सुधार करने के लिए ही बनाया जाता है।”

महेन्द्रकुमार जौहरी ने मुस्कराकर पी. आई. की ओर देखा, जैसे आँखों से कह रहा हो, “अब बोलो, आज फंसे हो इतने दिन में आकर।”

पी. आई. ने मुन्सिफ साहब की ओर देखकर कहा, “हुजूर, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हेडमास्टर साहब को यह याद दिला दिया जाए कि यह उनका स्कूल नहीं है, बल्कि अदालत है।”

मुन्सिफ साहब ने हेडमास्टर की ओर देखा और फिर पी. आई. से कहा, “आप अपने सवाल करिए।”

पी. आई. ने पूछा, “हेडमास्टर साहब, नरायन और माधो आपके स्कूल में किस दर्जे में पढ़ते हैं?”

“दसवें में।”

“क्या आप जानते हैं कि उनके ऊपर एक कत्ल का केस चल रहा है; और आप जानते हैं तो आप इस बात को कब से जानते हैं?”

हेडमास्टर ने कहा, “मुझको कुछ दिन हुए, यह खबर दी गई थी। मैंने उनके क्लास-टीचर पचौरीजी से भी पूछा था। उन्होंने मुझे बताया कि दसवें दर्जे में पढ़ने वाले नरायन और माधो किसी कत्ल के केस में फंस गए थे। कुछ दिन बाद वे लड़के हमारे यहाँ आ गए थे और होस्टल में आकर उन्होंने बताया था कि उनकी ज़मानत हो गई है। पचौरीजी ने मुझसे कहा था कि लड़कों की ज़मानत हो चुकी है इसलिए इनको होस्टल में रहने की इज़ाज़त दे दी जाए। मैंने इज़ाज़त दे दी थी।”

पी. आई. ने पूछा, “क्या ये लड़के आपके स्कूल से भाग गए थे?”

हेडमास्टर ने कहा, “इसकी मैंने जाँच की थी और पचौरीजी से पूछा भी था। काम ज़्यादा रहने की वजह से हमारे यहाँ अमूमन क्लास-टीचर ही छुट्टी की दरख्वास्त ले लेते हैं। पचौरीजी ने मुझे बताया कि लड़के दो दिन गैरहाजिर रहे थे और उसके बाद होस्टल में आ गए थे। उनका कहना यह था कि एक रोज उनके होस्टल में आ जाने पर एक आदमी

उनको बुलाने आया था और होस्टल के बाहर ले गया था। उसके बाद लड़के लौटकर नहीं आए। पचौरीजी परेशान रहे। तभी उनको किसी ने यह बताया कि जहाँगीरपुर के थाने से सिपाही आए थे, जो उन दोनों लड़कों को पकड़ ले गए थे। चूंकि मेरे सामन यह किस्सा आया नहीं और मैं बोल नहीं पाया, चूंकि पचौरीजी अपने अधिकार जानते नहीं थे और उन्होंने यह भी सुना था कि किसी कत्ल के केस में ये लड़के फंस गए थे, वे चुप रह गए। मैंने उनको बाद में इस बात पर डाँटा भी था कि इस तरह स्कूल की हद में आकर चुपचाप लड़कों को ले जाने का अख्तियार पुलिस को नहीं था और यह एक तरह का जुल्म था। कायदे से पुलिस को मुझसे इजाजत लेनी चाहिए थी, मेरे जरिए से लड़कों से मिलना चाहिए था। पुलिस ने यह काम निहायत गैरकानूनी और गैरजिम्मेदाराना किया। मैं ऊपर लिखकर इस मामले में डिपार्टमेंटल कार्रवाई कर सकता था, लेकिन अफसोस यह है कि मुझे ठीक वक्त पर इसकी इत्तला नहीं मिली। वैसे तो मैं इसके लिए कसूरवार हूँ, क्योंकि हेडमास्टर मैं हूँ, लेकिन पुलिस को भी ऐसा नहीं करना चाहिए था।"

पेशकार साहब के मुख पर व्यंग्य की झलक दिखाई दी और उन्होंने पी. आई. की ओर देखकर सिर हिलाया। पी. आई. का जैसे मनोरंजन हुआ था। उसने कहा, "हेडमास्टर साहब, तो इसका मतलब यह है कि आप यह इकबाल करते हैं कि दो दिन ये लड़के वहाँ मौजूद नहीं थे?"

हेडमास्टर ने कहा, "हाँ, ऐसा मुझे इनके क्लास-टीचर ने बताया।"

"क्या, ये कोई दरख्वास्त देकर गए थे?"

हेडमास्टर ने उत्तर दिया, "मैंने पचौरीजी से यह भी पूछा था तो मुझे मालूम हुआ कि उन्होंने कोई दरख्वास्त नहीं दी।"

मुन्सिफ के माथे पर त्यौरियाँ दिखाई देने लगीं। पी. आई. को जैसे स्वयं ही यह उत्तर अच्छा नहीं लगा।

महेन्द्रकुमार जौहरी ने कहा, "याद कीजिए, शायद दी हो। और जैसे आपको स्कूल की और बातों की जानकारी नहीं रहती, इसकी भी न रही हो।"

हेडमास्टर ने चंचलसिंह की ओर घूरकर देखा और वकील से कहा, "मेरे स्कूल में क्या होता है और क्या नहीं होता, यह सवाल करने का हक आपको नहीं है। अगर मैं गलती नहीं करता हूँ तो आप वकील ही हैं ना?"

"जी हाँ।" महेन्द्रकुमार जौहरी ने कहा, वकील ही हूँ। अदालत में वकील को हरएक बात कहने का हक होता है। हेडमास्टर साहब, यह अदालत है। यहाँ दो लड़कों की ज़िन्दगी का सवाल है। आप कहते हैं कि लड़के स्कूल में नहीं थे और दरख्वास्त नहीं आई थी। लड़के कहते हैं कि दरख्वास्त उन्होंने दी थी, लेकिन आपके स्कूल का इन्तजाम इतना खराब है कि कोई चीज ठीक जगह पर ठीक वक्त पर नहीं मिलती। आपके बयान से साफ जाहिर है कि आपने अपना सारा काम मास्टरों में बाँट रखा है, और इस वजह से आपको

बखुद यह भी मालूम नहीं था कि लड़के कब चले गये थे। इनको कौन पकड़ ले गया था और यह भी कि आपके मास्टर साहब पुलिस के खौफ से, कानून न जानने की वजह से डर गए थे, और यह भी कि जब वे लौटकर आए तब आपको उन्हीं के जरिए मालूम पड़ा कि लड़कों पर कत्ल का केस चल रहा था और आपने उसके बाद भी लड़कों को बुलाकर नहीं पूछा, न आपने यह सोचने की कोशिश की कि कत्ल के केस में फंसे लड़कों को होस्टल में रख लेना चाहिए या नहीं! इन बातों से मालूम पड़ता है।" और उसने मुन्सिफ की ओर मुड़कर कहा, "हुजूर, जाहिर है कि मौजूदा हेडमास्टर साहब का इन्तजाम स्कूल में बहुत ही ढीला है और चन्द मास्टरान ही सारा काम चलाते हैं, और यह जाहिर हो गया है कि वे मास्टर लोग कानून नहीं जानते और पुलिस से डरते हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि इसका क्या सबूत है कि लड़कों ने दरख्वास्त नहीं दी थी? और यह भी मैं जानना चाहता हूँ कि क्लास-टीचर ने जो बयान दिए हैं, वे सच्चे हैं या उन बयानों पर भी पुलिस का खौफ अपना दबाव डाल रहा है? मैं अर्ज करता हूँ कि क्लास-टीचर का रजिस्टर मंगाया जाए और देखा जाए कि उसमें लड़कों की हाज़िरी लगी है या गैर हाजिरी लगी है। हो सकता है कि हाज़िरी लगी हो और हमको जवाब उल्टा मिल रहा हो। हमको क्या मालूम कि इनके क्लास-टीचर ने पुलिस के दबाव में आकर क्या कुछ न कर दिया हो!"

चंचलसिंह महेन्द्रकुमार जौहरी की बुद्धि देखकर मन-ही-मन चकित हो रहा था। मुन्सिफ के माथे की त्यौरियाँ फिर मिट गई थीं।

पी. आई. ने काटकर कहा, "हुजूर, पुलिस के पास इस बात का यह एक सबूत हो गया कि लड़के उस दिन वहाँ नहीं थे। वे स्कूल से गायब थे और स्कूल में ऐसी बदइन्तजामी है कि लड़के बिला इजाजत इधर से इधर घूम सकते हैं। बयान हेडमास्टर साहब का जाहिर करता है कि जब दो दिन बाद लड़के होस्टल लौटकर आए और फिर जब उन्हें एक आदमी बुलाकर ले गया, जो जाहिरा तौर पर पुलिस का नहीं था; तब भी मास्टर ने इसपर ज्यादा गौर नहीं किया कि वह कौन था और क्यों उनको बुलाकर ले गया था? और कहाँ ले गया था? कस्बा रमोना एक बड़ा कस्बा है, जहाँ यह अदालत है, जहाँ एस. डी. एम. की अदालत है। कस्बा जहाँगीरपुर उससे छोटा है। जहाँगीरपुर एक तहसील है और बड़ी कचहरियों के लिए उसे रमोना आना पड़ता है। कस्बा जहाँगीरपुर में सिर्फ थाना है, लेकिन रमोना में डी. एस. पी. साहब रहते हैं। यह कहना कि जहाँगीरपुर के थानेदार साहब ने लड़कों को बुलवा लिया था, या, पकड़ लिया था, बिलकुल गलत चीज़ है, क्योंकि हेडमास्टर साहब या उनके क्लास टीचर फौरन डी. एस. पी. और एस. डी. एम. वगैरह को इतला कर सकते थे और जहाँगीरपुर के थानेदार साहब से डी. एस. पी. के जरिए जवाब तलब करा सकते थे। यह कहना कि स्कूल-टीचर को कानून नहीं मालूम था, कोई मायने नहीं रखता। इसका मतलब यह है कि लड़के स्कूल से गायब थे। किसी को परवाह नहीं थी कि वे कहाँ थे या क्या कर रहे थे। और यह किस्सा एक बनाया हुआ किस्सा है कि उनको

होस्टल में से पकड़कर बुलवाया गया था। वो कहीं होस्टल के बाहर आसपास घूम रहे थे और जहाँगीरपुर के पुलिस के सिपाहियों ने उन्हें वहाँ पाया और पकड़ लिया। और लड़कों ने खुद इकबाल किया है कि वे महू गाँव के मेले में गए थे। दूसरी बात यह है कि इब्तदाई रिपोर्ट में यह जाहिर है कि जिस दिन कत्ल का केस हुआ है, उस दिन भी डूंमरपुर गाँव में कोई मेला था और लड़के उस मेले को देखने के लिए अपनी शाम की बस से गाँव गए थे और दूसरे दिन यह कत्ल का केस हुआ था। अगर वे मेलों के शौकीन नहीं होते तो डूंमरपुर के मेले को देखने के तुरन्त बाद वे महू के मेले में न जाते। हुजूर, ये लड़के आवारा थे, वरना पढ़नेवाले लड़के हर गाँव के मेले देखते नहीं फिरते। इस बात से जाहिर हो जाता है कि पुलिस ने इन लड़कों को बेवजह गिरफ्तार नहीं किया। उसके पास मजबूत शक थे और उसने इसमें गलती नहीं की।"

और यह कहकर पी. आई. ने महेंद्रकुमार जौहरी की ओर घूरकर देखा। इस क्षण वह सचमुच वकील हो गया था। उसने महेंद्रकुमार की तीक्ष्ण बुद्धि को चुनौती दे दी थी। महेंद्रकुमार ने यह प्रमाणित किया था कि स्कूल में इतनी ज़्यादा बदइन्तजामी थी कि वहाँ लड़कों की देख-रेख नहीं थी और इसलिए लड़कों के वहाँ मौजूद रहने पर भी, या दरख्वास्त दी जाने पर भी उसपर गौर नहीं किया गया; और चूंकि महेंद्रकुमार पहले से सरपंच से सुन चुका था कि पचौरी के रजिस्टर में ए. और पी. का बहुत थोड़ा फर्क था, उसने हेडमास्टर को फंसाते हुए रजिस्टर को तलब कराया था। लेकिन पी. आई. ने यही बिना लेकर कि स्कूल में लड़कों का इन्तज़ाम ठीक नहीं था, इस बात पर जोर दिया कि वहाँ लड़कों की देख-रेख नहीं होती थी, जहाँ चाहे घूमते थे, मेलों में सैर-सपाटे करते थे, इसलिए ऐसे लड़कों को पकड़ लेने में पुलिस ने अपनी दूरदर्शिता दिखाई थी। दोनों ओर से हेडमास्टर मूर्ख प्रमाणित हो रहा था। महेंद्रकुमार जौहरी की बात हेडमास्टर के लिए ज़्यादा खतरनाक थी। यदि पचौरी का रजिस्टर आ जाता तो उसमें ए. और पी. के ज़्यादा फर्क न होने से इस बात में भी शक पड़ जाता कि लड़के दरख्वास्त देकर गए थे या नहीं। यह भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता था। शायद बदइंन्तजामी की वजह से दरख्वास्त ही खो गई हो, यह भी नहीं कहा जा सकता। लेकिन पी. आई. की जिरह से यह प्रमाणित हो रहा था कि लड़के चाहे जहाँ घूमते थे और उन पर कोई नजर कायदे से नहीं रखी जाती थी। हेडमास्टर फंस गया था। मुन्सिफ ने उसकी परेशानी का मन ही मन आनन्द लिया।

पी. आई. ने पूछा, "हेडमास्टर साहब, क्या आपने वह छुट्टी की दरख्वास्त अपनी आँखों से देखी है?"

हेडमास्टर ने कहा, "नहीं।"

वकील ने पूछा, "हेडमास्टर साहब, क्या आप अपने स्कूल में छुट्टी की दरख्वास्तों को खुद देखा करते हैं?"

हेडमास्टर ने कहा, “नहीं, और कोई खास दरख्वास्त होती है, जिसे क्लास-टीचर वाजिब नहीं समझते, तो वह मेरे सामने पेश की जाती है।”

वकील साहब ने मुन्सिफ साहब से कहा, “हुजूर, इससे जाहिर होता है कि लड़कों ने दरख्वास्त दी थी लेकिन क्लास-टीचर ने गौर नहीं किया, जिस तरह उसने इस बात पर गौर नहीं किया कि लड़कों को होस्टल में से कौन पकड़कर ले गया था!”

पी. आई. ने कहा, “हुजूर, इससे यह जाहिर होता है कि लड़कों ने दरख्वास्त नहीं दी थी और वे होस्टल में कायदे से रहते ही नहीं थे, इधर-उधर घूमते-फिरते थे; और पुलिस ने उनको बिल्कुल वाजिब तरीके से गिरफ्तार कर लिया, क्योंकि वे आवारा थे और उनपर शक करने की पूरी गुंजाइश थी।”

टाइम हो चुका था। मुन्सिफ साहब ने उठते हुए कहा, “अगली तारीख दी जाए।” और इजलास से चले गए।

आज वकील और पी. आई. ने एक-दूसरे को चुनौती-भरी आँखों से देखा और मुस्कराए। कचहरी से बाहर आकर चंचलसिंह ने महेन्द्रकुमार की ओर देखकर कहा, “वकील साहब, आज की बहस तो कुछ समझ में नहीं आई।”

वकील ने कहा, “क्यों? अरे आज की बहस तो बहुत अच्छी रही। तुम नहीं समझ सकते। सारे झंझट ही खत्म हो गए।”

चंचलसिंह ने कहा, “लेकिन वकील साहब, इसका आपको क्या यकीन है कि हाकिम पैरोकार-पुलिस की बात को ठीक नहीं मानेगा?”

महेन्द्रकुमार जौहरी ने कहा, “सरपंच साहब, कत्ल का केस है और यह मैं पहला कत्ल का केस नहीं लड़ रहा हूँ। इसके लिए दिमाग की जरूरत पड़ती है। अगर आप ही इसे समझ लेते तो हम लोगों की जरूरत क्या पड़ती? आज हम लोग ऐसी जगह आ गये हैं जहाँ शक पैदा हो गया है; और कैसा भी हाकिम हो, अगर ज़रा भी शक पैदा हो जाता है तो शक का फायदा हमेशा मुजरिम को मिलता है। इस बारे में चिन्ता मत कीजिए। तारीख आने दीजिए।”... और वकील साहब ने मुड़कर कहा, “हेडमास्टर अपने को बड़ा काबिल समझता है! दो-चार लड़के पीट लिए तो बादशाह बन बैठा! कहाँ का हेडमास्टर है! किस खेत की मूली है! देख लूँगा साले को। यह तो कहिए कि उसने केस बिगाड़ने में कोई कसर नहीं रखी थी, वह तो मैंने केस को सँभाल लिया। यह समझता है कि महेन्द्रकुमार वकील मामूली आदमी है। अरे, कस्बा रमोना में उसकी आवाज़ बलवा मचा सकती है। रमोना के सारे हिस्ट्री-शीटर महेन्द्रकुमार के अहसानमन्द हैं। आप फिक्र मत कीजिए, मैं इस हेडमास्टर को ठीक कर दूँगा।”

“तो मैं क्या करूँ?” सरपंच ने कहा।

“आप पी. आई. से मिल लीजिए। आज उसने अच्छी बहस की है। अमूमन पुलिस के पैराकारों में इतनी अक्ल नहीं हुआ करती, लेकिन शायद आज उसके अन्दर का वकील

जाग उठा है। आप उससे मिलकर पूछ लेना, उसके मन की लेना।" यह कहकर वकील ने सरपंच की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखा।

सरपंच पी. आई. के पास पहुँचा। काले रंग का सक्सेना इस समय पान चबाता बैठा था। उसने कहा, "आइए सरपंच साहब!"

सरपंच ने कहा, "पी. आई. साहब, मुझसे कोई खता हो गई है। मैंने कल भी अर्ज किया था, मैं तो आपका गुलाम हूँ। आज तो वकील साहब की जिरह ही बिगाड़ दी।"

पी. आई. ने कहा, "भई, जिसका खाता हूँ, उसी की तरफ तो बोल सकता हूँ। वकील साहब भी तो जिरह कर रहे थे। उन्हें अपनी वकालत का नाज है। सक्सेना ने भी वकालत पढ़ी है। यह तो किस्मत का फेर है कि मैं पुलिस का पैरोकार हूँ, वरना ऐसे यह कोई बड़े वकील थे? और इनसे बढ़िया प्रैक्टिस चलती मेरी! यह तो सरपंच साहब, पुलिस की बंदिश होती है। अब देखिए, बोलना चाहता हूँ लेकिन आपकी मुरव्वत बोलने नहीं देती। मैं क्या करूँ? कल से केस अगर छूट गया तो यही मुन्सिफ साहब पुलिस के खिलाफ एक लम्बा खर्रा लिखेगा और हम लोगों की आफत आएगी।"

सरपंच ने उसके हाथ पकड़कर कहा, "आपका क्या बिगड़ सकता है, पी. आई. साहब! आप मालिक हैं। ज़्यादा से ज़्यादा यह सबूत हो जाएगा कि पुलिस का लोग साथ नहीं देते; लेकिन मेरा तो लड़का बरबाद हो जाएगा।"

पी. आई. साहब ने उत्तर दिया, "भई सरपंच साहब, आप इतनी कम रकम देकर मुझसे इतना बड़ा काम कराना चाहते हैं। मैं आँखों-दिखती मक्खी कैसे निगल सकता हूँ? पुलिस का बयान है कि लड़के स्कूल से भाग गए थे। मुझको तो यही साबित करना होगा। अगर मैं यह जान जाता कि लड़कों को होस्टल में से पकड़ कर बुलाया गया था तो पुलिस पर दूसरी आफत आ जाती, क्योंकि यह गैरकानूनी काम है। बिना हेडमास्टर की इजाजत के ऐसा नहीं किया जा सकता। और रमोना एक बड़ा कस्बा है, डी. एस. पी. के रहते यह किस तरह मुमकिन है कि जहाँगीरपुर का एक छोटा-सा थानेदार रमोना में जाकर बिना वहाँ के थानेदार को इत्तला किए हुए उनको पकड़ लाता? आपको बचाने की ज़िम्मेदारी ज़रूर है, लेकिन वह मेरे-आपके ताल्लुकात पर है। इसका मतलब यह थोड़ी ही है कि हम खुद फँस जाएँ? आप बताइए कि मैं वाजिब कहता हूँ कि गलत कहता हूँ?"

सरपंच ने उत्तर, "पी. आई. साहब, मैं इतना पढ़ा-लिखा कहाँ हूँ जो आपकी बात का जवाब दे सकूँ!" उसने पचास रुपये के नोट निकालकर पी. आई. साहब की जेब में डालते हुए कहा, "मैं तो बस इतनी ही फरियाद कर सकता हूँ कि जैसा मेरा बच्चा है वैसा आपका भी है। अब मेरी इज़्ज़त का सवाल हो गया है। लड़का फँस जाए, इसे फांसी हो जाए, मुझे इतना गम नहीं होगा; लेकिन अगर इस केस में वह फँस गया तो मैं कहीं का नहीं रहूँगा। पी. आई. साहब, आप भी एक बाप हैं, आपके भी बाप का दिल है। मैं उस लड़के के लिए इतना नहीं मरता। सोचता हूँ कि मेरे और भी तो औलाद हैं।"

पी. आई. ने सोचते हुए कहा, "आप इतनी फिक्र क्यों करते हैं? देखिए, चश्मदीद गवाह कोई नहीं है। आपके गवाहान के बयान हो चुके हैं कि उन्होंने लड़कों को उस टाइम पर देखा था, जिस वक्त कि दूसरी जगह कत्ल हुआ था और यह भी जाहिर ही है कि मौके के सबूतों में न बाँक पर उँगली के कोई निशान हैं, न रूमाल पर कोई निशान हैं; लाश की फोटो से कुछ पता नहीं चलता और पैरों के निशान जमीन पर ऐसे पानी से बिगड़ चुके हुए दिखाई देते हैं कि फोटो देखकर कोई पहचान नहीं सकता कि वे किसके हैं। अगर लड़के स्कूल से भाग भी गए थे तो यह कोई सबूत नहीं बन जाता। यह मैं आपसे अपने तौर पर कह रहा हूँ। इसे अपने तक ही रखिए। अपने वकील से न कहिएगा, क्योंकि अगर इस तरह की कोई बात उन्होंने पेश की तो हमें जवाब देना पड़ेगा। इसलिए मामले को पड़ा रहने दीजिए। हेडमास्टर के बयान से शक पैदा हो सकता है, लेकिन शक की बिना पर सजा नहीं हो सकती। आप समझे? मैंने अगर आपका पैसा लिया है तो आपको धोखा नहीं दिया। लेकिन मैं अपने-आपको भी तो आपके लिए बरबाद नहीं कर सकता। बताइए, मैं कुछ गलत कहता हूँ?"

सरपंच उत्तर नहीं दे सके। उनको सिर झुक गया। वे जैसे किसी दूसरे चिन्तन में पड़ गए थे।

पी. आई. ने हँसकर कहा, "हेडमास्टर मुझे कुछ सनकी मालूम देता है। मुझे तो उसकी बातें सुन-सुनकर हँसी आ रही थी। मैंने तो पहले भी सुन रखा था इसके बारे में। एक बात मैं आपको बता दूँ, यह आदमी कुछ सिड़ी है और आपका यह रामसिंह तिवाड़ी जो है, उससे इसकी मुलाकात है, वरना और लोग इससे खुश नहीं हैं।"

सरपंच के मस्तिष्क में एक उजाला-सा फैला। उन्होंने कहा, "पी. आई. साहब, अब मेरी समझ में आया। यह हेडमास्टर बड़ा छलिया है। मैं समझता था कि यह बड़े उसूल का आदमी होगा, लेकिन यह तो पार्टीबन्दी का चक्कर है। खैर, आप इन बातों से क्यों परेशान हों? हम देख लेंगे। आप नहीं जानते कि रामसिंह तिवाड़ी आजकल मेरे खिलाफ हो रहा है; लेकिन मेरी भी दिल्ली तक पहुँच है। यह तो वक्त की बात है कि इस वक्त मेरी पूंछ दब गयी है। हेडमास्टर तो खैर एक अदना-सा आदमी है। यह झगड़ा यहाँ खत्म नहीं होगा। मैं इस रामसिंह तेवाड़ी को देखूंगा।" और सहसा उनका स्वर बदल गया और उन्होंने कहा, "कल का नंगा झोलेटोले का भिखमंगा रामसिंह तिवाड़ी, आज नेता बन गया हमारी जान का! पी. आई. साहब, कांग्रेस में ऐसे-ऐसे आदमी घुस आए हैं। आप तब यहाँ नहीं थे शायद, आपको मालूम होगा, यह औरतें भगाता था; बेचता था औरतें। यही इसका पेशा था; और बाद में गाँधी जी की जय बोल-बोलकर अब टेलीफोन घर पर लगाए बैठा है। अब वह वहाँ थोड़े ही रहता है झोलेटोले में; अब तो यहीं रमोना में रहता है।"

पी. आई. को दिलचस्पी हुई। बोला, "मैं जानता तो नहीं, लेकिन आप मेरे अपने आदमी हैं इसलिए आपसे पूछता हूँ, मैंने ऐसा सुना है कि यह औरतों के मामले में कुछ

कच्चा है?”

“कच्चा!” सरपंच ने कहा, “आपको असलियत बता दूँ इस मामले की? वह जो नाइन की लड़की है, निहालकौर, हमारे गाँव की, वह आजकल महू में रहती है अपनी ससुराल में। इस कम्बख्त ने एक बार महू में, जब यह एम. एल. ए. साहब प्यारेरामजी से मिलने गया, वहाँ कहीं वह निहालकौर देख ली। बदचलन तो है ही; उसने कोशिश की उसे हथियाने की। वह इसके हाथ नहीं पड़ी। इसने एम. एल. ए. साहब से घुमा-फिराकर बातें कीं। वे एक भले आदमी हैं। उन्होंने इसको फटकार दिया और कहा—तुम्हें शर्म आनी चाहिए कि तुम गाँधीजी का नाम बदनाम करते हो। उसका नतीजा यह हुआ कि यह उनका दुश्मन हो गया, और चूंकि एम. एल. ए. साहब हमारे ऊपर मेहरबान हैं, इसने हमसे भी दुश्मनी बाँध ली और लड़कों के खिलाफ इस हेडमास्टर को भड़का दिया। यह मुझे आपके जरिए मालूम हुआ है कि उसकी तिवाड़ी से जान-पहचान है। अब सारा मामला मेरी आँखों के सामने साफ हो रहा है। देख रहा हूँ मैं सारी बात। इसने सोचा होगा कि लड़के फंसेंगे तो निहालकौर भी इस सिलसिले में घिरेगी। इसके तो, साहब, गाँव-गाँव में गुण्डे फैले हुए हैं। हर जगह की खबर रखता है कि वहाँ कौन सी लड़की कितनी खूबसूरत है, क्या उम्र है। और इसने सोचा होगा कि निहालकौर फंसेगी तो बिल्ली अगर दूध न पिएगी तो फैलाएगी तो सही ही। काबू में न आई तो बदनाम तो हो ही जाएगी। मगर कम्बख्त ने यह नहीं सोचा कि उसकी हविस की आग में हमारे लड़के जलकर खाक हो जाएँगे।”

पी. आई. को बड़ी दिलचस्पी हुई। किस्से में नमक भी था, मिर्च भी। उसने कहा, “देख लीजिए, ऐसे तो आपके कांग्रेसी हैं और बदनाम हैं हम पुलिसवाले। बताइए, पुलिस ने भी तो निहालकौर से इतनी जिरह की थी, लेकिन मजाल है, उसकी तरफ किसी ने आँख भी उठाई हो।”

सिर हिलाकर सरपंच ने कहा, “ठाकुर गजराजसिंह चरित्र का पक्का है। कुछ भी कह लीजिए, खानदानी आदमी खानदानी ही होता है। लोहे का टुकड़ा कभी पानी पर तैरता नहीं। पी. आई. साहब, यह कांग्रेस की बात मेरी समझ में नहीं आती कि जांत-पांत तोड़ दो, सब एक हो जाओ। अब मैं आपसे पूछता हूँ, यह जो निहालकौर है, नाई की जात, क्या इज़्ज़त थी नाई की? नाइनों की कोई इज्जत होती है? दुनिया-भर के तो बुरे काम ये लोग करते हैं और अब उनको ये हक मिल गए हैं। उन्होंने बगावत शुरू कर दी है। मेरे कानों में तो एक और बात आ रही है कि चमार लोग आडा करना छोड़नेवाले हैं। सुना है, कस्बे के बोर्ड अब यह काम बाहर से व्योपारी बुलाकर ठेकों पर उन्हें देंगे।”

पी. आई. ने कहा, “साहब, आपकी कांग्रेस है, आप जानें। हम तो नौकर हैं। पेट की खातिर सलाम करते हैं और बोल तो कुछ सकते नहीं, इसलिए हम चुप ही रहते हैं। आपकी तरह हमारे पास ज़मीन-जायदाद होती तो हम भी कुछ-न-कुछ नेतागीरी करते।”

सरपंच ने सिर हिलाकर कहा, “आप सुखी हैं, पी. आई. साहब! यह नेतागिरी एक गधे की खाल है। मैं तो इन चीजों के खिलाफ था। लेकिन मैंने देखा कि नये जमाने में काम भी निकालना बहुत मुश्किल था। कोई पूछता ही नहीं था, इसलिए हारकर, मजबूर होकर इसको अख्तियार किया। वरना आप नहीं जानते कि देहात में हम लोगों को एक-एक बात के लिए तरसना पड़ता था। आजादी क्या आई है, कोई किसी की सुनता ही नहीं है। मैंने सोचा कि अगर सीधी उँगली से घी नहीं निकलता तो टेढ़ी करो। लेकिन पी. आई. साहब, आदमी आखिर उँगली को कब तक टेढ़ी किए रखे? मैं तो इस लाइन में कभी आता ही नहीं अगर ठाकुर जवाहरसिंह से पहले मेरी तू-तू, मैं-मैं नहीं होती। वैसे वे भी पहले कांग्रेस के खिलाफ थे, लेकिन मुझे नीचा दिखाने को उन्होंने कांग्रेस में नाम लिखा दिया। जब उनकी ज्यादा कद्र होने लगी तो मैं भी कांग्रेस में चला गया। उन्होंने पहले इस रामसिंह तिवाड़ी का दामन पकड़ने की कोशिश की थी, लेकिन मैंने इसको पटा लिया। अब यह मेरे खिलाफ हो रहा है, तब मैंने जवाहरसिंह को अपना बना लिया है।”

पी. आई. ऊब चुका था।

सरपंच ने कहा, “अच्छी बात है, पर आप ख्याल रखिए। बस, पी. आई. साहब, मैं आपसे और क्या कहूँ! पर मैं इतना लुट चुका हूँ कि अब मेरे टूटने में ज्यादा देर नहीं है, लेकिन फिर भी मैं आप से एक बात कहता हूँ, जो शायद पहले भी मैं आप से कह चुका हूँ कि चंचलसिंह को आप अपने से दूर नहीं पाएँगे। हजार बात हो सकती है, लेकिन चंचलसिंह अहसानफरामोश नहीं है। इसकी परख आपको तब होगी जब केस खत्म हो जाएगा। और सक्सेना साहब, उस दिन भी चंचलसिंह आपको अपना नजर आएगा।”

सक्सेना ने उनका हाथ पकड़कर कहा, “हम भी इन्हीं आसरों पर जीते हैं, सरपंच साहब, हमारा भी यह उसूल है कि दबे हुओं को सताने में ज्यादा मज़ा नहीं आता।”

क्षण-भर दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और फिर आँखों में एक विचित्र-सा भाव आया और चला गया।

बहुत दिन बाद आज चमेली और उम्मेदी की बातचीत हो रही थी। चमेली अपना चर्खा कात रही थी और उम्मेदी बैठी दादी के चरणों के पास अपने हर्ष को प्रकट कर रही थी। उम्मेदी ने कहा, “क्यों जेठी! अब बच्चा कब आवेगा घर?”

दादी बोली, “अरी, तैने नहीं सुना! आज सांझ को चंचलसिंह उन्हें ले आवेगा।”

चमेली ने आँखें उठाकर देखा और कहा, मैंने कब कहा था लाने को! देवर ने कहा था।” वो वार्ड पंच को देवर कहा करती थी।

अस्सी बरस की बुढ़िया कल्पना के प्रांगण में विभोर हो गई। उसने कहा, “इत्ते-इत्ते-से थे पोइया नरम-नरम। देखते-देखते कित्ते बड़े हो गए हैं! अब तो मुझे दिखाई भी कम देता है।”

उम्मेदी ने कहा, “दादी तुम सौ बरस की तो होगी?”

दादी ने हंसकर कहा, "अरी बहू। तुझे मैं इत्ती बूढ़ी लगी हूँ। अरे रे, जमाना बदल गया। अब घी खाने को नहीं मिलता। नहीं तो मेरी माँ नव्बै बरस तक रही थीं और मेरी दादी एक सौ एक बरस की होकर मरी। तब तो हम काम भी खूब करती थीं। मजाल है जो मर्दमान्स के सामने निकल जावें। पर घूंघट में रहकर भी हमारी देह अच्छी बनी रहती थी। क्योँ? क्योंकि मेहनत करती थीं, चक्की चलाती थीं, कुँए से पानी भरकर लाती थीं, खेंचकर। जंगल जाया करती थीं, दिसा-मैदान को। घर-भर को रोटी खिलाकर तब खाती थीं। और अब घर-घर में पम्प लग गए हैं, आटा चक्की पर पिसकर आ जाता है, और घर-घर में लोगों ने टट्टियाँ बना ली हैं। पहले गाँव में बिजार घूमता था, भगवान का वाहन। तब मजाल है जो सुअर घुस जाय, जैसे अब आ जाता है। अब भंगी किसकी परवाह करते हैं! उल्टे दरखास और देते हैं; जो किसी ने भंगी को रोका तो और अफसर-हाकिम भी अब नीच-कमीनों की तरफ बोलते हैं। बहू, जमाना कैसा बिगड़ गया? तब मल्का बिक्टोरिया का राज था। अंग्रेजों के मारे धरती कांपती थी। पर हमारे पुरखों ने अंग्रेजों से बड़ी टक्कर ली थी। कमिसनर था; वह कहता था कि ठाकुर रूपसिंह बड़ा दबंग आदमी है। ददिया ससुर थे हमारे।"

बुढ़िया अपने ही युग की कल्पना करती थी, उन्हीं में जीती थी। वृद्धों का स्वभाव ही ऐसा होता है कि अपने ज़माने की बातें उन्हें अच्छी लगती हैं और नई बातों का विकास वे अपने भीतर आत्मसात् नहीं कर पाते।

उम्मेदी ने फिर चमेली से कहा, "तो जेठी! आज शाम को दोनों आ जावेंगे?"

चमेली ने कहा, "हाँ।"

उम्मेदी घर चली गई। घर पहुँचते ही उसने देखा—कजौरीसिंह और माधोसिंह ने प्रवेश दिया। इतने दिन बाद बेटे को देखकर उम्मेदी की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई और माधोसिंह उसे देखकर फफक-फफककर उसकी गोद में सिर छिपाकर रोने लगा।

"तरस-तरस गई मैं तुझे देखने के लिए," उम्मेदी ने कहा, "पर ये कहते थे कि अभी ठहर, अभी ठहर। अभी नहीं, गाँव में अभी आना ठीक नहीं है लड़कों का।" उसने लड़के की बलैयाँ लीं और कहा, "बेटा, जब मैं सुनती थी कि पुलिस वाले तुझे मार रहे थे, तब मेरा जी करता था कि गला घोंटकर मर जाऊँ। तूने देखा नहीं अपने बाप को, कैसी सूरत उतर गई है! काहे को किया तूने ऐसा! सच बता दे मुझे! मैं तेरी माँ हूँ, तूने कतल किया था?"

माधो ने कहा, "नहीं अम्मां।"

"सो ही तो मैं कहूँ, मेरा बेटा ऐसा काम नहीं कर सकता।" कजौरीसिंह ने खांसा और पौरी में से कहा, "यह चंचलसिंह भी अजीब आदमी है!"

"क्यों?" उम्मेदी ने पूछा।

"मैंने कहा—चलें, लड़कों को लेते आएँ, तो बोला मुझसे—कौन से लड़के? मैंने कहा—अपने लड़के और कौन, जिनके पीछे यह सब हो रहा है। आखिर इतने दिन हो गए,

अब इन्हें घर तो ले चलना चाहिए। देखकर बोला मुझसे—तो कजौरीसिंह, तुम इन दोनों को लेकर चलो, मैं आता हूँ। मैंने कहा—तुम भी चलो; तो कहने लगा कि मुझे ज़रा काम है। मैंने कहा—कौन सा काम है? तो बोला—मुझे वकील से मिलना है। मैंने कहा—अरे भाई, अभी तो वकील से मिलकर आए हैं; तो बोला—मैं उस लड़के के साथ नहीं जाऊँगा।"

माधो ने सुना तो कांप गया, बोला नहीं।

उम्मेदी ने परसाद बोल रखा था। आज उसके मन की पूरी होने को आई थी। उसने अपने हारी रतन को बाज़ार भेज दिया ताकि वह कुछ मीठा खरीद लाए। माधो की जान में जान लौटी। अब वह पुलिस के अत्याचारों का वर्णन करने लगा। उम्मेदी सुनती जाती थी और रोती जाती थी और कोसती जाती थी, "आग लगे उनके मुँह पर, सत्यानास जाए उनका, कीड़े पड़ें उनके मुँह में। लोथ उठाने वाला कोई न रह जाए, बंस नास हो जाए," और कजौरीसिंह बाहर बैठा हुक्का गुड़गुड़ाता रहा। आज बहुत दिन बाद उसे लग रहा था कि उसका घोंसला फिर से आबाद हो गया था। अब उसे याद आने लगा—कितने भयंकर संकट ने उसको घेर लिया था! गाँवों की दुश्मनियाँ, जान-पहचानवालों के व्यंग्य और पुलिस की रिश्वतें याद कर-करके उसके रोंगटे खड़े होने लगे। उसने मन ही मन हिसाब लगाया कि वह कंगाल हो गया था, यहाँ तक कि वह खुद सरपंच का कर्ज़दार था। उसने चारों ओर निगाह फिराकर देखा, फिर कल्पना की। क्या रहा था उसके पास? कुछ भी नहीं। चार बैल थे, तीन भैंसें थीं, दो गैयाँ और थोड़े-से खेत थे। जमा-पूँजी सब निकल चुकी थी, लेकिन उसने मन ही मन भगवान को हाथ जोड़ा और कहा, 'इस बार इस संकट से उबार लो भगवान, तो फिर मैं कभी तुम्हें नहीं भूलूँगा।' दूर कहीं मन्दिर में घण्टे बज रहे थे, झालर का झनझनाता हुआ स्वर एक लय और गति के साथ उस नीरव वातावरण में अपना स्पर्श छोड़े जा रहा था। कजौरीसिंह को याद आया, वह कितनी शान्ति से रहता था! सुबह खेत पर जाना, शाम को आना, बीच-बीच में छोटा-मोटा चुनाव; लेकिन जीवन में कोई हाहाकार नहीं था, फौलादी जकड़ नहीं थी। सब-कुछ नियम से बँधा चल रहा था और तब जैसे किसी भूत ने उसे पकड़ लिया, नींद हराम हो गई। जागने पर अपने ऊपर शर्म आने लगी। ऐसा हो गया कि जिन्दगी की जगह मौत अच्छी लगने लगी और ममता अपने हज़ार-हज़ार हाथ उठाकर दिल के अन्दर पुकारने लगी कि कजौरीसिंह, तेरा एक ही बेटा है; तू उसके लिए अगर कुछ न कर सका तो करेगा भी किसके लिए? पैसा नहीं था। जब कजौरीसिंह को ज्ञात हुआ कि उसके पुत्र ने बलात्कार किया था, तब उसके मन में उसके प्रति घृणा नहीं हुई थी? पर वह यह भी निश्चय नहीं कर पाया था कि सचमुच उस लड़की ही ने तो उसके पुत्र को नहीं उकसाया था, इसका क्या प्रमाण है? लड़के तो नादान होते ही हैं। कजौरीसिंह और उसकी पत्नी का तर्क यही था कि लड़का नादान था। चढ़ती उम्र में उससे गलती हो जाना कोई बड़ी बात न थी; लेकिन स्त्री को उसे उकसाना नहीं चाहिए था,

क्योंकि पुरुष स्त्री के आकर्षण में बहुत जल्दी बह जाता है। उम्मेदी का यही तर्क था कि डोरा डालने वालियाँ ही लड़कों को बिगाड़ती हैं; और कजौरीसिंह ने जिन्दगी की ठोकरें खाकर यह सोच लिया था कि मनुष्य इस संसार में आता है और चला जाता है। इस संसार में वह अपने पाप-पुण्य करता है; लेकिन असमर्थ व्यक्ति के लिए ही सारे बंधन और आडम्बर यह समाज उपस्थित किया करता है। आज वह सरपंच के पीछे था, सरपंच ने उसे अपने अदम्य विश्वास से पराजित कर लिया था। कजौरीसिंह देखता था कि रुपया एक बहुत बड़ी चीज थी और आज भी यही सोच रहा था कि अगर लड़के छूट गये तो वह रुपये का इन्तज़ाम किस-किस तरीके से करेगा। यह 'अगर' एक बहुत बड़ी गलती थी तो वह उसकी पूरी वास्तविकता के बारे में सोचना नहीं चाहता था। जब यह विचार आया कि यह तो मुकदमा है, इसमें सब-कुछ हो सकता है, तब उसे लगा कि उसकी देह पर कांटे निकल आए थे, गला सूख-सा गया था। अगर कहीं हार गए तो? यह विचार ही एक भयंकर विचार था। यह विचार ही उसके जीवन को पराजित कर देने वाला विचार था। यह विचार ही उसकी कल्पनाओं का अन्त कर देने में समर्थ था और वह यह था कि कहीं ये लोग कातिल साबित न हो जाएँ, और तब कजौरीसिंह फिर सोचने लगा—किसी तरह से उसका बच्चा बच जाए, किसी तरह से उसके ऊपर से यह संकट टल जाए।

रात अब घनी हो चली थी। गाँव के कच्चे और पक्के घर शान्ति में डूब गए थे। कहीं-कहीं कुत्तों के भूंकने की आवाज सुनाई देती और फिर सड़क पर से कोई बूढ़ा भले ही चिलम पीते-पीते खांसने लग जाता, लेकिन कजौरीसिंह पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। दूर कहीं एक मोर बोला और फिर उस मोर की आवाज़ सुनकर एक के बाद एक अनेक मोर बोलने लगे। कजौरीसिंह को वह आवाज़ अच्छी नहीं लगी; लेकिन मोर कजौरीसिंह की इच्छा से नहीं बोल रहे थे।

मनुष्य की इच्छा सदा पूरी नहीं होती और इसीलिए वह अपने चारों ओर की हर वस्तु को देखकर एक तृषा से व्याकुल हो जाया करता है। यह बात नरायन के जीवन पर लागू होती थी। उसके सामने एक और पक्ष भी था। माधो को तो उसका पिता बुलाकर ले गया था, लेकिन उसको बुलाने के लिए कोई नहीं आया था। फिर उसे ध्यान आया कि आखिर यह अपने बाप के ही घर तो जा रहा था। उस समय अंधेरा छाया हुआ था। दादी ने कहा, "बहू!"

"क्या है माँजी, पानी पिलाऊं?"

"अरे, पानी नहीं, बहू, मेरा बच्चा आया या नहीं?"

चमेली ने अपने नीचे का होंठ अपने दाँतों के बीच में दबा लिया और कहा, "नहीं आया।"

"तो क्या चंचलसिंह अपने बेटे को घर नहीं लाएगा?"

चमेली ने उत्तर नहीं दिया।

बूढ़ी फिर कहने लगी, “अरे, मैंने उस बच्चे को बड़े लाड़-दुलार से पाला है। वह मेरे पास से चला गया है। क्या मैं अब उसे बिना देखे ही मर जाऊँगी?”

चमेली का गला जैसे रुंध गया। उत्तर देना चाहकर भी कुछ नहीं कह सकी। इसी समय उसने देखा, द्वार पर नरायन खड़ा था। चमेली ने उसे देखा और कहा, “कौन?”

सूखे मुँह से नरायन ने भीतर प्रवेश किया और दौड़कर दादी के पांवों में लिपट गया।

बूढ़ी ने कहा, “अरे, कौन है, कौन?”

नरायन बोला नहीं। दादी के घुटनों पर सिर गड़ाए रहा।

“नरायन!” बुढ़िया ने कहा, और वह बार-बार उसके सिर को छूने लगी, “अरे, मेरा बेटा आ गया और मेरे जीवन की चिन्ता मिट गई। आज मेरा फिर से जनम हो गया। मेरा दुलारा, मेरी आँखों का तारा आ गया। बेटा नरायन! अरे और तो सब मुझे भूल गए; तू भी मुझे भूल गया? बेटा, मुझे सपने में जम के दूत दिखाई देते थे और मैं कहती थी और ठहर जाओ, थोड़े और ठहर जाओ, एक बार मेरा नाती आ जाए, उसे मैं देख लूँ एक बार। मैं उसे अपने हाथ से खाना परोस कर खिला दूँ, फिर भले ही तुम मुझे ले जाओ।” बुढ़िया का स्वर और भी अधिक कांपने लगा। उसने कहा, “बहू! बच्चा इतने दिन बाद लौटकर आया है, तू इसे कुछ खिलाएगी-पिलाएगी नहीं?”

चमेली ने उत्तर दिया, “बच्चा आ तो गया है, लेकिन पहले मुझे यह विश्वास हो जाए कि उसने पाप नहीं किया तो मैं उसे अपना बच्चा मान लूँ, और अगर इसी ने वह सब पाप किया है, तो माँजी! दुनिया इसको भला कह ले, अपने में मिला ले, लेकिन मैं कैसे मानूँगी?”

बूढ़ी ने कहा, “नहीं बहू! अपनों से नहीं रूठा करते। अरे, यह बच्चा है, इसकी सात भूल तो माफ कर देनी चाहिए। यह तो बता, तू जो बदला ले रही है, तो तू किससे बदला ले रही है? अब क्या यह तेरे पेट का जाया नहीं है?”

चमेली ने कहा, “है तो यह मेरा ही बेटा, माँजी! लेकिन इस बेटे ने मुझे कितना दुःख दिया है, यह मैं तुम्हें कैसे बता सकती हूँ!”

नरायन सिर झुकाकर बैठा रहा। तभी द्वार पर सरपंच चंचलसिंह दिखाई दिए। चंचलसिंह को देखने पर ऐसा लगता था कि आँखें जैसे अंगारा बन गई थीं। आज उन्हें बिना सोए तीन रातें हो गईं थीं। चमेली ने देखा। हुक्का भर कर ले आई और उसने कहा, “तुम्हारा बेटा आ गया है।”

बूढ़ी ने पूछा, “कौन है?”

चमेली ने उत्तर दिया, “तुम्हारे बेटे हैं?”

“कौन बेटा चंचल?”

“हाँ अम्माँ!”

“आ गया तू, बेटा! अब इसके हाथ पीले कर दे, इस बेटे के।”

चंचलसिंह ने चिढ़कर कहा, “हाथ पीले कर दूँ; और अगर यह फांसी के तख्ते पर चढ़ गया तो?”

बुढ़िया ने कहा, “क्या बकता है रे तू चंचल! अभी भी तेरी चंचलता नहीं गई!”

सरपंच का कठोर हास्य बिखर गया। उन्होंने फिर कहा, “माँ, तू दुनिया को नहीं जानती; तू बाहर की दुनिया के बारे में कुछ नहीं जानती। अभी मुकदमा खत्म नहीं हुआ है। अभी तो तेरा लाड़ला फांसी पर भी चढ़ सकता है। यह बरी नहीं हुआ है। अभी तो इसका मुकदमा चल ही रहा है। यह तो जमानत पर छूटा हुआ है, लेकिन मैं बिलकुल बेफिक्र हूँ। मैंने मंगू और श्यौपाल से इनकी ज़मानतें करवाई हैं, और अगर यह भाग भी गया, तो भी मुझे परवाह नहीं। मैं यह समझ लूँगा कि जो ज़मीन मेरे मरने के बाद इसको मिलती, वह बिक जाएगी, और इसका हिस्सा इस तरीके से चुक जाएगा?”

चमेली ने कहा, “क्यों रे, तू भाग जाएगा?”

नरायन का साहस नहीं हुआ कि सिर उठाकर कुछ कहे। सरपंच ने घृणा से कहा, “क्या पूछ रही हो? क्यों नहीं भाग सकता यह? ऐसा आदमी क्या नहीं कर सकता? तुम यह उम्मीद करती हो कि इसमें कुछ शराफत बाकी है? यह तो मैं समझता हूँ कि अगर मौका पड़ जाए तो तुमको भी कत्ल कर सकता है, तुम तो इसकी माँ हो; और मुझे भी आसानी से कत्ल कर सकता है।”

नरायन जैसे आर्त स्वर में चिल्ला उठा, “दादा!”

सरपंच ने कहा, “खामोश! बेशर्म! कुत्ते! तुझे शर्म नहीं आती? मेरे सामने अपनी भलमनसाहत दिखाने की कोशिश कर रहा है? मुझे इस बात का अफसोस नहीं है कि मैं लुट गया हूँ, मुझे इस बात का अफसोस नहीं है कि अब मेरे पास पैसा नहीं है, न मुझे इस बात का डर है कि तू मुझे बरबाद कर देगा; मुझको एक और बात का डर है कि तू जब इस घर में लौटकर आएगा तो मेरे छोटे बच्चों की ज़िन्दगी कितने बड़े खतरे में पड़ जाएगी! तुझ जैसे बदचलन और कमीने आदमी मैंने आज तक नहीं देखे। और यह कितने शर्म की बात है कि तू मेरा बेटा कहलाता है! अगर मैं तेरी माँ को अच्छी तरह से नहीं जानता होता, तो मुझे यह कहते हुए कुछ भी हिचक नहीं होती कि तू मेरी औलाद नहीं; और मुझे ताज्जुब इस बात का है कि तू ऐसी माँ का होकर भी ऐसा बना! और अब मेरे सामने अपनी शराफत दिखाने की कोशिश करता है?”

दादी ने कहा, “चंचलसिंह, माफ कर। लड़कपन पर ध्यान मत दे।”

“तू चुप रह अम्माँ!” सरपंच ने कहा, “यह तेरा ही बिगाड़ा हुआ है, तूने इसका सत्यानास कर दिया!”

बुढ़िया सहम गई।

“मैं इसको घर में नहीं रहने दूँगा।” सरपंच ने कहा, “सुन ले लड़के! मैं तुझे छुड़ाने की कोशिश इसलिए नहीं कर रहा हूँ कि मुझे तुझसे कोई मोहब्बत बाकी है। मैं तो यह

पसन्द करूँगा कि तू किसी कुएँ में कूद जाए और अपनी जान दे दे। लेकिन मैं जानता हूँ कि तू इतना हयादार नहीं। इस मुकदमे के बाद मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरी आँखों के सामने से चला जा; और अगर तू नहीं गया, तो मैं कहीं चला जाऊँगा। मैं तेरे साथ रहना पसन्द नहीं कर सकता। किसलिए, किस भरोसे पर मैं तेरे साथ रहूँगा? तू न सिर्फ बदचलन है, बल्कि खूनी भी है।"

नरायन ने मुँह खोलने की कोशिश की।

चंचलसिंह ने फिर कहा, "खबरदार, जवाब देने की कोशिश मत कर! यह मत समझ कि मैं तेरी चिकनी-चुपड़ी बातों में बहक जाऊँगा। मैं खूब जानता हूँ तुझे! तू अव्वल दर्जे का ज़लील, कमीना, कुत्ता और नीच है।"

चंचलसिंह बाहर आकर चारपाई पर बैठ गए। नरायन वहीं बैठा रहा। उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा रहा था। वह नहीं सोच पा रहा था कि अब वह क्या करे। चमेली बाहर चलने लगी।

नरायन ने कहा, "अम्मा!"

"क्या है चमेली ने ठिठककर पूछा।

दादी ने कहा, "अरी बहू! तू तो ऐसे न बोल। तेरा तो यह कोख का जाया है। हज़ार पाप किए इसने, लेकिन आखिर तैने तो इसे ढोया था, कि तेरे दिल में भी इतनी ममता नहीं कि इसको माफ कर सके?"

चमेली ने कहा, "माँजी! इस घर का मालिक कौन है? तुम्हारे बेटे ना? मैं कौन हूँ जो उनके काम में अड़ंगा डालूँ? मेरे आदमी ने कभी ऐसा काम नही किया। मेरे बाप ने ऐसा काम नहीं किया था; और जहाँ तक मुझे दोनों खानदानों की याद है, ऐसा किसी ने नहीं किया। मेरे चाचा ने एक रखैल रखी ज़रूर थी, लेकिन उसका कत्ल नहीं किया था; ज़िन्दगी-भर निभाई थी। लेकिन चाचा की बात दूर थी। उनका ब्याह नहीं होता था। न होने का कारण क्या था कि वे सरकारी नौकर थे और ब्याह की उम्र उनके इधर-उधर के तबादलों में निकल गई थी। जिस लड़के ने अपने बाप को अधमरा कर दिया, उसे मैं क्या प्यार दूँगी! अरे, इसने मेरी कोख को लजाया है। इस कजूरे का मैं करूँगी भी क्या! मैंने तो पहले दिन इसके बाप से कह दिया था कि क्यों इसके पीछे इतना पैसा बर्बाद कर रहे हो? हमारे और भी तो औलाद है। और अगर उस ज़ालिम को तुम छुड़ा भी लाओगे, तो भी वह नहीं बदलेगा, क्योंकि वह आदमी नहीं, कोई राक्षस है। मेरे पास इसके लिए दुलार नहीं है माँजी। इससे मैं कैसे प्यार कर सकती हूँ।" यह कहते-कहते चमेली ने अपनी धोती के छोर से अपनी आँखें पोंछ लीं और कहा, "इसने हमारी नींदें बिगाड़ दीं। इसने हमको कहीं का नहीं रखा माँजी। गाँव की औरतें कहती हैं कि यह है उस नरायन की माँ। मैं यही नहीं समझती कि मैं अभी तक मर क्यों नहीं गई। बहू घर में आती है, लोग उसे आस से लाते हैं कि उसके औलाद होगी, हमारा घर बढ़ेगा, फलेगा-फूलेगा। मैं जिस घर में आई, वहाँ दूधो

नहाई, पूतों फली। लेकिन किसलिए? इसलिए कि घर घर था, एक-दूसरे को हम प्यार करते थे। वहाँ ऐसा कांटा तो कोई नहीं था! मैं तो जब सोचती हूँ कि एक मेरा बेटा ऐसा निकला, तो मेरी समझ में ही नहीं आता कि मैं क्या करूँ! माँजी, मेरा बेटा एक नाइन की छोरी से, हरजाई से, नाता जोड़ेगा; मेरा बेटा ऐसी औरत से नाता जोड़ेगा जिसके एक साथ दो-दो यार थे; मेरा बेटा एक बेकसूर पड़ोसी की बच्ची को इस तरह रौंद जाएगा जैसे किसी फूल को, और उसका कत्ल कर देगा! मैंने जब बचपन में इसको छाती का दूध पिलाया था तो क्या उसका यह मोल था! अरे, तुझे मैंने पैदा होते ही गला घोंटकर क्यों न मार दिया! मैं तो कहती हूँ कि इसका बाप अगर यह कह दे कि यह उसका बच्चा नहीं है तो कम से कम मेरी आत्मा को एक संतोष तो हो जाएगा कि इसकी वजह से इसका बाप बदनाम तो न होगा। मैं सारी बदनामी झेलने को तैयार हूँ, लेकिन मैं जिस घर में आई, उसकी बदनामी तो नहीं होगी। लेकिन मैं जानती हूँ कि इसके बाप ऐसा नहीं कर सकते। पर यह तो सोचो माँजी! अगर वे कह भी दें कि यह मेरा नहीं है, तो मैं कैसे मना कर सकती हूँ कि यह मेरा नहीं है! अरे, कोई आकर मेरे पेट को आरी से काट डाले, जिसने ऐसे कुल-कलंकी को ढोया था! नहीं माँजी, मैं नहीं सुन सकती! मैं इस सबको नहीं देख सकती!” चमेली दौड़कर भीतर चली गई।

नरायन घुटनों में मुँह छिपाए बैठा रहा। दादी ने कहा, “नरायन!”

उत्तर नहीं आया।

“अरे, सुनता नहीं!” बूढ़ी ने रुंधे हुए कंठ से कहा।

नरायन के रोने की हल्की आवाज़ आई।

दादी ने कहा, "सब अपने-अपने घमंड में मरे जाते हैं। अरे, बच्चा है! तुझसे भूल हो गई। लेकिन कैसी भूल बेटा। तू तो खूनी बन गया। तू नहीं जानता कि जब से तू गया है, तब से मैं एक रात भी नहीं सोई। मैं सुनती थी कि तू पिटा है, तो मुझे लगता था कि मेरे रोयें-रोयें में आग-सी लग गई है। पर उस सबसे क्या फायदा! तू चला गया। मैं रोती रही। तू यह मत समझ कि तेरी माँ और तेरा बाप तुझे नहीं चाहते। बहुत प्यार करते हैं; तभी तो तुझसे घिन हो गई है, तेरे काम देखकर। तू जानता है, माँ-बाप को जब बहुत दु:ख होता है, तब वे खुद इस दुनिया से चले जाना चाहते हैं। आ, इधर आ।"

नरायन ने कहा, "नहीं दादी, मुझे मत छुओ। मैंने पाप किया है, मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। मैं यहाँ नहीं रहूँगा। मैं इस लायक नहीं हूँ कि मैं इस घर की रोटी खाऊँ। मैं ज़रूर भाग जाता। लेकिन मेरे कारण इतना रुपया खर्च हो गया है। मेरे कारण घर बिगड़ गया है। अब अगर मैं भाग जाऊँगा तो ये रुपये भी जमानत के भरने पड़ेंगे दादा को। अब मैं नहीं जाऊँगा। जब यह मुकदमा हो जाएगा तब तुम सुन लेना कि मेरा नरायन इस दुनिया में नहीं रहा।"

"क्या मतलब!" दादी ने चौंककर पूछा, "क्या तू मर जाएगा?"

"नहीं दादी। मैं मर कर क्या करूँगा? भूत बन जाऊँगा। हरएक की अपनी उम्र लिखी है। उससे पहले कैसे मर जाऊँगा! पर हाँ, इस दुनिया के लिए तो मर ही जाऊँगा, लोग मेरा नाम भूल जाएँगे।"

सरपंच ने करवट बदली, आवाज़-सी कान में भनक पड़ी। उन्होंने वहीं से पुकारकर कहा, "फैकट मत कर! सूअर का बच्चा! पड़ रह कहीं खाट ढूँढ़कर, कुत्ते की तरह। मुझे अभी बहुत काम करने हैं। मेरी चिन्ता मत बढ़ा।"

नरायन ने फिर अपने हाथों में मुँह छिपा लिया और फफकने लगा। आज उसका अहंकार खंडित हो गया था। वह जिस आशा से आया था कि घर जाते ही लोग उसे घेर लेंगे, लोग पुलिस की बुराई करेंगे, लोग अदालत के लोगों की निन्दा करेंगे, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह एक स्वप्न था, और उस स्वप्न का अन्त एकदम घोर भयभीत कर देनेवाला यथार्थ था।

चमेली ने सरपंच से जाकर कहा, "खाना नहीं खाओगे?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"जी नहीं चाहता।"

"इस तरह जी कब तक नहीं चाहेगा? एक दिन तो खाना ही पड़ेगा।"

सरपंच ने धीरे से, "उस दिन खा लूँगा।" फिर कहा, "लेकिन अभी तो मुकदमा बाकी है। पहले मैं उसको देख लूँ, तब देखा जाएगा।"

हेडमास्टर कालीचरन शर्मा ने घंटी बजाई। चपरासी भीतर आया।

"पचौरीजी हैं? ज़रा उनसे कहो, हेडमास्टर साहब सलाम बोलते हैं।"

चपरासी चला गया। जब पचौरीजी आए तब उनके चेहरे पर एक विचित्र भाव था। यह पता नहीं चलता था कि वे इस समय नाराज़ थे या खुश। उन्होंने वर्षों से लड़कों को पढ़ाया था और उन्होंने रजवाड़े के जमाने के स्कूल देखे थे। उनके ज़माने में शुरुआत में तनख्वाह सात रुपये मिलती थी, लेकिन तब वे हर साल एक ऊनी कोट बनवाते थे और उनकी इज़्ज़त हुआ करती थी। धीरे-धीरे उन्होंने तबादले में कई जगह देखी थीं। महू से प्रारम्भ करके वे डूंमरपुर के मिडिल स्कूल में आ गए थे और फिर जहाँगीरपुर के हाईस्कूल में आने के बाद उनका तबादला रमोना हुआ था। एक कला वे जानते थे, तबादले को रोकने की। हेडमास्टर कालीचरन शर्मा एक प्रकार से उनकी प्रकृति के विरुद्ध था।

हेडमास्टर ने कहा, "बैठिए।"

पचौरीजी बैठ गए।

हेडमास्टर ने उनकी ओर घूरते हुए कहा, "पचौरीजी मैं, आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि जो कुछ हो रहा है, उस सबका नतीजा क्या है?"

पचौरीजी देखते रहे, और कहा, "हेडमास्टर साहब, अब मैं कैसे कहूँ!"

"नहीं, नहीं, कहिए।"

पचौरीजी ने फिर कहा, "हेडमास्टर साहब, आप ज्यादा पढ़े-लिखे हैं, लेकिन अगर मैं सच कह दूँगा तो आप बुरा मान जाएँगे; और मैं आपका मातहत हूँ, मुझे आपका अदब करना चाहिए। यह भी बात सच है कि मैं आपसे उम्र में बड़ा हूँ, और आप चूंकि एक शरीफ आदमी हैं, मुझे थोड़ी-सी इज्जत देते है। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं यह भूल जाऊँ कि आप मेरे अफसर हैं।"

हेडमास्टर साहब ने कहा, "यह सब दुरुस्त है, यह सब सत्य है। मैं आपसे जो पूछ रहा हूँ, कृपया उसका उत्तर दीजिए।"

पचौरीजी बोले, "इजाजत हो तो मैं अपने मन की बात साफ-साफ कह दूँ?"

"हाँ, मैं वही चाहता हूँ। मैं यह जानना चहता हूँ कि मेरी जगह पर आप होते तो क्या करते?"

पचौरीजी ने कहा, "हेडमास्टर साहब, यह कल्पना की बात है। मेरे लिए यह कल्पना करना बहुत मुश्किल है कि मैं आपकी जगह होता।" पचौरीजी खाँसे और फिर बोले, "लेकिन मैं इस बात को सोचकर कहता हूँ कि मेरी नजर में आपको इस जगह क्या करना चाहिए था। हेडमास्टर साहब, अगर आप बुरा न मानें, तो मैं साफ कह दूँ कि कचहरी में आपके बयान अच्छे नहीं हुए।"

"क्यों, क्यों? वह पी. आई. अपने को समझता क्या था? अरे, यह महेन्द्रकुमार जौहरी है क्या चीज! मैं हेडमास्टर हूँ। मेरे ऊपर एक जिम्मेदारी है। मैं कोई मुजरिम नहीं हूँ

कि कोई जैसा चाहे सवाल करले मुझसे।”

“आप दुरुस्त फरमाते हैं, हेडमास्टर साहब! लेकिन देखिए न, आपकी एक बात, और लगाए गए उसके दो मतलब। आखिर सोचिए तो सही कि ऐसा कर दिखाना उनके लिए किस तरह से मुमकिन हुआ? कोई बात नहीं थी कि एक बात के दो मतलब लगाए जाते।”

हेडमास्टर ने कहा, “पचौरीजी, मैं इन्सान पर भरोसा करने वाला हूँ। आप एक बुजुर्ग थे, इसलिए मैंने क्लास-टीचर बनाकर अपनी सारी जिम्मेदारी आप पर छोड़ दी थी। लेकिन मुझे यह नहीं मालूम था कि आप इतनी लापरवाही से काम करेंगे!”

हेडमास्टर का बदला हुआ तेवर देखकर पचौरीजी के माथे पर बल पड़ गए लेकिन वे कुछ कह नहीं सके। क्षण-भर में उन्होंने आँखें ऊपर उठाईं और फिर नीचे कर लीं, और फिर कहा, “आप अफसर हैं। सब कुछ कह सकते हैं। मैं मातहत हूँ, मुझे सब कुछ सुनना पड़ेगा। हेडमास्टर साहब, मेरी बहुत थोड़ी सर्विस बाकी रह गई है, इसलिए मैं सोचता हूँ कि थोड़े-से दिन किसी तरह से बीत जाएँ, तो बाकी जीवन मैं भी भजन-पूजन करके गुजार दूँ।”

“यह तो मेरे सवाल का जवाब नहीं हुआ, पचौरीजी!”

“अब मैं आपके सवाल का क्या जवाब दूँ, हेडमास्टर साहब! आप एक फिलॉसफर हैं। आप मुझे बताइए, मेरा कसूर क्या था?”

“आपका कसूर नहीं था? आपके सामने दो लड़के होस्टल से भाग गए, आपने उन दिनों उनकी शिकायत मुझसे की? आपके सामने वे दोनों लड़के लौट आए; आपने महज़ उनकी गैरहाजिरी लगा दी और उनसे यह जवाब तलब नहीं किया कि कहाँ गए थे, क्यों गए थे, किससे पूछकर गए थे! उनकी कोई अर्जी थी, उनके माँ-बाप की कोई लिखावट आपके पास मौजूद थी? आपने सोचा, लड़के हैं। चले गए, आ गए। कहीं मेला-वेला देख आए होंगे। आप चुप हो गए। खैर, यहाँ तक तो ठीक है; लेकिन बाद उसके पुलिस उन लड़कों को पकड़ ले गई और आपने मुझे ठीक टाइम पर खबर नहीं दी। क्या आपको यह पता ही नहीं चला कि वे लड़के कब गिरफ्तार किए गए थे? इसका मतलब यह कि आप चौकसी नहीं करते लड़कों की। और जब वे लड़के लौटकर आए, जमानत के बाद, तो आपने उनको रख लिया अपने यहाँ। उड़ती-उड़ती कुछ खबर मेरे कान में आई थी, लेकिन मैं आपकी बुजुर्गी की इज़्ज़त करता था। मैंने यह सोचा कि पचौरीजी जैसे बुजुर्ग गलती नहीं कर सकते। उसका नतीजा क्या हुआ? स्कूल की बदनामी हुई, मुझे कचहरी में खड़ा होना पड़ा, अदालत में लोगों ने मेरी फजीहत की और सबके सामने यह जाहिर हुआ कि स्कूल में बदइन्तज़ामी है। अगर मैं जाहिर कर दूं कि आपका कितना कसूर है तो आप जानते हैं कि आपके आखिरी दिनों में क्या नतीजा निकलेगा?”

पचौरीजी ने सिर झुकाकर कहा, “आप मालिक हैं। आप जो लिख देंगे, वही मान लिया जाएगा। लेकिन हेडमास्टर साहब, आप मेरे मालिक हैं। अफसर हैं। मैं आपसे क्या कहूँ! आप कहेंगे जो जिम्मेदारी मुझे दी गई थी वह मैंने ठीक से अदा नहीं की। लेकिन हेडमास्टर साहब, मैं बुड्ढा हो गया हूँ, आप ने कभी यह भी सोचा कि मुझे सात घंटे स्कूल में पढ़ाना पड़ता है, और उसके बाद हमें होस्टल का काम देखना पड़ता है। आज महाराज यह खा गया, कल फलाना नौकर यह खा गया, वह सब देखभाल मुझे करनी पड़ती है और अपनी गरीबी को दूर करने के लिए मुझे ट्यूशन भी करनी पड़ती है। मेरे पास इतना वक्त था कहाँ कि मैं इन बातों को अलग-अलग गौर से देखता। उड़ती-सी खबरें आती थीं, उड़ती सी चली जाती थीं। अब आप ही बताइए, मैं क्या करूं?”

हेडमास्टर ने कहा, “ठीक है, मैं आपसे एक्सप्लेनेशन माँगूगा। आप मुझे यही जवाब दे दीजिए। मैं उसे आगे भेज दूंगा—ऊपर। मैं जानता हूँ, एक न एक नेता मेरी ज़रूर शिकायत करेगा। अहलूवालिया मुझसे चिढ़ा बैठा है। ज़रा-सा मौका मिलते ही मुझे दबा बैठेगा। आप यह समझते हैं कि आपके सारे कसूर की जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर ले लूँगा? आपकी ज़िम्मेदारी मैं कैसे उठा लूँगा?”

पचौरी ने हेडमास्टर की आँखों में झांकते हुए कहा, “हेडमास्टर साहब, माफ कीजिए, जिम्मेदारी आपकी थी, मेरी नहीं। हाँ कसूर मेरा ज़रूर था। मैं तो आपका मातहत था। जैसे आप हुकुम देते थे, करता था।”

हेडमास्टर साहब क्षण-भर के लिए क्रोध से तमतमा गए, “अच्छी बात है, मैं देखता हूँ, किसकी जिम्मेदारी थी और किसका कसूर था। आप जा सकते हैं।”

पचौरीजी उठे और चोट खाए हुए सांप की तरह उनके सामने अब नये-नये विचार आने लगे। क्या इतने साल की सर्विस के बाद कल के इस लौंडे की फटकार सुननी थी उन्हें? अरे हेडमास्टर ही तो है! मगर इसे तर्जुबा कहाँ है! इसने देखा क्या है! उनके पढ़ाए हुए ऐसे पचीसों हेडमास्टर हो गए। हमको सलाह देता है। यह क्या जवाब देगा? स्कूल की जिम्मेदारी हेडमास्टर के ऊपर है, पचौरी के ऊपर नहीं। बस, ज्यादा से ज्यादा यह कहेगा कि क्लास-टीचर ने मुझे इन्फार्म नही किया। क्लास-टीचर क्या इन्फार्म करता? लड़के नहीं आए थे, गैरहाज़िरी लगा दी। लड़के आ गए तो हाजिरी तो नहीं लगाई। लड़कों की गैरहाज़िरी की कोई सूचना हेडमास्टर को नहीं दी जाती। फाइन हो जाया करता है अपने कायदे से। पुलिस पकड़ ले गई। मुझे क्या मालूम कि कौन-सी पुलिस पकड़ ले गई। कोई पुलिस ने मुझे सूचना दी थी? होस्टल में से दो लड़के कम हो गए थे। ठीक है, कम हो गये थे। मैं क्या करूं? मैंने तो आपसे मुंहजबानी कह दी थी। आपने गौर ही नहीं किया। मैं क्या लिखकर देता ऐसी छोटी-छोटी बात? आपके सामने वे लड़के होस्टल में लौटकर आए, आपने उनको रहने की इजाजत दे दी जाए। लड़कों ने कोई अर्जी थोड़े ही दे दी थी कि हमें होस्टल में रहने की इजाजत दे दी जाए।

पचौरीजी ने अब मन ही मन प्रसन्नता का अनुभव किया और कहा—साला, मेरे सामने बनता है। इसको छठी का दूध याद करा दूँ—इस सि़द्वान्तवादी को। बनता है अपने-आप कहीं का फिलॉसफर। कौन है? एक हाई स्कूल का हेडमास्टर है। इसकी हैसियत क्या है? मुझे डाँटता है। अरे, मैने बड़ों-बड़ों को उल्लू बना दिया। कल को मैं इन लड़कों कों बरगला दूँ तो स्कूल में हड़ताल हो जाएगी। आने दे पट्ठे वक्त, मैं भी देख लूँगा कि तू मुझसे एक्सप्लेनेशन माँगता है कि मैं तुझसे एक्सप्लेनेशन मँगवाता हूँ। बेवकूफ नहीं तो कहीं का! सीधी-सादी बात थी। सरपंच आया था। एक अर्जी ले लेता। पुराने दस्तखत करके चढ़वा देता। मैं ए.की पी. बना देता। न स्कूल का डिसिप्लिन बिगड़ा हुआ नजर आता। पुलिस झूठी बन जाती। मगर यह तो गाँधीजी का बच्चा है ना! दुनिया-भर में धार बह रही है, यह अकेला चलनी बनकर छानने निकलता है। सब इसमें से होकर निकलेगी पाक-साफ होने के लिए!

पचौरीजी जब बाहर पहुँचे तो माधो सामने दीख पड़ा। उसने झुककर पचौरीजी के पांव छुए और लड्डुओं की, त्रिकूट की सी शक्ल की सफेद-सफेद कागज की पुड़िया उनके सामने बढ़ाई और कहाँ, “मास्साब, आज मैंने प्रसाद बोला था। मैंने सोचा, गुरुजी के चरनों में अर्पित कर दूँ।”

पचौरीजी ने मुस्कराकर कहा, “अरे बेटा, एक दिन तेरी रबड़ी खायी थी तो उसकी मुसीबत तो आज तक झेल रहा हूँ। अब ये बता कि इन लड्डुओं में क्या लाया है?”

“मास्साब आपके चरनों की कसम, इन लड्डुओं में कोई बात नहीं।”

“फिर रबड़ी में कोई बात थी?”

“अरे नहीं मास्साब, उसमें भी कोई बात नहीं। लोग वैसे ही बात करते हैं।”

“अच्छा, तू इसे मेरे कमरे में रख आ। और देख, बकस में रखियो, बाएँ वाले में, क्योंकि बाहर कभी-कभी रख देता हूँ तो बिल्ली चट कर जाती है।”

माधो ने मुस्कराकर कहा, “और, मास्साब, होस्टल में दो टाँगों की बहुत-सी बिल्लियाँ घूमती हैं।”

उसकी बेफिक्र मुस्कराहट को देखकर पचौरीजी को लगा कि इतना सीधा-सादा लड़का ऐसा भयानक पाप नहीं कर सकता। उन्होंने कहा, “माधो, तू मुझे एक बात बता। बोल, तू मुझे अपना क्या समझता है?”

माधो ने कहा, “मास्साब, मैं आपको क्या समझता हूँ, यह मैं आपको कैसे बता सकता हूँ! आप एक अच्छे मास्साब हैं। हम आपको माँ-बाप की तरह प्यार करते हैं। लेकिन इतनी बात जरूर है कि हम लोग आपकी उतनी इज्जत नहीं करते जितनी हमें करनी चाहिए, क्योंकि हम लोग नालायक हैं, हम लोग स्वार्थी हैं। मास्साब, मैं आपसे कैसे कहूँ कि मैं आपको क्या समझता हूँ?”

बूढ़े पचौरीजी की आँखों में एक नरमी-सी आ गई, और कहा, “तू जानता है कि तेरे और नरायन के पीछे आज हैडमास्टर साहब मुझसे नाराज हो गए?”

“क्यों मास्साब, क्यों?”

पचौरीजी ने कहा, “अब मैं तुझे क्या बताऊँ, लड़के! तेरा बाप होता तो मैं उसे समझाता।”

“तो मास्साब, आप इजाजत दें तो मैं वकील साहब के यहाँ चला जाऊँ, महेन्द्रकुमार जौहरी के यहाँ।”

“क्यों?”

“वह खबर पहुँचा देंगे, पिताजी आ जाएँगें।”

“लेकिन वे आकर क्या करेंगे?”

“आप जो हुक्म देंगे।”

“तू अपने बाप को अच्छी तरह से जानता है?”

“मास्साब, मैं आपको कैसे भरोसा दिलाऊँ! आपने हमारी जिन्दगी बचा ली। क्या हम लोग ऐसे अहसानफरामोश हो जाएँगे! ज़रा-सी हमारी गलती हो गई कि अर्जी न दी। वकील साहब तो यह कह रहे थे कि पचौरीजी ने केस को बना दिया, वरना हेडमास्टर साहब ने तो बिगाड़ने में कोई कसर नहीं रखी थी।”

पचौरीजी ने कहा, “लड़के, मैंने बहुत जिन्दगी देखी है! लोग नये जमाने में सिद्धान्तों और उसूलों की बहुत बढ़-बढ़कर बातें किया करते हैं, लेकिन मैंने अपनी जिन्दगी का आधा हिस्सा उस रजवाड़े में गुजारा है जिसमें सिद्धान्त और उसूल नहीं चलते थे, लट्ठ चलते थे, जूते चलते थे। तो हम लोग, जिनको परमात्मा ने उस जमाने में पैदा किया था, क्या हमारी जिन्दगी बेकार चली गई? अरे, यह गवर्नमेंट, यह राज, ये नेता—ये सब आते हैं, चले जाते हैं; और बेटा, हमारे सिर पर खद्दर की टोपी नहीं, लेकिन हमने सैकड़ों लोगों को देशभक्ति का पाठ सिखाकर दिखा दिया। यह जो गरीब मास्टर तुम्हारे सामने खड़ा है, जिसको तुम समझते हो कि एक सूखा-सा मास्टर है, यह कितनी बड़ी हस्ती है देश के लिए! इसको तुम नहीं जानते। अरे, हम नेताओं को बनाते हैं। हम बुनियाद डालते हैं जिस पर इमारत खड़ी होती है। जानते हो, जिस तरह मजदूर पत्थरों को तराशकर बराबर करता है और उनसे राष्ट्रपति-भवन बनते हैं, लेकिन उस मजदूर का नाम कहीं नहीं आता, उसी तरह ये मास्टर भी एक चीज हैं जो राष्ट्र को बनाते हैं। लेकिन क्या है हमारे पास? हमको इस राज ने नंगा छोड़ा है। अरे, मैंने वे दिन देखे हैं जब लोकमान्य तिलक के आन्दोलन उठे थे। उन दिनों कोई नाम तो ले जाता किसी चीज का। हमने लोगों के अन्दर जान फूंक-फूंक कर उस मशाल को जिन्दा रखा था। जिसका नतीजा यह है कि अब इस बूढ़े पचौरी से एक्सप्लेनेशन डिमाण्ड किया जाएगा। लड़के, जो कुछ मैंने किया, तुम्हारे लिए किया। अब

मैं खत्म होने पर आ गया हूँ। मैं जानता हूँ कि तुममें से मेरे लिए कोई नहीं बोलेगा। मुझको स्कूल से निकाल दिया जाएगा। बुढ़ापे में मैं भूखा मरूँगा...।"

माधो ने काटकर कहा, "मास्साब, कैसी बात करते हैं आप! आपका एक इशारा चाहिए। कहिए तो हम होस्टल में आग लगा दें, स्कूल में हड़ताल कर दें। आप क्या बात करते हैं? आप कोई मामूली हस्ती हैं, मास्साब? अगर आप न होते तो इस होस्टल में एक चिड़िया का बच्चा भी नहीं रहता।"

पचौरी ने कहा, "यह सच है?"

"आप, मास्साब, हुक्म देकर देखिए।"

"लेकिन माधो, तुझपर केस चल रहा है। तुझको ऐसी कारगुजारियों में आगे नहीं आना चाहिए।"

"मैं कहाँ आऊँगा, मास्साब! मैं तो ऐसा खेल करा दूँगा कि आपको पता भी नहीं चलेगा।"

पचौरी ने कहा, "तो बेटा, इस हेडमास्टर को दिखा दे कि पचौरी लड़कों के लिए कितनी प्यारी चीज है। आवाज़ उठनी चाहिए कि इसके जुल्मों का खात्मा हो और इस हेडमास्टर का तबादला किया जाए—इसके पहले कि मुझसे यह एक्सप्लेनेशन माँगे।"

माधो ने कहा, "मास्साब, यह हो जाएगा; लेकिन एक मास्साब और हैं वासदेव सहायजी, उन्हें आप समझा देना। उसके बाद हमें कोई चिन्ता नहीं। हम तो एक दिन में भगा दें इस हेडमास्साब को।"

पचौरी ने कहा, "उनको मैं समझा दूँगा।"

पचौरीजी को विश्वास नहीं था, लेकिन अगले दिन स्कूल की हवा बिगड़ गई और स्कूल में से बगावत की सी बू आने लगी। लड़कों ने हड़ताल कर दी। दोपहर के समय कजौरीसिंह ने आकर स्कूल में इस मामले की दरियाफ्त की। महेन्द्रकुमार ने कजौरीसिंह को अपने यहाँ बुलवाया और कहा, "कजौरीसिंह जी, क्या बात है?"

"कुछ नहीं वकील साहब, हेडमास्टर लड़कों को तंग कर रहा है। वह जो आपको मालूम होगा कि चन्दा जमा हुआ था, लड़कों ने स्कूल की बिल्डिंग के लिए दिया था, लेकिन वह सब घपले में पड़ गया और ड्रामा में लोगों ने जो लड़कों के नाम इनाम बोले थे, पब्लिक से आए हुए उस रुपये को लेकर हेडमास्टर खा गया और किसी को कुछ नहीं दिया। और स्कूल में एक अच्छा टीला-सा था, उसको लड़कों से खुदवाया गया; लेकिन डिपार्टमेंट को यह ज़ाहिर किया गया कि उसे मजदूरों से खुदवाया गया था। और उसके रुपये भी वसूल करके खा लिए गए। और मैं आपको क्या बताऊँ! अभी कुर्सियाँ ली गई थीं, तो ऊपर से हुकुम ले आया गया कि टाइम खत्म हो रहा है और बजट बीत जाने को है, इसलिए हमींको कुर्सियाँ खरीद ली जाने की इजाजत दे दी जाए। अब आप देख लीजिए, कुर्सियाँ आए करीब पन्द्रह दिन हुए हैं, आधी टूट भी गईं है। तो यों करके एक-एक करके

अब मैं आपको क्या गिनाऊँ! लड़कों को तो आप जानते हैं कि जोश आता ही है। मैं समझाता हूँ कि जोश में न आओ। भई, अपना वक्त निकालो। तुम्हें क्या मतलब इन बातों से; लेकिन नहीं मानते। देखिए, माधो को मैंने भेजा है कि लड़कों को समझाए।"

वकील साहब के मुख पर एक हल्की-सी मुस्कराहट दिखाई दी और बहुत नादान और मासूम बनकर कहा, "जो जैसा बोता है वैसा पाता है। क्यों कजौरीसिंहजी, आपका क्या ख्याल है?" फिर रुककर वकील साहब ने धीरे-से बात सरकाई, "भई, स्कूल का मामला है। हम तो बीच में बोलते ही नहीं।" कजौरीसिंह मूँछों में मुस्कराया।

शाम तक शहर में खबर हो गई कि हेडमास्टर की सख्तियों से लड़के नाराज थे। कुछ लोग यह भी कहते थे कि जबरदस्ती लड़कों से इतने के दाल-चूरमा के नाम पर पैसे इकट्ठे कर लिए जाते हैं और लड़कों को खिलाया-अनखिलाया करके रकम डकार ली जाती है। एक अफवाह यह भी उड़ी कि तिमाही और छमाही में लड़कों को पास कर देने के लिए हेडमास्टर रुपया ले लेता है। लड़कों पर जोर दिया जाता है कि हमको, घर पर पढ़ने के लिए ट्यूशन पर लगाओ। और साहब, एक-एक लड़के से पच्चीस-पच्चीस रुपये लिए जाते हैं। लूट की कोई हद है! मास्टर पचौरी ज़रा एक सीधा-सादा आदमी है, जो ट्यूशन नहीं करता, इसलिए हेडमास्टर साहब उससे नाराज हैं।

"अजी, आग लगाओ, पानी से बुझाओ। मारो गोली हेडमास्टर को।"

"अजी साहब, यह कहने से काम नहीं चलेगा। मामला जब तक ऊपर नहीं पहुँचेगा, जब तक इन्सपेक्टर की मोटर के आगे धरना नहीं दिया जाएगा, तब तक आगे कोई सुनवाई नहीं होगी।"

"क्या लेंगे साहब, खाते-पीते ऐसे इन्सपेक्टर साहब भी होंगे कोई। आजकल तो जानो, फरेब का जमाना है।"

"एक तार मिनिस्टर को दे देना चाहिए, वरना कौन सुनता है!"

लेकिन नरायन शांत था। दूसरे दिन सुबह ही ठाकुर चंचलसिंह स्कूल के बाहर रुके। उन्हें देखकर माधो करीब आ गया।

"माधो, यह क्या किस्सा है?"

माधो सुनाने लगा, "ताऊजी, हेडमास्टर हम लोगों को चैन नहीं लेने देता। उसने स्कूल में सब लड़कों को परेशान कर रखा है। जुल्म हो रहा है।"

हठात् ठाकुर की दृष्टि माधो के पीछे गई। नरायन खड़ा था। उसके घुंघराले बालों में अब चमक नहीं थी। शायद वह अब तेल नहीं डालता था। पहली बार चंचलसिंह ने देखा कि यह उनका वह लड़का नहीं था जिसको वे देखा करते थे। इसकी आँखों में एक अजीब तरह की गम्भीरता भीतर तक उतरी हुई थी। उस दृष्टि में एक ग्लानि थी, एक वेदना थी और एक ऐसी भावना थी जिसको कि ठाकुर खुद नहीं समझ पाए। और उनके आश्चर्य का

ठिकाना नहीं रहा जब नरायन ने दबी लेकिन भारी-सी आवाज़ में कहा, “दादा, माधो झूठ बोलता है।”

चंचलसिंह को जैसे तार छू गया। उन्होंने कठोर स्वर से कहा, “क्या?” उस स्वर में ऐसी भयंकरता थी कि नरायन एक बार सहम गया। चंचलसिंह ने फिर कहा, “माधो झूठ बोलता है, और सचाई क्या है?”

नरायन ने धीरे से कहा, “सचाई यह है कि हेडमास्टर साहब बहुत अच्छे आदमी हैं। ये सारी शिकायतें मास्टर पचौरी की सिखाई हुई हैं। और यह सारा गबन मास्टर पचौरी ने अपने साथ दो-एक मास्टरों को मिलाकर किया है।”

चंचलसिंह को जैसे गर्म लोहे ने छू लिया। बोले, “सचाई का सबक मुझे देनेवाले लड़के, साँचाधारी बनने चला है! तू याद रख, इस सचाई की डोर को पकड़कर चलते-चलते तू आखिर कहाँ पहुँचेगा? तू समझता है कि मैं नहीं जानता कि माधो झूठ बोल रहा है? मैं जानता हूँ, लेकिन इस वक्त तुम लोगों के छूटने के लिए इस झूठ की ही ज़रूरत है।”

माधो अवाक्-सा पीछे हट गया, नरायन ने झुककर अपने बाप के पांव छूकर कहा, “मुझे इस बात की बहुत खुशी है दादा कि आप सब करते हैं अपनी-अपनी ज़रूरत के लिए। मैंने एक ऐसा पाप किया जिसके लिए जिन्दगी-भर मुझे चैन नहीं मिलेगा। तुमने मुझसे कहा था न कि तुम मेरी सूरत नहीं देखना चाहते थे? लेकिन आज मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं तुमसे आँखें मिलाकर तुम्हारे सामने खड़ा हो सकता हूँ।”

चंचलसिंह पीछे हट गए और कहा, “लेकिन यह सब मैं तेरे लिए कर रहा हूँ।”

“लेकिन,” नरायन ने कहा, “उस दिन आप कह रहे थे, कि यह सब मेरे लिए नहीं, आप अपनी इज़्ज़त के लिए कर रहे थे, दादा!” उसका स्वर उठ गया, “मैं खूनी हूँ, मुझे यह कहते हुए डर नहीं है। मैंने एक लड़की की ज़िन्दगी बिगाड़ी है। मैंने घोर पाप किया है। आपकी चालें और दौलत मुझे फांसी से बचा सकती हैं, लेकिन जितना ही मैं सोचता हूँ, मुझे ऐसा लगता है कि अब मैं आदमी नहीं रहा हूँ। मैं इसे नहीं भूल सकता कि मेरी माँ मुझसे नफरत करने लगी है। इसलिए मेरे लिए उसकी ज्यादा कीमत नहीं है कि मैं छूट जाता हूँ या फांसी पर चढ़ता हूँ। लेकिन आपके बारे में मैं यही सोचता आया हूँ कि मेरा बाप एक बहुत अच्छा आदमी है, वह सरपंच है, वह न्याय करता है। आप मुझे हुक्म दीजिए कि मैं अपने पाप को स्वीकार कर लूँ और एक के बाद एक यह जो पाप हुआ जा रहा है, इसके जाल को रोक दूँ।”

चंचलसिंह को लगा जैसे आँखों के सामने तारे नाचने लगे थे। न जाने क्यों, उनकी आँखों में पानी आने लगा। उन्होंने नरायन का हाथ पकड़कर स्नेह से कहा, “तू मेरा बेटा है, नरायन, तू मेरा बेटा है। आज तक मैं सिर उठाए चलता था, लेकिन आज मेरा सिर झुक गया।”

माधो मूर्ख-सा देखता रहा। पिता और पुत्र का यह विचित्र मिलन था। और सरपंच कहते रहे, “मैं नहीं जानता था कि तुझमें इतनी हिम्मत है। मैं यह मानने को तैयार नहीं हूँ कि यह तेरा खानदान तेरे अन्दर से बोल रहा है। सच्चाई सिर्फ यह है कि परमात्मा बोल रहा है। मुझसे सच कह, तू फांसी से नहीं डरता?”

“बहुत डरता हूँ।” नरायन ने कहा, “लेकिन जब मैं सोता हूँ, तब मुझे दिखाई देता है कि मेरे चारों तरफ काले-काले यमदूत खड़े हैं, और जिस लड़की का मैंने कत्ल किया था, वह मेरे सामने हँस रही है। वह कह रही है कि यहाँ बच जाएगा, लेकिन ऊपर कैसे बचेगा! बाबाजी कहा करते थे कि पाप की सांस समन्दर की तह में बैठकर छोड़ी जाए, तब भी उसका बुलबुला ऊपर फैला करता है। तीन लोकों का रखवाला उसको देखता है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं जब छूट जाऊँगा, तब क्या होगा? क्या आप या माँ या दादी या अड़ोसी-पड़ोसी या मेरी बहिन सब भूल जाएँगे कि मैंने खून किया था? क्या मुझे पहले जैसा दर्जा फिर मिल सकता है? किसी और ने खून किया होता तो उसको फांसी लग चुकी होती, लेकिन मेरी पीठ पर एक जबरदस्त आदमी है, जिसके पास पैसा है। मैं समझता था कि वह एक अच्छा आदमी है; लेकिन देख रहा हूँ कि मैंने सिर्फ एक खून किया था और वह कई खून किए दे रहा है।”

और माधो ने देखा कि चंचलसिंह तेज़ी से लौट गए। माधो घृणा से थूककर स्कूल की तरफ मुड़ गया। नरायन अकेला खड़ा था और कुछ सोच रहा था। माधो फिर लौटा। उसने कहा, “नरायन!”

नरायन जैसे सोते में से जाग उठा। उससे कहा, “कौन?”

“मैं हूँ, माधो।”

नरायन ने उत्तर नहीं दिया। आँख उठाकर देखता रहा। आज उसकी आँखों में अजीब-सी चमक थी—चमक, जो अपने आप बुझ जाना चाहती थी।

“तू पागल हो गया है।” माधो ने कहा।

“पागल!” नरायन ने धीरे से हँसकर कहा, “मैं पागल हो गया हूँ, माधो, या तुम सब पागल हो गए हो? पहले खून किया, फिर देख, काकी के दिल को चीरकर फेंक दिया। दामी काकी की आँखों में मिर्च झोंककर हमने उसके दिल में आग लगा दी। मैं सब जानता हूँ कि क्या-क्या हो रहा है। उसके बाद मेरे बाप ने घर में आग लगा दी और तेरा बाप लुट गया, कर्ज़दार हो गया। दुनिया-भर के लोगों पर दबाव डालकर उनसे झूठ बुलवाया जा रहा है, रिश्वतें दी जा रहीं हैं और अब हम एक बेकसूर हेडमास्टर के खिलाफ आवाज़ उठवा रहे हैं। सिर्फ किसलिए? कि माधो और नरायन, दो कमीने कुत्ते, जिन्होंने एक लड़की की इज्जत बिगाड़ी और इज्जत बिगाड़ने के बाद जिसका कत्ल कर दिया, उन लोगों को ज़िन्दा रखना है। कानून की नज़र से हम बच सकते हैं, माधो, लेकिन दिल में चुभा हुआ कांटा कैसे निकलेगा कि हम खूनी हैं! यह कांटा कैसे निकलेगा कि हम लोगों ने ब्याहता

निहालकौर के साथ व्यभिचार किया था! बाबा कहा करते थे कि ब्याह से पहले ब्रह्मचारी बनकर रहना चाहिए। इस दुनिया के नियम बदल सकते हैं, माधो, लेकिन उस दुनिया के नहीं बदल सकते, जो दिखाई नहीं देती। कत्ल के बाद मैं एक भी रात सोया नहीं हूँ। नींद मुझे बेहोश बना कर आती है, माधो, जब मेरा सिर फटने लगता है। यह सब क्या हो रहा है जो मैं देख रहा हूँ? बाबाजी कहा करते थे कि पाप भयंकर वस्तु होती है। मुझे अपने-आपसे घृणा हो रही है, माधो, ऐसी घृणा कि मैं कह नहीं सकता कि मैं क्या कर रहा हूँ। लेकिन पता नहीं, मैं अपना गला काट क्यों नहीं पाता हूँ? जिन्दा रहकर, इस दुनिया में बचा क्या है कि जिसे मैं भोगूँ! कौन-सा पाप है जो मैं नहीं कर चुका हूँ। परमात्मा ने मुझे अपना कैदी बना लिया है, माधो। इस कानून से ऊपर जो कानून है, जो इस दुनिया को चला रहा है, उसे तू नहीं मानता? क्या तुझे इस बात की लज्जा नहीं आती कि तूने ऐसा काम किया है?"

माधो का सिर क्षण-भर के लिए नीचा हो गया और उसने कहा, "नरायन, अक्ल की बात कर। किसी का कुछ नहीं बिगड़ा है। सिर्फ एक लड़की मर गई। निहालकौर से जो कुछ हमने किया था, वह एक मस्ती थी। निहालकौर शादीशुदा थी। वह खुद सोच सकती थी कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। और अगर उसने जो कुछ किया, वह कर भी लिया तो उसमें उसका कुछ नहीं बिगड़ा और न हमारा कुछ बिगड़ा। वह अपने आदमी के घर रहती है और उसका आदमी उसके साथ चैन से रहता है। कल-परसों वह दो-चार बच्चों की माँ हो जाएगी; और सब भूल जाएँगे। यह कोई ऐसा काम नहीं जो हमने पहली बार किया हो और किसी ने नहीं किया हो। दुनिया सब करती है। रहा यह कि हमने उस लड़की का कत्ल कर दिया; तो कत्ल जान-बूझकर नहीं किया गया। कत्ल एक जोश में हुआ और उसके बाद रिश्वतें दी गईं, लोग पिटे, दबाव डाले गए। ये रोज़ के काम हैं। अगर ये सब काम न होते तो पुलिस, थाना, कचहरी और हुकूमत नहीं चलती। बहुत-से लोगों ने कत्ल किया है और शान से ज़िन्दगी गुज़ारी है। पुराने ज़माने के राज़ा-महाराजा बहुत कत्ल करते थे, लेकिन पाप नहीं लगता था। अपने बचाव के लिए जो कत्ल किया जाता है, उसमें पाप नहीं होता है। इसलिए होश की बात करो। अब थोड़ी देर में कक्कड़ और संग्राम आते होंगे। उस वक्त तुझको यानी नरायन को अगुआ बनाकर भेजा जाएगा। खबर आ चुकी है कि प्यारेरामजी एम. एल. ए. इन्क्वायरी करने आ रहे हैं। हेडमास्टर से मिलेंगे, और तू विद्यार्थियों का अगुआ बनकर सारी बातें उन्हें समझाएगा।"

नरायन ने काटकर कहा, "मैं नहीं जाऊँगा।"

माधो ने कहा, "तो तू बीच में अड़ंगा डालेगा। जानता है, इसका नतीजा क्या होगा? नरायन, तू फांसी के लिए तैयार है? मुझसे कह दे, अगर तू तैयार है तो मैं पुलिस का मुखबिर बनूँगा। मैं अभी जाकर कह देता हूँ थाने में कि हाँ, कत्ल नरायन ने किया है और मेरे सामने।"

नरायन ने सिर झुका लिया। माधो ने कहा, "और जब मरना ही है तो मैं वह गुर जानता हूँ कि बदनामी तुझे मिले और नेकनामी मुझे मिले। ईमान की बात कह दे, नरायन! तूने उसे काटा था न? तू झूठ बोल जाएगा मौके पर कि तूने उसे नहीं काटा था? परमात्मा की बात कह।"

"नहीं, मैं झूठ नहीं बोल सकूँगा।"

"तो फिर बेकार की बात मत कर। अगर तुझमें हिम्मत नहीं है तो अगुआ मत बन। लेकिन याद रख कि अगर तूने किसी तरह की भी गड़बड़ी की तो मैं तो फांसी पर लटकूँगा ही, लेकिन तुझे भी लटकवा दूँगा। और जब तुझसे कचहरी में पूछा जाएगा, ईमान धरकर, तो मेरी आँखों के सामने नहीं कह पाएगा कि तूने कत्ल नहीं किया था।"

माधो चला गया। नरायन वहीं खड़ा रह गया।

प्यारेरामजी, इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स डी. एस. अहलूवालिया से मिले और जब लौटे तो बहुत प्रसन्न थे। इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स को मौका मिल गया था। वह पहले ही से हेडमास्टर के विरुद्ध था। उसने आश्वासन दिया था कि वह पूरी इन्क्वायरी करेगा और इस मामले को छोड़ेगा नहीं।

लेकिन यह कार्य ठीक नहीं हुआ। दानामल दुबला-पतला-सा आदमी इस समय रामसिंह तिवाड़ी का मित्र हो चुका था। उसने कहा, "तिवाड़ीजी, आप तो अपने चुनाव के चक्कर में लग रहे हो, कुछ दीन-दुनिया की भी खबर है?"

"क्यों, क्या हुआ?" तिवाड़ी ने अपने चिकने-चुपड़े मुख पर हाथ फेरते हुए कहा। उसकी मूँछें इस समय और भी उठी हुईं दिखाई देती थीं।

दानामल ने कहा, "सरपंच चंचलसिंह ने प्यारेराम को पकड़ा है और प्यारेराम आपकी काट कर रहा है।"

"अजी, मुझे सब पता है। मैं उड़ती चिड़िया के पर गिनना जानता हूँ।"

दानामल ने कहा, "सो तो है, लेकिन प्यारेराम ने स्कूलों के इन्स्पेक्टर पर दबाव डाला है, इस हेडमास्टर—कालीचरन शर्मा—को तंग करने के लिए। यों कहते हैं—कालीचरन शर्मा तिवाड़ीजी का आदमी है, इसको हम खत्म कर देंगे। आप समझ लीजिए, इस चुनाव पर इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा। अगर कालीचरन मर गया तो लोगों पर यह धाक पड़ जाएगी कि उनकी पार्टी का अफसरों पर ज्यादा असर है।"

तिवाड़ी ने कहा, "मैं राजनीति में इन आपसी मामलात को लाना नहीं चाहता था। चंचलसिंह से राजनीतिक मुठभेड़ है। लेकिन मैं जानता हूँ कि उसका लड़का इस खून में फंस गया है। मैं यह भी जानता हूँ कि वह प्यारेराम की मदद से अपने लड़के को छुड़ा लेना चाहता है।"

“आपने सुना नहीं,” दानामल ने कहा, “लोगों में अफवाह यह है कि प्यारेराम ने मुंसिफ को रिश्वत दी है और यह कत्ल का केस चूंकि अफसरों के लिए रिश्वत का अखाड़ा हो गया है, इन लोगों ने सारे अफसरों और लोगों को मिला लिया है। दरोगा जो है गजराजसिंह, चंचलसिंह से मिला हुआ आदमी है। डी. एस. पी., एस. पी. मिले हुए हैं। यह तहसीलदार कटारा भी शरीफ आदमी नहीं है। ये सब इलेक्शन में गड़बड़ी डालेंगे। मैं आपसे कह देता हूँ पहले ही।”

रामसिंह तिवाड़ी ने कुछ खिसियाते हुए कहा, “अरे, तो कलक्टर तो कहीं नहीं चला गया है। मैं अभी एस. पी. राय को फोन करता हूँ। मिनिस्टर को रिपोर्ट भेजता हूँ। एस. पी. को मिला लिया तो डी. आई. जी. को खबर भिजवाता हूँ। एक काम करो दानामल!”

“हुकुम!”

“देखो, खुद तो सामने आना नहीं। ‘जागते रहो’ अखबार का जो सम्पादक है, चन्द्रप्रकाश घीया, उसके पास सारी खबर लिखकर भेज दो, और अमोलपुर में, ‘किरण’ का सम्पादक है विनोदचन्द्र, उसे भी यह खबर पहुँचा दो, और प्रजा सोशलिस्ट प्रहलादनरायन जो है, उसको यह खबर दे दो कि वह इस मामले पर एक आन्दोलन तो चला दे। हम उसकी पीठ पर रहेंगे। कितना-सा है यह प्यारेराम! मैं इसके खिलाफ भीड़ खड़ी कर दूँ। कालीचरन शर्मा है तो मज़बूत आदमी, लेकिन भई अफसर है उसका इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स। और यह मामला ठीक नहीं है। कालीचरन शर्मा की ज़रूर मदद करनी चाहिए। मैं तो प्यारेराम की ऐसी मिट्टी बिगड़वाऊँ भीड़ में! लेकिन क्या बताऊँ, वह कांग्रेसी है और मैं सामने आना नहीं चाहता। प्रहलादनरायन यह काम कर लेगा। आने दो इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स को। किस खेत की मूली है, मैं भी देख लूँगा। ऊपर से दवाब डलवाऊँगा, तो होश ठिकाने हो जाएगा। बदचलन! साला! क्या बताऊँ, मेरी बन्दूक भरी रहती है, लेकिन गाँधीजी की वजह से चला नहीं पाता।”

दानामल के दाँत बाहर निकल आए।

“आइए, आइए।” चंचलसिंह ने खाट पर उठकर बैठते हुए कहा।

ठाकुर जवाहरसिंह और गोविन्द ने भीतर प्रवेश किया। ठाकुर जवाहरसिंह गम्भीर था और गोविन्द इस समय अत्यन्त विनम्र दिखाई दे रहा था, जैसा कि उसका स्वभाव था। वे लोग मूढ़ों पर बैठ गए।

चंचलसिंह ने कहा, “चाय? ठण्डाई?”

“अजी नहीं।” जवाहरसिंह ने कहा।

“अच्छा, पान मँगा देता हूँ।”

“पान तो मैं खाता नहीं, आप जानते हैं।” जवाहरसिंह ने कहा, “न बीड़ी पीता हूँ। मैंने तो जब कांग्रेस में प्रवेश किया था, तभी इन चीजों को छोड़ दिया था।”

चंचलसिंह ने हँसकर कहा, “ठाकुर साहब, हमसे आदत नहीं छूटती। ऐसे मौके पर बड़ी शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है; मगर क्या करें!”

जवाहरसिंह ने कहा, “इसमें शर्मिन्दगी की क्या बात है! अपने बड़े-बड़े नेता तो शराब भी पीते हैं। देश-देश की रीति है। अब बंगाल के लोग कांग्रेस में आकर कोई मछली खाना थोड़े ही छोड़ देते हैं कि हम निरामिष हैं, हम माँस नहीं खाएँगे। अपने ही नेताओं के घर की औरतें घर में सिर ढककर रहती हैं, और अखबार में आपने देखा होगा कि जब विदेश जाती हैं तो मेमों की तरह सिर उघाड़े डोलती हैं।”

ठाकुर चंचलसिंह हँसे। अपनी बीड़ी सुलगाई।

जवाहरसिंह के पैरों में टायर की काटी हुई चप्पल थी। मोटी धोती, मोटा कुर्ता। मूंछें, सिर के कुछ छितराए हुए बाल, चौड़ा माथा देखने में ही भव्य लगता था। इधर उसकी काफी बदनामी फैल रही थी। लोग कहते थे कि उसने तकावी के रुपये लेकर खा-पी लिए थे और बैलों के लिए रुपये लेकर छत पक्की करवा ली थी। उसके एक भाई के पास थोड़ी-बहुत ज़मीन-जायदाद थी, इसलिए उसी के नाम से फर्जी कार्रवाई कराई थी। लेकिन गाँव में जीवन का संघर्ष ऐसा होता है कि लोग प्रायः इन छोटी बातों पर ध्यान नहीं देते। अपने जीवित रहने के लिए किए जाने वाले संघर्ष के व्यापार को नैतिकता के अधीन माना जाता है और आदमी की परख इन बातों के आधार पर नहीं की जाती।

गोविन्द ने कहा, “आज ठाकुर साहब मिले थे, तो मैंने सोचा कि जरूरी बातों पर विचार पूरी तरह होना ही चाहिए।”

चंचलसिंह ने चौंककर देखा और कहा, “कैसा? बताओ तो क्या हुआ?” उनके मस्तिष्क में यह विचार आया कि कहीं गोविन्द उनके पुत्र के मुकदमे के सम्बन्ध में कोई विचित्र संवाद न लाया हो। वे नहीं चाहते कि वह बात ठाकुर जवाहरसिंह के सामने खुले तौर पर कह दी जाए।

गोविन्द ने कहा, “अब आप तो अपने मामलों में ऐसे डूबे हुए हैं कि आपसे कहते हुए कुछ झिझक होती है। लेकिन हमारा काम तो हुकुम बजाना है। बहादुरसिंह जी ने हमसे कहा था, लेकिन हम नहीं समझ पाए कि आपसे कैसे कहें। मगनसिंहजी, रामपरसादजी मिले थे। उन्होंने भी हमसे पूछा था। हमने कहा—भई, हमारी तो हिम्मत पड़ती नहीं। बड़े आदमियोँ की बात बड़े आदमी जानें। हमने ठाकुर साहब,” यह कहकर गोविन्द ने जवाहरसिंह की ओर इशारा किया, “से कहा और हुजूर, अब आप लोग सलाह मिला लो। आगे परमात्मा जानता है। क्योँ ठाकुर साहब?” यह कह कर फिर गोविन्द ने ठाकुर जवाहरसिंह की ओर देखा।

ठाकुर जवाहरसिंह ने सिर हिलाते हुए गम्भीरता से कहा, “बात यह है, सरपंच साहब, कि मामला बहुत बढ़ गया है। हम समझते कुछ और थे और निकला कुछ और। खैर, आदमी कभी-कभी धोखा खा ही जाता है। जिसने धोखा न खाया हो, वह आदमी कैसा! क्यों सरपंच साहब, क्या गलत कहता हूँ मैं?”

चंचलसिंह ने न समझते हुए कहा, “हाँ, सो तो है ही; मगर हुई तो हुई कैसे, पहले वह भी तो सुनूँ। आप जानते हैं, मैं तो घिरा हुआ सा हूँ। मेरी तो किस्मत कुछ ऐसी पलटी है, ठाकुर साहब, आपसे क्या छिपाऊँ, आप तो घर के से आदमी हैं, न दिन को चैन, न रात को चैन। नाम अलग बदनाम। लोग यह कहते हैं कि कांग्रेस का दबाव डालते हैं, कांग्रेस का दबाव डालते हैं, कांग्रेस ऐसी होती है, कांग्रेस वैसी होती है। आप बताइए, मेरे लड़के के ऊपर खून का इल्ज़ाम लगा हुआ है। आप कहेंगे कि मेरे लड़के ने सचमुच खून किया है या नहीं। भगवान जानता है, मैंने उस पर ज़ोर देकर पूछा। मैंने उसे कसम दिलाई, लेकिन उसने मुझसे कहा कि उसने ऐसा नहीं किया। अब आप मुझे बताइए कि अगर उसने किया भी है तो मैं उससे और किस तरीके से इस बात को निकलवा सकता हूँ? यदि वह मुझसे कह देता है कि उसने किया, तो भी क्या मैं उसपर भरोसा कर सकता हूँ? क्या ऐसा हो सकता है कि एक आदमी किसी का कत्ल करे और अपने मुँह से इकबाल कर ले? मैं धर्म की गांठ में उलझ गया हूँ, ठाकुर साहब। मैं एक बाप भी हूँ। आपके भी औलाद है, आप अब रहने दीजिए, अब मैं आप से क्या कहूँ! आपको क्यों मैं इस मामले में घसीटूँ! मैं ही बहुत हूँ।”

जवाहरसिंह ने कहा, “सो तो ठीक है, लेकिन ठाकुर साहब, बात असल में यह है कि अब चुनाव सिर पर आ रहा है और यह कांग्रेस का आपसी चुनाव, आप जानते हैं, जनरल इलेक्शन से कहीं ज्यादा कठिन होता है। नये नियमों के हिसाब से जो परिवर्तन आया है वह तो आपने देख ही लिया होगा। जनरल इलेक्शन में तो यह है कि आम लोग चुनते हैं। यह मैंने माना कि रुपये बँटते है, लेकिन आखिर कोई कितने रुपये बाँट सकता है? बहुत से बहुत लाखों की बात होती है या हज़ारों की। इसलिए जन-रुचि आखिरकार ऊपर से ही आती है। मैं वैसे मानता हूँ कि जनता की रुचि भेड़-चाल होती है। एक जोश का नारा लगा और सब बोले। लेकिन यह देश पिछड़ा हुआ है, ठाकुर साहब, इसको नहीं माना जा सकता है कि सचमुच यहाँ चुनाव होते हैं। कांग्रेस चुनाव बैलों के लड़ती है, आदमियों के कहाँ लड़ती है? हम लोग खुद बिरादरी को पनपाते हैं। लेकिन न पनपाएँ तो करें तो क्या? कांग्रेस के पास और कोई चारा नहीं। कांग्रेस को जो देश मिला है उस देश की बुनियाद में जाति थी, बिरादरी थी और चुनाव जीतना ही था। गांधीजी के वचन और बात हैं। चुनाव जीतने के लिए दूसरी चालों की ज़रूरत है। भगवान गाँधीजी की आत्मा को शांति दे कि वे यह सब देखने के लिए मौजूद नहीं रहे। मैं सोचता हूँ, सरपंच साहब, कि यह जो कांग्रेस का चुनाव है, आप तो जानते हैं कि कितना कठिन है। इसमें चुने हुए लोग वोट देंगे। इन चुने

हुए लोगों में से दो-एक आदमी ऐसे होंगे जो कि सचमुच सारी बातों को समझते होंगे, वरना बाकी इसमें भीड़ के तौर पर माने जा सकते हैं। मैं आपको बताए देता हूँ कि रामसिंह तिवाड़ी सारी गुंडागर्दी अब के खत्म कर देगा। सुन रहें हैं आप?"

ठाकुर चंचलसिंह ने कहा, "सो कैसे?"

"आपने सुना नहीं? अभी सात दिन हुए, ऐसे चुनाव वहाँ हुए थे—वह क्या नाम है उस जिले का—खैर, मैं अखबार में देखकर बताऊँगा, भूल गया हूँ। अजी, वोटरों को उठाकर बन्द कर लिया कोठरी में। वहीं खाओ, वहीं पीओ। लड्डू खाओ, पूड़ी खाओ, जो मन में आए खाओ। मिठाई, जो तबियत हो माँगो। यहाँ नहीं होगी तो शहर से मँगाकर देंगे। लेकिन बाहर नहीं जा सकते। कैद! भीतर कैदी बने रहो। अब एक-एक आदमी को चुन लिया गया। अच्छा, यह लड़के को मास्टरी चाहता है? दिलवाएँगे। बोल, वोट देगा? धरम उठाओ और याद रखना, निशान लगाकर डालना कागज को। हम बाद में परखेंगे, क्योंकि रिटर्निंग आफीसर हमारा ही आदमी है। हमने तो ऊपर से तमाम इन्तज़ाम करा लिया है। पी. सी. सी. का अपना चीफ जो है, अपना आदमी है। बताओ, किसी के लड़के को नौकरी पर रखाना है, किसी के भाई का तबादला कराना है, क्योंकि वह दूर रहता है और गाँव के पास आना चाहता है। किसी को कुछ नहीं तो पचास रुपये, दो-सौ रुपये। तुझे कम्बल दे दूँगा, कोट बनवा दूँगा।"

जैसे-जैसे ठाकुर जवाहरसिंह कहता जाता, उसके मुख पर लकीर पड़ती जाती, तनाव-सा पड़ता जाता जो अपनी घुटन में छटपटाता।

चंचलसिंह ने कहा, "सब जानता हूँ, सब जानता हूँ, ठाकुर साहब, मैं जानता हूँ। जमाने को मालूम है, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि यह सब चलता क्यों है? आप जानते हैं कि लोग आज कांग्रेस को गन्दा कहते हैं, बुरा कहते हैं, बदमाश कहते हैं। लेकिन बात फिर भी है कि इसके पीछे शहीदों का खून है, इसके पीछे एक गांधी-जैसे महात्मा का बलिदान है। बहुत बड़े-बड़े आदमियों की साधना है। सब, उनके नाम पर गाड़ी चल रही है और सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसकी टक्कर के लोग दूसरी पार्टियों में है नहीं। और भई, कोई पार्टी ही नहीं है। कांग्रेस को उठने में दसियों वर्ष लग गए। इसने अंग्रेजों से टक्कर ली थी। तो जिस नाम की विरासत इसके मेम्बरों को अब मिल रही है, वह तो जिस मुल्क में बाप की जायदाद बेटे को मिलती है, मिलेगी ही। बाकी यह जनसंघी, कम्युनिस्ट वगैरह जो हैं, इन लोगों ने न कोई जनता की सेवा की है, न इनकी कोई तपस्या है। इसलिए इन लोगों पर असर भी नहीं है। और देहातों में तो इनका नाम है भी नहीं। चलता है, जो चल रहा है। वैसे मैं अब के एक बात बता दूँ, अब के इलेक्शन में ज़ोर ब्राह्मणों का है, कांग्रेस इलेक्शन बोर्ड के सर्वेसर्वा—आपको खबर मिल चुकी होगी शायद, उदयनरायन शर्मा हैं। यह मत समझिए, यह जाति बिरादरी नीचे से शुरू हुई है। यह बहुत ऊपर से उतर कर आई है। बल्कि मैं तो कहूँगा कि सबसे बड़े चोटी के नेता होंगे और हैं, वे जब वक्त

पड़ता है, जाति बिरादरी के लोगों को जगह देते हैं। आप देखिए, बड़ी-बड़ी जगह हैं, उन्हींके आदमियों को जाती हैं। जाती हैं, तो...मैंने एक अखबार में पढ़ा भी था। किसी ने पूछा, "तुम ऐसा क्यों करते हो? बिरादरी को पालते हो? उन्होंने कहा, "जिनपर विश्वास होगा, उन्हींको तो जगह देंगे।"

ठाकुर जवाहरसिंह ने कहा, "तो फिर आपका क्या विचार है अब के?"

"मेरा कैसा विचार?"

"आप खड़े नहीं हो रहे हैं?"

"अब आप मेरी परिस्थिति तो जानते ही हैं। मैं कैसे खड़ा हो सकता हूँ?"

"ठाकुर साहब, मत होइए खड़े। लेकिन एक बात आपने सोची है?"

"क्या?"

"खड़े होने से आप कहाँ रहेंगे?"

"यहीं रह लूँगा।"

"नहीं, रहने का मतलब मेरा यह नहीं है।"

"तो?"

"आपकी पोजीशन क्या रहेगी? आदमी का अपना रुतबा होता है। आज आप सरपंच हैं। लोग आपके पीछे डोलते हैं। आपकी बात सुनी जाती है। आपकी कद्र है। और कल आप खड़े नहीं हों तो कोई क्यों तो आने लगा आपके पास!"

सरपंच चंचलसिंह ने जवाहरसिंह की ओर देखकर कहा, "ठाकुर साहब, आप तो पद के पीछे नहीं डोलते, आपकी इज़्ज़त में क्या कमी है?"

मन ही मन जवाहर सिंह इस बात से प्रसन्न हो गया। उसने ज़रा मुस्कराते हुए कहा, "अजी, तो आप भी सरपंच साहब, किसे ले बैठे! और सच तो यह है कि मेरी तो इज्ज़त है क्या आप लोगों के सामने! आप लोग तो बड़े आदमी हैं, मैं तो मामूली आदमी हूँ।"

"अब देखिए ठाकुर साहब," सरपंच ने कहा, "अब आप हमसे तकल्लुफ मत करिए। आदमी अपनी पोजीशन की अपने मुँह से नहीं कहता। वह तो अपने-आप बोलती है। आप चल रहे हैं, गाँववाले यह जानते हैं कि कौन आ रहा है। आदमी का रुतबा उसके चेहरे से टपकता है। क्यों गोविन्द, क्या ख्याल है तुम्हारा?"

"जी हुज़ूर, मेरा क्या ख्याल है! जो आप लोगों का ख्याल है, बड़े आदमियों का, वही मेरा ख्याल है। मैं तो पीछे लगनेवाले आदमियों में से हूँ। अपना काम सोचने का थोड़े ही है, हुकम पर छातियाँ अड़ाने का है। मोहरा आप चलाइए, हम तो पिटने वालों में हैं।"

"सुना आपने, ठाकुर साहब!" सरपंच साहब बोले, "क्या कहता है लड़का?"

"अरे, बड़ा शैतान है।" ठाकुर जवाहरसिंह ने कहा, "तो आप तय करिए।" ठाकुर जवाहरसिंह ने अपना रुख मोड़कर कहा, "आपको खड़ा होना ही है, हम तो यह जानते हैं। बहादुरसिंहजी आपकी तरफ हैं। प्यारेरामजी भी आपकी तरफ हैं। और आपको एक खबर

दूं, वह साधु-समाज का," धीरे से झुककर ठाकुर ने कहा, "भैरवानन्द भी आपकी तरफ है। हम जानते हैं, देहात में इन साधुओं का थोड़ा-सा असर अच्छा पड़ता है।"

ठाकुर चंचलसिंह ने कहा, "कौन? कौन भैरवानन्द, अरे, वही लौंडा-सा जो गाँव में घूमा करता है? वह तो बड़ा बदमाश मालूम देता है मुझे। मैंने सुना है, घरबार छोड़कर भाग आया है। उसका बाप उसे ढूंढ़ा करता है। आया भी था, लेकिन उस वक्त यह जाकर मरघटों में बैठ गया। वैसे मैंने सुना था कि किसी काछी-वाछी की लौंडिया पर डोरे डालने की कोशिश की थी।"

"अरे, उसे छोड़िए।" गोविन्द ने कहा, "इन बातों से हमें क्या लेना-देना है? प्रचार करता है आपका, करने दीजिए। आप किस-किसका चरित्तर ठीक करते फिरोगे!"

ठाकुर जवाहरसिंह ने मुस्कराकर कहा, "इलेक्शन में सब-कुछ करना पड़ता है, ठाकुर साहब! और फिर आप तो लड़ चुके हैं। अब आप वचन दीजिए कि आप खड़े हो रहे हैं, ताकि आपकी ओर से सारा ज़ोर लगा दिया जाए; क्योंकि आदमी हमें मौके का चाहिए। आप समझ लीजिए कि तिवाड़ी से कड़ी टक्कर है।" और फिर जवाहरसिंह ने घृणा से कहा, "आप यह नहीं जानते, यह झोलेटोले का बन्दूकधारी, औरत-भगाऊ बामन, यह कम बदचलन है? इस गोविन्द से पूछिए, प्यारेराम के क्यों खिलाफ हैं। वह महू में पहुँचा। आपके गाँव की नाइन छोरी, क्या नाम है उसका गोविन्द...निहालकौर..." जैसे स्वयं ही ठाकुर को याद आ गया—"उस पर दांत गड़ाए बैठा था। प्यारेरामजी ने फटकार दिया। उसीके सिलसिले में आपके खिलाफ है वह।"

ठाकुर चंचलसिंह के मुख पर कुछ स्याही-सी फिर गई। बोले, "क्या किया जाए? समझ में नहीं आता।"

"समझ में क्या नहीं आता?" ठाकुर जवाहरसिंह ने कहा, "अजी सरपंच साहब, वह आपकी जड़ खोदने में लगा हुआ है और आप यहाँ चुपचाप बैठे हुए हैं। उससे तो सीधी टक्कर लेनी पड़ेगी। गुण्डा तभी तक भौंकता है, जब तक उसपर करें हाथ नहीं पड़ते। गुण्डे बड़े कायर होते हैं। सामने नहीं पड़ते किसी के। अगर सामने होते हैं तो हाथ जोड़कर बोलते हैं। क्यों गोविन्द?"

गोविन्द ने कहा, "क्यों नहीं! अजी ठाकुर साहब, जिसका चरित्तर ढीला होगा, उसमें हिम्मत कैसे होगी आँखें मिलाने की!"

चंचलसिंह ने चुभती हुई आँखों से क्षण-भर गोविन्द की ओर देखा और मुँह मोड़ लिया, और फिर कहा, "तो बात यहाँ तक फैल गई है?"

"जनाब!" ठाकुर जवाहरसिंह ने कहा, "उसने आपके लड़के के खिलाफ कार्रवाई की कोशिश की है, सिर्फ इसलिए कि प्यारेराम इस बात में बदनाम हो गए हैं—भगवान जाने कि उसने कुछ आपकी तरफ से मुन्सिफ से..." यह कहते-कहते उसका स्वर धीमा हो गया।

चंचलसिंह चौंक उठे।

"अब तो आप तैयार होंगे?" ठाकुर जवाहरसिंह ने कहा, "मामला बहुत गहरा पहुँच चुका है। आप नहीं जानते कि वोटरों को रुपया भी बांटा गया है। गुण्डागर्दी हो रही है। वायदे ऐसे-ऐसे किए गए हैं, एक से कहा गया है कि तू वोट दे देगा तो दूसरे के खेत में तेरी डांगर निकलवा देंगे हम। रजवाड़ों से भी गई-बीती हालत होती जा रही है, ठाकुर साहब! इसको रोकना चाहिए।"

गोविन्द देखता रहा। उसने कहा, "तो फिर पक्की समझी जाए, आप सरपंची के लिए खड़े होंगे। ठाकुर साहब, हमने तो यह तय कर लिया था अपनी तरफ से। अब आप ना भी करें तो भी हम तो आपका ही प्रचार करना शुरू करते हैं। तिवाड़ी जैसे गुण्डे से तो टक्कर ले लीजिए। आप जैसा ही आदमी ले सकता है। ट्रकें आ रही हैं। ट्रैक्टर ले लिए गए हैं इधर-उधर से, लोगों से। जीप भी आनेवाली है ऊपर से"—ऊपर से का तात्पर्य उसका राजधानी से था। "पूरे ज़ोर बांधे जा रहे हैं। कंबल बंटेंगे, कोट बंटेंगे ऊनी। बहादुरसिंह ने मुझसे कहा था। आप तो जानते हैं वे कितने अच्छे आदमी हैं!"

"बस, तो तय हो गया," ठाकुर जवाहरसिंह ने कहा, "अपने इलाके से सरपंची के लिए तो ठाकुर चंचलसिंह ही रहे।"

बात तो तय हो गई। चंचलसिंह ने इसका विरोध नहीं किया। धीरे से कहा, "जैसी आपकी मर्जी! मैं तो हमेशा सेवा के लिए तैयार हूँ। ज़रूरत के वक्त पीछे हटने वाला आदमी मैं नहीं हूँ।"

"बस-बस!" गोविन्द ने कहा, "बाकी सब काम हम कर लेंगे।"

लेकिन मन ही मन चंचलसिंह ने अपने दिमाग में हिसाब लगाया और रुपयों का हिसाब करने लगे, क्योंकि वे जानते थे कि इलेक्शन में रुपया ही सबसे बड़ी चीज़ थी। क्योंकि ठाकुर जवाहरसिंह के पास रुपया नहीं था, इसलिए वह खुद खड़ा नहीं हुआ था। उसे मजबूर होकर आना पड़ा था।

जब वे लोग चले गए तो दरवाजे पर एक दस्तक सुनाई दी। चंचलसिंह ने भीतर की तरफ देखा—चमेली थी। चंचलसिंह ने देखा और कहा, "नरायन की माँ, लोग फिर कह रहे हैं कि चुनाव के लिए खड़ा हो जाऊं।"

चमेली ने भय-विस्फारित नज़रों से देखते हुए कहा, "फिर?"

उस एक शब्द में ही सारा डर उभर आया था। वह जानती थी कि चुनाव में दो-दो कौड़ियों के आदमियों की खुशामद करनी पड़ती है। न दिन को दिन रहता है, न रात को रात। घर में आने-जानेवालों का तांता नहीं टूटता। उनके लिए निरन्तर चमेली को रोटी बनानी पड़ती है। घर में सूखी रोटी खानेवाले लोग भी चुनाव के दिनों में बिना कुछ काम किए भी, अकारण ही असली घी की चुपड़ी रोटी खाते हैं और उनको रसा और साग दोनों चाहिए और गला तर करने के लिए कुछ मीठा भी, वरना खाना उनके गले से नीचे नहीं

उतरता। वह जानती थी कि चुनाव में लोग जब धरम उठाते हैं, कहते कुछ हैं, करते कुछ दूसरी बात हैं, और सिवाय मक्कारी के और कोई काम नहीं होता। दिन पर दिन एक आवेश-सा खड़ा रहता है, जैसे एक अजीब पागलपन-सा सवार हो गया हो। हार और जीत की हड़कम्प सी छा जाती है और अजीब पागलपन सा रहता है। जो लोग सामने खड़े होकर बात करने में कांपते हैं, उन लोगों के नाम के आगे जी लगाया जाता है। उनको मूढ़ों पर बिठाया जाता है। जो साधारण समय में हमारा मिजाज़ देखते हुए आते हैं, चुनाव के जमाने में उल्टे उनकी मिजाज़पुरसी करनी पड़ती है। बात-बात में ये गंवार लोग नखरे करते हैं। अभी इधर हैं, अभी दूसरी तरफ चले गए। फिर आदमी पकड़कर किसी तरह फंसाकर ले आए। फिर भी वे अपने ऊपर लज्जित नहीं होते। बेशर्मी से बैठकर यहाँ भी खाते हैं और बेपैंदी के लोटे बने रहते हैं। रात को एक-एक बजे आते हैं और रोटियाँ तैयार करवाते हैं। आता है एक वोटवाला। उसके साथ छः और आते हैं उसे पहुँचाने। लेकिन एक नहीं खाता, वे छहों खाते हैं और उससे ज्यादा खाते हैं। पंगतें लगती हैं।

घृणा से चमेली का रोम-रोम कांप उठा। कैसा भयानक समय है, जिसमें हम रहते हैं! और अगर इस चुनाव में खड़े नहीं होते और जीत नहीं जाते तो फिर लोग दो कौड़ी को पूछते नहीं। जीत जाने वालों के चरणों में सिर झुकाते हैं। वे, जो कल वोट देने के लिए खुशामद करवाते हैं, जीत जाने पर आज खुशामद करते हुए नहीं थकते। फिर अपने कमीने से कमीने काम को पूरा करवाना चाहते हैं। अगर उनका ज़रा-सा काम नहीं किया जाता, तो फिर दूसरी पार्टी बनती है। फिर बेशर्मी से दूसरे को बदनाम करते हैं। इतना भयानक चक्र, इतनी भयानक उलझन!

चमेली ने धीरे से कहा, “खड़ा होना ही पड़ेगा, और कोई चारा नहीं है।”

ठाकुर साहब ने कहा, “तुम्हारे लड़के का केस भी डावांडोल है। जो कुछ होगा, भुगतेंगें। पता नहीं, भगवान इतना क्यों नचा रहा है।”

चुनाव की सरगर्मियाँ शुरू हो गईं। श्यौपाल ने आकर सरपंच के सामने राम-राम की और बैठ गया।

“कहो भई श्यौपाल, कैसे आना हुआ?”

“हमने सुनी है कि आप खड़े हो रहे हैं?”

“अरे, क्या खड़ा हो रहा हूँ, श्यौपाल, मेरे तो पीछे लोगों ने मुसीबत बांध दी। तुम तो जानते ही हो, मैं अपनी ही मुसीबत में पड़ा हुआ हूँ, लेकिन लोग हैं कि मानते ही नहीं।”

श्यौपाल ने कहा, “कैसे मान जाएँगे साहब, अपना आदमी खड़ा नहीं होगा, तो कैसे काम चलेगा? आपके खिलाफ जो खड़ा हुआ है, तिवाड़ी, उसको कौन नहीं जानता! बौहरगत करता है, लोगों का खून चूसता है। जात का बामन जरूर है।”

सरपंच चंचलसिंह ने मुस्कराकर कहा, “अरे भई, बामन हैं, हमारे पूज्य हैं। हम तो अब भी उनके चरण छूते हैं; और उनकी तो वैसे ही इतनी इज्जत है! उन्हें खड़े होने की जरूरत ही क्या थी! यह तो काम हम लोगों के लिए ठीक है। पहले भी हम लोग राज्य करते थे। अब राज्य का रूप बदल गया है तो इस चुनाव में खड़े होते हैं। बामन को लोभ नहीं करना चाहिए ना?”

श्यौपाल ने कहा, “समुआई नहीं है। सब यह चाहते हैं—मैं हो जाऊं, मैं हो जाऊं। आपने सुना नहीं, तिवाड़ी जाकर रात चमारों की बस्ती में सोया। हमने सुनी, वहीं रोटी-पानी भी हुई।”

चंचलसिंह ने सोचते हुए कहा, “अब तुम सोच लो, श्यौपाल, तिवाड़ी पहला आदमी था जिसने इस बात का विरोध किया था कि गाँव-बाहर का कुआं अलग से भंगियों को दे दिया जाए। उसने कहा था कि भंगियों को अलग कुएँ की क्या जरूरत है! तो हम-तुमने ही कहा था कि भई, आदमी ये भी हैं। वक्त बेवक्त इन्हें भी प्यास लगती है। चलो अच्छा है, इनके लिए एक अलग ही इन्तजाम हो जाए, तो एक पुन्न होगा, गरीबों का भला होगा। तुम देखो, ढोर-डंगरों के लिए प्याऊ बनाते हैं। आखिर तो हरिजन लोग आदमी ही हैं। ऐसा तो क्यों किया जाए उनके साथ कि उनको ढोरों से भी गया-बीता माना जाए! जब मुसलमानों का कुआं है तो भंगियों का भी होना चाहिए।”

श्यौपाल ने सिर हिलाकर कहा, “क्योँ नहीं, क्यों नहीं! इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है! पानी का भी इन्तजाम हो गया, हमारा धरम भी न गया। अरे भई, धरती है, एक टूक पर सोए रहते हैं, एक टूक पर से वे पानी पिएँ।”

सरपंच ने उत्तर दिया, “और आज वही आदमी चमारों में बैठकर खा रहे हैं। भई, हमसे तो ऐसी चालाकी नहीं हो सकती। यह क्या, गंगा गए गंगादास, जमना गए तो जमनादास? वक्त पड़ा तो गधे को बाप बना लिया। ऐसा आदमी ठीक नहीं हो सकता। तुम सोच लो, कल को जब ये चुन लिए जाएँगे तो तोते की तरह इन्हें आँखे फेरते कितनी देर लगेगी?”

“लेकिन,” श्यौपाल ने कहा, “बामन धीरे-धीरे उसकी तरफ जा रहे हैं। बिरादरी का मामला आ गया है।”

“बामन तो तुम भी हो, श्यौपाल!”

“हैं क्यों नहीं, ठेठ से हैं, पुरखापत्ती से। पर हम तो न्याय की ओर हैं। हमने तो ठाकुर चंचलसिंह की सरपंची में पहले भी सुख भोगा और अब भी भोगेंगे। तब दो कौड़ी का आदमी था। अब वह झोलेटोले का जो सरपंच है, रामसिंह तिवाड़ी, उसको सेक-साक कर खड़ा किया है लोगों ने और गाँव-गाँव में बामनों में एक-एक के नाम पर बनियाँ ठाकुर को छेक के अपना संगठन कर रहा है। यों ठाकुर साहब, एक बात तो मैं जरूर कहूँगा, कल गिरधर गोपालजी के मन्दिर में रात बामनों की पंचायत जुड़ी थी। आप तो जानते हैं, गाँव

के अन्दर सब मंदिर खुशहाल हैं, एक हमारा मंदिर जो है बामनों का, गिरधरगोपाल जी का, वह सबसे ज्यादा गरीब है। उसका चंदा ही इकट्ठा नहीं होता। लोग देते ही नहीं। यह जात ही ऐसी है बामनों की। पैसा है, लेकिन मंदिर को नहीं रखेंगे। और दुनिया के मंदिर को रखेंगे, धरम की दुहाई देंगे। दुनिया-भर के मन्दिरों को नहीं रखेंगे और धरम उठा जाएँगे बिना बात को। तो उस पंचायत में यह चर्चा छिड़ी थी। तो एक ने कहा—भई, बामन खड़ा हुआ है तो बामन के जाए को तो बामन की तरफ जाना चाहिए, क्योंकि घुटना पेट की तरफ मुड़ता है। चंचलसिंह लायक आदमी है, अच्छा है; मगर जो तिवारी हमारा हो सकता है, वह चंचलसिंह थोड़े ही हो जाएगा। और फिर जब नीचे से लेकर ऊपर तक जवाहरसिंह, चंचलसिंह, कजौरीसिंह, बहादुरसिंह—सब ठाकुर ही ठाकुरों का गठबन्धन हो तो ऐसे में बामनों में भी एक सिंह पैदा हुआ है—रामसिंह, तो उसको क्या हार जाने दिया जाएगा? हमने तो ठाकुर साहब, कहा कि भई, सोच लो। तो लोगों ने हम पर जोर दिया कि जिधर भौमत जाएगा, उधर ही तुमको भी जाना पड़ेगा। यह बात है ठाकुर साहब। हमने तो कही कान में डाल दें, सो चले आए सवेरे उठकर।"

चंचलसिंह ने कहा, "तो देखो, एक बात बताओ, तुम्हारे मंदिर का पुजारी तय हो गया?"

"अरे ठाकुर साहब, कहाँ हुआ! एक वे ही पंडित दामोदर हैं। बूढ़े हो गए बेचारे। हमारे बाबा के खानदान में से हैं। लेकिन उन्हें देखकर जलते हैं लोग। हटाना चाहते हैं। तिवाड़ी का कोई रिश्तेदार है, उसे घुसाना चाहते हैं।"

ठाकुर ने हंस कर कहा, "अरे, दामोदर ही ठीक रहेगा। अच्छा आदमी है।"

"हम तो आप से यही सुनने की आशा कर रहे थे। हमें मालूम है आप न्याय की तरफ बोलेंगे, वाजिब बात करोगे। चार आना तो घर की उगाई है। क्या पड़ता है बेचारे को! भोग-वोग से पेट भर लेता है। ठाकुर साहब, दुनिया बड़े अधरम की ओर जा रही है। अब कैसे भी हो, यह काम तो आपको करना ही पड़ेगा कि दामोदर ही बना रहे।"

"सो हो जाएगा, भई श्यौपाल, घबराने की क्या बात है! एक बात तो बताओ, यह गयासुकल जो है, वह वोट दे देगा हमें या उधर टूट जाएगा?"

श्यौपाल ने कहा, "अजी ठाकुर साहब, गयासुकल जो है, बड़ा बेपैंदी का लोटा है। मैं आपसे सच कहता हूँ, उसकी अगर नस किसी के हाथ में है तो दामोदर के। अगर दामोदर पट गया तो समझ लो, काम हो गया, वरना तो फिर मैं आपसे क्या अरज करूं..."

ठाकुर साहब ने सोचते हुए कहा, "अच्छी बात है। और यह जो रामबकस है, यह किधर जाएगा?"

"रामबकस भी टेढ़ी खीर है।"

"रामबकस कैसे टेढ़ी खीर है? वह तो तुम्हारा खासमखास है।"

"अजी, ठाकुर साहब, सब अपने मतलब से दोस्त हैं, वैसे कोई किसीका नहीं है।"

"कैसे भी हो श्यौपाल, गयासुकल और रामबकस—ये दोनों तुम्हारे हाथ के वोट हैं। दो आदमी मुझे वोट देंगे और तुम्हारे कहने से देंगे। समझे? और देखो, इन दो के अलावा एक आदमी और है जो तुम्हारा है।"

"वह कौन?"

"तुम्हारा किशनपाल का बेटा जीवनपाल। समझे? ये तीनों वोट मेरे हैं।" यह कहकर चंचलसिंह ने आँखें फाड़कर श्यौपाल की ओर ऐसे देखा जैसे सारस ने मछली पकड़ने के लिए चोंच खोल दी हो। लेकिन श्यौपाल की मुद्रा पर एक अनिश्चितता छायी हुई थी। उसको सोचते हुए देखकर चंचलसिंह ने स्वर बदलते हुए कहा, "भई श्यौपालजी!"

'जी' लगने से श्यौपाल की आँखें और तन गईं। देहाती का पहला चिह्न यह होता है कि थोड़ा-सा काम पड़ जाने पर वह ऐंठ जाता है। उस समय उससे कोई इज्जत से बात कर ले तो उसके माथे में बल पड़ जाते हैं, और फिर वह अपने को बहुत बड़ा आदमी समझकर गम्भीरता से बातें करने लग जाता है। ठाकुर चंचलसिंह के एक शब्द 'जी' ने श्यौपाल को भी गम्भीर बना दिया।

चुनाव में इन्सान के दर्जे होते हैं। जिस प्रकार राज्य की ओर से पद बंटते हैं—एक पद्मश्री होता है, उसके ऊपर पद्मविभूषण होता है—उसी प्रकार इलेक्शन वालों से काम पड़ जाने पर उन्हें भी पद दिए जाते हैं, जैसे 'अरे श्यौपाल' से पद 'अरे भई श्यौपाल' बनता है और फिर उसके बाद 'अरे भई श्यौपाल जी' के नाम से उसको सम्बोधित किया जाता है। जब तक वह 'अरे श्यौपाल' रहता है, तब तक उनका सिर झुका रहता है और ज्यों-ज्यों उसकी इज्जत बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों उसकी ऐंठ बढ़ती जाती है। उस समय चुनाव के लिए खड़ा होने वाला व्यक्ति मन ही मन जलने लगता है, जिस प्रकार गीता में लिखा है कि 'कामात् संजायते क्रोधः'—काम से क्रोध पैदा होता है, उसी प्रकार इलेक्शन के केण्डीडेट में क्रोध से ग्लानि की भावना जन्म लेती है।

ठाकुर चंचलसिंह मन में सोचने लगे- यह दो कौड़ी का आदमी कितनी जल्दी ऐंठ गया! इसकी हैसियत क्या है!

हैसियत दुनिया में एक ऐसी चीज है जो आदमी को बहुत जल्दी याद आ जाती है। वह किसी भी चीज को उसके आगे-पीछे के सम्बन्धों के बीच रखकर देखता हैं। श्यौपाल उठ खड़ा हुआ। चंचलसिंह ने कहा, "तो भई श्यौपाल जी, याद रखना यार। और देखी, संझा को जरूर आना। और भी लोग आवेंगे।"

"अच्छी बात है, ठाकुर साहब।"

दिन ढला। सूरज ने अपनी किरणें समेट लीं और उसी तरह ठाकुर चंचलसिंह के घर ने चुनाव के प्यारों को अपने पास खींच लिया। वोटर शायद दो थे—दामोदर के साथ गयासुकल और रामबकस, लेकिन चुनाव के लिए प्रचार करने वाले बनैसिंह, बौहरगत

करनेवाला मनोहर गूजर, मंगू, जीवनपाल के सिलसिले में धरमपाल, हरपाल और किशनपाल, राधे, जवाहरसिंह और गोबिन्द।

चमेली ने देखा, इसके अतिरिक्त भी कोई आठ आदमी और थे जिन्हें वह नहीं जानती थी। लड़की ने आकर कहा, “अम्माँ, पूरी उतार लो।”

चमेली के मन में आग लग गई।

लड़की ने फिर कहा, “आलू का साग बना लेना और हलुआ चढ़ा दो।”

चमेली ने ढेर सारा आटा परात में उलटते हुए कहा, “आग लगे, पानी से बुझे। इस चुनाव का, इस कांग्रेस का तो सत्यानाश हो जायेगा, जिसने यह आग लगाई है। चैन से रहतों को नहीं रहने दिया। दो-दो कौड़ियों के आदमियों को खड़े होने की इजाजत मिल गई है। अब जिसे देखो, वही आगे बढ़ा जाता है।”

द्वार पर कजौरीसिंह दिखाई दिया। बोला, “भाभी, क्या बात है?”

“अरे लालाजी, बात क्या है, जमाने की हवा की कह रही हूँ।”

कजौरीसिंह ने कहा, “सो तो है ही, पर अब ओखली में सिर दिया तो मूसल का डर क्या! भई, न करें तो फिर करें भी क्या? ऐसा राज्य तो हमने कभी देखा नहीं। पहले गरीबी में थे, लेकिन चैन से रहते थे। यह रोज-रोज की हाय-हाय नहीं थी। अब तो यह है कि अगर न करें तो लोग वैसे पैसा खाएँ, जेब से पैसे काटें।”

“तुम नहीं खड़े हो रहे हो लालाजी?”

कजौरीसिंह ने कहा, “भाभी, तुमसे क्या छिपाऊं! तुम तो जानो, लड़के ने तबाह कर दिया। अब मेरे पास बचा क्या और यहाँ एक-एक बैठा है खबैया। घर में सूखी चबाएँगे, यहाँ इन्हें पूरी चाहिए। और सेर पक्के से कम खाने वाला इनमें से एक भी नहीं। समझ लेना।”

“वह तो मुझे पता है।” चमेली ने कहा, “लाला, एक बात पूछूं!”

कजौरीसिंह ने सिर उठाया।

“इन बेशर्मों को पच कैसे जाए? इन्हें अखरे नहीं ऐसे हाथ मुँह तक ले जाना? इतना-इतना भसक कैसे जाएँ ये लोग?”

कजौरीसिंह ने कहा, “बस, वह ही बात है—सेंत का चन्दन घिस मेरे नन्दन। तुम लगाओ, घरवालों को बुला लाओ। हक है, भाभी हक है। वह तो यों समझो कि इस वक्त पूंछ दब रही है तो करा लो जितनी खुशामद करानी है, कल तो कुछ पूछ होगी नहीं।”

चमेली ने सोचते हुए कहा, “तो लालाजी, अब यह बन्द नहीं होगी क्या? यों ही चलती रहेगी?”

कजौरीसिंह ने कहा, “अब तो यह ही चलेगी। इसे कौन बन्द करेगा। राजा तो रहे नहीं। अरे, राजा थे तब राजा अच्छे नहीं लगते थे।”

बूढ़ी दादी बोली, “अरी बहू, मैं बेल दूँ?”

"तुम अब रहने दो।" कजौरीसिंह ने कहा, "मेरा हारी रतन है, उसे बुला लो। और मैं घर से भेज देता हूँ।"

थोड़ी देर में उम्मेदी आ गई। पिछवाड़े के दरवाजे से चमेली ने चुपचाप हारी रतन को भेज कर डालडा का टीन मंगा लिया। उम्मेदी ने कहा, चलो यह अच्छा किया। गरम-गरम में पता भी नहीं चले कि असली है, कैसा है। वैसे ही खा जाएँ बिजार आकें?"

चुनाव बारात से भी बड़ी ज्योनार लाता है। कभी कोई इस कोने में बात करता है, कभी कोई उस कोने में। बीड़ियाँ उड़ती रहीं। चमेली के पास खबर पहुँची, "ज़रा चाय चाहिए।"

चमेली ने झल्लाकर कहा, "पहले भी पी थी कभी! खैर, अभी बनाती हूँ।"

रतन ने कहा, "भीतर के कमरे में बैठे हैं चुपचाप—दानामल अर्जीनवीस, पटवारी जयराम और हरदयाल।"

"कित्ते आदमी है?" चमेली ने धीरे से पूछा। वह सरकारी आदमियों का नाम सुनकर चुप हो गई।

"चार और हैं, इन तीन के अलावा।"

चमेली फिर भड़की। उसनें आँखें उठाकर देखा। रतन ने कहा, "यादराम, घूरिया, रामपाल, बादाम।"

चमेली चुपचाप पानी से भरी पतीली चूल्हे पर चढ़ाने लगी। वह जानती थी, वे सरपंच चंचलसिंह के गवाह थे। एकान्त की यह खुसफुस, खुसफुस, कसमें, उठती हुई गंगाजली, रिश्तेदारों की नाप-जोख, नाप-तौल, दबाव के षड्यन्त्र, बीड़ियों के धुएँ, पान की पीकें और भीतर से साग की आती छोंक की गन्ध! चंचलसिंह विनम्रता के अवतार, चमेली के लिए जीवन परिश्रम! रात को दस बज चुके थे। चमेली अभी लेटी ही थी कि उम्मेदी ने भीतर आकर कहा, "जेठी, आओ, पूरी उतार लें।"

चमेली ने कहा, "तू तो अभी गई थी न घर?"

"तुम्हारे देवर ने लौटा दिया रास्ते में से। घीया आया है।"

चमेली ने उठते हुए कहा, "मरा घीया, इस बखत कौन लाया है? और घीया के साथ कौन खाएगा?"

उम्मेदी ने हंसते हुए कहा, "अमोलपुर से आया है कोई अखबार वाला मदनमोहन घीया। उसके लिए खाना बना लो। हिरदे के यहाँ जा रहा था। कहीं से खबर लग गई उसे, सो रास्ते में से गोविन्द पकड़ लाया। अखबार में अगर खिलाफ खबर निकल गई तो तुम जानो कितनी बदनामी होगी! जेठजी ने, तुम्हारे देवर कह रहे थे, अभी उसे सौ रूपये दिए हैं। मान गया कि इनकी तरफ की खबर छापेगा।"

चमेली चुपचाप चूल्हे के पास चली गई। उसे याद आया कि उसका झल्लाना व्यर्थ था। इस बार चंचलसिंह ने चुनाव में इस लिए पांव रखा था कि उसका बेटा नरायन अभी

तक केस में फंसा हुआ है।

रामसिंह तिवाड़ी के यहाँ आज बड़ी भीड़ थी। हिरदेराम, राजाराम, मटरू, रामधन, रामकरण, रामस्वरूप, गिरधर सुकल और भगत बनिया बैठे थे। कुछ खाट पर, कुछ मूढ़ों पर।

राजाराम ने कहा, “महाराज तिवाड़ीजी, यही है वह हिरदेराम।”

“क्यों भई!” तिवाड़ीजी ने कहा, “क्या बात है तुम्हारे साथ?”

“अजी हुजूर, लुट गया।”

रामधन ने कहा, “इसीकी लड़की का कत्ल कर दिया सरकार, और दलबल बनाकर सरपंच चंचलसिंह ने दहशत फैला रखी है।”

द्वार पर कुछ और आदमी दिखाई दिए—सुधीर आर्य जनसंघी, तहसीलदार कटारा का मित्र आर्यसमाजी यज्ञकुमार वेदालंकार, जिसका भूतपूर्व नाम कल्लू था। इसका बाप पहले आर्यसमाजी हुआ और उसने अपनी हलवाई की दुकान वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ चालू रखी। फिर उसने बनियों को एकत्र किया और आर्यसमाजियों का एक दल बनाया। अपने इस पुत्र को उसने किसी गुरुकुल में कुछ समय रखकर पढ़ाया था। अब बौहरगत भी घर में होती थी और अनेक तरीकों से रुपया पैदा किया जाता था। यज्ञकुमार वेदालंकार जब पढ़-लिख गया तो उसने अपना नाम भी बदल लिया। कल्लू नाम आर्यों का नहीं होता, इसलिए उसे बदलने को विवश होना पड़ा। वह एक काला आदमी था जिसको देखकर यह अंदाजा होता था कि आर्य मूलतः बहुत काले रहे होंगे। उसका स्थल शरीर, मिचमिची-सी आँखें और संस्कृत मिली हुई हिन्दी बोलने का लहज़ा—सब कुछ देखकर यह लगता था कि यह व्यक्ति आर्यों पर एक व्यंग्य है, इसको किसी प्रकार भी आर्य नहीं कहा जा सकता। लेकिन वह तहसीलदार कटारा का मित्र था। तहसीलदार को उसके जरिये से आमदनी हो जाया करती थी। इनके पीछे एक और व्यक्ति था—सर्वोदयवादी चेतन। उसकी वेशभूषा इन लोगों से अलग थी। जनसंघी साधारण धोती-कुर्ता पहने था, तो आर्यसमाजी के सिर पर खद्दर की शुभ्र टोपी भी थी; लेकिन सर्वोदयी के सिर पर सिंघाड़े के से कटे बाल, शरीर पर एक गंजी और धोती की जगह खद्दर का तहमद, चेहरे पर सूखापन, आँखों पर चश्मा। देखकर ही लगता था कि यह व्यक्ति कुछ कर्कश और कठोर होना चाहिए। ये सब रामसिंह के लोग थे।

रामसिंह तिवाड़ी ने इन लोगों को बैठाया और कहा, “आप लोगों ने देखा, कांग्रेस किसलिए खड़ी हुई है, न्याय के लिए या अन्याय के लिए? यह देखिए, यह हिरदे है राम नाम का एक गरीब किसान है। इसको सताया गया है और इसकी तरफ से बोलने वाला कोई भी नहीं है। मैं पूछता हूँ, आजादी मिली है, किसलिए? कांग्रेस के नाम पर जो थोड़े-से

लोग अपने को राजा समझकर दूसरों को लूट रहे हैं, क्या उन लोगों के ऊपर कोई बन्धन नहीं है? किसलिए यह दमन हो रहा है? हम वोट लेने के लिए जाते हैं कांग्रेस के लिए। लोगों से कहते हैं कि यह कीजिए; वह कीजिए लेकिन लोग हमारे पीछे से मुस्कराते हैं। मैं कहता हूँ कि घोर भ्रष्टाचार बढ़ गया है। सुन लीजिए इनका किस्सा। भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे तक फैला हुआ है। चेतनजी, आप भी इस बारे में कुछ नहीं कह सकते?"

चेतनजी इस समय विनोबा-मुद्रा में बैठे हुए थे। उन्होंने ऋषि-मुनियों की तरह सिर हिलाया और हिरदेराम की तरफ ऐसे देखा जैसे सड़क पर बैठे हुआ मोटा-सा कुत्ता किसी छोटे-से पिल्ले की तरफ देखता है। उसको कुछ न कहते देखकर यज्ञकुमार वेदालंकार ने कहा, "भई, क्या बात हो गई?"

"बात तो महाराज, कुछ नहीं हैं।" अब की बार रामस्वरूप ने कहा, "यह गरीब आदमी है। इसकी तो यहाँ आने की हिम्मत ही नहीं होती थी। वैसे मैं सरकारी नौकर हूँ। मुझे बोलना नहीं चाहिए। डूंमरपुर में प्राइमरी टीचर हूँ। लेकिन मैंने सुन रखा था कि तिवाड़ीजी न्याय की ओर बोलते हैं। मैंने कहा, भई, मैं किसी पक्ष में तो पड़ता नहीं हूँ। लेकिन यह राजनीति का काम नहीं है। इतना मैं कर सकता हूँ कि तू बड़े आदमियों के सामने जाने से डरता है तो मैं तुझे उनकी देहली तक पहुँचा दूं। डरते-डरते यहाँ आए, लेकिन तिवाड़ीजी ने दया से हम लोगों को बैठाया। हमसे तो ऐसा प्रचार किया गया था, वहाँ गाँव में, जैसे तिवाड़ीजी कोई हौआ हों।"

रामसिंह तिवाड़ीजी ने सिर हिलाकर कहा, "सुना आपने? एक कांग्रेसी दूसरे कांग्रेसी के प्रति कैसा व्यवहार कर रहा है आजकल! मैं कहता हूँ, यह देश अवश्य डूब जाएगा। यह दशा है। अभी गांधीजी के लहू के दाग सूखे नहीं हैं और ये लोग सत्ता के लिए और अधिकार के ऐसे लड़ रहे हैं। यह कौन सा तरीका है प्रजातंत्र का कि एक बार आप गद्दी के ऊपर बैठ गए तो आप गद्दी के ऊपर लगे रहे? और कोई दूसरा आदमी उसके लिए प्रयत्न करे तो आप कहें कि पद का लोभ है। और आप जो गद्दी पर लगे बैठे हैं तो आप पदलोलुप नहीं हैं? आप देश-सेवक हैं, त्यागी हैं? यह कौन सा कायदा है? मैं यह जानना चाहता हूँ। और आप गद्दी पर हैं तो आपकी बड़े लोगों से जान पहचान है, आपकी ऊपर तक पहुँच है। तो यह राजा के राज्य से कैसे अच्छी व्यवस्था है? अब प्यारेरामजी हैं, उनको चुनाव में किसने जिताया? आपने और हमने मिलकर या वे अकेले जीत गए? अकेले तो नहीं जीते ना? अकेले तो पंडित जवाहरलाल नेहरू भी नहीं जीतते, चाहे उनका कितना बड़ा ही नाम क्यों न हो। इतना बड़ा आन्दोलन गांधीजी ने चलाया, तो महात्माजी अकेले आन्दोलन नहीं चलाया करते थे। सैकड़ों आदमी उनके लिए जान देते थे। अब मैं यह पूछता हूँ कि जब सबने मिलकर ऐसा किया है, तो भई, इसीलिए तो किया था न कि कुछ दिन के लिए तुम एक हो जाओ। एक आदमी गद्दी पर बना रहेगा तो कायदे की बात है कि वह उचित और अनुचित का भेद भूल जाएगा। आप पूछ लीजिए, ये गाँव के किसान हैं, मेरे

आदमी नहीं। ये बताते हैं, इनका कहना यह है कि चंचलसिंह सरपंच ने जवाहरसिंह ठाकुर से मिलकर प्यारेरामजी एम. एल. ए. महोदय को अपनी तरफ मिलाया। आप देखिए, कैसी इसकी पेशबन्दी हुई है! इसके अलावा चंचलसिंह सरपंच के लड़के के बारे में कहा जाता है कि उसने एक कत्ल किया है और उस कत्ल के सिलसिले में मुकदमा चल रहा है और प्यारेरामजी ने अपनी बड़ी जगह का दबाव डालकर मुन्सिफ जगन्नाथस्वरूप को रिश्वत दी और दूसरी तरफ गजराजसिंह थानेदार को रिश्वत दी गई और इसी तरह सी.आई., डी. एस.पी., एस.पी., पी. आई. इनको रिश्वतें दीं, और चूंकि चंचलसिंह सरपंच है और पटवारियान उसके अधीन हैं, उसने तहसील में भी अपने पंजे फैला दिए और इसके पीछे एक झूठा मुकदमा भी लगवा दिया है। हुसेनपुर का पटवारी हरदयाल इसको तबाह करने पर तुला हुआ है और क्योंकि चंचलसिंह एक बड़ा आदमी है, सरपंच है, कांग्रेस का नाम उसके पीछे है, उसने कई झूठे गवाह भी खड़े कर लिये हैं और नतीजा इसका यह है कि गरीब आदमी सिवाय इसके कि पिस जाए, उसके पास और कोई चारा नहीं। रमोना का एस. डी. एम. जरूर एक ऐसा आदमी है जो अभी इन लोगों के असर में नहीं, क्योंकि वह एक कट्टर आदमी है और ज़्यादा चिंता नहीं करता। अच्छा, जब लड़कों के बारे में स्कूल में जांच की गई तो स्कूल में लड़के गायब निकले। हेडमास्टर एक ईमानदार आदमी है। उसने इस बात को ज़ाहिर कर दिया तो इन लोगों ने स्कूल के लड़कों को बरगलाकर हड़ताल करवा दी। बोलिए, डिसिप्लिन बिगड़ा? इस तरह जो स्कूल के लड़कों को अपनी चालों के लिए हथकंडे बनाकर इस्तेमाल किया जाए तो इससे चरित्र किसका बिगड़ता है? लड़कों का। बाद में बड़े-बड़े नेता आकर चिल्लाते हैं कि कांग्रेस ने यह किया और लड़कों को बिगाड़ा। अरे, लड़कों को बिगाड़ने वाले तुम ही तो हो। फिर इन्क्वायरी बैठी। अहलूवालिया, इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स, ने कालीचरन शर्मा, हेडमास्टर की इन्क्वायरी की। आप जानते हैं अहलूवालिया एक बदनाम आदमी है, शराब की बोतल और औरत—इन दो चीज़ों की रिश्वत उससे सारे काम करवा लेती है। ऐसी अवस्था में क्या करना चाहिए? आप लोगों से मैं पूछता हूँ, जो यहाँ मौजूद हैं, जो नेता लोग हैं।" यह कहकर रामसिंह तिवाड़ी ने एक बार घूरकर उपस्थित लोगों की ओर देखा।

वेदालंकारजी ने सिर हिलाकर कहा, "बड़े आश्चर्य का विषय है! देश में इस प्रकार कांग्रेस जो आचरण कर रही है, वह किसी भी प्रकार श्लाघनीय नहीं कहलाया जा सकता। बात वास्तव में यह है कि स्वराज्य की कल्पना प्रारम्भ में महर्षि दयानन्द ने की थी। उन्होंने आत्मा को पवित्र करने के लिए आर्यों के आचरण को अपनाया था। लेकिन कांग्रेस ने उसको स्वीकार नहीं किया और यवनों का पक्ष लिया; और सब जानते हैं कि पाश्चात्य प्रभाव भी कांग्रेस पर बहुत अधिक है। क्यों चेतनजी, मैं कोई अनुचित बात तो नहीं कह रहा हूँ?"

चेतनजी ने अपना खुरखुरा हाथ मुँह पर फिराया और कहा, "कांग्रेस में सत्ता के लिए होड़ अवश्य हो रही है, लेकिन विनोबाजी ने फिर से एक नई प्रेरणा हमारे सामने जगाई है, 'सबका ही उदय आवश्यक है।' मैं तो यह भी कहते हुए नहीं हिचकूंगा कि महात्माजी जो नहीं कर सके, वह विनोबाजी ने करके दिखाया।"

सुधीर आर्य जनसंघी के माथे पर एक व्यंग्य-भरी मुस्कराहट डोल गई। लेकिन रामसिंह तिवाड़ी के दिल में जैसे आग लग गई। हिरदेराम, राजाराम, मटरू और भगत बनिया तथा गिरधर सुकल शांति से सुनते रहे। रामधन और रामकरन लगभग ऊंघने लगे थे, क्योंकि ये सब बातें उनके लिए व्यर्थ थीं। प्रायः अपने मतलब की बात न होने पर किसान सुनता ही नहीं।

रामसिंह तिवाड़ी ने कहा, "वह तो ठीक है, गांधीजी का एक काम विनोबाजी कर रहे है तो दूसरा काम नेहरूजी कर रहे हैं। नेहरूजी ने गांधीजी का दुनियाबी रास्ता अपनाया है और विनोबाजी ने गांधीजी का आध्यात्मिक रूप पकड़ा है। विनोबा जिस संसार की बात करते हैं वह बहुत ऊंचे संसार की बात है; लेकिन दुनिया एकसाथ ही उसके लिए तैयार नहीं हो सकती। नेहरूजी सिगरेट पीते हैं, वक्त-बेवक्त विलायत में जाकर देश-काल के अनुसार थोड़ी-बहुत शराब भी पी लेते हैं, लेकिन समर्थ को दोष नहीं होता। वे सूट भी पहनते हैं, लेकिन उनकी आत्मा विशुद्ध खद्दर की बनी हुई है।

फिर भी महात्माजी ने उनको अपना वारिस चुना था। आज इस देश में कौन है जो नेहरू के अतिरिक्त इस दलदल और भंवर में से हम सबको बाहर ले जा सके, जो इस भ्रष्टाचार का खंडन कर सके, जो गरीब के साथ होने वाले अत्याचार को रोक सके? विनोबाजी महात्माजी के दूसरे चेले हैं। जिस तरह पतली धारा में से समतल धरती पाकर एक धारा निकल जाती है, जो चौड़ी होकर फैल जाती है, इसी तरह विनोबा का विकास हुआ है। गांधीजी ऊबड़-खाबड़ पथरीली ज़मीन के ऊपर बहते थे, और विनोबा अब समतल मैदान पर फैलकर आगे बढ़ रहे हैं।"

आर्यसमाजी यज्ञकुमार वेदालंकार ने काटा और कहा, "बन्धुगण, आर्य भाइयो, महात्मा गांधी ने जो मार्ग अपनाया, उसके बीज तो महर्षि दयानन्द ने डाले थे, इसको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा था—हमको अपना चरित्र सुधारना चाहिए। आज कांग्रेस कर्मानुसार वर्णों को स्वीकार नहीं करती। आज हम यज्ञ नहीं करते। देखिए, यज्ञ करने से वायु शुद्ध होती है, वातावरण और वायुमंडल के शुद्ध होने से मन भी शुद्ध होता है।"

चेतनजी ने अपने चश्मे को साफ करते हुए कहा, "लोग वास्तविकता को भूल गए हैं, हमारा खेतिहर देश गऊमाता के बल पर पुजता है। लोग सात्त्विक वृत्तियोँ को भूल गए हैं। उनको जगाना आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि गाय के घी का प्रयोग हो और

जब तक उसका प्रयोग आरम्भ नहीं होगा, जब तक गऊ के साथ न्याय नहीं होगा, तब तक ये आसुरी वृत्तियाँ नहीं जाएँगी..."

इसी समय द्वार पर एक व्यक्ति दिखाई दिया, जिसको देखकर रामसिंह तिवाड़ी उठ खड़ा हुआ और बोला, "मैं अभी आया।"

आनेवाला व्यक्ति महेशचन्द्र शर्मा था—खद्दर की पतलून, खद्दर की जरकिन, बा विलायती ढंग से कढ़े हुए, चमचमाते जूते, मुँह में सिगरेट और दायें गाल के नीचे दबा पान। वह इस चुनाव में डी. आर. ओ था।

"आइए, आइए!" वेदालंकार ने पुकारा।

"जी!" महेशचन्द्र शर्मा ने कुछ गम्भीर स्वर से कहा, "इस समय तो मुझे क्षमा करें। मुझे ज़रा तिवाड़ीजी से दो-चार बातें पूछनी थीं, फिर मैं चला जाऊंगा। बात यह है कि चुनाव के जमाने में हम लोगों की बड़ी मुसीबत है। अगर कहीं बैठ भी जाते हैं तो लोग यह कहते हैं कि यह इस पार्टी में मिल गया।"

रामसिंह तिवाड़ी ने कहा, "अच्छा साहब, भीतर भी मत आइए। मैं बाहर ही आता हूँ।"

तिवाड़ी और महेशचन्द्र शर्मा बाहर आ गए।

तिवाड़ी ने कहा, "क्यों? क्या बात है?"

महेशचन्द्र ने उत्तर दिया, "बात क्या है! तुम तो कुछ करते-कराते नहीं हो। मामला सब ढीला हो रहा है। प्यारेराम दौरा कर रहा है, तुम यहाँ बैठे हो।"

तिवाड़ी ने कहा, "मैं बैठा नहीं हूँ। मैं यहीं से खत्म कर दूंगा प्यारेराम को। यह मामला हिरदेराम का जो मेरे हाथ में आया है, यह बड़ा जोरदार है। इसको ज़रा आगे चला दिया जाए तो सबके पास पहुंच जाएगी यह बात। यह तो बड़ा अच्छा पाइण्ट है; परन्तु यह बात मिनिस्टर तक पहुँचनी चाहिए।"

महेशचन्द्र शर्मा ने कहा, "अरे यार घनश्याम शर्मा तो अपने आदमी हैं, गृहमंत्री हैं। वे तो ब्राह्मणों का ही पक्ष करेंगे और करते ही चले आए हैं। तुम देख रहे हो। अब तुम समझ लो।"

तिवाड़ी ने कहा, "यह साला ठाकुर यों नहीं मानेगा।"

महेशचन्द्र ने कहा, "तुमने तो इन साले बनियोँ को भी पटा लिया, यार!"

"पूरे नहीं पटे हैं, वरना मैं तो चाहता यह हूँ कि इन बनियों को किसी तरह कंट्रोल में कर लिया जाए, तो इनकी बौहरगत बहुत फैली हुई है गाँवों में और इस नाते इनका देहातियोँ में दबाव बहुत है।"

"लेकिन एक बात का ख्याल रखना" महेशचन्द्र ने कहा, "ये बनिए भी साले सांप हैं। तुम देखो, दूसरे इलाकों में जहाँ ठाकुर कमजोर हैं, वहाँ ब्राह्मणों से टक्कर लेने वाले बनिए हैं, मैं तो सामने आ नहीं सकता क्योंकि डी. आर. ओ. हूँ, लेकिन मैं तुम्हें अन्दर की

बात बताए देता हूँ कि पी. सी. सी. का जा अपना चीफ है आजकल, इसका कुछ भरोसा नहीं है। तुम जानो, ठाकुर है और इसका क्या भरोसा, इसे मैं कैसे कह दूं। प्यारेराम जानता है कि वह साला बखुद तो नीच है। उसने इन ठाकुरों का पल्ला पकड़ा है। उसकी अंटी गरम होती है इससे। तुम देखो, एक काम करो...”

तिवाड़ी ने कहा, “कहो यार, क्या बात है?”

“बात यह है,” महेशचन्द्र ने कहा, “मैं तो जा रहा हूँ, क्योंकि मेरा तो यहाँ रहना ठीक नहीं है। तुम्हारे पास वोटर-लिस्ट आ गई है?”

“आ तो गई है।”

“तो तुम एक काम करो...क्या बताऊं” महेशचन्द्र ने रुकते हुए कहा, “इस ज़िले में तुम्हारा जो साला बहादुरसिंह बैठा है, इसने सारा मामला खराब कर दिया। मैंने एक और खबर सुनी है?”

तिवाड़ी ने कहा, “वह क्या है?”

“तुम लोगों की जो कांपियाँ भरकर गई थीं, सदस्यता की, उनमें से कई-एक तो इन्होंने ऊपर भेजी ही नहीं। बीच में दाब गए; और तुम्हारे वोटर अपने-आप इसमें कच्चे पड़ेंगे।”

“अरे, तुम भी किस जमाने की बात कर रहे हो, यार! यह तो सब हवा हो गई बात। अब कल-परसों चुनाव हुए जाते हैं पंचों के। फिर तो सरपंची के रह गए। मैं यह चाहता हूँ कि इस बीच कोई ऐसी चाल खेल दी जाए कि ये साले फंस जाएँ। ऐसी की तैसी कर दी जाए इनकी।”

महेशचन्द्र ने कहा, “उसका तो एक ही तरीका है। तुम घनश्याम शर्मा को बुलाओ। आएँगे जब मोटर में दनदनाते पुलिस को लेकर, तो यहाँ के अमले और अफसरों पर दबदबा पड़ जाएगा। और यार, तिवाड़ी! इन चीज़ों का बड़ा असर पड़ता है।”

“यार, मुझे मालूम है।” तिवाड़ी ने कहा।

फिर महेशचन्द्र ने धीरे से कहा, “एक बात, तिवाड़ी, हमने यह सुनी है। तुम तो, यार अपने खासमखास हो, तुमसे क्या छिपाना! प्यारेराम एक और बात उड़ाता फिर रहा है तुम्हारे बारे में।”

“वह क्या?” तिवाड़ी कुछ सनाका खा गया।

“प्यारेराम यह कहता फिरता है कि एक लौंडिया है, नाइन की। तिवाड़ी ने उसपर दांत गड़ाए थे। मैंने रोक दिया, तब से मेरा दुश्मन हो गया है।”

“उफ!” तिवाड़ी ने क्रोध से कहा, “लोग किस कदर गिर सकते हैं कि जिसका बयान नहीं! अरे, मैं उसके पीछे था! क्या बात तुम करते हो! महेश, तुमने इस बात पर यकीन कर लिया? वह तो साले की पौलिटिक्स है। वह नाइन की लौंडिया, मुझे उससे क्या लेना-देना! वह आशना है उस चंचलसिंह के लौंडे की। मैंने इसकी इन्क्वायरी जरूर कराई

थी। असली नब्ज तो इस केस की उस लौंडिया के हाथ में है। प्यारेराम ने उसी को दबा दिया और रिश्वत दिलवाई मुन्सिफ को। असली बात तो तुम पकड़ते नहीं हो।"

"ओफ्फो!" महेशचन्द्र ने कहा, "यह मामला है! तो यार, यह बात तो ऊपर पहुँचनी चाहिए। होम मिनिस्टर अपने होते हुए यह पुलिस इतनी गड़बड़ी कर रही है!"

"गड़बड़ी क्या कर रही है। यह गजराजसिंह अपने साले का दुश्मन है। ठाकुर है ना। चंचलसिंह से रुपया खाता है। और खाया है, साहब उसने। इस गजराजसिंह को यहाँ से तबदील करवाओ। कटारा तहसीलदार तो अपना आदमी है। बामन है, तुम जानो, लेकिन साला ज़रा चलन का ढीला है।"

"कैसे? कैसे?"

"साले के सात-आठ बच्चे होंगे कोई, लेकिन फिर भी एक ड्राइवर की औरत से याराना है। तुम उससे बात कर लो। साला फोश बात करता है।" रामसिंह तिवाड़ी ने सोचते हुए फिर रुककर कहा, "सच बात तो यह है, तुम भी मानोगे, महेश, उन सालों ने गुण्डों को भी बना लिया है। यार, जब तक गुण्डों का दल नहीं बनेगा, तब तक ये दबेंगे नहीं। मैंने सब बातों का पता लगा लिया है। उसका वह साला है न, गोविन्द, वह छंटा हुआ गुण्डा, उसने साली तिजारत बना रखा है कांग्रेस को। वह बहादुरसिंह का कुत्ता है। और बहादुरसिंह को उसकी ज़रूरत है क्योंकि वह गुण्डा खुद है। मुझे पता लगा है कि यह गोविन्द मुझे बदनाम करनेवाला है उस नाइन के पीछे। यार, इसका उससे नाजायज़ ताल्लुक है। और वह नाइन जो है, वह बखुद बदमाश है। उस लड़की का बाप घर से इसलिए भाग गया कि उसकी माँ बदमाश थी। और उस औरत का आना-जाना बदस्तूर जारी है चंचलसिंह के यहाँ। और उसका राधे नाम के एक आदमी से भी ताल्लुक है। तुम इस चंचलसिंह को क्या समझते हो! नाग है, काला नाग। और वह था न प्रहलादनरायन, साला सोशलिस्ट बनता है, हरामज़ादा! मिल गया है साला उन लोगों से जाकर, टुकड़खोर! मदनमोहन घीया को चाट कर लिया है इन्होंने। और वह था न, चन्द्रमोहन कम्युनिस्ट? कैसी बड़ी-बड़ी बात करता था, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, डालरवाद! उसको गजराजसिंह ने मसक दिया है। साला लगता है गजराजसिंह का। इस मुल्क में तो बिरादरी से काम चलेगा। नातेदारी, रिश्तेदारी के अलावा और कोई तरीका नहीं है काम चलाने का। प्रहलादनरायन, साला जब गाना गाया करता था—पंडित नेहरू के विषैले काले नाग। और अब क्या हुआ?"

"यार, हमें प्रहलादनरायन से ऐसी उम्मीद नहीं थी। वह तो साला बामन है। कुछ तो ख्याल करना चाहिए।"

"अजी, यह बामन की जात बड़ी खराब होती है।" तिवाड़ी ने कहा, "इसमें अगर एका होता तो बात ही क्या थी!"

"अच्छा, तो मैं चलूँ। तुम ध्यान रखना। टेलीफोन खटकने दो।"

जब वह चला गया तो रामसिंह तिवाड़ी ने भीतर जाकर कहा, “आप लोगों ने सुना, डी. आर. ओ. क्या कह रहे थे?”

“क्या कह रहे थे?”

“वह मुझसे कह रहे थे,” रामसिंह तिवाड़ी ने तेज़ आवाज़ में कहा, “मैं साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रहा हूँ और मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। कह रहे थे कि मैं वैसे डी. आर. ओ. हूँ, लेकिन आखिर तो कांग्रेस का आदमी हूँ। आपने सुना, चुनाव करानेवालों के दिमाग किस तरह भर दिए गए हैं मेरे खिलाफ। आप लोग देखिए, ये लोग चुनाव के लिए कैसे-कैसे हथकंडे अख्तियार कर रहे हैं! योजना बन रही है कि पंचों के चुने जाते ही उनको बन्द कर लिया जाएगा हवेली में। उनको लड्डू खिलाए जाएँगे। इसे तो प्रजातन्त्र नहीं कहा जा सकता। बताइए, आप सर्वोदय के नेता हैं, आप आर्यसमाज के नेता हैं।”

अब जनसंघी सुधीर आर्य ने कहा, “इसीलिए कांग्रेस की नीति से हम लोग असन्तुष्ट हो गए। हमने इस नौकरशाही रवैये का विरोध करने के लिए, देश में नया जागरण फैलाने के लिए सिर उठाया है। आज हमारी पार्टी बड़ी नहीं है, इसलिए हम चाहते हैं कि कांग्रेस में ही उस व्यक्ति की हम मदद करें जो प्रजातन्त्र की ओर हो, और तिवाड़ीजी में हमने अभी तक कुछ गुण ऐसे पाए हैं कि हमारे मन में सन्तोष होता है।” और फिर उसने मुड़कर हिरदेराम इत्यादि की ओर देखा और जोर से कहा, “भाइयो...”

इस आवाज़ को सुनकर रामधन और रामकरन की नींद टूट गई। उसने कहा, “आप लोगों को चाहिए कि गाँव-गाँव में तिवाड़ीजी का नाम फैलाओ।”

रामधन ने कहा धीरे से झुककर रामकरन के कान में, “अजी साहब, बड़ा बोलनेवाला आदमी है!”

और गम्भीरता से रामकरन ने अपना सिर हिलाया, जैसे उसकी बात को स्वीकार कर लिया।

जब सब लोग चले गए, रामसिंह तिवाड़ी ने कहा, “हिरदेराम, हल्ला मचाओ, आवाज़ उठाओ, गाँव के लोगों में शोर करो, और कहो कि भ्रष्टाचार, रिश्वत, व्यभिचार इस तरह फैल रहा है। इसके बिना तुम ज़िन्दा नहीं रह सकोगे।”

हिरदेराम ने हाथ जोड़कर कहा, “सरकार, बस आप ही का आसरा है।”

रामस्वरूप ने दांत निकालकर कहा, “तिवाड़ीजी, एक बस आप ही का भरोसा है। आप जानो सालिम धाकर आपकी तरफ रहेंगे, जन-बच्चा आपको आसीस देगा। लेकिन गरीब की सुनवाई होनी चाहिए।”

“होगी।” तिवाड़ी ने कहा, “लेकिन पहले इस लायक तो हमको बनाओ कि हम तुम्हारी बात सुनवा सकें। तुम वोट उनको देते हो जो तुमपर जुल्म ढाते हैं और दुआ हमसे माँगते हो जिनके हाथ में कोई हुकूमत नहीं।”

लेकिन चुनाव में दोनों तरफ की पैंतरेबाजी में निहाल का नाम धीरे-धीरे ऊपर आने लगा। यद्यपि ठाकुर चंचलसिंह नहीं चाहते थे कि किसी प्रकार भी उसका नाम आए, लेकिन उनके पक्ष के लोग रामसिंह तिवाड़ी को बदनाम करने के लिए कहीं न कहीं निहाल का नाम लेते थे। इसी प्रकार यद्यपि रामसिंह तिवाड़ी नहीं चाहता था कि निहाल की चर्चा आए, फिर भी उसक पक्ष के लोग जब चंचलसिंह को बदनाम करने का यत्न करते, तब उसके लड़के के ऊपर चलते खून के मुकदमे का भी हवाला देते और कांग्रेस के नाम पर भ्रष्टाचार फैलानेवाले कार्यों का ज़िक्र करने में उन्हें यह कहना ही पड़ता कि नरायन का एक नाइन की लड़की से याराना था। इस प्रकार निहालकौर कांग्रेस के इस चुनाव में ऐसी हो गई कि लोगों के हृदय में उसके प्रति कौतूहल जाग गया। एक सहज स्वभाव होता है कि समाज में जो बदचलन कही जाती है उसके प्रति लोगों में कौतूहल जाग जाता है। स्त्रियाँ ऐसी स्त्री की निंदा करती हैं, लेकिन मन ही मन उसका अधिक से अधिक उल्लेख करते हुए रस लिया करती हैं। और पुरुषों में भीतर ही भीतर प्रायः एक भाव उठता है कि देखें तो सही, वह कैसी है! और नौजवान लोगों के दिल में एक भावना-सी उठती है, जो वे व्यक्त नहीं करना चाहते।

ये खबरें रमोना में माधो और नरायन तक भी पहुँचीं और माधो ने नरायन से कहा, “सुना तुमने?”

नरायन ने कहा, “क्या?”

“अब निहालकौर का नाम फैल रहा है।”

नरायन को लगा जैसे उसके दिल पर किसी ने बिच्छू का डंक लगा दिया। उसका सिर लज्जा से झुक गया।

“तू क्या चिन्ता करता है!” माधो ने कहा, “बड़े पाप-पाप की धुन लगाया करता है! कुछ खलिहान की भी खबर है कि खेत-खेत ही चिल्लाता रहेगा! मुझसे गोविन्द मिला था। वह छंटा हुआ बदमाश है, निहाल से उसकी यारी है।”

नरायन ने फूत्कार किया, “झूठ बोलता है वह भी।”

माधो ने हंस कर कहा, “क्यों? तू तो ऐसे नाराज़ हो रहा है जैसे वह तेरी ब्याहता थी। अरे, उसने हम लोगों का सत्यानाश कर दिया। वह कोई मामूली औरत है! तू उससे भी हया और शरम की उम्मीद करता है?”

नरायन बोला नहीं। और थोड़ी देर बाद उसने कहा, “माधो, यह दुनिया बड़ी अजीब है; है ना?”

“क्यों अजीब है?” माधो ने पूछा। और पहली बार माधो ने नरायन से ऐसी बात कही कि नरायन चौंक गया। पहली बार नरायन को महसूस हुआ कि माधो भी एक मनुष्य था और वह भी सोचता था। माधो ने कहा, “नरायन, तू जो पाप-पाप कहा करता है, पाप अपने-आप में कुछ नहीं होता। हम निहाल से मिलते थे, निहाल हमें बुलाती थी। जोश में

अंधी होकर वह हम दो को एक साथ खिलाती थी। इस बात को मैं सोचता हूँ तो मेरा दिल अन्दर ही अन्दर कांपने लगता है, इसलिए कि ऐसा होता नहीं है। हम जहाँ रहते हैं वहाँ ऐसा काम बुरा समझा जाता है। लेकिन अगर गौर से देखो तो अगर हम न सोचें कि इसमें बुराई कुछ भी नहीं है, अगर मैं और तू दोनों इसे बिलकुल मामूली बात समझ लें, तो इसमें भावना का पाप नहीं लगेगा और हमारे अन्दर एक छोटापन पैदा नहीं होगा। ऐसा हुआ है। लोग कहते है कि द्रौपदी के पाँच पति थे, तो वह बात हम ऐसे मान लेते हैं कि किसी तरह सोचते ही नहीं कि ऐसा कैसे सम्भव हुआ होगा। हम तो दो थे, वे तो पाँच थे। पाप तो हमारे नेम-नेम में है। नरायण अपने-आपमें पाप कहाँ है? जिन्दगी-भर हम ऐसा करते रहते और किसीको पता नहीं चलता तो फिर पाप कहाँ था? हम तुम जानते हैं कि हमारे गाँव में ऐसे कितने ही आदमी-औरत हैं, जिनका नाजायज़ ताल्लुक है। अपने बेटों की बहुओं से ताल्लुक रखनेवाले भी आदमी हैं, लेकिन वे लोग कभी उसके बारे में सोचते नहीं। और अफवाह उड़ती है, गाँववाले जानते हैं, लेकिन कोई कुछ कहता नहीं। क्या हम ही दो पापी थे और कोई नही था, या नहीं है या नहीं होगा? पकड़े गए का पाप होता है, नरायन! तू भूल गया, यह अपने साथ में जो पढ़ता है—बधौतिया—उसने क्या किस्सा सुनाया था कि कस्तूरी से उसका लगाव था और कस्तूरी का ब्याह हो गया और कस्तूरी से अब भी उसका लगाव है। लेकिन बस एक कमाल है, इसे कोई जानता नहीं।” और माघो ने बहुत सोचते हुए कहा, “हम लोग ऊंची जात के हैं, जिनके यहाँ कि शिक्षा फैल रही है। लड़के—लड़कियों की देर में शादी होती है, इसीलिए पाप बढ़ता जा रहा है। ऐसा मैं सोचता नहीं, नरायण, लेकिन जब मैंने इसे गौर से सोचा तो मैंने देखा कि छोटी जात के लोगों में भी यह सब मौजूद है, हालांकि छोटी उम्र में शादी होती है। अरे, शादी का इसमें कोई अड़ंगा है ही नहीं। पाप एक अलग चीज़ है, शादी एक अलग चीज़ है। बल्कि शादी उस पाप को ढंकने के लिए एक आड़ है। इससे तो वही बच सकते हैं, जो साधु—महात्मा हों। पर हम लोग जिस माटी के बने है, वह हाल गरम होती है और हाल ठन्डी हो जाती है। मैनें किताब में यह भी पढ़ा है कि पाप शरीर से किया जाता है। ऐसा समझना गलत है। पाप तो तभी हो जाता है जब उसका मन में उदय हो जाता है। इस नज़र से देखने पर कितने आदमी ऐसे होगे जो पापहीन कहला सकें?”

नरायन ने धीरे से कहा, “यह ठीक है, माधो, लेकिन वह पाप इतना बड़ा नहीं जितना बड़ा दूसरा पाप हमसे हुआ है। खून के लिए क्या कहेगा?”

माधो चुप होकर घूमने लगा, फिर उसने कहा, “खून तो हो गया, लेकिन इतने लोगों ने जो हत्या की है तो वे वीर कहलाए हैं। एक औरत आग पर खड़ी होकर जल मरती है, लोग उसे सती कहते हैं। तो यह सब क्या पाप नहीं है? पलटन का आदमी गोली मारकर दूसरों को उड़ा देता है, लेकिन फिर भी वह पापी नहीं कहलाता है। नरायन, हत्या अपने-आपमें पाप नहीं है, पाप उस बात में देखा जाता है जिसके कारण हत्या की जाती है। घर

में आने वाले मोर को हम मारते नहीं, उसको पालते हैं। लेकिन अंग्रेज़ लोग उसको काट डालते हैं। उनके यहाँ उसे खाया जाता है, इसलिए उनके यहाँ मोर को मारना बुरा नहीं समझा जाता। लेकिन सार्वजनिक रूप से सांप को हर जगह मार दिया जाता है, इसलिए कि उससे खतरा रहता है। इसलिए हत्या और बलात्कार समाज के नियमों के हिसाब से किया जाए तो वह ठीक होता है। अनमेल शादी हो जाती है। लड़की नहीं चाहती कि शादी हो; लेकिन मजबूरी में उसे उस आदमी के साथ जाना पड़ता है जिसके साथ उसके फेरे पड़ जाते हैं। तू क्या समझता है, वह आदमी उसे पत्नी बनाकर उससे बलात्कार नहीं करता? उसे और क्या कहा जा सकता है? नरायन, काम एक है, अलग-अलग मौके पर उसको अलग-अलग नाम दिए जाते हैं।"

नरायन ने तीखी आवाज़ में कहा, "माधो, अपने-आपको धोखा देने की कोशिश मत कर। तू कहता है, ये सब नियम समाज के बनाए हुए हैं, इसलिए अगर मन नहीं भरता तो उन सब कामों को छिपे तौर पर करना जायज़ है, जो खुले तौर पर नहीं किए जा सकते। तू कहता है, यह सब आदमी के बनाए हुए कानून हैं, परमात्मा का इससे कोई मतलब नहीं। लेकिन मैं इसे नहीं मानता। अगर इस हिसाब से दुनिया चलने लगी, तो जिसको हम लोग भलमनसाहत कहते हैं, नेकी कहते हैं वह कहाँ रही? उस तराजू पर अपने-आपको तू तोल जहाँ तेरा असली वज़न दिखाई दे सके। इसका क्या मतलब हुआ? इसका मतलब यह है कि दुनिया में कोई शराफत ही नहीं होगी, हर कोई यह कह देगा कि भई, समाज के नियम ऐसे हैं, मैं खुले तौर पर ऐसा नहीं कर सकता हूँ, इसलिए छिपे तौर पर ऐसा करता हूँ। मर्यादा तभी आती है, जब एक-दूसरे के नियम को निभाया जाता है।"

माधो ने कहा, "इसका तो कोई मतलब ही नहीं निकला!"

"हाँ!" नरायन ने कहा, "इसका मतलब तुझे नज़र नहीं आएगा, क्योंकि तू इसमें खुद फंसा हुआ है। अगर तेरी जगह कोई दूसरा होता और फिर तू तो उसके बारे में सोचता, तो तुझे गुस्सा आता, तब तुझे वह बुरा लगता!"

माधो ने कहा, "नरायन, देख, सोच, मान लिया हम लोगों ने पाप किया, और पाप यह किया कि शादीशुदा निहाल से ताल्लुक रखा। दूसरा पाप हमने यह किया कि हम-तुम दो आदमी इसमें शामिल हुए। तीसरा पाप हमने यह किया कि हिरदे की लड़की की बेइज़्ज़ती की, और चौथा पाप हमने यह किया कि उसका कत्ल किया। इसके बाद तो हमने कोई पाप नहीं किया। लेकिन यह भी तो सोच कि पहला पाप हमने इसलिए किया कि हम इसे दिल्लगी समझते थे। हम इस पाप की गहराई जानते ही नहीं थे, और बहुत-से लोग ऐसा करते हैं, हम भी कर बैठे। अच्छा, दूसरा जो पाप था, वह हमारा कसूर नहीं था, वह निहाल का कसूर था। तीसरा हमने जान-बूझकर नहीं किया था। हम समझे थे, जैसी औरत निहाल है, वैसी वह भी होगी। एक बार इसको चस्का लग जाएगा तो वह भी ऐसा करने लगेगी और चस्का लग जाएगा। और चौथा पाप जो हमने किया। वह हमने डरकर

किया, अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए किया, क्योंकि इतना सब करने के बाद भी हम अपने-आपको शरीफ समझते थे। हमें डर था, हमारा नाम गाँव में बदनाम न हो जाए। हम अपनी शराफत के झूठे विश्वास का मोल चुका रहे हैं। इसीलिए हम लोग थाने में पिटे, इसीलिए हम लोगों को कचहरी में जाकर खड़ा होना पड़ा। है ना यही बात?"

नरायन ने कहा, "ठीक है। हरएक को अपनी-अपनी शराफत का ख्याल होता है। वह कौन-सी जगह है जहाँ एक-दूसरे का नुकसान न हो। मेरा मन इससे नहीं भरता माधो। कानून में सिर्फ यह देखा जाता है कि हम लिखावट से बच जाते हैं या नहीं। हमको अपने दिल से पूछना पड़ता है कि दुनिया-दिखावे को इससे हम बच गए हैं, या उस बनानेवाले परमात्मा के सामने भी हम इससे बच गए? कानून को दुनिया देखती है, लेकिन धरम के नाम को वह देखता है, जिसकी आँखें हमें दिखाई नहीं देतीं। उससे हम कैसे बचेंगे?"

माधो ने कहा, "वह होता भी है या नहीं, इसको क्या कहता है? और यदि वह होता है तो वह परलोक में ही तो कह देगा, यहाँ तो कुछ नहीं बोलेगा।"

नरायन ने कहा, "उसके कष्टों की मत पूछ। उसको जब क्रोध आता है तो वह सड़ा-सड़ाकर मार देता है। देह से कोढ़ फूट पड़ता है।" और यह कहते-कहते भय और आतंक के कारण नरायन के रोंगटे खड़े हो गए।

माधो की आँखें सिकुड़ गईं और उसने हताश होकर कहा, "तो फिर तू कहना क्या चाहता है?"

नरायन ने कहा, "मैं, माधो, चाहता वह हूँ जिसकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ती है। मैं तुझे बचाकर सारा खून अपने सिर पर ले लेना चाहता हूँ। इस सारे आडम्बर का पर्दा-फाश कर देना चाहता हूँ। मेरे कानों में यह भी खबर आ चुकी है कि निहाल को उसके ससुरालवाले परेशान कर रहे हैं, क्योंकि वह बिना गौने के वहाँ चली गई। वह बहुत बदनाम हो गई है। मैं उसको बदनामी से छुड़ाकर, तुझको खून के दाग से छुड़ाकर सारा इल्ज़ाम अपने ऊपर ले लूँ तो शायद मेरे पाप का प्रायश्चित हो जाए। थोड़े दिन भूत बनकर रहूँगा, लेकिन फिर भगवान के दरबार से क्षमा मिल जाएगी, क्योंकि मैंने अपने कसूर को मान लिया है। माधो, मैं उतने बड़े दरबार से झूठ नहीं बोल सकता। यह सब जो दिखाई दे रहे हैं, ये सब छोटे-छोटे बौने हैं, माधो, और जहाँ हमको जाना है, बाबा कहा करते थे, वहाँ बहुत उजाला है, उस उजाले में सारा अंधेरा छंट जाता है। बहुत बड़ा चक्कर है, बहुत बड़ा, इसका कोई अन्त नहीं है, माधो।"

माधो ने हताश होकर सिर हिलाया और कहा, "पागल मत बन! हज़ारों रुपये फुंक चुके हैं। अब कसूर ढंक गया। अब तो ऐसे ही परमात्मा के सामने रो-रोकर प्रायश्चित्त कर लिया कर। लेकिन अगर तूने कानून के सामने ऐसा प्रायश्चित्त किया, तो याद रखियो, हमारे-तुम्हारे बाप कहीं जेल की हवा खाते नज़र न आएँ और फिर हमारे घर के लोग राहों पर भीख माँगते नज़र आएँगे।"

नरायन ने आंसुओं से डबडबाती आँखों को अपनी हथेलियों से दबा लिया। माधो वहाँ से हट गया।

हट गया माधो, लेकिन निहाल के पास हटने की जगह नहीं थी। पन्ना और किसना बिरादरी के सामने कहाँ तक खड़े हो सकते थे? और अन्त में किसना ने कहा, "पन्ना, अब तो अपनी सास को खबर भेज दे कि लड़की को ले जाए और रस्म से गौना पूरा करके भेज दे।"

पन्ना ने कहा, "लेकिन गौने में वह कौन-सी ऐसी मोंठ तौल देगी?"

किसना ने कहा, "अबे, तू बड़ा उल्लू का पट्ठा है!"

पन्ना ने कहा, "सो तो ज़माना कहता है।"

इस बात को सुनकर किसना बड़ा नाखुश हुआ कि वह अपने-आपको गाली देकर भी मौलिक बात नहीं कह सका था। उसने कहा, "यह सब माल मैं ले जाऊंगा जो तुझे मिलेगा? यह सब मैं तेरे लिए कर रहा हूँ कि अपने लिए कर रहा हूँ? हो जा अलग अपनी लुगाई को लेकर। मुझे नहीं कुछ मतलब तुझसे। मैं तो बिरादरी में जैसे जिया वैसे जीऊंगा। समझ गया? तेरी तरह नहीं हूँ। यह मत सोचियो कि इस मकान में तेरा हिस्सा है। यह मेरे बाप का बनाया हुआ नहीं है, मेरा बनाया हुआ है। मेरी मरजी है कि तुझे रहने दूं या नहीं रहने नहीं दूं।"

पन्ना ने कहा, "आखिर कोई बात भी हो कि वैसे ही सबेरे-सबेरे लड़ने लग गए?"

"लड़ने लग गया?" किसना ने कहा, "इतने दिन से शराफत से बात कर रहा हूँ, लेकिन समझता ही नहीं है!"

"तो मैं कब मना कर रहा हूँ!" पन्ना ने कहा।

"तो फिर चला जा आज।"

निहाल उस समय कुएँ पर गई हुई थी। उसको पिता-पुत्र का यह झगड़ा पता नहीं चला। लेकिन पन्ना नहीं गया। उसने चम्पो के पास खबर भिजवा दी।

खबर सुनकर चम्पो सकपका गई। बोली, "हम तो नहीं भेज रहे थे लड़की को। उस बखत तो मेहमान ऐसे अड़ गए कि हम ले ही जाएँगे। अब कैसे गले में कौर अटक गया? समधी ने सोचा होगा कि चलो, कुछ और अखिरी बार सूंत ले जाएँ।"

लेकिन जिस आदमी ने खबर लाकर दी, उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी और अपने काम की जल्दी भी थी। उसने कहा, "अब तुम जानो, वह जाने। उसने मुझसे कह दी थी चलते बखत कि कह देना। मैंने कह दी। अरे, कौन तुम ऊंची जाति के हो, जो यह सब बात देखनी पड़े! और हम लोगों की तरह ठाकुरों का मामला होता तो कोई बात भी थी। नाई भी कोई जाति होय!"

यह कहकर वह तो चला गया। लेकिन चम्पो कुछ लज्जित सी चुप हो गई! उसके चले जाने के बाद वह ठाकुर चंचलसिंह के यहाँ पहुँची और खटोले पर बैठी दादी के चरण

छुए।

“अरे, कौन है?” बुढ़िया ने कहा।

“मैं हूँ जी!” चम्पो ने उत्तर दिया। माथे तक घूंघट था।

चमेली ने आवाज़ दी, “सियाराम की बहू है।”

चम्पो ने उठकर चमेली के पांव दबाए।

चमेली ने कहा, “माँ जी, मिलने आई है।”

“अच्छा।” दादी ने कहा, “बैठ जा। अरी, तू आई नहीं बहुत दिन से।”

चम्पो ने कहा, “अम्माजी, मैं क्या आऊं, मेरा तो आना-जाना ही बेकार हो गया। आऊं तो मुसीबत, नहीं आऊं तो मुसीबत।”

“क्यों-क्यों? कैसे, क्या बात हुई? तैने तो छोरी बिना गौने के भेज दी।”

“नहीं भेजती तो करती क्या! अब तुमसे क्यों छिपाऊं, छिपाने की बात है क्या? लाला का नाम आ गया था बीच में। कतल का केस था। और मैं सच कहूँ तो मैं बुरी बनूं। दरोगाजी ने कही कि दूर कर दे यहाँ से, सो भेज दी। और मेरा कौन था? तुम्हारा नाई तो कभी का मुझे दगा दे गया।”

चमेली के पास फुरसत नहीं थी। बाहर चुनाववाले थे; घर में तरह-तरह के लोग डोल रहे थे। वह नहीं चाहती थी कि यह चर्चा चले। और नाइन का दम्भ देखकर उसके दिल में आग लग गई। उसने कहा, “और नाई की जात! ऐसे ही माँ ने दुनिया कर घर घाले, ऐसी ही तेरी बेटी थी। छिनाला करके दुनिया को बिगाड़ा।”

लेकिन चम्पो आज तैयार होकर आई थी। उसने कहा, “बड़े आदमी हो, सब कुछ कह सको; लेकिन भगवान गरीबों को देखता है। बुराई तो लुगाई को लगती है, मोट्यार को नहीं।”

चमेली को क्रोध आ गया। उसने कहा, “दुनिया भर के कुकरम करके तुझे लाज न आई यहाँ बात करते!”

इसी समय पानी लेने भीतर गोविन्द आया और औरतों की चख-चख सुनके बोला, “क्या बात हुई?”

चम्पो ने कहा, “बात तो कुछ नहीं हुई। बड़े आदमी हैं। गुस्सा हो रहे हैं। हमें बोलने का हक थोड़े ही है। मैंने छोरी भेज दी बदनामी से बचने को। लड़की की जात, कतल के मामले में उल्टी-सीधी बोल जाती तो फंस जाते लल्ला ही। अब उसका यह नतीजा निकला कि मुझे छिनाल कह दिया। अब मैं क्या करूं? मेरे हाथ में क्या कुछ है?”

चमेली का क्रोध भयंकर हो उठा। उसने हंसकर कहा, “अच्छा, तो तेरे हाथ में कुछ होता तो तू बदला भी ले लेती। इतनी बोल गई, यह भी जमाने की बात है।”

गोविन्द ने सोचा—चुनाव का समय, नाइन का पिटना ठीक नहीं होगा। इससे आपस में फूट पड़ती है और दूसरी पार्टी के लोग फायदा उठाते हैं। वह तुरन्त गया और ठाकुर

साहब को बुला ले आया।

चंचलसिंह के भीतर आते ही शान्ति हो गई। चमेली वहाँ से हट गई और चम्पो ने रोते हुए उनके पांव पकड़ लिए।

चंचलसिंह ने कहा, “गोविन्द, देखो, कोई भीतर न आए।”

पांव छुड़ाकर चंचलसिंह ने कोठे में प्रवेश किया और कहा, “नरायन की माँ, वक्त देखकर बात करनी चाहिए। ठीक है, यह औरत बदमाश है। इसे कौन नहीं जानता! लेकिन ये लोग नंगे हैं। प्रजातन्त्र का युग है, अभी इसको पिटते देखकर सब लोग उल्टे यह कहने लगेंगे कि देखो, ठाकुर के यहाँ जूते लगने लगे। यह दबने का वक्त आ गया है हम लोगों के लिए।”

चमेली क्रोध से भरी हुई थी। उसने उत्तर नहीं दिया।

“सोचकर देखो!” ठाकुर ने कहा।

“सोचकर क्या देखूं?” चमेली भभक उठी, “तुम तो उल्टे मुझे ही दबाते हो। इस कमीनी औरत की तरफदारी करते हुए तुम्हें लाज नहीं आती!”

ठाकुर ने पैनी आवाज़ में कहा, “लाज मुझे बहुत आती है, लेकिन तुम्हारे बेटे ने मेरी लज्जा को पैरों के नीचे कुचल दिया है। याद रखो, तुम एक खूनी की माँ हो। तुम एक ऐसे की माँ हो जिसने एक भयंकर पाप किया है। परमात्मा के सामने तो हमारा सिर नीचा हमेशा के लिए हो ही गया, लेकिन हम इस लायक नहीं हैं कि किसी से सिर उठाकर बोल सकें। यह जो पैसे के बल पर इतना खेल खेला जा रहा है, इसके पीछे न्याय नहीं है। और सच्चाई यह है कि यह औरत हमारी शरण में आई है, क्योंकि इसके साथ हमारे लड़के ने अन्याय किया है। तुम यह क्यों भूल जाती हो कि अपना लड़का होने से ही उसका हर कसूर दब नहीं जाता? बाहर कई लोग बैठे हैं। अब यह हरामजादी चिल्लाना शुरू कर दे तो मेरी क्या इज़्ज़त रह जाएगी? पी जाओ गुस्सा।”

ठाकुर ने उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की और बाहर आ गए। चमेली की आँखों में आंसू आ गए और भीतर जाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

चंचलसिंह ने चम्पो से कहा, “क्या चाहती है?”

चम्पो ने कहा, “छोरी का गौना।”

“करा ले। तुझे कौन रोकता है? तेरी बिरादरी का मामला है, हमको उससे क्या मतलब? बात का बतंगड़ क्यों करती है? चुपचाप मेहमान को बुला ले, चुपचाप गौना कर दे, भेज दे। बिरादरी के दस आदमियों को बुला ले; खिला दे, पिला दे और मुँह बन्द कर दे।”

चम्पो ने कहा, “पर महाराज, मेरे पास इतना पैसा कहाँ है? पैसा हो तो कोई चूं न बोले।”

“इन्तज़ाम हो जाएगा। चली जा। खबरदार जो लौटकर फिर आई!”

चम्पो ने धरती पर गिरकर ढोक दी और कहा, “जुग-जुग तुम्हारा बंश चले। तुम राजा होओ। मैं तुम्हारे घर-भर के पांव धो-धोकर पीऊंगी।”

“बस, अब चली जा यहाँ से।”

चम्पो के जाने के बाद ठाकुर एक कोठरी के भीतर चले गए और ऐसे खड़े हो गए जैसे अपमान ने उनको जला दिया था।

द्वार पर गोविन्द दीखा, उसने धीरे से प्रवेश करके कहा, “चली गई?”

“हाँ, चली गई।” ठाकुर ने कहा, “उसको रुपये का इन्तजाम कर दिया जाएगा; और यह काम तुम करोगे।”

गोविन्द ने हाथ जोड़कर कहा, “जैसा हुक्म होगा।”

“खबरदार!” चंचलसिंह ने कहा, “कानों-कान किसी को खबर न हो।”

“फिकर न करें, सरकार।” गोविन्द ने उत्तर दिया।

ठाकुर फिर चुपचाप खड़े रहे। गोविन्द ने कहा, “आप बाहर चलिए। सब लोग बैठे इन्तजार कर रहे हैं। खबर आई है कि बहादुरसिंहजी आनेवाले हैं।”

चंचलसिंह जैसे चौंक उठे, जैसे उन्हें सब-कुछ याद आ गया हो, और उनके मुँह से निकला, “उफ! इस जीने से तो मर जाना अच्छा।”

गोविन्द ने चंचलसिंह का यह रूप तनिक आश्चर्य से देखा। ठाकुर तब तक बाहर चले जा चुके थे।

चमेली की रोने की आवाज़ सुनकर बूढ़ी दादी ने पुकारा, “बहू!” लेकिन कोई उत्तर नहीं आया। घुटी हुई रोने की आवाज़ अब भी गूंज रही थी। उस समय हाथों से टटोलती हुई वयोवृद्धा खटोले पर से उठ खड़ी हुई और उसने करुण स्वर से पुकारा, “बहू, कहाँ है?” और कोई उत्तर न पाकर वृद्धा लड़खड़ाती-सी कोठरी की ओर चल पड़ी। रास्ते के खम्भे से एक बार उसका हाथ टकराया, लेकिन पुरानी आदत के मुताबिक उसने रास्ता पार कर लिया और भीतर जाकर कहा, “कहाँ है मेरी बहू?”

चमेली ने पृथ्वी पर बैठे-बैठे कहा, “माँजी, तुम आ गईं?”

बुढ़िया ने टटोलते हुए उसके समीप आकर उसके सिर को अपनी छाती से लगाकर उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा, “पी जा, पी जा, बहू! इस दुनिया में घर की इज्जत के लिए कौन मरता है? घर की मालकिन...तू ही घर की मालकिन है। तू जब से आई है तब से इस घर में कभी लड़ाई नहीं हुई। तू इस घर की लच्छमी है। अगर तू अपना जी हलकान करेगी तो कैसे काम चलेगा, यह भी तो सोच कि चंचलसिंह के दिल पर क्या बीत रही है। तू यह मत सोच कि उसने तुझसे अन्याय किया है। लेकिन इस बखत कोई चारा नहीं था, बहू, और वह करता भी क्या?”

चमेली रोती रही।

बूढ़ी ने उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा, “उठ! जैसा बोया है, वैसा ही काट। विधना ने हमारा सिर झुका दिया है। बाहर लोग बैठे हैं। मान छोड़। जो हो रहा है, उसको तो मानना ही पड़ेगा। अगर तू न संभालेगी घर को तो अब और है ही कौन?”

चमेली ने कहा, “चलो माँजी! तुम यहाँ क्यों आ गईं?”

उसने आंसू पोंछ लिए और वृद्धा को सहारा देकर खटोले पर लाकर बैठा दिया और उसके पांव छूकर कहा, “माँजी, मैं गुस्से में भूल गई थी। मुझे माफ कर देना।”

बूढ़ी ने अपनी अंधियारी आँखों को पोंछते हुए कहा, “तेरा सुहाग अमर हो, बहू, तेरा घर फले-फूले। विधना का भी कैसा अजीब नेम है कि तुझ-जैसी सती को भी उसने ऐसा दंड दिया!”

चमेली काम में लग गई।

उपसंहार

(जब उजाला नहीं रहता, तब अंधेरा हो जाता है और बहुत देर तक अंधेरा बना रहने से आँखें कुछ-कुछ देखने लगती हैं, क्योंकि वे बाहर बिखरी हुई उन धुंधलाई हुई किरणों को पकड़ने की चेष्टा करती हैं जो फिर भी अंधेरे में मौजूद रहती हैं, क्योंकि अंधेरा अपने-आप में कुछ नहीं होता। वह प्रकारान्तर से प्रकाश का अभाव हुआ करता है।)

गोविन्द और बहादुरसिंह की जीप गाँव में घूमने लगी। लोग बात करने लगे, लेकिन श्यौपाल ने चौकस होकर पहले ठाकुर चंचलसिंह के सामने अपने मुकदमे को अड़ा दिया। वह चाहता था कि हिरदे के नाम की टीप उसके नाम हो जाए। उसके हाथ में तीन वोट थे। वह किसी बादशाह से कम न था। चुनाव के घोड़े पर चढ़े हुए ठाकुर चंचलसिंह ने हरदयाल और जैराम को बुलाया। टीप बदली जा सकती थी, लेकिन उसके बाद असली लगाम एस. डी. एम. के हाथ में थी। लोगों में वैसे ही चर्चा हो रही थी। हिरदे की पार्टी मजबूत हो रही थी, क्योंकि उसके पीछे रामसिंह तिवाड़ी का हाथ था अब।

(डूबता आदमी कीचड़ से निकल कगार को ही पकड़ने की कोशिश करता है। उसकी फिसलन भी उसे सुखदायी मालूम पड़ती है, क्योंकि उसमें उसे लहरों का थपेड़ा नहीं लगता। उसको यह लगता है कि उसके पांव धसक रहे हैं, लेकिन किसी अतल में नहीं हैं। उसे उस घास का आसरा रहता है जो वहाँ उगी होती है, जिसको पकड़कर वह अपने सिर को ऊपर रख सकता है, लेकिन पानी के बाहर सिर नहीं रहता।)

और एस. डी. एम. को समझाने के लिए आवश्यक था कि कोई असरदार आदमी ढूंढ़ा जाए। गोविन्द ने याद दिलाया, “हूजूर, हुक्म दें तो एम. एल. ए. साहब की तरफ चक्कर लगा आऊं।”

ठाकुर चंचलसिंह की आँखों में एक चमक-सी आ गई। यह काम उनको कठिन लग रहा था, लेकिन फिर भी कुछ बात बैठी नहीं।

ठाकुर चंचलसिंह ने कहा, “चले जाओ।”

खबर सुनी। चंपो ने गोविन्द को बुलाया और बीड़ी का बंडल उसके सामने रखकर कहा, “लल्ला, जा ही रहे हो तो छोरी को भी ले आना। अब ठाकुर साहब ने आसरा दे दिया है, तब उसका गौना भी कर दूं।”

(कभी-कभी दीपक में इतना तेल डल जाता है कि बत्ती उसे जज्ब नहीं कर पाती और लौ बुझने लगती है, लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि चिराग की लौ इतनी तेजी

से झरने लगती है कि उस तेल को भी खत्म करने की ताकत ले आती है।)

वह निहाल थी। कसौटी पर चढ़े हुए सोने की तरह उसने सुना कि घन मुझपर गिरनेवाला है। पन्ना और किसना तैयार हो गए, लेकिन निहाल के मन में मरोड़ा खाकर एक सांप बैठा था।

प्यारेराम ने सारा केस सुना और कहा, "ठीक है। ये बात कठिन ज़रूर है, लेकिन मैं एस. डी. एम. से कह दूंगा। गवाह पेश करने पड़ेंगे।"

गोविन्द ने सुझाया, "हुजूर, बड़े खतरे का ज़माना आने वाला है।"

एम. एल. ए. प्यारेराम इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि वे गोविन्द के सामने अपने मन का भेद नहीं खोलना चाहते थे।

(सूरज पूरब से निकलता है और पश्चिम में छिप जाता है दुनिया बेवजह ही उसके उजाले से तरह-तरह का फायदा उठा लेती है। फिर जब चांद निकलता है तो उससे दुनिया कुछ न कुछ अपना काम निकाल ही लेती है। अखबार वाले ऐसे ही हुआ करते हैं। उन्हें चांद और सूरज से मतलब नहीं, कुछ होना चाहिए जिससे कुछ फायदा उठा सकें। उनके लिए बादल और बिजली भी बराबर है और सूखा पड़े तो वह भी बराबर है।)

चन्द्रप्रकाश और मदनमोहन घीया को जब यह बात मालूम पड़ी तो चन्द्रप्रकाश ने कहा, "भाई, यह समाचार तो ठीक नहीं रहेगा छापना।"

मदनमोहन ने कहा, "क्यों इसमें क्या बिगड़ता है?"

"यार, इसमें तो हमारे जीजाजी के ऊपर भी असर पड़ेगा।"

"ठाकुर गजराजसिंह पर?"

"क्यों नहीं!"

"अरे, मैं ऐसे खबर निकालता हूँ कि असर नहीं पड़ेगा। इलेक्शन की खबर कर दूंगा। लेकिन इसका एक फायदा हो जाएगा; कुछ पैसे मिल जाएँगे।"

"किससे?"

"अगर दुतरफा खबर छापता हूँ तो कोई न कोई तो दे ही जाएगा।"

और यह बात बिलकुल सच निकली। इधर प्यारेराम घबराए, उधर रामसिंह तिवाड़ी। चार सौ रुपये लेकर श्री मदनमोहन घीया आराम से घर में आ विराजे। खबर थी, प्यारेराम एम. एल. ए. की एस. डी. एम. पर दबाव डालने की चेष्टा, ताकि एक गाँव के मुकदमे में उनकी पार्टी को कुछ फायदा हो जाए और रामसिंह तिवाड़ी की इस चाल को काटने के लिए दूसरे अफसरों से मेल-जोल बढ़ाने की कोशिश, ताकि चुनाव में वह जीत सके।

और यह बात ऐसे आडम्बर और ऐसे चक्करों से लिखी गई कि दोनों ही घबरा गए।

घबराई निहाल भी, क्योंकि जो व्यक्ति उसे लाया वह गोविन्द था; और गोविन्द ने उससे एकान्त में कहा, "उसके मायके में अब तो उसका गौना होगा।" उस व्यंग्य से निहाल छटपटा उठी, किन्तु उसके पास घृणा के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

उसका व्यवहार विचित्र हो गया। इतना विचित्र कि चम्पो से उसने कहा, “तू मेरी माँ नहीं है, तू डायन है।”

चम्पो को आश्चर्य हुआ। उसने आँख खोलकर देखा और कहा, “क्या कहा?”

“हाँ!” लड़की ने उत्तर दिया, “माँ! तू पापिन है क्योंकि तूने ही मुझे ऐसा बनाया।” उसकी आँखें जल रही थीं।

प्यारेराम ने घबराकर पत्र लिखा—श्रीमान हरीसिंहजी, आप पी. सी. सी. के चीफ हैं। हमारी समस्या बहुत बढ़ गई है। आप आएँ तो कुछ मामला बने, क्योंकि यहाँ दिन पर दिन दूसरी पार्टी के लोग मज़बूत हुए चले जा रहे हैं और ब्राह्मणों का यह गठबंधन अब दूसरी जातियों को भी अपने साथ मिलाता जा रहा है। आप यह जानते हैं कि मैं ठाकुर नहीं हूँ, लेकिन मैं यह जानता हूँ कि ठाकुरों की पार्टी में जातिवाद नहीं है। कांग्रेस के लिए भयंकर खतरा उपस्थित हो गया है। ऐसे आदमियों के हाथ में सत्ता चले जाने का भय है, जिन्होंने कभी लोक की सेवा नहीं की।

ठाकुर चंचलसिंह ने सुना। गोविन्द ने प्रबन्ध करने का उत्तरदायित्व लिया। उधर समस्या आ गई थी कि रमोना में इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स फिर आ रहा था। कजौरीसिंह को लेकर ठाकुर चंचलसिंह वहाँ चले गए। लोग कहते हैं कि कजौरीसिंह ने उसके लिए मुर्गा बनवाया था और शराब की बोतल भिजवाई थी, लेकिन इतना प्रायः लोग जानते थे कि मिस्टर पचौरी ने लड़कों के साथ हेडमास्टर के खिलाफ गवाही दी थी। हेडमास्टर की इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स से झड़प हो गई थी और उसने उनके खिलाफ चार्जशीट बना दी थी। यह खबर भी लोगों में इस तरह फैली जैसी डूंमरपुर में निहालकौर के गौने की। डूंमरपुर में लोग दिल्लगी उड़ाने लगे।

रामसिंह तिवाड़ी ने जब इस बात को सुना तो उसके कान अलग से खड़े हुए। उसकी तृष्णा फिर से जाग उठी। गाँव के अनाड़ी डाक्टर और रजवाड़े के पुराने लोग इस बात को लेकर रामसिंह तिवाड़ी के साथ हो गए। तिवाड़ी ने लड़कों को भड़का दिया। कहते हैं, कुछ लड्डू भी बंटवाए और वे लड़के नारे लगाते हुए इधर-उधर घूमते थे, जिसमें निहालकौर बदनाम की जाती थी। लेकिन ठाकुर चंचलसिंह अब भी रुपया खर्च कर रहे थे।

उस दिन गाँव सजने लगा। डूंमरपुर में गृहमंत्री आए थे, श्री घनश्याम शर्मा, और उनके सामने एक कांड हो गया, जिसके कारण उनकी मोटर को निहाल के घर के सामने रुकना पड़ा। दो दलों में झगड़ा हो रहा था। मंत्रीजी नहीं समझे। हिरदे बीच में कुछ घायल-सा खड़ा था, क्योंकि उसने इस लड़ाई को रोकने की चेष्टा की थी और दामी चिल्ला रही थी, “अरे, मंत्री आ गए, लेकिन कोई नहीं सुनता। चोरी और अन्याय हो रहे हैं। लोक की लाज डूब गई।” और वह न जाने क्या बकती रही। मंत्री ने सब-कुछ सुना। रामसिंह

तिवाड़ी ने हत्यारे नरायन और माधो की गाथाएँ गानी शुरू कीं। गाँव इकट्ठा हो गया। लोगों पर से चंचलसिंह का भय और आतंक मानो उठ गए। ठाकुर गजराजसिंह व्यस्त-से इधर से उधर भाग-दौड़ रहे थे। डाकबंगले में जब मंत्रीजी ठहरे, तो कहते हैं, उनसे बाहर के पत्रकार आकर मिले और फिर मंत्रीजी का टेलीफोन खटका।

जगन्नाथ स्वरूप मुंसिफ के तबादले की खबर उड़ने लगी। सरपंच चंचलसिंह ने डूंमरपुर से जब रमोना जाकर सांस ली तो उनसे वकील जौहरी ने कहा, “यह नहीं होगा। आप अपना जोर लगाइए। मिनिस्ट्री में भी दो दल हैं।” और प्यारेराम राजधानी की ओर दौड़े। लेकिन मुख्यमंत्री ने इस झगड़े में पड़ने से इन्कार कर दिया और कहा, “इन छोटी-छोटी चीज़ों के लिए प्रशासन के बीच में बोलना किसी प्रकार भी उचित नहीं होगा।” तबादला स्थिर हुआ। सरपंच चंचलसिंह के मुख पर कालिख पुती। हिरदे नायक बन गया। गजराजसिंह को ऐसा लगने लगा जैसे धरती नीचे से कांप रही थी। नरायन और माधो ने सुना। आतंक से थर्रा उठा माधो। लेकिन नरायन हंस दिया। उसने कहा, “देख रहा है ऊपरवाला, देख रहा है ऊपरवाला माधो। उसने सूंड़ तक भीतर डूब जाने के बाद भी गज को उबार लिया था। बाबा झूठ नहीं कहता था। जब घड़ा पूरा भर जाता है, तभी वह उसको फोड़ता है। इस दुनिया में हर बात की सीमा होती है—पाप की भी।”

“तू क्या बक रहा है?” माधो ने कहा।

लेकिन नरायन सूनी आँखों से देखता रहा। उसकी आँखों में एक विचित्र पागलपन-सा दिख रहा था। कभी ऐसा लगता जैसे बिजली कौंध गई, कभी ऐसा लगता जैसे धुआं उठ रहा है, और उसकी आँखों में कल्पना आती। हिरदे का उठा हुआ सिर उसे दिखाई देता। दामी का सिर उसकी आँखों में बड़ा होता नज़र आता और फिर उस लड़की की एक विकराल-सी छाया दिखाई देती जो प्रतिहिंसा के लिए प्यासी थी, और तब चंचलसिंह, चमेली ये सब छोटे-छोटे दीपकों की तरह दिखाई देते, जिन पर हवा का एक तेज झोंका आता और उनकी लौएँ कांपने लगतीं, जैसे अभी बुझ जाएगा, अभी बुझ जाएगा। तब नरायन की भौंहें भयंकर रूप से टेढ़ी हो जातीं और उसका सीधा हाथ अचानक ही अपनी गरदन पर पहुँच जाता जैसे वह किसी चीज को उस जगह से दूर कर देना चाहता था। वह चीज क्या हो सकती थी? शायद वह फांसी का फंदा था।

गजराजसिंह ठाकुर के रोंगटे कांपने लगे। गृहमंत्री से सामना पड़ा था। उसने रात को जवाहरसिंह से कहा, “ठाकुर साहब, नाव डूबनेवाली है।”

लेकिन प्यारेराम को यह आशा नहीं थी। श्यौपाल ने टीप अपने नाम करा ली थी। पटवारी जैराम ने तनाजा डाल दिया था। रमोना में एस. डी. एम. की कचहरी में पैमसिंह और रामबकस गवाह थे और हिरदे फिर निर्बल हो गया था, क्योंकि उसकी बुनियाद धसकने लगी थी। लोग कहते हैं, उस दिन एस. डी. एम. की कचहरी में शोर किया, दुहाई दी; लोग यह भी कहते हैं कि डूंमरपुर बंट गया था। गोविन्द, श्यौपाल, गयासुकल,

कजौरीसिंह, किशनपाल, हरपाल, धनपाल, जीवनपाल, राधे, यादराम, घूरिया, रामपाल, बादाम, चम्पो— इन सबने निहाल का गौना कराया था और उधर दूसरी ओर राजाराम, मटरू, रामधन, रामकरन, रूपदास, भगत बनिया, किशोर, बिन्दा—ये सब दिल्लगी उड़ा रहे थे और उनके नीचे रामसिंह तिवाड़ी के आदमी थे और तहसीलदार कटारा ने रामसिंह तिवाड़ी के प्रभाव में आकर इतने सवाल किए पटवारी जैराम से कि उसको झकझोर कर रख दिया। पलटता पांसा, उखड़ती चौपड़, पिटती गोटें।

वह रात थी। गजराजसिंह ने सरपंच चंचलसिंह से कहा था, “कानून कहाँ जाएगा, अब यह सब क्या होगा ठाकुर साहब!”

चंचलसिंह ने कहा था, “अभी आपके हाथ में बहुत-कुछ है दरोगाजी। आप हिम्मत हार बैठे हैं। कितनी-सी चीज़ है यह हिरदे! बुलाकर थाने में धमकाइए, ढीला हो जाएगा।”

“अब मैं क्या कर सकता हूँ?” गजराजसिंह ने कहा।

“अरे, हाल का मामला है,” ठाकुर साहब ने कहा, “उस दिन मंत्रीजी आए थे, बलवा किया था इन लोगों ने। हिरेद घायल भी हुआ था। थोड़ा-सा जख्म किसी के लगवा दीजिए और हिरदे को बन्द कर दीजिए।”

“यह कैसे हो सकता है?” ठाकुर गजराजसिंह ने कहा, “वैसे मैं बुलाकर उसको फटकार दूंगा। डरा दूंगा।”

लेकिन डाकखाने का बाबू शर्मा था, रामसिंह तिवाड़ी का एक आदमी। उसने धीरे से खबर सरका दी और रामसिंह तिवाड़ी का टेलीफोन कलक्टर के नाम खटका। कलक्टर ने एस. डी. एम. से पूछा, “यह क्या मामला है भाई? तुम्हारे इलाके में बड़ी गड़बड़ियाँ हो रही हैं।” एस. डी. एम. ने कहा, “मुझे तो पता नहीं है। पुलिस इसमें गड़बड़ कर रही है। आप हुक्म दें तो मैं आगे कदम बढ़ाऊं?” “हाँ, मेरे पास तिवाड़ीजी का फोन आया है गजराजसिंह दरोगा जो हैं, वह बेवजह जुल्म कर रहा है और किसी एक पार्टी से मिल गया है। खैर, मैं डी. आई. जी. को फोन किए देता हूँ।”

गजराजसिंह जिस समय हिरदे को डांट रहे थे, अचानक डी. आई. जी. की जीप आकर रुकी। सिपाही नानिगराम और हीरालाल को समय भी नहीं मिला। नायब थानेदार मधुसूदन अरोरा के पांव के नीचे से धरती खिसक गई और जब ठाकुर साहब की पत्नी सुशीला ने सुना तो वह मूर्छित हो गई, क्योंकि उसकी समझ में न आया कि अब क्या होगा। लेकिन गजराजसिंह शांति से सारी समस्या को सुलझा गए। उनके कागज़ातों में कोई कमी नहीं थी। उनके सामने डी. आई. जी. ने देखा कि सिर्फ हिरदे ही नहीं था, कुछ पार्टी के भी लोग थे, इसलिए डी. आई. जी. संतुष्ट होकर चले गए। गजराजसिंह प्रसन्न बने रहे।

कहा जाता है कि इलेक्शन तेजी से बढ़ा। प्यारेराम जीप में डोलते। ठाकुर चंचलसिंह, जवाहरसिंह, बहादुरसिंह, मानसिंह और गोविन्द गाँव-गाँव में लोगों से मिल रहे थे और रामसिंह तिवाड़ी, मंत्री घनश्याम शर्मा के प्रभाव से तहसीलदार का दबाव डलवाते

हुए भीड़ को एकत्रित करने लगा था। उसने सरपंचों को गिरफ्तार कर लिया। उसकी बसें डोलतीं, उसके जयजयकार गूंजते और हिरदे शय्या पर पड़ा-पड़ा, अपनी चोट से मजबूर, सुनता, तो उसकी प्रतिहिंसा को एक तृप्ति मिलती।

ठाकुर चंचलसिंह सरपंच के घर में सत्यनारायण की कथा बोली गई। यह गाँव को इकट्ठा करने का एक तरीका था, लेकिन यह एक भयंकर खबर थी कि नया मुंसिफ गिरधारीलाल मिश्र आ गया था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह रामसिंह तिवाड़ी के प्रभाव में था। कुछ दिन बाद रामस्वरूप मास्टर हिरदे को लेकर एस. डी. एम. की कचहरी में रमोना चला गया। गोविन्द, ठाकुर गजराजसिंह से सलाह करने लगा। उसकी आँखों के सामने अंधेरा था। उसने ठाकुर चंचलसिंह से कहा, "हुजूर, पांसा पलट जाएगा।" चंचलसिंह हतबुद्धि हो रहे थे। चुनाव की तारीख पास आ रही थी। यह खबर और भी खतरनाक थी कि हिरदे अब एस. डी. एम. के पास पहुँच रहा था और रामसिंह तिवाड़ी उसकी मदद कर रहा था। गोविन्द ने कहा, "ठाकुर साहब, इस मामले को मैं संभाल लूँगा।"

रात हो गई थी। निहाल लेट गई थी। चम्पो ने कहा, "कैसे आए लल्ला?"

गोविन्द ने कहा, "आया हूँ, उसे अच्छी तरह सुन ले। समय फिर रहा है। चुनाव में तिवाड़ी की पार्टी ज़ोर मार रही है और वही जीतेगा। सारे वोटर उसके यहाँ बंद हैं। हम लोगों के पास दो-तीन आदमी हैं। हम लोगों के पास और कोई नहीं। मंत्री उधर है और हिरदे एस. डी. एम. की कचहरी में चला गया है और उसका अगला दांव कतल के केस को पलटना है, क्योंकि मुंसिफ बदल गया है। और यह याद रख कि तूने भले ही निहाल का गौना कर लिया हो, उसमें बचत नहीं है। मैंने ठाकुर गजराजसिंह से बात करके देख ली है। पुलिस की जांच हुई थी, जिसमें साफ-बेदाग निकल गया है। उसने कहा है कि मेरा मौका लगते ही मैं नरायन और माधो और निहाल को गिरफ्तार करके पेश कर दूंगा। इसलिए ज़रूरी यह है कि तेरा यह जो दफा 107 का मुकदमा है उसको चालू करके हिरदे को फांसे रख, और कल तू और निहाल चल रमोना।"

"मैं तो नहीं जाऊंगी।" चम्पो ने कहा।

"तुझे जाना होगा, वरना तू और तेरी लड़की दोनों थाने में बन्द रहेंगी और इस बार पन्ना और किसना भी तुझे नहीं बचा पाएँगे, क्योंकि प्यारेरामजी ऐमेले तेरे न जाने से तेरे खिलाफ हो जाएँगे, क्योंकि वे तिवाड़ीजी की पार्टी के खिलाफ हैं। निहाल ने सुना और यह अनुभव किया कि अब यह केवल निहाल नहीं थी, वह किसी एक बड़ी लड़ाई का मोहरा हो गई थी।

लेकिन यह गोविन्द का अपना खेल था। उसने स्पष्ट देख लिया था कि चुनाव जीतने के पहले ही रामसिंह तिवाड़ी के पैर पकड़ लेगा, तभी उसकी जीत होगी ओर उसकी तिजारत चलती रहेगी। जब वह रमोना में पहुँचा तो उसने चम्पो को एस. डी. एम. के सामने बैठाया और कहा, "तू यहाँ रह और किसी के चक्कर में मत पड़। मैं इस निहाल को ले जाता हूँ और किसी नेता के जरिए बातचीत चलाता हूँ।" निहाल गई, लेकिन जिस नेता को उसने अपने सामने देखा, वह रामसिंह तिवाड़ी था। तिवाड़ी ने गोविन्द की ओर देखा। गोविन्द ने याचना की दृष्टि से देखकर कहा, "गरीब दुखिया है हूजर, आपकी शरण में आई है, सताई हुई है, ठाकुर चंचलसिंह के जुल्मों से परेशान है।" निहाल ने आश्चर्य से सुना। गोविन्द उसे भीतर छोड़कर बाहर आ गया। जिस समय निहाल लौटी, उसके बाल बिखरे हुए थे। आँखें जल रही थीं, ऐसा लगता था जैसे वो पागल हो गई थी।

उसके चले जाने के बाद खिड़की की आड़ में से हिरदे निकला और विक्षोभ से उसका हृदय फटा जा रहा था। उसे लग रहा था जैसे वह नरक में से गुज़र रहा था और उसके बाद की कहानी कोई नहीं जानता। लोग कहते हैं कि दामी अपने बच्चों की दुहाई दे-देकर रो रही थी, क्योंकि हिरदे को कोई सदमा बैठ गया था और वह मर गया था। निहाल पागल हो गई थी और चिल्लाती फिरती थी, "मैं कुलटा हूँ, मैं पापिन हूँ।" पन्ना और किसना अपने गाँव लौट गए थे। चमेली और चंचलसिंह अपने घर के अन्दर बन्द रहते थे। नया मुंसिफ एक भयंकर आततायी के रूप में उनकी आँखों के सामने घूमता था और ठाकुर गजराजसिंह जैसे किसीको जानता नहीं था, किसीको पहचानता नहीं था।

उसके बाद एक छोटी-सी बात रह गई है; वह यह है—श्री मदनमोहन घीया के सम्पादकत्व तथा श्री चन्द्रप्रकाश के उपसंपादकत्व में अमीलपुर से प्रकाशित होने वाले 'जागते रहो' साप्ताहिक के चौथे वर्ष के दूसरे अंक में तीसरे पेज के अन्त में निम्नलिखित समाचार प्रकाशित हुआ :

"पागल की आत्महत्या"

रमोना, ता. 7 जनवरी। संवाद मिला है कि डूंमरपुर के सरपंच श्री चंचलसिंह के पुत्र नरायन ने परसों सोते में डूंमरपुर के पंच श्री कजौरीसिंह के पुत्र माधो का स्थानीय हाईस्कूल के होस्टल में कत्ल कर दिया और आत्महत्या कर ली। पुलिस की जांच जारी है। हत्या का कारण अज्ञात है। सुना जाता है कि नरायन पर एक कत्ल का झूठा केस चलाया गया था, जिससे उसका दिमाग खराब हो गया था और वह सोते में चलने भी लगा था। ये दोनों लड़के आपस में परम मित्र बताए जाते हैं और इनके पिताओं के पारस्परिक सम्बन्ध भी बहुत अच्छे थे। इस दुःख के कारण सरपंच चंचलसिंह झोलेटोले के सरपंच श्री रामसिंह तिवाड़ी कांग्रेस के चुनाव में विरोध नहीं करेंगे। इन दोनों होनहार लड़कों की मृत्यु पर हम दोनों परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।